Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

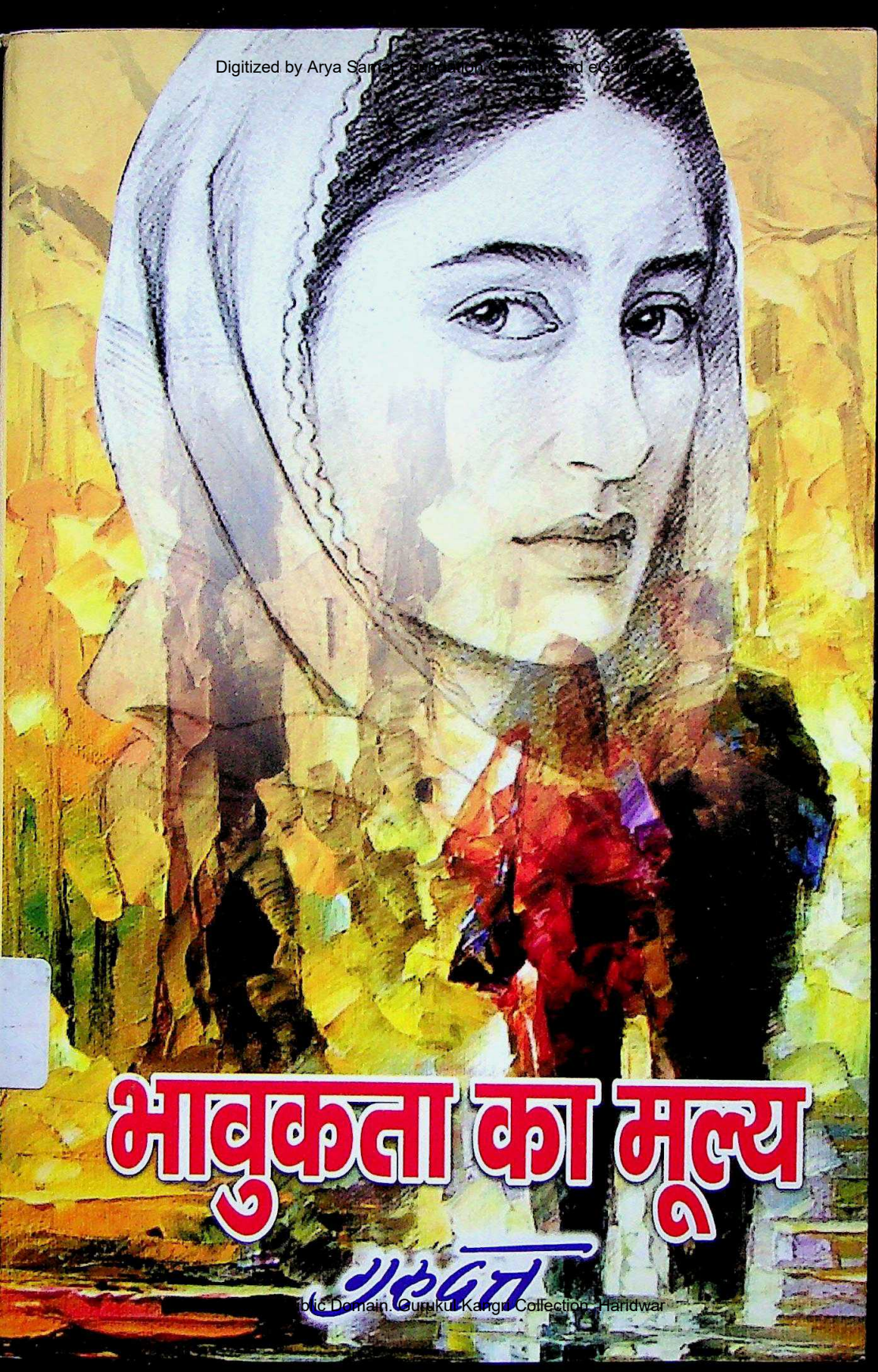

भावुकता का मूल्य

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167955

श्री गुरुदत्त की कुछ पुनःमुद्रित रचनाएँ

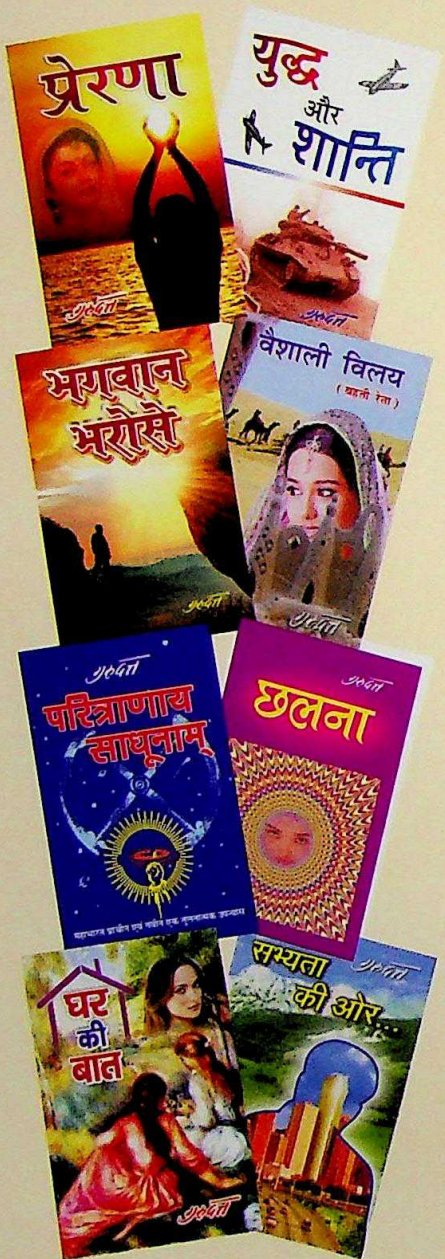

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावुकता का मूल्य

(उपन्यास)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार अध्याय

1. मानवता
2. मनुष्य में पशुता
3. मनुष्यता की ओर
4. प्रायश्चित तथा तपस्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावुकता का मूल्य

गुरुदत्त

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110 005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-B

© गुरुदत्त

मूल्य : ₹ 300.00

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
2 बी. डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 23553624, 23551344; फैक्स : 23553624
email : indiabooks@rediffmail.com
hindisahityasadan@gmail.com
website : hindisahityasadan.com

संस्करण : 2017

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक

मानवता

भावुकता जीवन का सार है। इस पर भी जीवन को अस्थिर करने में इसका हाथ सबसे अधिक होता है। घड़ी के पैण्डुलम की भाँति जीवन को हिलोरें देना, गति देना, दोलित करना, कभी रुलाना, कभी हँसाना, भावुकता का ही काम है। स्त्रियाँ इससे ओत-प्रोत होती हैं। पुरुष प्राय: युक्ति और गिनती-मिनती में रुचि रखते हैं। तर्क, मीमांसा और आलोचना पुरुषों को प्रिय है। इसके विपरीत स्त्रियों का जीवन प्राय: मन की प्रेरणा के अधीन चलता है।

कभी-कभी स्त्रियाँ भी युक्ति और मस्तिष्क की प्रेरणा पर आ डटती हैं। ऐसा करते ही उनका जीवन सौन्दर्य और लावण्य-विहीन होने लगता है। तब आन्तरिक प्रेरणा के वशीभूत हो वे पुन: भावुकता के क्षेत्र में जा विराजमान होती हैं। भावुकता से प्रेरित होकर वे अपनी शक्ति से भी अधिक कार्य सम्पन्न करने में सफल हो जाती हैं।

मीरा एक लड़की थी—भावुकता का पुंज। वह गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर की छात्रा थी। कॉलेज में पढ़ने से वह युक्ति और तर्कपूर्ण बातें तो करती थी, परन्तु उसके कार्य प्राय: मन के उद्‌गारों के अधीन ही होते थे। कॉलेज में वह अधिकतर एक पड़ोसी सेठ के लड़के मदनमोहन के साथ घूमती-बैठती थी। बुद्धि कहती थी, उसे सहपाठी लड़कियों से अधिक मेल-मिलाप रखना चाहिए, परन्तु मन पूछता था, वह क्यों मदन से मेल-जोल बन्द कर दे? एक दिन कॉलेज के लॉन में खड़े दोनों बातचीत कर रहे थे। मदन कह रहा था, "मीरा! कॉलेज के लड़के हमें एक साथ घूमते देख हमारी हँसी करते हैं। इससे....।"

मीरा ने बात बीच में ही काटते हुए पूछा, "क्या कहते हैं वे? जो सत्य नहीं, उससे डरने की बात क्यों कहते हो, मदन? मैं कहती हूँ कि लड़के स्वप्न में भी नहीं जान सकते कि हम क्या बातें करते हैं।"

"ठीक है। पर मैं कहता हूँ कि लड़कों के मुख पर चढ़ी बात प्रोफेसरों तक जो पहुँच गई है। और....।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''फिर वही बात! क्या हो गया अगर कोई प्रोफेसर या और कोई ऐसी बात कहते हैं, जिसका अस्तित्व ही नहीं है।''

''यह ठीक है, मीरा! परन्तु यदि बात मेरे पिताजी तक पहुँचती तो? प्रोफेसर धीरज पिताजी के कितने गहरे मित्र हैं। उनकी बात तो पिताजी को अमान्य नहीं होगी।''

''प्रोफेसर धीरज जैसे मूर्ख की बात पिताजी मानेंगे ही क्यों?''

''बाबा! वे प्रोफेसर हैं और मैं हूँ विद्यार्थी! और फिर मैं लड़का हूँ और तुम हो लड़की। देखो, मीरा! मैं आज से कॉलेज के भीतर तुमसे बात नहीं किया करूँगा।''

मीरा यही सुनना नहीं चाहती थी। वह जानती थी कि लड़के और प्रोफेसर उसे मदन के साथ घूमते और बातें करते देख, उनमें अनुचित सम्बन्ध होने की आशंका करते थे। किंतु मीरा को इस बात की कभी भी चिन्ता नहीं हुई थी। वह जानती थी कि मदन और वह परस्पर भाई-बहन का-सा भाव रखते हैं। उनके मन में मात्र एक के लड़का और दूसरे के लड़की होने की भावना कभी उत्पन्न नहीं हुई थी। आज मदन ने उसे लड़की और अपने को लड़का कहा तो उसे यह भला प्रतीत नहीं हुआ। उसे संदेह हो गया कि स्वयं मदन के मन में भी विकार आ गया है। इस विचार के मस्तिष्क में उठते ही वह मदन को वहीं लॉन में छोड़, कॉलेज हॉल की ओर चल पड़ी।

मदन उसके पड़ोसी सेठ घनश्यामदास का लड़का था और मीरा सेठ साहब के पिछवाड़े में रहने वाली एक निर्धन विधवा की लड़की। मदन के पिता की हवेली बहुत ऊँची थी और मीरा की माँ का मकान बहुत नीचा। इस पर भी दोनों घरों के अच्छे सम्बन्ध थे। मदन और मीरा में भी बचपन से ही मेल-जोल था। बचपन में जब सर्दियों में मदन पतंग उड़ाता था, तो मीरा उसकी डोर की चर्खी पकड़ती थी और चढ़ी पतंग मदन के हाथ से पकड़ खुशी से फूली नहीं समाती थी। मदन को मास्टर घर पर पढ़ाने आता था। मीरा उसकी पाटी साफ कर, उस पर मुलतानी पोत, सुखाकर दिया करती थी। वह ऐसा क्यों करती थी यह स्वयं मीरा नहीं जानती थी।

एक दिन मदन के मास्टर ने देखा कि मीरा, जो प्राय: पढ़ने के समय मदन के समीप बैठा करती थी, उसकी बातों को मदन से अधिक अच्छी तरह समझती है। मास्टर एक बंगाली व्यक्ति था और मदन को अंग्रेजी पढ़ा रहा था। उसने मदन से 'हैप्पी' शब्द का अर्थ पूछा। मदन भूल गया था, अत: चुप रहा। मीरा ने मदन के कान में बता दिया। मास्टर ने डाँटकर कहा, ''ओ छोकरी! जा हमें पढ़ाने दे।''

मदन ने बीच में ही कहा, ''हैप्पी का अर्थ है खुशी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
''इस लड़की ने बताया है?'' मास्टर ने डाँटकर पूछा।

मदन ने सिर हिलाकर स्वीकार किया तो मास्टर ने मीरा से कहा, ''क्यों बताया तुमने?''

''मुझे आता जो था। न आता तो न बताती।''

''परन्तु तुम पढ़ती हो क्या? तुम्हें इसका अर्थ कैसे पता लगा?''

''पढ़ती नहीं, पर आपको पढ़ाते तो सुनती हूँ।''

''तो तुम्हें याद रह गया है?''

''जो कुछ आप पढ़ाते हैं मुझे सब याद रहता है।''

''सब-कुछ? अच्छा बताओ 'बो' का अर्थ क्या है?''

''कमान।''

''रिवर का।''

''नदी।''

लड़की से मास्टर ने कई बातें पूछीं। उसे ठीक-ठीक उत्तर देते सुन वह चकित रह गया। मीरा की स्मरण-शक्ति और प्रतिभा पर वह इतना मुग्ध हुआ कि अगले दिन उसके लिए अपने खर्च से पुस्तक, स्लेट, कापी और पाटी ले आया और उसे भी पढ़ाने लगा।

सेठ साहब ने जब मीरा की प्रशंसा सुनी तो वह भी उसे पढ़ाने के लिए मास्टर को प्रोत्साहित करने लगे। अब मीरा और मदन इकट्ठे पढ़ने लगे। दोनों ने प्राइवेट ही मैट्रिक परीक्षा पास की और इकट्ठे ही कॉलेज में भरती हो गए। मीरा का खर्चा भी सेठ साहब ही उठाते थे। मीरा की माँ प्रेमवती को मीरा के अंग्रेजी पढ़ने और कॉलेज में भरती होने में आपत्ति अवश्य थी, परन्तु सेठानी जी के कहने पर वह मान गई थी। मीरा की बुद्धि तीव्र थी और बहुत-सी बातें मदन मीरा से समझा करता था। अब बी.ए. में अर्थशास्त्र पढ़ने से दोनों में आर्थिक विषमता पर परस्पर गरमागरम बहस हो जाया करती थी, परन्तु सेठ साहब के घर वाले निर्धन होने के कारण मीरा को अपने से अथवा मदन से ही, कभी भी घटिया नहीं मानते थे।

एक दिन मदन के घर पर मीरा मदन से कह रही थी, ''बिना मेहनत के पाई सम्पत्ति अपनी नहीं हो सकती। यह हराम की है।''

मदन का उत्तर था, ''वाह! एक धनी अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है तो क्या वह मेहनत नहीं करता?''

''परन्तु देखो न! मज़दूर मेहनत करता है और इंजीनियर भी मेहनत करता है। दोनों की कमाई में कितना अंतर है। एक को एक रुपया दैनिक मिलता है और दूसरे को पचास रुपये।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो दोनों की मेहनत को तुम समान समझती हो ?''

''समान ही तो है।''

''नहीं, समान नहीं हो सकती।''

''समान नहीं तो और क्या है ?''

इस प्रकार गरमागरम वाद-विवाद चल रहा था। सेठ साहब एक कोने में बैठे समाचार-पत्र पढ़ रहे थे। दोनों के वाद-विवाद की गरमी ने उनके ध्यान को आकर्षित किया तो वे सुनने लगे। जब मदन निरुत्तर हो गया तो सेठ साहब हँस पड़े। मदन और मीरा वाद-विवाद बंद कर लज्जित-से हो सेठ साहब की ओर देखने लगे। सेठ साहब ने कहा, ''ठीक तो कहती है मीरा।'' इतना कह सेठ साहब अपने स्थान से उठ उनके पास आकर खड़े हो गए। पश्चात कुछ सोचकर कहने लगे, ''हाँ, बुद्धि से मेहनत और शरीर से मेहनत में अंतर तो है, परन्तु यह एक और पचास का अंतर बहुत बड़ा है। यह अंतर कम होना चाहिए। ठीक है न, मीरा ? मैं भी समझता हूँ। परन्तु यह अंतर कैसे कम होगा, इस समस्या का सुझाव कई प्रकार से किया जा रहा है। कुछ उपाय तो ऐसे हैं कि उनके प्रयोग से, बुद्धि को लगन के साथ काम करने की प्रेरणा ही नहीं रह जाती और दूसरे उपायों से शरीर ही शिथिल हो जाता है। हमारी हिन्दू संस्कृति भी एक उपाय बताती है। वह है बुद्धिमानों को धन-अर्जन करने देना, फिर उस अर्जित धन को प्रेरणा द्वारा जन-साधारण के उपयोगी कामों में व्यय करा देना। दान-धर्म की प्रथा इसी बात की सूचक है। कर वसूल कर सरकार का उस धन को सर्वसाधारण के हित के कामों में व्यय करना भी एक उपाय है। दोनों में कौन अच्छा है, मैं नहीं जानता। पर उद्देश्य दोनों का एक ही है।''

इस प्रकार एक धनी और एक निर्धन में सम-भाव बना रहता था।

:: 2 ::

मदन मीरा को बहन ही समझता था और कॉलेज में प्रवेश के समय उसने सहपाठियों में यही सम्बन्ध प्रकट करने का यत्न किया था। परन्तु सेठ घनश्यामदास लाहौर के एक विख्यात रईस थे। कौन नहीं जानता था कि सेठ साहब की कोई लड़की नहीं है। उधर मीरा 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' वाली कहावत चरितार्थ करना नहीं चाहती थी। उसकी एक सहपाठिन श्रीकान्ता ने उससे एक दिन पूछा, ''मदन तुम्हारा क्या लगता है ?''

''एक पड़ोसी सेठ का लड़का।'' मीरा ने कहा।

श्रीकान्ता ने पूछा, ''कुछ दूर का सम्बन्ध होगा ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''नहीं, हम ब्राह्मण हैं और वे क्षत्रिय। हम बचपन के साथी मात्र हैं।''

श्रीकान्ता ने यह बात दूसरों से कह दी। धीरे-धीरे यह बात श्रेणी में और श्रेणी से बाहर प्रोफेसरों तक फैल गई। इस बात के प्रकट होने से विद्यार्थियों तथा प्रोफेसरों का यह अनुमान लगाना कि दोनों प्रेमी हैं, अगला पग था। इसे बाद, यह प्रेम किस सीमा तक बढ़ गया है, इसका अनुमान प्रत्येक अपनी सूझ-बूझ के अनुसार लगाता था।

प्रोफेसर धीरज ने भी अपने अनुमान के अनुसार इस प्रेम की सीमा बाँध, मदन को डाँटा था। मदन कुछ डर गया था। इसका कारण यह था कि उसे मीरा की बदनामी पसंद नहीं थी। इसीलिए उसने मीरा को कह दिया कि वह उससे कॉलेज में नहीं बोला करेगा।

मीरा तो यह समझती थी कि सत्य को आँच नहीं, परन्तु मदन को डरते देख उसे संदेह हो गया कि उसके मन में पाप आ गया है। सो उसने भी मन में ठान ली कि मदन से बात नहीं करेगी। वह यह तो समझती थी कि मदन तो उसे बहन ही समझता होगा, परन्तु उसके मन में शायद संदेह हो गया होगा कि मीरा उस पर डोरे डाल, उससे विवाह का षड्यन्त्र कर रही है। वह इस प्रकार का विचार किसी के मन में जमने नहीं देना चाहती थी।

इस विचार से वह मदन को वहीं लॉन में छोड़ कॉलेज-हॉल में चली गई। यों तो जब वह कॉलेज में घूमती थी तो लड़के उसकी ओर देखा ही करते थे। उनके देखने को वह अपने सौंदर्य के प्रति श्रद्धा के फूल समझा करती थी। परन्तु आज उसे उनका व्यवहार पसंद नहीं आया। कॉलेज-हॉल में जब सब उसकी ओर घूर-घूरकर देखने लगे तो वह वहाँ से भी चली आई। उसे वहाँ ठहरना भला प्रतीत नहीं हुआ। अब तो उसे सारा कॉलेज ही अप्रिय प्रतीत होने लगा था। अभी पढ़ाई का एक घंटा शेष था, इस पर भी वह कॉलेज से बाहर निकल आई और घर की ओर चल पड़ी।

:: 3 ::

मीरा की माँ, प्रेमवती, मीरा के कॉलेज चले जाने पर नित्य महिला अपाहिज आश्रम में जाया करती थी और उसके लौट आने के पूर्व घर पहुँच जाया करती थी। इस आश्रम में बूढ़ी, विधवा, अंगहीन और निराश्रय स्त्रियाँ रहती थीं। आश्रम का खर्चा सेठ घनश्यामदास देते थे। आश्रम की व्यवस्थापिका सेठ साहब की विधवा भौजाई थीं और प्रेमवती वहाँ रामायण की कथा सुनाने जाया करती थी। उसका यह काम अवैतनिक ही था। प्रेमवती रामायण-पाठ का मूल्य प्राप्त करना पाप समझती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे कभी आश्रम से लौटने में देर हो जाती तो मीरा सेठ साहब के घर चली जाती थी। वहाँ या तो मदन के साथ बैठकर पढ़ती या सेठानी के काम-धंधे में हाथ बंटाती थी।

आज मीरा समय से पूर्व आ गई थी और उसकी माँ अभी आश्रम से लौटी नहीं थी। स्वभाववश मीरा सेठजी के घर के दरवाज़े की ओर घूमी, परन्तु ज्यों ही उसे स्मरण हो आया कि अब मदन से सम्पर्क नहीं रखना है तो वह वापस अपने घर की ओर लौट आई और हाथ में पुस्तकें लिये दरवाज़े के बाहर माँ की प्रतीक्षा करने लगी।

माँ जब आश्रम से लौटी तो मीरा को इस प्रकार खड़े देख चिंतातुर हो उठी। "मीरा! क्या बात है? यहाँ क्यों खड़ी हो?"

"कुछ बात नहीं, माँ!" मीरा ने बात टालते हुए कहा।

माँ ने दरवाज़े का ताला खोला। दोनों भीतर चली गईं। मीरा ने किताबें चारपाई पर ही रख दीं और ऐसे लेट गई मानो बहुत थक गई हो—माँ दूध गरम करने चली गई और मीरा अपने भविष्य पर विचार करने लगी।

माँ मीरा के लिए दूध लाई। मीरा को दूध देते समय उसका मुख उदास देख पूछने लगी, "आज क्या बात है, इतनी उदास क्यों हो?"

"माँ!" मीरा ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा, "मैं कल से कॉलेज नहीं जाऊँगी।"

"क्यों, क्या हुआ है?" माँ ने चिंतित होकर पूछा।

"मदन आज कहता था कि कॉलेज के सब विद्यार्थी और प्रोफेसर मेरा उससे मेल-जोल देख हमारी निंदा करते हैं।"

"तो?"

"तो क्या! मदन ने मुझसे कॉलेज में बोलना बंद कर दिया है।"

"बेटी! कॉलेज छोड़ देने का तुम्हारा विचार ठीक ही है। कॉलेज में तुम क्या पढ़ती होगी और वे क्या पढ़ाते होंगे, जहाँ इस प्रकार की निंदा की बात हो सकती है। जहाँ विद्यार्थियों और प्रोफेसरों को ऐसी बात सोचने का अवकाश होता हो वहाँ का वायुमंडल कितना दूषित होगा? मैं तो तुम्हें पहले ही कहती थी, ऐसी पढ़ाई से क्या होगा? फिजूल का इतना खर्च और फिर शिष्टाचार तो वहाँ सिखाया ही नहीं जाता। जहाँ के पढ़ाने वाले प्रोफेसर धीरज जैसे बैल-बुद्धि के हैं, वहाँ पढ़कर तुम क्या सीखती होगी?

"पर अब घर बैठकर क्या करेगी? यदि कॉलेज में भरती न हो गई होती तो अब तक तेरा विवाह कर दिया होता। तू अपने घर सुखी होती। अब मुझे शीघ्र ही तेरे लिए वर ढूँढना रहेगा। किंतु तब तक क्या करेगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैं अभी विवाह नहीं करूँगी, माँ!''

''बस! बस! मैंने तुम्हारा कहना माना तो बदनामी मोल ली और अगर बेकार रहोगी तो कुछ और झंझट मोल ले लोगी।''

''पर मैं कोई ऐसी बात करूँगी ही क्यों?''

''तो कॉलेज में कोई बदनामी की बात करती थीं? वहाँ कैसे बदनामी मिली?''

मीरा समझती थी कि कॉलेज की बात और घर की बात में अंतर है। वह विवाह-बंधन में बंधना नहीं चाहती थी परन्तु वह सोचती थी कि विवाह नहीं करेगी तो क्या करेगी? माँ मीरा को दूध पिला रसोई के काम में लग गई।

सायंकाल मदन मीरा को साथ ले घूमने जाया करता था। वह आज भी आया। दरवाज़ा बंद था। उसने कुंडी खटखटाई। मीरा समझ गई कि मदन है वह इसी प्रकार कुंडी खटखटाया करता था। लेकिन आज उसकी इच्छा दरवाज़ा खोलने की नहीं हुई। वह खाट पर लेटी रही। मदन ने दरवाज़ा खटखटाना बंद नहीं किया।

प्रेमवती के मकान के सामने कुछ लड़के किराए के मकान में रहते थे। वे भिन्न-भिन्न दफ़्तरों में काम करते थे और एक साँझा 'लॉज' बनाए हुए थे। उस मकान में से एक युवक ने अपने मकान का दरवाज़ा खोला। उसने समझा था कि उनके घर का दरवाज़ा खटखटाया जा रहा है। ऐसा भ्रम प्रायः हो जाया करता था। उस युवक ने जब दरवाज़ा खोला और सामने सेठ साहब के लड़के को दरवाज़ा खटखटाते और प्रतीक्षा करते देखा तो 'ओह, आप हैं!' कहकर, दरवाज़ा बंद कर, मकान के अंदर चला गया।

मदन कितनी ही देर तक दरवाज़ा खटखटाता रहा। एक बार तो उस युवक ने अपने मकान की खिड़की में से झाँककर कह भी दिया, ''बाबू साहब! दरवाज़ा नहीं खोलती तो कोई दावा है?''

मदन ने घूरकर उसकी ओर देखा और कहा, ''तुमसे मतलब?''

वह युवक हँसकर पीछे हट गया।

आखिर मीरा की माँ ने दरवाज़ा खोला और खोलने में देरी का कारण बताते हुए कहा, ''मैं रसोईघर में आग जला रही थी और मीरा के सिर में दर्द हो रहा है।''

''सिर-दर्द?'' मदन ने अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा।

मीरा की माँ दरवाज़े के बीच मार्ग रोके खड़ी रही। इससे मदन ने कहा, ''चाची! मीरा को देखना चाहता हूँ। माँ पूछ रही हैं कि आज वह वहाँ क्यों नहीं आई?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीरा की माँ ने अब भी मार्ग नहीं छोड़ा और मदन को भीतर नहीं जाने दिया। उसने पूछा, ''कुछ विशेष काम है क्या? माँ जी से कह देना, मीरा की तबीयत ठीक नहीं है।''

इससे मदन समझ गया कि उसे मीरा से मिलने की अब अनुमति नहीं है। उसकी आँखें खुल गईं और वह सिर झुकाए लौट पड़ा। सामने के मकान की खुली खिड़की में से उसी युवक की हँसी सुनाई दी, परन्तु मदन का ध्यान उस ओर नहीं था।

:: 4 ::

हँसने वाले युवक का नाम मुहम्मद असलम था। इस मकान में आठ लड़के रहते थे, जिनमें से चार रेल के दफ़्तर में क्लर्क थे, दो टी.टी.आई. अर्थात् चलती रेलगाड़ी में टिकट देखने वाले, एक 'कैम्प ऐंड बैल' दवाई बेचने वाली दुकान पर कम्पाउंडर था। आठवाँ यह मुहम्मद असलम था, जो प्रत्यक्ष रूप से कुछ काम नहीं करता था, परन्तु उस लॉज में रहने वालों में सबसे अधिक पैसे वाला प्रतीत होता था।

इनमें छह हिन्दू और दो मुसलमान थे। दूसरा मुसलमान टिकट देखने का काम करता था। उसका नाम अब्दुल गनी था। उसे और मुहम्मद असलम को दूसरे हिन्दू टी.टी.आई. ने इस मकान में लाकर रखा था। इन लोगों ने एक रसोइया रखा हुआ था, जो सबका खाना इकट्ठा बनाता था।

मुहम्मद असलम को इस घर में आए अभी दो सप्ताह से अधिक नहीं हुए थे। लेकिन इतने समय में ही वह मीरा और मदन को इकट्ठे आते-जाते देख चुका था। मीरा की चमकीली आँखों ने उसके मन पर गहरा प्रभाव डाला था। इससे उसके विषय में अधिक जानने के लिए उसने अपने रसोइये से कहा, ''लक्ष्मण! ज़रा मालूम करना कि हमारे सामने वाले मकान में कौन रहता है?''

''बाबू साहब! एक विधवा ब्राह्मणी है और एक उसकी लड़की। वह सामने ऊँची हवेली वाले सेठ का लड़का इस लड़की से बहुत मेल रखता है। लोग कहते हैं, कुछ दाल में काला है।''

''ओह! तो तुम पहले ही सब--कुछ जानते हो।''

''सेठ साहब का रसोइया हमारे गाँव का है और कहता था कि यह लड़की मीरा, सेठ साहब के लड़के के साथ ही पढ़ती है। दोनों एक ही कॉलेज और एक ही श्रेणी के विद्यार्थी हैं। सेठ साहब लड़की की पढ़ाई का खर्चा भी देते हैं।''

''ओह!'' मुहम्मद असलम इससे अधिक कुछ न कह सका। वह इस गोरख-धंधे को समझ नहीं सका था। लड़की और सेठ साहब के लड़के में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्रता है और सेठ साहब खर्चा देते हैं। सिद्ध हुआ कि सेठ साहब को मित्रता का ज्ञान है। उसके सिद्धांतानुसार कोई किसी की नि:स्वार्थ सहायता नहीं कर सकता। अतएव इसमें सेठ साहब का कुछ निजी स्वार्थ भी होगा।

इसके पश्चात् उसने एक-दो बार मीरा से बातचीत करने का यत्न भी किया था, परन्तु सफलता नहीं मिली थी। आज जब उसने देखा कि सेठ के लड़के को घर में घुसने की स्वीकृति नहीं मिली तो वह इस मामले में कोई नई घटना घटने की आशा करने लगा। मीरा को घर के दरवाज़े के बाहर प्रतीक्षा करते भी उसने देखा था। इससे उसे विश्वास हो गया कि मीरा और मदन में झगड़ा हो गया है और अब वह मीरा से परिचय कर पाने की अधिक आशा करने लगा था।

अगले दिन मीरा कॉलेज नहीं गई। मुहम्मद अपनी खिड़की की चिक छोड़, वहाँ बैठा देखता रहा कि मीरा कब बाहर आती है। मीरा दिन-भर घर से बाहर नहीं निकली। तीसरे पहर मीरा की माँ के साथ सेठानी जी भी आईं और कोई एक घंटा-भर घर में ठहर चली गईं। इससे मुहम्मद असलम को विश्वास हो गया कि मीरा सचमुच ही बीमार है। अत: अब मीरा के लिए प्रतीक्षा करना व्यर्थ समझ वह कपड़े पहन घूमने के लिए निकलने लगा। घर से बाहर पैर रखे ही थे कि उसने मीरा को अपने घर से निकल बाज़ार की ओर जाते देखा। उसके अचम्भे का ठिकाना नहीं रहा। आशा बाँध वह उसके पीछे हो लिया।

गली से निकल बाज़ार में पहुँचकर मीरा क्षण-भर के लिए ठहर गई। वह सोच रही थी कि किधर जाय? इस एक क्षण में असलम उसके साथ हो गया मीरा एक ओर को घूम गई। वह भी उसके साथ उधर ही जाने लगा। असलम ने एक-दो बार पहले भी मीरा से बात करने के प्रयत्न किए थे। अत: अब फिर उसके साथ हो लेने से मीरा को संकोच हो रहा था। वह सोच रही थी कि किस प्रकार इससे पीछा छुड़ाए।

तभी उसे सामने से अपनी सहपाठिन श्रीकान्ता आती दिखाई दी। उसने समझा था कि वह उससे बातें करने ठहर जाएगी और यह आगे निकल जायगा। इसी से इच्छा न रहते भी वह श्रीकान्ता को नमस्ते कह बातें करने रुक गई। श्रीकान्ता खड़ी हुई तो असलम ने भी श्रीकान्ता को नमस्ते कही। श्रीकान्ता ने मीरा का हाथ पकड़ लिया और असलम की नमस्ते का उत्तर दे पूछा, ''आज आप भाई साहब की गोष्ठी में नहीं जा रहे?''

''जाना तो है।'' वास्तव में वह घर से वहाँ जाने को ही निकला था, परन्तु मीरा से परिचय घना करने की लालसा में घर से निकलने के अपने प्रयोजन को भूल गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकान्ता ने समझा था कि मीरा असलम के साथ जा रही है और इसी कारण असलम को भाई साहब के यहाँ जाने में देर हो रही है। इससे उसने कह दिया, ''तो मीरा बहन को भी साथ लेते चलिए न।''

''इनको?'' असलम ने अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा।

''हाँ! हाँ! चलो मीरा!'' श्रीकान्ता ने उसकी बाँह-में-बाँह डालते हुए कहा। ''बहुत बहस किया करती हो मदन से। गरीबों की कठिनाई की वास्तविक चिकित्सा जानना चाहती हो तो चलो तुम्हें सुनाएँ।''

मीरा ने उत्सुकता से पूछा, ''कहाँ? क्या है वहाँ?''

''तो तुम्हें इन्होंने बताया नहीं?'' इतना कह श्रीकान्ता ने असलम की ओर देखा। असलम बताना चाहता था कि मीरा उसके साथ नहीं जा रही, परन्तु श्रीकान्ता ने बात करने का अवसर ही नहीं दिया। मीरा के मुख की ओर देखती हुई बोली, ''कहीं विशेष काम से तो नहीं जा रहे हो? चलो मार्ग में बताती हूँ।''

मीरा अनिश्चित मन थी। श्रीकान्ता ने कुछ प्रेरणा दी और कुछ खींचा और दोनों उधर चल पड़ीं। असलम भी उनके साथ-साथ था। वह सोच रहा था कि किस शुभ घड़ी में घर से निकला है। मीरा ने अभी तक असलम से कोई बात नहीं की थी। श्रीकान्ता ने बात जारी रखते हुए कहा, ''देखो मीरा! हम कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं और हमारे एक नेता लखनऊ से आए हुए हैं। सब उन्हें भाई साहब कहकर पुकारते हैं। वे नित्य सायंकाल पार्टी के सदस्यों से बातचीत और उनकी शंका-समाधान करते हैं। साथ ही वे शुद्ध कार्ल-मार्क्सवाद की व्याख्या भी करते हैं।''

कार्ल मार्क्स का नाम मीरा ने सुना था। अब वह इसके विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर पाने से प्रसन्न थी। इससे श्रीकान्ता की बातें अधिक रुचि से सुनने लगी। वह कह रही थी, ''संसार में जितना दुःख, व्यथा, कष्ट, गरीबी तथा असमानता हैं; यह सब मनुष्य की बनाई है। यदि मनुष्य का व्यवहार और आचरण न्याय तथा युक्ति-युक्त हो तो ये सब मुसीबतें मिट सकती हैं।''

मीरा ने कहा, ''इसको तो हिन्दू पहले ही मानते हैं। हम यह नहीं मानते कि लंगड़े-लूले, अपाहिज, दुखी और निर्धन परमेश्वर ने अपनी कुदरत दिखाने के लिए बनाए हैं। इन सब बातों को हम मनुष्य के अपने पाप-कर्मों का फल ही समझते हैं।''

''परन्तु एक बात है न,'' असलम ने पहली बार बोलने का साहस करते हुए कहा, ''हिन्दुओं में दुखी, निर्धन, अपाहिज इत्यादि होना उसके अपने अमालों (कर्मों) का नतीजा माना जाता है और कार्ल मार्क्स इसे दूसरों के अमाल की वजह से मानता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''वाह, भला यह कैसे हो सकता है?''

इसका उत्तर श्रीकान्ता ने दिया, ''यह इस प्रकार कि गरीब की गरीबी अमीरों के अन्यायपूर्ण आचरण के कारण होती है। वह गरीबों का हक़ स्वयं ले लेता है। इससे गरीब दुखी हो जाते हैं।''

''गरीबी-अमीरी के विषय में तो कुछ सीमा तक यह बात मानी जा सकती है, परन्तु सुख-दुख के विषय में यह सिद्धांत नहीं मान सकते। एक धनवान भी दुखी हो सकता है और एक निर्धन सुखी।''

''उसूल एक ही है।'' असलम ने फिर साहस कर कहा, ''मैं इसकी मिसाल भी दे सकता हूँ। दो आदमी एक ही स्त्री से प्यार करते हैं। जो बलवान और धनवान है, उससे शादी कर लेता है। दूसरा दुखी हो जाता है।''

मीरा इसका उत्तर तो जानती थी, परन्तु आज तक उसने किसी पुरुष से विवाह के विषय में बातचीत नहीं की थी। इस कारण उत्तर उसके मुख से निकला नहीं। वह चुप रही। असलम ने समझा मीरा निरुत्तर हो गई है। श्रीकान्ता ने बात बदल दी। वह भी इस उदाहरण से कुछ प्रसन्न नहीं थी। उसने मीरा से पूछा, ''आज कॉलेज नहीं आईं?''

''मेरी तबियत ठीक नहीं थी।'' वह अभी कॉलेज छोड़ने की बात सब में फैलने देना नहीं चाहती थी।

''मदन आया था। एक घंटा श्रेणी में बैठ चला गया। सब कह रहे थे, जब तुम नहीं आईं तो वह कैसे ठहर सकता था।''

मीरा ने इसका उत्तर नहीं दिया। असलम ने अपनी बात का सूत्र पकड़े रखा और कहा, ''इसी बात में देख लीजिए। आप मदन बाबू के दुख की वजह बन गई हैं। दुख भी गरीबी की तरह दूसरों के करने से हो सकता है।''

मीरा ने तीव्र दृष्टि से असलम की ओर देखा और फिर कहा, ''आप इस विषय में कुछ नहीं जानते।''

''हो सकता है और यह भी मुमकिन है कि आप लाइल्मी में अपने कसूर से नावाकिफ हों। अकसर धनी आदमी समाज के ढाँचे में जकड़े होने से धनी बन जाना अपना हक़ समझते हैं। और निर्धन का निर्धन रहना उसके अमाल का फल। हक़ीकत इससे उलटी होती है।''

यह एक वक्तव्य था। इसमें युक्ति नहीं थी। इससे मीरा ने इस बात का उत्तर नहीं दिया। मीरा के साथ हुए इस थोड़े-से वार्तालाप से श्रीकान्ता को असलम का अयुक्तिसंगत व्यवहार प्रत्यक्ष हो उठा था। असलम उसका नेता था। उसे मीरा की युक्ति से कट गया देख श्रीकान्ता आश्चर्य कर रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर लौटते समय श्रीकान्ता को एक सहेली के घर जाना था। इस कारण मीरा को विवश असलम के साथ आना पड़ा। मार्ग में असलम ने मीरा पर प्रभाव जमाने का भरसक यत्न किया। वह उसे कम्यूनिस्ट पार्टी में सम्मिलित करने का यत्न कर रहा था। उसने सोशयलिस्ट-मीमांसा इस प्रकार उसके सम्मुख रखी—

''इंसान शुरू की (Primitive) हालत में जंगली जानवरों की तरह था। पेट भरने के लिए कुदरत उसे फल-फूल, कंद-मूल देती थी। जब तक तो खाने वाले थे कम और पैदावार थी ज्यादा, तब तक झगड़ा नहीं हुआ। इस पर भी बलवान दुर्बलों से पहले पेट भरते थे। बढ़िया पके फल वे खाते थे और कच्चे गले-सड़े कमजोरों के हिस्से में आते थे। असल झगड़ा तो उस वक्त शुरू हुआ, जब इंसानों की तादाद इतनी बढ़ गई कि फलों की पैदावार उनका पेट भरने के लिए काफी नहीं थी। इस वक्त से इंसान का अर्थशास्त्र (Science of Economics) शुरू हुआ।

''मनुष्यों में जो दुर्बल थे, वे अपने निर्वाह के लिए फलों के अलावा दूसरे तरीके सोचने लगे। जानवरों के मांस को खाना पहली ईजाद (आविष्कार) थी। भूखे-दुर्बलों ने भूखे बेबस हो फिर अन्न-अनाज पैदा करना सीखा और आगे चलकर अन्न को पकाना और लजीज (स्वादिष्ट) बनाना सीखा। जब बलवानों ने देखा कि दुर्बलों ने फलों से भी स्वादु और ताकतवर चीज़ें बना ली हैं तो उन्होंने वे भी उनसे छीन लीं। इन चीज़ों में भी जो बढ़िया थीं, वे अपने लिए रख कमजोरों को घटिया चीज़ें दे दीं।

'इस तरह इंसान तरक्की करने लगा। भूख से बेताब (व्याकुल) हो लोग गुजारे के दूसरे तरीके सोचते हैं और उसके लिए नई-नई चीज़ों की ईजाद करते हैं। जब ये ईजादें सुख और आराम देने वाली साबित हो जाती हैं तो बलवान उनको छीन अपने इस्तेमाल में ले आते हैं।

''बहुत चीज़ों को अपने पास रखने और उनकी रक्षा करने में अपने को नाकाबिल पा, ताकतवरों ने रुपये-पैसे की ईजाद की। इससे दुर्बल गुलामी में फँस गए और बलवानों के साथ-साथ रुपये वाले भी धींगा-मुश्ती करने लगे।

''इसी प्रकार औरतों का मामला है। दुनिया-भर की सुंदर और अच्छी औरतों पर बलवानों ने कब्ज़ा कर लिया है।''

इस समय वे अपने मकान के सामने पहुँच गए थे। पूर्व इसके कि मीरा अपना दरवाज़ा खटखटाए मुहम्मद असलम ने मीरा से पूछा, ''कल फिर भाई साहब के यहाँ चलिएगा न?''

''मन चाहता है, पर देर बहुत हो जाती है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''अगर आप कहें तो आपको ले चलूँ और ले भी आऊँगा।''

मीरा ने उत्तर दिए बिना दरवाज़ा खटखटा दिया। मीरा की माँ उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। जब वह भीतर आई तो माँ ने पूछा, ''बहुत देर कर दी, मीरा!''

''हाँ! एक सभा में चली गई थी।''

''तो वहाँ से अकेली आई हो? अब तो नौ बज रहे हैं।''

''मेरी एक सहेली श्रीकान्ता का एक परिचित उस सामने वाले मकान में रहता है। वह भी वहाँ था। उसके साथ आई हूँ।''

भाई साहब की गोष्ठी में उसे जीवन की समस्याओं की एक नई मीमांसा मिली। यद्यपि वह पूर्ण रूप से इस मीमांसा को अपना नहीं सकी थी, तो भी उसके चिर-संचित संस्कारों और विचारों में एक हलचल अवश्य मच गई थी। रात-भर वह उन बातों पर मनन करती रही।

प्रातः काल जब वह उठी तो सेठानीजी उसकी माँ से बातचीत करने आई हुई थीं। सेठानीजी कह रही थीं, ''बहन प्रेम! तुम तो अपने घर की हो न। तुम्हारे आए बिना हमारा कोई कार्य सजता नहीं है। सेठजी ने इसी कारण मुझे खास तौर पर भेजा है कि तुम्हें और मीरा को निमंत्रण देकर आऊँ।''

मीरा सेठानीजी की बात सुन रही थी। उसे स्मरण हो आया कि आज मदन का जन्म-दिन है। पिछले दिन मीरा तथा उसकी माँ सेठजी के घर नहीं गई थीं, इससे निमंत्रण देने सेठानीजी स्वयं उनके घर आईं। इससे मीरा सोचती थी कि भाई साहब ने जो बताया था कि जब कोई धनी दान-पुण्य करता है, तो स्वार्थवश ही करता है। सेठजी की उस पर तथा उसकी माँ पर जो यह कृपा है, किस स्वार्थ-कामना के कारण हो सकती है? यदि यह केवल ख्याति प्राप्त करने के हेतु है तो ख्याति तो किसी संस्था में दान देने से या किसी विख्यात ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देने से अधिक हो सकती है। हम गरीब और अबला ब्राह्मणियों को इतना आदर देने से उनकी क्या ख्याति होगी? इस विचार से उसे भाई साहब के कहने पर संदेह होने लगा था।

सेठानी ने मीरा को जागते देख उसके समीप आ, उसकी खाट पर बैठ, उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, ''बेटी मीरा! उठो जल्दी करो। आज तुम्हारे भाई का जन्म-दिन है। बहुत काम है और बिना बहन का सहयोग पाए काम निबटेगा कैसे?''

मीरा ने आँखें नीचे किए हुए, बुद्धि से विचार की हुई बात कह दी, ''ताईजी! रात-भर सिर में दर्द होता रहा है। नींद ठीक नहीं आई।''

''मीरा बेटी! हम भी तुम्हारी तरह रूठ चुकी हैं। अंत में हम तो यही समझी हैं कि सिर-दर्द की बीमारी रूठे रहने से बढ़ती है। इसकी चिकित्सा तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान जाने में ही है। देखो बेटी! भाई तो झगड़ा करते ही हैं, पर बहनें आशीर्वाद देने में कभी संकोच नहीं करतीं।''

मीरा चुप रही। वह सोच रही थी कि बहिन-भाई होने में कौन सूत्र बँधा होना चाहिए। जन्म का, विचारों का अथवा रुपये-पैसे का। इनमें से कौन-सा सम्बन्ध उसका मदन से है।

इस समय उसे भाई साहब का कहना स्मरण हो आया कि धनी और निर्धन का केवल एक ही नाता है। रक्त चूसने वाले का तथा चूसे जाने वाले का, शोषक और शोषित का। इससे वह सेठानीजी का निमंत्रण अस्वीकार करने ही वाली थी, परन्तु सेठानीजी प्रेम से उसकी ओर देखती हुई उसके सिर पर हाथ फेर रही थीं। इससे उसने सोचा, ''हमारा किस प्रकार शोषण करेंगी ये? यहाँ वह बात सत्य नहीं हो सकती।''

वह खाट से उठ पड़ी और मदन के जन्म-दिन के उत्सव पर जाने के लिए तैयार होने लगी।

:: 6 ::

सेठ घनश्यामदास एक बहुत ही प्राचीन धनी परिवार में से थे। इनके पूर्वज मुगलों के जमाने में रेशमी कपड़े का व्यापार करते थे। नवाब और रईस इनके ग्राहक होते थे। मुर्शिदाबाद और आसाम में एक ओर और काश्मीर में दूसरी ओर उनका व्यापार चलता था। इन दूरस्थ स्थानों से माल लाने के लिए इनके अपने काफिले चलते थे। माल की रक्षा के लिए हथियारबंद सिपाही नौकर रखे हुए थे।

मुर्शिदाबाद से माल लाते समय, मार्ग में देहली के बादशाह के दरबार में उपस्थित हो, भेंट देने का सौभाग्य उनको प्राप्त होता था। उस समय के बादशाह भेंट लेते थे, परन्तु इस प्रकार उपस्थित हो वफादारी प्रकट करने वाले को इनाम और विदाई भी मिलती थी, जो प्रायः भेंट की कीमत से अधिक होती थी।

शाहंशाह अकबर के समय से इकट्ठी होती हुई सम्पत्ति सिखों के समय में करोड़ों की हो गई थी। महाराजा रणजीतसिंह के देहांत के पश्चात् कुछ गड़बड़ हुई। कुछ सिख सरदारों ने लाहौर में लूट-मार करने का यत्न किया। इस पर सेठ घनश्यामदास के दादा नरसीशाह ने उन सरदारों को एक दिन घर पर बुलाया और भली-भाँति खिला-पिलाकर उन्हें रेशम के गोदाम में ले जाकर खड़ा कर दिया और कहा, ''सेवक की यह दुकान है। इसका सारा माल सरकार की सेवा में उपस्थित है। जो चाहें ले जा सकते हैं। परन्तु,'' एक बारीक रेशम के थान को दिखाते हुए उसने कहा, ''यह हुजूर की महारानी के लायक चीज़ अगर आपका बेलदार लैहनूसिंह अपनी औरत के लिए ले जाय तो वह उसे पहनने का ढंग ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं समझेगी और महारानी को ज़रूरत पड़ने पर यह कहाँ से मिलेगी ?''

सरदारों की मोटी-बुद्धि में यह बात आ गई। इस पर भी एक ने पूछा, ''तो यह और नहीं बन सकता, लालाजी ?''

''इसके बनाने वाले यहाँ से डेढ़ हज़ार मील की दूरी पर मुर्शिदाबाद में रहते हैं। वहाँ अब फिरंगियों का राज्य है और उन्होंने इतना बढ़िया काम करने वालों के अँगूठे कटवा दिए हैं, जिससे यह माल न बन सके।''

''क्यों ?''

''इसलिए कि फिरंगियों का घटिया माल बिक सके। फिर आज मुल्क में कोई बलशाली राज्य नहीं रहा, इससे माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना सम्भव नहीं रहा।''

सरदारों ने जी भरकर रेशमी माल उठा लिया, परन्तु सेठ नरसी शाह के गोदामों की रक्षा के लिए सिपाही बैठा दिए गए।

इस प्रकार युक्ति से सुरक्षित और संचित धन अंग्रेजी राज्य में और भी वृद्धि पाने लगा। सेठ घनश्यामदास के पिता के देहांत के समय करोड़ों की सम्पत्ति दो भाइयों में बंट गई। बड़े भाई का नाम था मुरारीलाल। वह बचपन से ही रंगीन प्रकृति का आदमी था, जो शराब और वेश्याओं के जाल में फँस, अपनी पूर्ण सम्पत्ति को स्वाहा कर नि:संतान विधवा छोड़, परलोक गमन कर गया। घनश्यामदास आयु में छोटा और पिता का प्रिय पुत्र था। वह अपने भाई को भले-बुरे कामों में व्यय करते देख सावधान हो गया और अपना कारोबार पृथक् कर अपने भाग के धन की वृद्धि करने लगा।

सेठ घनश्यामदास धार्मिक मनोवृत्ति रखता था। धन कमाता था और फिर धर्मार्थ व्यय भी करता था। प्राय: तीर्थ-स्थानों पर उसके नाम की धर्मशालाएँ थीं, जिनमें यात्री लोग सुख और चैन से रहकर तीर्थ-यात्रा का पुण्य-लाभ करते थे। अनेक स्कूलों, पाठशालाओं और आश्रमों के संचालन में इसके दान का हाथ था।

मुरारीलाल की स्त्री पति के मरने पर निर्धन और नि:सहाय रह गई। मुरारीलाल की पूर्ण सम्पत्ति वेश्याओं के दलालों के हाथ बिक चुकी थी।

वकीलों ने सेठ घनश्यामदास से कहा भी, ''यदि आप थोड़ा धन व्यय करें, तो भाई की सम्पत्ति का बहुत-सा भाग बचाया जा सकता है। प्राय: प्रोनोट झूठे सिद्ध हो जाएँगे।''

घनश्यामदास का उत्तर था, ''इससे लाभ क्या होगा ? मैं जानता हूँ कि मेरे भाई ने यह सब धन जान-बूझकर इन लोगों को दे दिया है।''

''लेकिन इससे आप अपनी विधवा भाभी के जीवन का सहारा बना सकिएगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''उसे सहारे की कमी नहीं।'' फिर कुछ सोचकर उसने कहा, ''अच्छी बात है, मैं भाभी की राय इस विषय में लूँगा।''

उसकी भाभी मीरा की माँ के मकान के एक कमरे में रहती थी। मीरा की माँ उस समय विधवा हो चुकी थी। मीरा का पिता सेठ परिवार का पुरोहित था और मीरा की माँ मुरारीलाल के घर आया-जाया करती थी। जब मुरारीलाल के मरने के पश्चात्, उसके लेनदारों ने उसके रहने के मकान पर भी अधिकार पाना चाहा तो मुरारीलाल की विधवा, बिना झगड़ा किए, मकान छोड़ मीरा की माँ के पास आकर रहने लगी। आने के पूर्व उसने पूछा था, ''पंडिताइन! क्या भाड़ा लोगी?''

''सेठानी जी! आपका प्रेम और कृपा।''

''फिर भी कुछ तो लेना ही चाहिए?''

''जितना कुछ आपके परिवार का लिया है, पहले वह तो चुका लूँ।''

इसके कुछ ही दिन पीछे की बात है। सेठ घनश्यामदास अपनी भाभी से पूछने आए कि उसके पति की सम्पत्ति के लिए मुकद्दमा किया जाय अथवा नहीं। जब देवर ने वकीलों की राय बताई तो भाभी ने कहा, ''भैया! तुम्हें अपने भाई की सम्पत्ति की आवश्यकता हो तो जो मन में आए करो।''

''तुम्हें आवश्यकता नहीं, भाभी?''

''एक हिन्दू विधवा के खाने-पहनने के लिए कितने धन की आवश्यकता हो सकती है? इतना तो मैं सूत कातकर भी पैदा कर सकूँगी।''

''जो शेष बच जाएगा, दान-धर्म कर देना, भाभी।''

''वकीलों से झूठा मुकद्दमा कराकर और हाकिमों को धोखे में डालकर पाया धन, दान और धर्म में देने से लाभ ही क्या होगा? जो इस दान को लेगा, वह भी जल जाएगा।''

''तो फिर एक बात करो, भाभी! कम से कम हमारे यहाँ चलकर रहो। यहाँ रहने में परिवार की नाक कट जाएगी।''

''नहीं भैया! तुम्हारे परिवार की खुशी और आनंद में मैं अपशकुन बनकर नहीं रहूँगी। यहाँ दो अभागिनें एक-दूसरे को देख दुख सहने में सबल हो सकेंगी।''

सेठ साहब इस कथन की गम्भीरता को समझते थे और उन्होंने भाभी की इस धारणा को बदलने का यत्न नहीं किया। इस पर भी अपने भाई की विधवा को सुखी रखने के विचार से उन्होंने एक दिन मीरा की माँ को अपने घर बुलाकर कहा, ''पंडिताइन! भाभी के तुम्हारे घर रहने से तुम्हें कष्ट तो बहुत होगा?''

''कोई कष्ट नहीं सेठजी! आप लोगों का दिया ही तो सब-कुछ है। मीरा के पिता बताते थे कि महाराजा रणजीतसिंह के राज्यकाल में आपके दादा ने ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-B
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो इस मकान की भूमि संकल्प में दी थी, जिस पर आपके पिता की दान-दक्षिणा से यह मकान बना था। अब वही तो आपकी भाभी के काम आ रहा है। भला इसमें अनुचित ही क्या है?''

''अच्छी बात है, परन्तु उसके खाने-पहनने के लिए तुम उससे कुछ नहीं कहना। मैं तुम्हें सब-कुछ दूँगा।''

अगले दिन सेठ साहब ने अपने मुँशी के हाथ पाँच सौ रुपये भेजे और साथ ही एक पत्र लिख भेजा, ''अभी इतना रुपया भेज रहा हूँ। यदि अगली किस्त से पहले समाप्त हो जाए तो मदन की माँ से कह देना, और भेज दूँगा।''

इस पाँच सौ में से केवल बीस रुपये ही खर्च हुए थे कि महीना समाप्त हो गया, पाँच सौ और आ गए। प्रेमवती ने सेठ साहब की भाभी को बताया तो वह प्रेमवती को साथ ले मदन की माँ के पास जा पहुँची। सेठजी भी वहीं थे। प्रेमवती ने पाँच सौ रुपया मदन की माँ के सम्मुख रखते हुए कहा, ''पहले पाँच सौ में से अभी बीस रुपये व्यय हुए हैं। जब समाप्त हो जाएँगे तो बता दूँगी।''

सेठजी ने कहा, ''भाभी! पहले पाँच सौ में से बचे हुए धन को दान कर दो और गरीबों-अपाहिजों में बाँट दो।''

''भैया! अपने हाथ की कमाई दान करने से ही लाभ होता है। दूसरे से लेकर देने में क्या लाभ होगा?''

''बड़ी भाभी माँ के तुल्य ही तो होती है न। माँ को तो अपने पुत्र की कमाई पर अधिकार होता है। देखो भाभी! तुम्हारा देवर हूँ या पुत्र, जो चाहो मानो। इतना मैं तुम्हें देता हूँ। इसको जहाँ चाहो व्यय करो। दादा तुम्हें इस जन्म में कोई सुख नहीं दे सके। अब अपने परलोक के लिए ही कुछ कर लो।''

इतना कहते-कहते सेठजी की आँखों में आँसू उमड़ आए। सबकी आँखें भर आई थीं। वास्तव में सेठ जी की भाभी को इस जन्म में कोई सुख प्राप्त नहीं हुआ था। अगले जन्म में सुख की आशा ने उसे अधीर कर दिया।

हिन्दू विचारधारा ने उसके मन में उत्साह भर दिया। कर्म-मीमांसा ने उसके मन में संतोष बाँध दिया और आगे की सुध करने के लिए साहस उत्पन्न कर दिया। इस प्रेरणा के अधीन वह पाँच सौ रुपया ले उठ खड़ी हुई।

सेठ साहब पाँच सौ मासिक देने लगे और मुरारीलाल की विधवा और प्रेमवती विचार करने लगीं कि इस धन का सदुपयोग कैसे करें। मुरारीलाल की विधवा का मत था कि रुपया उसके देवर का है। इससे केवल दान कर देने से फल उसे क्यों मिलेगा? वह जानती थी कि इस रुपये को आधार बना, जब तक वह अपने हाथ-पाँव से कुछ मुख्य कार्य नहीं करती, तब तक उसे फल नहीं मिल सकता। मंदिर बनवा देने, धर्मशाला खड़ी कर देने अथवा कोई पाठशाला

Central Library
Gurukul Kangri (Deemed to be University) Haridwar
167955

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोल देने से उसने स्वयं क्या किया ? धन व्यय हुआ सेठ घनश्यामदास का। इसमें मुरारीलाल की विधवा ने क्या किया ? अतएव दोनों विधवाएँ योजना बनाने लगीं और उस योजना का परिणाम हुआ 'महिला अपाहिज आश्रम'। इस आश्रम में उन स्त्रियों को शिक्षा अथवा अन्य प्रकार से सहायता देने का प्रबंध था जो विधवा हो गई हों अथवा किसी कारण से अपने पति द्वारा त्याग दी गई हों या किसी रोग अथवा दुर्घटना से अपाहिज हो गई हों।

नगर में एक बहुत बड़ा मकान किराए पर लिया गया। उसमें सीना-पिरोना सिखाने के लिए शिक्षिकाएँ रखी गईं। मुरारीलाल की विधवा वहाँ की प्रबंधक बन गई और प्रेमवती रामायण सुनाने के लिए वहाँ नित्य जाने लगी।

'महिला अपाहिज आश्रम' की स्थापना का समाचार सेठजी को मिला तो उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई। सेठजी ने अपने एक मुंशी चेतनदास को इस आश्रम के विषय में पूरी जाँच करने का काम सौंपा। चेतनदास ने अपनी पत्नी को वहाँ भेज पूरा वृत्तांत जान लिया। उसने सेठजी को बताया कि आश्रम में सेठजी की भाभी व्यवस्थापिका का काम करती हैं। लगभग तीस स्त्रियाँ आश्रम में रहती हैं। कुछ तो अत्यन्त बूढ़ी हैं और कोई काम नहीं कर सकतीं। सबके भोजन व रहने का प्रबंध आश्रम की ओर से है। रोगियों की सेवा और युवती-विधवाओं की शिक्षा का प्रबंध भी हो रहा है।

दोपहर के समय प्रेमवती रामायण की कथा करती है। सब आश्रमवासी इसे सुनने के लिए एकत्रित होते हैं। कथा के पश्चात् कीर्तन होता है।

सेठजी इस वृत्तांत से अति प्रसन्न थे। अतएव उन्होंने अपनी भाभी का खर्चा बढ़ा दिया और कहलवा भेजा कि यदि और रुपये की आवश्यकता पड़ी तो दिया जाएगा।

इसी समय से मीरा का सेठजी के घर आना आरम्भ हुआ था। प्रेमवती जब आश्रम में कथा करने जाती थी तो मीरा को सेठजी के घर छोड़ जाती थी। मीरा की आयु उस समय चार वर्ष की थी। तब मदन पाँच वर्ष का था। दोनों में तब से स्नेह बढ़ना आरम्भ हुआ था। बढ़ते-बढ़ते यह इतना अधिक हो गया था कि दोनों अधिकतर इकट्ठे ही रहते थे।

:: 7 ::

मदन के जन्म-दिन के उत्सव में सम्मिलित होने मीरा गई अवश्य, परन्तु उसके मन में वह उत्साह नहीं था, जो ऐसे अवसरों पर पहले हुआ करता था। वह वहाँ गई तो सेठानीजी के पास जाकर बैठ गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर की सफाई और सजावट हो चुकी थी। एक ओर खाने का प्रबंध हो रहा था, दूसरी ओर पूजा हो रही थी। भोजन का प्रबंध दो भागों में विभक्त था। ब्राह्मणों के लिए तो घर की बिरादरी की स्त्रियाँ खीर-पूरी बना रही थीं और मेहमानों के लिए हलवाई खाना तैयार कर रहे थे। एक सौ एक ब्राह्मण पूजा कर रहे थे। पूजा के स्थान पर मदन रेशमी वस्त्र पहने, मस्तक पर चन्दन का तिलक लगाए, चोटी को गाँठ दिए, कुशा के आसान पर पूर्वाभिमुख बैठा था। सामने पुरोहित बैठा हाथ में कुशा लिये समीप रखे गंगाजल से भरे चांदी के पात्र में उसे भिगो मदन पर छींटे देता हुआ, 'ओ३म् प्रजापतये स्वाहा, ओ३म् सोमाय स्वाहा', इत्यादि मन्त्र पढ़ रहा था।

जब मीरा उस कमरे में आई और आकर सेठानीजी के पास बैठ गई तो मदन का मुख खिल उठा। उसकी आँखों में प्रसन्नता झलकने लगी।

पूजा समाप्त हुई। एक सौ ब्राह्मण, जो पुरोहित के पीछे बैठे थे, सामवेद गायन कर बालक को आशीर्वाद देने लगे। इसके पश्चात् सब खड़े हो गए और शांति पाठ पढ़ा गया, 'ओ३म् द्यौः शांतिरन्तरिक्ष....' इत्यादि।

अब सेठ साहब ने मदन को आशीर्वाद दिया और केसर का तिलक लगाया। पश्चात् वहाँ उपस्थित सब लोगों ने बारी-बारी से तिलक लगाया। स्त्रियों की बारी आई तो मदन उठकर उनके पास चला गया। सब बारी-बारी से तिलक लगा रही थीं। पहले तो ऐसे अवसरों पर मीरा कूदकर सबसे आगे आ तिलक लगाया करती थी। आज वह सबसे पीछे खड़ी थी। जब सब स्त्रियाँ तिलक लगा चुकीं तो मदन उसके सामने जा खड़ा हुआ। "मीरा! लगाओ।" मदन ने धीरे से कहा।

मीरा ने केसर की कटोरी में अँगूठा डुबोकर तिलक लगा दिया। इसी समय मदन ने कहा, "मीरा! मेरे कमरे में मिलोगी न?"

"क्यों?"

"कुछ कहना है।"

"क्या लाभ होगा?"

"मेरे चित्त को शांति मिलेगी।"

इससे अधिक कहने का अवसर नहीं था। मदन लौटकर पिता के समीप जाकर खड़ा हो गया। मीरा कमरे से बाहर चली गई।

सेठजी ने सब ब्राह्मणों को भोजन-गृह में आमंत्रित किया। यह एक दूसरा बड़ा कमरा था। इस समय मीरा अन्य स्त्रियों के साथ भोजन वितरण कराने में लगी हुई थी। मदन अपने कमरे में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

ब्राह्मण भोजन कर चुके तो प्रत्येक को मिठाई से भरा हुआ एक-एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीतल का शाल, रेशमी रूमाल से ढककर, ग्यारह रुपये सहित दक्षिणा में दिया गया। जब सब ब्राह्मण विदा हो गए तो घरवालों और अन्य मेहमानों के भोजन का समय आया। मदन को कमरे से बुला लिया गया। मदन ने आकर देखा कि मीरा अभी स्त्रियों को खिला रही है। मीरा के न आने का कारण काम में लगा होना समझ, मदन, आशा बाँध, खाने पर बैठ गया। वह खाना खा रहा था, परन्तु उसकी दृष्टि मीरा पर थी।

स्त्रियाँ अभी खाना खाकर हाथ धो ही रही थीं कि मीरा चुपचाप कमरे से निकल गई। मदन ने उसे जाते देखा तो खाना छोड़ उसके पीछे-पीछे गया। मीरा सेठ साहब की हवेली के फाटक पर ही पहुँची थी कि मदन उसका मार्ग रोककर खड़ा हो गया। मीरा ने पूछा, "क्या है?"

"बहनें इतनी निष्ठुर नहीं होतीं, मीरा!"

"भाई बहन को निराश्रय छोड़कर नहीं जाते, मदन!"

"मैंने अपनी भूल स्वीकार करने के लिए ही तुमसे मिलना था।"

"तो ठीक है। बस?"

"बस नहीं, चलकर खाना खाओ।"

मीरा वहाँ ड्योढ़ी में नौकरों के सम्मुख अधिक बातचीत करना नहीं चाहती थी। इससे वह लौट पड़ी। दोनों पुन: भोजन-गृह में आ गए। मीरा एक ओर आसन लगाकर बैठ गई। मदन एक स्त्री को मीरा को खिलाने के लिए कह, अपने स्थान पर आ बैठा।

पिता ने पूछा, "क्या था?"

"मीरा खाए बिना जा रही थी।"

"कोई विशेष बात हुई है, मदन?" सेठजी ने डाँटकर पूछा।

"नहीं पिताजी! वही बात है, जो मैंने बताई थी।"

खाना समाप्त हुआ तो सेठजी ने उठकर मीरा को कहा, "बेटी मीरा! खाना खाकर मुझे मिलना, तुमसे काम है।"

विवश मीरा खाना खाकर सेठ साहब के कमरे में जा उपस्थित हुई। सेठानीजी तथा मदन भी वहाँ उपस्थित थे। मीरा को सेठजी ने कहा, "देखो मीरा! लोगों की बुद्धिमत्ता तथा मूर्खता का उत्तरदायित्व हमें अपने पर लेने की न तो आवश्यकता है, न ही इससे कुछ लाभ। प्रोफेसर धीरज क्या कहते हैं और क्या नहीं कहते, इससे तुम्हें अपना व्यवहार निश्चित नहीं करना। तुम्हें तो अपने विचार और आचार पर ही ध्यान देना है। हमने तुम्हें इस घर में सदा लड़की मानकर रखा है। तुम क्या यह ठीक नहीं समझतीं?"

"मेरे समझने से क्या होता है पिताजी!" मीरा ने विनम्र स्वर में कहा। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी मदन की भाँति सेठजी को पिताजी कहकर ही सम्बोधन करती थी। ''मदन भैया के मन में दुर्बलता आ गई थी, इससे मैं दूर हट गई। भाई बहन की निंदा नहीं सुन सकता और फिर इस निंदा में कोई प्रमाण भी तो नहीं था।''

''ठीक है। यही बात मैंने इसे कल कही थी। मेरा कहना था कि उसे प्रोफेसर साहब के मुख पर चाँटा लगाना चाहिए था। कॉलेज में कला-विज्ञान की शिक्षा भले ही मिलती हो, परन्तु आचार और विचार के विषय में तो वहाँ कुशिक्षा ही मिलती है। मैंने इसे कह दिया है कि कॉलेज जाने की आवश्यकता नहीं। आज से यह कारोबार में मेरी सहायता करेगा।''

इस कथन से और मदन के भूल स्वीकार करने से मीरा का मुरझाया हुआ चित्त पुनः प्रफुल्लित हो उठा।

इसके पश्चात् मीरा सदा की भाँति हँसती-खेलती, खुशी से उछलती-कूदती दिखाई देने लगी। घर आई कुछ स्त्रियाँ ढोलक बजाने लगीं और मीरा गाने लगी—

''नी मैंनुं देयो बधाई।
लाल मेरा होया सयाना, लगा पांदे दा कन हिलाना
पूंजन-लिखन ते तोड़ बनाना, मैं फिरदी करन सगाई।
नी मैंनुं देयो बधाई॥
लाल मेरे दा मुखड़ा सोना, चमके वांगन चन्द सलोना
उलटी सिद्दी बात करो न, मैं फिरदी करन सगाई।
नी मैंनुं देयो बधाई॥
लाल मेरा जद पड़ के आवे, वगदा नाला पया सुहावे
कक्का कबूतर सबक सुनावे, मैं फिरदी करन सगाई।
नी मैंनुं देयो बधाई॥''

इस गाने से हँसते-हँसते सबके पेट में मरोड़ पड़ने लगे। सबका आग्रह था कि एक और गीत सुनाया जाय। मीरा ने कुछ सोचकर आरम्भ कर दिया—

''मेरे वीरा ने घोड़े पीड़े ने,
लै केसर मैं तिलक लगानी आं॥
चमकन खंडे ते ढांला रुपहरी ने, चौड़े सीने ते जामे सुनहरी ने
बांवां लम्मियाँ ते जुस्से छरेरी ने, हाथ मेहंदी ते मुख विच बीड़े ने।
लै केसर मैं तिलक लगानी आं॥
मेरे वीरा ने बीड़ा उठाया ए, दर्द मन विच माँ दा आया ए
सेवा प्रेम दा अमृत पाया ए, वड्डयाँ विच वी ओ तां वडेरे ने।
लै केसर मैं तिलक लगानी आं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहम्मद असलम मीरा का परिचय प्राप्त कर बहुत प्रसन्न था। रात-भर वह इस परिचय को और घनिष्ठ करने के उपायों पर विचार करता रहा। अगले दिन ज्यों-त्यों कर सायंकाल के छह बजे का समय हुआ और वह मीरा को साथ ले जाने के लिए मीरा के मकान का दरवाज़ा खटखटाने लगा। मीरा ने दरवाज़ा खोला। वह कपड़े पहने तैयार थी। यह देख मुहम्मद असलम को बहुत खुशी हुई। उसे आज मीरा अद्वितीय सुंदरी प्रतीत हुई। उसने खुशी से फूलते हुए कहा, "तो आप तैयार हैं? चलो चलें।"

मीरा मदन की प्रतीक्षा में थी, जो उसे अपनी माता के साथ 'महात्मा बुद्ध' (Light of Asia) चित्र दिखाने ले जाने वाला था। खेल साढ़े छह बजे आरम्भ होता था और घर से छह बजे चलने का विचार था। जब असलम ने दरवाज़ा खटखटाया तो उसने समझा कि मदन आया है। उसने दरवाज़ा खोल दिया। सामने असलम को खड़ा देख उसे भाई जी के यहाँ जाना स्मरण हो आया। उसने क्षमा माँगने का भाव दिखाकर कहा, "मैं आज नहीं जा सकती। मैंने कहीं अन्यत्र जाना है।"

"कहाँ?" असलम ने पूछा।

मीरा उत्तर नहीं दे पाई थी कि मदन और सेठानीजी आ गए। उन्हें देख मीरा ने कहा, "लो, आ गए। मैं इनके साथ जा रही हूँ।"

असलम मदन को देख कुछ झेंप गया। फिर मीरा को नमस्ते कहने के लिए हाथ जोड़ बोला, "तो फिर कल सही। अच्छा मैं जाता हूँ।"

वह चला गया। मीरा मदन की माँ के साथ चल पड़ी। गली के बाहर उनकी घोड़ा-गाड़ी खड़ी थी। उसमें सवार हो वे 'निशात पिक्चर पैलेस' की ओर चल पड़े। मार्ग में मदन ने पूछा, "तुम्हारा इससे परिचय कब से है?"

"कल श्रीकान्ता के साथ मैं एक भाई साहब की गोष्ठी में गई थी। वहाँ इससे भेंट हुई थी। मुझे वहीं ले जाने के लिए यह आया था।"

"पर यह तो मुसलमान है।" मदन ने कहा।

"हाँ, आप जानते हैं इसे?"

"यह अच्छा आदमी नहीं।" मदन को अपने साथ किया गया मज़ाक याद आ गया था।

मीरा चुप रही। उसे अभी तक असलम में कुछ विशेष त्रुटि प्रतीत नहीं हुई थी। मदन की माँ, जो यह बात सुन रही थी, बोली, "तुम्हें मुसलमानों के साथ नहीं घूमना चाहिए।"

मीरा का प्रश्न था, "क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''पगली! तुम नहीं समझ सकोगी।''

बात यहीं समाप्त नहीं हुई। रात भी जन्म-दिन के उपलक्ष्य में मीरा और मीरा की माँ का खाना सेठजी के घर पर ही था। सेठानी ने बात आरम्भ कर दी, ''हिन्दू और मुसलमान दो भिन्न-भिन्न जातियाँ हैं अतः हमारा उनसे खाना-पीना या विवाह-शादी का रिश्ता नहीं होता। इससे उनसे बहुत मेलजोल ठीक नहीं।''

इस पर मीरा ने कहा, ''पर ताईजी! वे भी तो इंसान हैं। हमारी ही भाँति खाते, पहनते और रहते हैं। फिर भिन्न जाति के कैसे हो गए?''

इसका उत्तर सेठ साहब ने दिया, ''इतर जातियाँ शरीर की बनावट और खाने-पहनने से होती हैं। मनुष्यों में जातियाँ, विचारों के आधार पर होती हैं। हमारे विचार और आचार-व्यवहार मुसलमानों से सर्वथा भिन्न हैं, इससे वे और हम पृथक्-पृथक् हैं।''

''पर पिताजी! राजनीति में तो जातियाँ भौगोलिक सीमाओं से निश्चित की जाती हैं, न कि विचारों से। हिन्दू और मुसलमान एक ही देश के रहने वाले होने से एक ही जाति के हैं।''

''हम लोग,'' सेठ साहब का कहना था, ''एक ही देश, प्रांत तथा नगर में रहने को इतनी महत्ता नहीं देते, जितनी विचार-समता को। अपना-पराया जानने में विचारों में एकता देखना अधिक आवश्यक है।''

मीरा ने इसके आगे बात नहीं चलाई और मुहम्मद असलम को छोड़ दूसरे विषयों की बातें होने लगीं।

:: 9 ::

मीरा को तैयार देख मुहम्मद असलम को जितनी प्रसन्नता हुई थी, उसे मदन के साथ जाते देख उतना ही दुख भी हुआ था। उसे विश्वास था कि मदन से झगड़े ने ही मीरा को उसके समीप ला दिया था और अब उससे सुलह हो जाने से वह पुनः दूर हो गई प्रतीत होती थी।

अतएव आज वह भाई साहब की गोष्ठी में नहीं जा सका। थोड़ी देर तक बाज़ारों और सड़कों के चक्कर काट घर वापस आ गया। घर पहुँच, खिड़की में बैठ, एक किताब हाथ में लेकर पढ़ने का बहाना करने लगा। वास्तव में वह मीरा को लौटते देखना चाहता था।

इस समय घर में रहने वाले दूसरे युवक आने लग गए थे। अब्दुल गनी आया तो पर्याप्त अँधेरा छा चुका था और इस पर भी मुहम्मद असलम पढ़ने का बहाना कर रहा था। गनी ने हँसी में पूछा, ''अजी मियाँ साहब! ये उल्लू की आँखें कहाँ से पा गए हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहम्मद असलम अपनी मूर्खता के पकड़े जाने से हँस पड़ा। बोला, ''पढ़ने बैठा था कि किसी सोच में पड़ गया। इससे अपने को भूल ही गया था।''

''ओह! क्या किसी का इश्क़ सिर पर सवार हो गया है?''

मुहम्मद असलम ने किताब बंद कर दी और खिड़की में से उठ अब्दुल गनी के पीछे उसके कमरे में चला गया। अब्दुल गनी कमरे में पहुँच कपड़े बदलने में लग गया। मुहम्मद असलम वहाँ रखी कुर्सी पर बैठ गया। अब्दुल गनी ने तो इश्क़ की बात केवल हँसी में कही थी, परन्तु असलम को मन की बात कहने का बहाना मिल गया। कुर्सी पर बैठ कहने लगा, ''भाईजान! इश्क़ क्या होता है, कभी महसूस किया है आपने?''

अब्दुल गनी कोट खूँटी पर टाँगने जा रहा था। असलम का प्रश्न सुन, कोट वैसे ही पकड़े असलम की ओर देखने लगा। असलम जमीन की ओर देख रहा था। अब्दुल गनी ने कहा, ''तो यह बात है! कहाँ से चोट खा गए हो, मियाँ?''

''मैं कुछ नहीं जानता। मुझे इश्क़ का मतलब पता नहीं। मैं तो यह देख रहा हूँ कि कल से मुझे किसी की बाबत सोचने में मज़ा आता है। इसे ही इश्क़ कहते हैं क्या?''

'किसकी बाबत सोचने में मज़ा आता है?''

''एक लड़की की।''

''यह तो मैं समझ गया। पर कौन है वह लड़की?''

मुहम्मद असलम ने कमरे के बाहर झाँककर तसल्ली कर ली कि कोई दूसरा तो उसकी बात नहीं सुन रहा। तब कहने लगा, ''किसी को बताना नहीं। वह सामने वाले मकान में रहती है।''

''पर वह तो हिन्दू है।''

''तो क्या हुआ? पुण्य और फल दोनों एकदम मिलेंगे।''

''तो तुम भी एक हिन्दू को मुसलमान बनाना सवाब समझते हो? मैंने तो समझा था कि तुम कम्यूनिस्ट हो।''

इससे मुहम्मद असलम कुछ झेंप गया, पर साहस कर अपनी सफाई देने लगा, ''इकॉनामिक मसले (आर्थिक समस्याएँ) मजहब से अलहदा हैं। अब तो स्टालिन ने भी गिरजाघरों को खोल दिया है।''

''गिरजाघरों को खोलने और एक गैर-मजहब की लड़की से शादी कर उसे मजहब बदल लेने पर मजबूर करने में कतई फरक नहीं है क्या?''

''मैं उसे मजहब बदलने को नहीं कहूँगा।''

''नतीजा वही होगा। ऐसी हालत में मैं तो समझता हूँ कि उसका मजहब तबदील पहले होना चाहिए और विवाह पीछे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''क्या मुहब्बत मजहब के मातहत है ?''

''मुहब्बत एक सौदा (पागलपन) है, जो जवानी की हालत में पैदा होता है। इसे मजहब के मातहत रखने में ही भलाई है।''

''पर दोस्त! वह बहुत ही खूबसूरत है।''

''ब्याह से पहले सब लड़कियाँ ऐसी ही होती हैं। मैं तुम्हें अपनी ही बात बताता हूँ।'' इतना कहकर अब्दुल गनी ने कोट खूँटी पर लटका दिया और असलम के सामने खाट पर बैठ, अपनी शादी की कहानी सुनाने लगा, ''मेरी बीवी मेरी फूफी की लड़की है, नगीना नाम है। वह पाँच साल की ही थी कि उसकी माँ का इन्तकाल (देहांत) हो गया और फूफा ने दूसरी शादी कर ली। नगीना हमारे यहाँ आकर रहने लगी। उस वक्त वह बहुत बदसूरत मालूम होती थी। खूबसूरत तो वह बिलकुल थी ही नहीं। मैं जब बोर्डिंग हाउस में दाखिल हुआ तो वह ग्यारह साल की थी। मैं साल में दो बार घर जाया करता था। हर बार नगीना मुझे ज्यादा और ज्यादा खूबसूरत मालूम होने लगी।

''जब मैं बी. ए. का इम्तिहान देकर घर पहुँचा तो मैं उसकी खूबसूरती देख दंग रह गया। मेरे घर पहुँचने के वक्त वह मकान के सेहन में मुर्गियों को दाना डाल रही थी। उसने एक मुर्गी बगल में उठाई हुई थी। एक मुर्गी का बच्चा उसके कंधे पर बैठा हुआ था। दूसरे हाथ से वह दाना डाल रही थी। उसे देख मेरी आँखों के सामने आसमानी हूर का नक्शा खिंच गया। वह रहमत के नूर से पुर मालूम होती थी। कई लमहों तक तो मैं उसे पहचान ही न सका। अब वह बचपन वाली बदसूरत नगीना नहीं रही थी बल्कि खूबसूरती की मुजस्सम पुतली दिखाई दे रही थी।

''वह मुझे देख मुस्कराई तो मेरे दिल में एक अजीब किस्म का हौल उठा। मैं उसकी ओर बढ़ा। वह शरम से सिर पर आँचल ओढ़ भीतर भाग गई।

''तमाम दिन मैं उसकी मुर्गियों को दाना खिलाते वक्त की तसवीर को याद कर बेताब होता रहा। आखिर रात को मैंने अम्मी को कह ही दिया, ''अम्मी! अब नगीना की शादी कर दो न।''

''माँ ने मेरे मुख पर देखते हुए कहा, 'कोई लड़का भी मिले तो।'

''अब मैंने अपने मन की बात कह दी, 'लड़का तो घर में भी है।'

''माँ ने मुस्कराते हुए कहा, 'तुम्हारे वालिद से बात करूँगी।'

''नतीजा यह हुआ कि एक हफ़्ते के अंदर मेरा निकाह पढ़ा दिया गया। शादी के बाद के दो महीने इतने बदमस्ती के गुजरे कि मुझे दीन-दुनिया का होश नहीं रहा।

''मैंने रेल के दफ़्तर में नौकरी पाने के लिए अर्जी दे रखी थी। मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुलाकात के लिए बुलाया गया तो मैं नगीना को घर छोड़ यहाँ चला आया। मुझे यहाँ नौकरी मिल गई। एक महीना तक मैं घर नहीं लौट सका। जब घर गया तो नगीना को बीमार पाया। उसे हमल ठहर गया था और खाया-पिया हज़म नहीं होता था। वह सूखकर काँटा हो गई थी। साथ ही उसकी बचपन की बदसूरती फिर नमूदार हो आई थी।

"उसे बीमार देख मुझे सख्त सदमा पहुँचा। माँ ने समझाया, 'फिकर करने की ज़रूरत नहीं। ऐसा हुआ ही करता है।'

"यह दो बरस पहले की बात है। मेरे घर नगीना-जैसी बदसूरत लड़की पैदा हुई और नगीना में वह खूबसूरती, जो उस दिन मुर्गियों को दाना खिलाते वक्त देखी थी, फिर कभी नजर नहीं आई। अब वह बीमार रहती है और सिवाय इसके कि वह मेरी बेटी की माँ है, मेरे लिए और कुछ नहीं।

"देखो असलम! अगर मैं तुम्हें अपने दिल की बात बताऊँ, तो मेरी रूह नई शादी करने के लिए चीख-पुकार कर रही है; मगर मैं सोचता हूँ कि अगर हरएक औरत का यही हशर (परिणाम) होता तो फिर शादी की क्या ज़रूरत है। क्यों एक खिलती कली को मसल दिया जाए?"

मुहम्मद असलम ने काँपते हुए कहा, "बहुत खतरनाक अंजाम है। मगर क्या किया जाए, जो भी चीज़ इस्तेमाल की जाएगी, वह खराब तो होगी ही।"

"मगर मैं चाहता हूँ कि कोई ऐसी चीज़ हाथ लगे, जो कम से कम मेरी जिंदगी में तो खराब न हो।"

"सुबह तोड़े गए फूल रात तक मुरझा जाते हैं और अगले दिन फिर नए तोड़ लिये जाते हैं।"

"नए तोड़ने में तो हर्ज मालूम नहीं होता, मगर मुरझाए हुए फेंकने में दुख होता है।"

"तो उनको भी रखे रहने दीजिए।"

अब्दुल गनी ने लम्बी साँस खींच अँगूठे से हथेली को मसलते हुए कहा, "मुझे वे दिन याद आते हैं, जो शादी के फौरन बाद के थे। कितने कौल-इकरार किए थे मैंने उससे! कैसी-कैसी मुहब्बत की बातें करता था मैं! हम कहते थे कि एक ही कब्र में दफनाए जाएँगे, ताकि कयामत के दिन जब उठें, तो एक ही वक़्त उठें। कहीं ऐसा न हो कि कब्रें दूर-दूर होने से एक को मौत की नींद से जागकर दूसरे का इंतजार करना पड़े। हम जब किसी बड़े के आ जाने से मुहब्बत की बातें नहीं कर सकते थे, तो बेताब हो उठते थे। मगर अब! अब तो दोस्त, घर जाने को मेरा जी नहीं चाहता। महीनों हो जाते हैं नगीना को देखे हुए और फिर भी घर जाने की तबीयत नहीं करती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''गनी! एक बात कहूँ? नाराज़ तो न होगे?''

''नहीं।''

''मैं समझता हूँ कि तुम्हारी मुहब्बत भाभी से नहीं थी। तुम तो उसकी जवानी पर लट्टू हुए थे। वह गई तो तुम्हारी चाहत भी गई। मगर मेरी हालत कुछ दूसरी है। मैं उसे पाना नहीं चाहता। मैं उसकी कुछ खिदमत करना चाहता हूँ।''

''बस ऐन (ठीक) यही हालत मेरी थी। मैं भी यही चाहता था कि मैं उसको खुश रख सकूँ। हम सोचते थे कि जब बूढ़े हो जाएँगे और जब चलने-फिरने की ताकत ज़ायल हो जाएगी तो एक-दूसरे का मुँह देख-देख जिएँगे। मगर अफसोस बुढ़ापा आने से पहले ही मैं उसका मुँह देखने से बेज़ार हूँ।''

इतना कह अब्दुल गनी उठ खड़ा हुआ और मुहम्मद असलम को वहीं छोड़ मकान की छत पर टहलने चला गया। मुहम्मद असलम भी उठा। उसके मन में एक अजीब हलचल मच रही थी। वह सोचता था कि उसकी मुहब्बत का अंजाम भी क्या यही होगा, जो अब्दुल गनी का हुआ है? बहुत अफसोसनाक है।

:: 10 ::

माँ के आश्रम चले जाने पर मीरा मदन की माँ के घर चली गई। उसे आया देख सेठानी ने उसे रामायण सुनाने को कहा। एक घंटा रामायण सुनी। फिर सेठानी अन्य अनेक विषयों पर बातें करती रही। मीरा बी.ए. में पढ़ती थी। बी.ए. में उसके विषय इतिहास और अर्थशास्त्र थे। इससे वह सदैव देश-विदेश की अनेक बातें सेठानी को बताया करती थी। मीरा के मस्तिष्क में उस दिन की भाई साहब की गोष्ठी की बातें चक्कर काट रही थीं। इससे घूम-फिरकर बात इसी विषय पर आ गई। वह बोली, ''ताईजी! आज संसार ने प्रत्येक बात को समझने के लिए नए दृष्टिकोण अपनाए हैं। हम हिन्दू हैं। वे मुसलमान हैं। वे ईसाई हैं। वे बौद्ध हैं। ये भेदभाव व्यर्थ के हैं। वास्तव में हम सब मनुष्य हैं। हम सबका मनुष्य होने के नाते अधिकार है कि संसार में जीवित रहें। इससे भोजन, वस्त्र, मकान पाने का सबको अधिकार है। संसार की यह नई मीमांसा है। जर्मनी के एक यहूदी फिलॉसफर कार्ल मार्क्स ने इस विषय पर कई ग्रंथ लिखे हैं और दुनिया के प्रायः सभी विद्वान इसे मानते हैं।''

''बहुत पढ़ गई हो, मीरा बेटी! मनुष्य होने के नाते सबको भोजन, वस्त्र और मकान पाने का अधिकार है न? यह बात तुम्हारे 'मास्टर' को, क्या नाम बताया है, मुबारक हो। मैं तो कह देती हूँ कि मदन की बहू यदि घर का काम-काज नहीं करेगी, तो कितनी भी ऊँची मनुष्य जाति की क्यों न हो, मेरे यहाँ खाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नहीं पाएगी और देखो मीरा, कोई कुछ कहे, तुम भी ससुराल में जाओगी तो दिल लगाकर घरबार का काम-काज करना। मैं कहे देती हूँ कि तुम्हारे सास-ससुर उन विद्वान आदमियों में नहीं होंगे, जो उस मारकज़ (कार्ल मार्क्स) की बात को मानते होंगे।''

मीरा का मुख सास-ससुर की बात सुन लज्जा से झुक गया। उसने सेठानी से बात करनी व्यर्थ समझ दूसरी बात आरम्भ कर दी। वह बोली, ''ताईजी! मदन का विवाह कब करेंगी?''

''आज मदन दुकान पर गया है। छह महीने काम सीखकर जब सेठजी का हाथ बँटाने लगेगा तो शादी होगी। हमारे सिद्धांत से तो अधिकार कर्त्तव्य के अधीन हैं। अच्छा काम करने वाले के अधिकार अच्छे होते हैं। मनुष्य अथवा पशु के नाते किसी का कोई अधिकार नहीं होता।''

मीरा ने बात बदल दी और कहा, ''यह तो है ही। पर मैं तो पूछती हूँ अपनी ही जाति में करोगी या बाहर भी कर लोगी?''

''यह बात सब भगवान के अधीन है। परसों जब मदन को कॉलेज भेजना बंद किया तो मैंने सेठजी से कहा था, 'अब मदन के विवाह की बात भी होनी चाहिए।' इस पर वे बोले, 'विवाह पूर्व-जन्म के कर्मों का फल होने से भगवान के अधीन है। ऐसी बातें चाहने या करने से ही नहीं हो जातीं।'

''पर फिर भी सोचना तो आपने ही है न?''

''जब मनुष्य भगवान का आश्रय लेता है तो उसे कुछ अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं रह जाती।''

बात यहीं रह गई और फिर इधर-उधर की दूसरी बातें होती रहीं।

सायंकाल छह बजे मीरा अपने घर पर थी, जब मुहम्मद असलम ने घर का दरवाज़ा खटखटाया। उसे देख मीरा को भाई साहब के यहाँ जाना याद आ गया। अभी आने के लिए कह मीरा मुहम्मद असलम को घर के बाहर छोड़, कपड़े बदलने चली गई। जाने से पूर्व माँ को कहने गई कि वह भाईजी की गोष्ठी में जा रही है।

''अकेली?''

''नहीं। वह सामने के मकान वाले बाबू साथ हैं।''

माँ अन्यमनस्क हो खड़ी रह गई। मीरा इसे स्वीकृति मान चली गई। माँ दरवाज़ा बंद कर रसोईघर में जा रही थी कि किसी ने फिर दरवाज़ा खटखटाया। इस बार मदन था। दरवाज़ा खुला तो उसने पूछा, ''चाची! मीरा कहाँ है?''

''सामने वाले मकान के एक बाबू के साथ भाई साहब के यहाँ गई है।''

''तो मुझे देर हो गई है।'' इतना कह वह पिछले पाँव लौट गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीरा की माँ उसके साथ दरवाज़े तक आई। उसने पूछा, ''मदन! क्या बात है?''

''कुछ नहीं, चाची! मुझे साथ जाना था।''

मदन को मालूम नहीं था कि यह गोष्ठी कहाँ होती है। कुछ सोचकर उसे स्मरण हो आया कि श्रीकान्ता भी वहाँ जाती है। मीरा ने उसका नाम भी लिया था। श्रीकान्ता से उसका मेलजोल नहीं था, परन्तु वह एक प्रसिद्ध वकील की पुत्री थी। इससे उसका मकान वह जानता था। वह उसके मकान पर जाने का निश्चय कर, तांगे पर सवार हो वहाँ जा पहुँचा। कोठी की ड्योढ़ी पर पहुँच उसने चौकीदार से कहा, ''श्रीकान्ता को बुलाना है।''

उसने मदन को ध्यानपूर्वक देखकर कहा, ''यह अंदरवाला बटन दबाओ।'' मदन ने बटन दबाया। दूर कहीं घंटी बजने का शब्द हुआ। कुछ समय में एक नौकरानी आई। मदन ने अपना नाम बताया और कहा, ''बीबी श्रीकान्ता से काम है।'' नौकरानी गई तो श्रीकान्ता आ गई। उसने मदन को देख अचम्भा प्रकट करते हुए कहा, ''ओह, मदनजी! मैं तो समझ ही नहीं पाई थी कि कौन है। मैं तो स्वप्न में भी आशा नहीं कर सकती थी कि आप यहाँ आएँगे। आइए! भीतर आ जाइए।''

''नहीं जी। मैं तो केवल यह पूछने आया हूँ कि भाई साहब कहाँ गोष्ठी करते हैं?''

''क्यों? मीरा वहाँ गई है क्या?''

मदन इसका आशय समझता था। इसपर भी वह चुप रहा। श्रीकान्ता ने कुछ सोचकर कहा, ''मैं वहीं चल रही हूँ। आप भी आइए।''

वे ड्योढ़ी से बाहर निकल आए। मदन ने कहा, ''मैंने ताँगा कर रखा है। आप बैठ जाएँ।''

श्रीकान्ता पीछे की सीट पर और मदन आगे की सीट पर बैठ गया। ताँगा चल पड़ा। मार्ग में श्रीकान्ता ने कटाक्ष किया, ''तो मीरा ने बिना आपको चैन नहीं?''

मदन ने दिल कड़ा कर कहा, ''नहीं।''

''ओह! इतनी मुहब्बत है आपकी उससे?''

''जी हाँ।''

''आपका विवाह कब होगा?''

मदन ने सोचा कि इसका भ्रम दूर कर ही देना चाहिए। इससे उसने आश्चर्य का भाव दिखाते हुए कहा, ''किससे विवाह होगा? श्रीकान्ता जी! मीरा मेरी धर्म की बहन है।''

''ठीक! कॉलेज में आपकी इस बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''इसीलिए मैंने और मीरा ने कॉलेज छोड़ दिया है।''

''छोड़ दिया है!'' श्रीकान्ता ने अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा।

''हाँ; जहाँ इस प्रकार के अविश्वासी अध्यापक और विद्यार्थी हों, वहाँ क्या सीखूँगा और वे मुझे क्या सिखाएँगे?''

''खूब! खूब!'' श्रीकान्ता ने हँसी उड़ाते हुए कहा।

मदन ने कुछ उत्तर नहीं दिया। कुछ समय तक चुप रहकर मदन ने पूछा, ''यह भाई साहब क्या हैं?''

''ऑल इंडिया कम्यूनिस्ट पार्टी के कोई बड़े नेता हैं।''

''ये नित्य क्या बातें करते हैं?''

''ये कहते हैं कि पूँजीपतियों ने एक धोखे का जाल बिछा रखा है जिसे धर्म, दान, दया इत्यादि सुंदर नाम दिए जाते हैं। वह वास्तव में गरीबों को फँसा उनका रक्त चूसना ही है।''

''तो आप भी ऐसा समझती हैं?''

मदन के इस प्रश्न ने श्रीकान्ता को विचार में डाल दिया। उसने कुछ सोचकर कहा, ''मैं तो अभी समझने जाती हूँ। अभी तो मुझे उनके कथन की सत्यता पर न विश्वास है और न ही अविश्वास।''

इससे मदन चुप कर गया। और अधिक बात ताँगे में नहीं हुई। दोनों बीडन रोड पर एक विशाल मकान के सम्मुख ताँगे में से उतरे और भीतर चले गए।

:: 11 ::

मकान में घुसते ही एक विशाल कमरे में तीस-चालीस व्यक्ति बैठे दिखाई दिए। मदन और श्रीकान्ता भी कमरे के बाहर जूते उतार, भीतर बिछी सफेद चादर पर जा बैठे। सामने दीवार के साथ एक चौकी लगी थी। उस पर एक कालीन पर एक दुबले-पतले अधेड़ आयु के व्यक्ति, पीठ-पीछे एक बड़ा-सा तकिया लगाए बैठे थे। चौकी के आस-पास शेष लोग बैठे थे। मदन समझ गया कि चौकी पर बैठे सज्जन ही भाई साहब हैं। चौकी के समीप तीन-चार लड़कियाँ बैठी थीं। मीरा उनमें सबसे आगे थी। मीरा के एक ओर मुहम्मद असलम बैठा था।

भाई साहब बोल रहे थे और शेष लोग सुन रहे थे। वास्तव में भाई साहब के कहने में रस था और श्रोतागण मुग्ध हो उनके वचनों को सुन रहे थे। वे कह रहे थे, ''मैं आपको कह चुका हूँ कि यदि कोई मनुष्य अपनी मेहनत की कमाई पर ही संतोष करे तो उसके पास धन एकत्रित हो नहीं सकता। धन तब एकत्रित होता है, जब कोई दूसरे का हक़ छीनने लगता है। इस एकत्रित धन के बल पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनी लोग निर्धनों का सुख मोल ले लेते हैं। इसे मैं एक उदाहरण देकर स्पष्ट करता हूँ। एक दुकानदार है और एक उसका नौकर। दोनों दुकान खुलने के समय वहाँ आते हैं और दुकान बंद करके घर जाते हैं। शायद नौकर मालिक से अधिक मेहनत करता है। मगर नौकर को केवल एक रुपया रोज मिलता है और मालिक उसी दुकान में से दस रुपया रोज निकाल लेता है। परिणाम यह होता है कि नौकर तो जीवन-भर काम करता हुआ भी निर्धन रहता है और मालिक दस-बीस वर्षों में बीसियों दुकानों का मालिक बन जाता है और बीसियों ही दूसरे और लोगों को नौकर रख लेता है। इस प्रकार एक तो उत्तरोत्तर धनी होता जाता है और शेष सब लोग निर्धन ही बने रहते हैं।

"धनवान हुआ दुकानदार अब दूसरों के धनवान बनने में बाधा डालता है। जब कोई उसके मुकाबले में दुकान खोलता है तो वह अपने रुपये के बल से दूसरे की दुकान को पनपने नहीं देता। वह या तो दुकान में बिकने वाला सब माल खरीदकर अपने पास रख लेता है या काम करने वाले सब कारीगरों को अपने पास नौकर रख लेता है, या माल को इतने सस्ते दामों पर बेचने लग जाता है कि दूसरा दुकानदार निराश हो दिवालिया बन मैदान छोड़ भाग जाता है। धनी दुकानदार को ऐसे मुकाबले में कुछ हानि तो होती है, परन्तु जितना धन उसने एकत्रित कर लिया होता है, उसमें कुछ विशेष अंतर नहीं पड़ता....।

"यह विपुल वैभव उन नौकरों की कमाई का भाग है, जिन्हें साधारण-सा वेतन देकर दुकानदार शेष अपनी जेब में डाल लेता है। यह सब पाप है। धन एकत्रित करने वाला पापी है और वह भी पापी है, जो इसे एक स्थान पर एकत्रित होने देता है।"

प्रवचन के पश्चात् उपस्थितजन प्रश्न पूछा करते थे। आज मीरा का विचार कई प्रश्न पूछने का था। इसी कारण वह सबसे आगे जाकर बैठी थी। भाई साहब की वक्तृता समाप्त होते ही उसने पूछना आरम्भ कर दिया।

"पाप क्या है?"

"जिससे दूसरों को दुख हो।"

"यदि चोरी किया धन चोर से छीना जाय और उसे दुख हो तो यह पाप है क्या?"

"चोरी करना पाप है, इससे चोर का धन छीन लेना पुण्य हो जाएगा। जैसे दो नकार एक हुँकार के बराबर होते हैं।"

"परन्तु यदि चोर ने उस धनी के घर चोरी की हो जिसने अपने मज़दूरों का भाग एकत्रित कर लिया हो, तो उस चोर का धन छीनना कैसे पुण्य होगा? यहाँ तो तीन नकार होंगे। प्राय: चोर धनियों के यहाँ ही चोरी करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रश्न से भाई साहब चकराए। इसका उत्तर उनके पास में था या नहीं, कहा नहीं जा सकता। घबराने का कारण तो यह था कि उत्तर-प्रत्युत्तर करने का वहाँ लोगों को साहस नहीं होता था। इससे भाई साहब और अन्य उपस्थित लोगों को भी मीरा की बात पसंद नहीं आई। उन्होंने मीरा की बात को हँसी में उड़ा देने का यत्न किया। असलम ने, जो मीरा के समीप ही बैठा था, उसे बैठ जाने का संकेत किया।

मीरा इससे घबरा उठी और लज्जा से उसका मुख लाल हो गया। वह अभी और प्रश्न पूछना चाहती थी, परन्तु दूसरों को निष्प्रयोजन अपने पर हँसता देख बैठ गई। असंतोष उसके मुख पर स्पष्ट झलक रहा था। मीरा की यह दशा देख मदन उठ खड़ा हुआ। जब कुछ शांति हुई तो मदन ने कहा, ''मैं समझता हूँ कि मीरा का प्रश्न अयुक्तिसंगत नहीं है। उसका आशय यह है कि देश के नियम, समाज की प्रथा और धर्म-शास्त्र के आदेश से विपरीत कर्म पाप कहाता है। दुख-सुख का इसमें कोई प्रश्न नहीं। प्राय: सत्य बोलने, न्याय और पुण्य करने वाले को अधिक दुख होता है। समाज के नियम का उल्लंघन करने में अधिक आनंद आता है। पाप-पुण्य का नाप-तोल दुख अथवा सुख नहीं, प्रत्युत समाज, देश और शास्त्र के नियम हैं।''

इसमें कुछ उत्तर देने को नहीं था। इसमें किसी को आपत्ति भी नहीं थी। इस पर भी इस विवेचना की सराहना किसी के मुख से नहीं निकली। यदि यही बात भाई साहब कहते तो शायद श्रोतागण वाह-वाह कह उठते। भाई साहब ने इस पर अधिक टीका-टिप्पणी करने के स्थान दूसरे से कुछ पूछने का संकेत कर दिया।

अब श्रीकान्ता की बारी थी। वह उठी और पूछने लगी, ''रूस में पाप-पुण्य शब्दों का प्रयोग होता है या नहीं?''

भाई साहब का उत्तर था, ''पाप-पुण्य उन कर्मों को कहते हैं जो किसी मजहब अथवा धर्म-शास्त्र के प्रतिकूल व अनुकूल हों। रूस में मजहब की प्रतिष्ठा बहुत कम रह गई है। इसी से लोग धर्म-शास्त्र देखकर कामों को करने अथवा न करने योग्य नहीं कहते, प्रत्युत देश के नियम को देखकर कहते हैं। वहाँ प्रत्येक बात कानूनी और गैर-कानूनी दृष्टिकोण से देखी जाती है।''

श्रीकान्ता ने पूछा, ''क्या किसी देश में कानून की एक से अधिक किताबें भी हो सकती हैं?''

''उन सब किताबों को मिलाकर एक किताब ही माननी चाहिए।''

''परन्तु जहाँ कई किताबें हों और उनमें एक-दूसरे से विरोध हो तो एक किताब कैसे मान सकते हैं?''

''यह कैसे हो सकता है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
श्रीकान्ता इस बहस को आगे नहीं चला सकी, इस कारण बैठ गई; परन्तु मदन फिर उठ खड़ा हुआ। वह बोला, ''हिन्दुस्तान में ऐसा ही है। यहाँ कई पुस्तकों में लिखे कानून चलते हैं और कहीं-कहीं उनमें मतभेद भी है।''

इस पर भाई साहब ने नजर भरकर मदन की ओर देखा और कहा, ''इससे क्या होता है?''

''इससे यह होता है कि जिसे आप धर्म-शास्त्र कहते हैं, वह भी कानून की पदवी रखता है और पुण्य, पाप तथा कानूनी, गैर-कानूनी पर्यायवाचक शब्द बन जाते हैं।''

''मगर धर्म-शास्त्र में परिवर्तन नहीं हो सकता और कानून में समय और परिस्थिति के अनुकूल परिवर्तन किया जा सकता है।''

''ऐसा नहीं है! हिन्दू-धर्म में तो समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है। मनु स्मृति थी, फिर याज्ञवल्क्य स्मृति बनी। इसके बाद पाराशर स्मृति बनी। अब लगभग एक सहस्र वर्ष से हिन्दुओं के धर्म-शास्त्र में परिवर्तन नहीं हुआ। कारण यह कि हिदुंओं का अपना राज्य नहीं रहा। उनकी मति उलटे मार्ग पर ही जाती है। इसलिए कानून--जैसी महत्व की बात पर विचार करना उचित नहीं माना गया।''

''इस पर भी कानून तो बन ही रहे हैं और हिन्दू मान भी रहे हैं।'' भाई साहब ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

इस पर श्रोतागण हँस पड़े। मदन ने उस हँसी के शोर में भी कह दिया, ''दासता की विवशता के कारण।''

इस समय भाई साहब ने किसी और को प्रश्न पूछने को कह दिया।

मीरा और श्रीकान्ता दोनों पर इस गोष्ठी का प्रभाव भिन्न-भिन्न हुआ। मीरा तो कम्यूनिज्म के अधिक समीप हो गई और श्रीकान्ता का मन उस ओर से उदासीन हो गया।

वापस आते समय मीरा, असलम, श्रीकान्ता और मदन इकट्ठे लौट रहे थे। श्रीकान्ता ने भदन से कहा, ''आपने पाप-पुण्य की व्याख्या बहुत अद्‌भुत की है। आपका मतलब यह है कि जब स्वराज्य होगा और हिन्दुस्तानी स्वतंत्र रूप से विचार कर कानून बनाएँगे, तब धर्म-शास्त्र और पीनल कोड एक हो जाएँगे।''

''निस्संदेह! धर्म--शास्त्र भी तो विद्वान लोगों ने बनाए हैं।''

''पर भैया!'' मीरा ने कहा, ''तुमने तो पूछने के स्थान पर उत्तर देने आरम्भ कर दिए।''

उत्तर श्रीकान्ता ने दिया, ''जब दूसरा कोई उत्तर न दे तो क्या किया जाए। देखिए, कितने महत्व की बात हुई है। स्वराज्य-प्राप्ति पर 'पीनल कोड' और धर्म-शास्त्र एक हो जाएँगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''नहीं, स्वराज्य नहीं, जब हिन्दू राज्य होगा।'' असलम ने कहा।

इसका उत्तर मदन ने दिया, ''वास्तविक स्वराज्य और हिन्दू राज्य में अंतर नहीं होगा।''

''हिन्दू राज्य तो केवल हिन्दुओं को मान्य होगा। हम तो उसे नहीं मानेंगे।''

''चाहे उससे आपकी भलाई ही क्यों न हो रही हो?''

''हिन्दू राज्य से मुसलमानों की भलाई कैसे हो सकेगी?''

''हिन्दू राज्य के अर्थ हैं, कर्म, योग्यता और न्याय पर स्थित राज्य। यह हिन्दू राज्य, मुसलमानों, ईसाइयों, सबके हित के लिए होगा।''

''तो इसको फिर हिन्दू राज्य का नाम ही क्यों देंगे?'' मीरा ने पूछा।

''इसलिए कि हिन्दू कोई मजहब विशेष नहीं है। यह एक प्रकार की जीवन-मीमांसा है जिसमें कर्म को प्रधान माना गया है। इसमें कर्म के फल को न टलने वाला माना गया है। जिस समाज की विचारधारा ऐसी है, उसी का नाम तो न्याययुक्त राज्य के साथ लगाया जा सकता है।''

मीरा उत्तर तो नहीं दे सकी, परन्तु उसे मदन के कथन से संतोष नहीं हुआ। इसके विपरीत श्रीकान्ता को ऐसा प्रतीत हुआ कि मदन के विचार बहुत मंजे हुए हैं। असलम को श्रीकान्ता पर मदन का प्रभाव जमते देख अच्छा नहीं लग रहा था। वह समझता था कि पार्टी की एक सुंदर और पढ़ी-लिखी सदस्या वरगलाई जा रही है। अतएव मुहम्मद असलम ने मदन की हँसी उड़ाने के लिए कह दिया, ''पर आप तो भाई साहब की गोष्ठी के लिए नहीं आए थे, आप तो मीरादेवी के पीछे-पीछे आए थे न?''

मदन ने असलम का कटाक्ष स्वीकार करते हुए कहा, ''ठीक है। मैं तो इस गोष्ठी को एक 'थर्ड रेट' गोष्ठी समझता हूँ। मेरे लिए इसमें कुछ भी आकर्षण नहीं था।''

''इसमें 'थर्ड रेट' बात क्या देखी आपने?''

''यह तो एक प्रकार का दिखावा, आडम्बर-मात्र (show) था। इस गोष्ठी में भाई साहब ने कोई ऐसी बात नहीं बताई, जो श्रोतागण के लाभ की हो। भाई साहब ने जो दुकानदार और उसके नौकर का उदाहरण दिया है, वह योग्य-अयोग्य को बराबर तोलकर बताने का है। योग्य और अयोग्य (Expert and unskilled) में कितना अंतर होना चाहिए, यह तो संसार का कोई भी अर्थशास्त्री नहीं बता सकता। जितना जहाँ अंतर निश्चय किया गया है, कृत्रिम है। मसलन एक मज़दूर दो रुपये रोज पाता है और इंजीनियर बीस, तीस, पचास और कभी-कभी सहस्र रुपये दैनिक तक पाता है। यह क्यों? केवल इसलिए कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इंजीनियर की योग्यता और अनुभव की कीमत आंकना बहुत ही कठिन काम है। इस कारण यह आर्थिक असमता को दूर करने का उपाय नहीं हो सकता कि योग्य-अयोग्य को बराबर अथवा लगभग बराबर वेतन दिया जाए। इसको दूर करने के दूसरे ढंग हैं।''

इस समय सब ऐसे स्थान पर पहुँच गए थे, जहाँ से श्रीकान्ता का मार्ग पृथक होता था। मदन ने पूछा, ''आप अकेली चली जायेंगी या मैं छोड़ आऊँ?''

श्रीकान्ता और असलम हँस पड़े। श्रीकान्ता ने कहा, ''धन्यवाद, मैं अपाहिज नहीं हूँ।''

इसके बाद असलम ने जान-बूझकर कोई बात नहीं की। तीनों अपने मन में भिन्न-भिन्न बातों पर मनन कर रहे थे। जब वे अपने घर के निकट पहुँचे तो असलम फिर मिलने के लिए कहकर अपने मकान में चला गया। मदन मीरा को घर छोड़कर अपनी हवेली की ओर चला गया।

:: 12 ::

श्रीकान्ता का कम्यूनिस्ट पार्टी से, लगभग एक वर्ष से सम्बन्ध था। सबसे पहले उसकी एक सहपाठिन ललिता ने उसे पार्टी का परिचय दिया था। वहाँ उसकी मुहम्मद असलम से मित्रता हो गई। यह मित्रता धीरे-धीरे बढ़ रही थी। यहाँ तक कि एक समय श्रीकान्ता यह समझने लगी थी कि असलम उससे विवाह करने का विचार रखता है। असलम यद्यपि मुसलमान था, तो भी वेष-भूषा से हिन्दू ही प्रतीत होता था। जब श्रीकान्ता को असलम के मुसलमान होने का पता लगा, तब तक वे दोनों परस्पर प्रेम करने लगे थे। उस प्रेम के मादक प्रभाव में यद्यपि श्रीकान्ता को मुहम्मद असलम का मुसलमान होना नहीं अखरता, परन्तु तो भी वह एक बात जानता चाहती थी कि क्या असलम जन्म के साथ विचारों से भी मुसलमान है? यदि वह इस्लाम को अधिक महत्ता नहीं देता और हृदय में समाजवादी है तो विवाह-सम्बन्ध में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। इस बात का निर्णय करने के लिए एक दिन उसने असलम से पूछ ही लिया, ''देखिए मिस्टर असलम! हम पढ़े-लिखे और बालिग हैं। हम अपनी बातों में निरर्थक शब्दों का प्रयोग करें तो अत्यंत लज्जा की बात है। आप क्या कहते हैं?''

''क्या मैं मूर्ख हूँ, जो बेमतलब की बात कहूँगा?''

''आप मुझे 'डीयर' इत्यादि शब्दों का प्रयोग कर सम्बोधन करते रहते हैं। आपका ऐसे प्रयोगों से क्या प्रयोजन है?''

''ठीक वही, कान्ता डीयर! जो होना चाहिए।''

''तो आप मुझसे विवाह करना चाहते हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैं आपसे मुहब्बत करता हूँ। आपको अपनी, सिर्फ अपनी बनाना चाहता हूँ। विवाह द्वारा या व्यर्थ के झगड़े के बिना ही, यह आपकी इच्छा पर है। मुझे इसमें कोई अंतर प्रतीत नहीं होता।''

यह पहली ठेस थी, जो श्रीकान्ता को लगी। इसने उसे असलम को गहरी दृष्टि से देखने और मनन करने की प्रेरणा दी। बिना विवाह के वह उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता है। पिताजी क्या कहेंगे? भाई और माँ तो उसे बहुत ही घृणा के योग्य मानेंगे। परन्तु इसमें असलम ने श्रीकान्ता की इच्छा का पालन करने का वचन दे दिया था। इस कारण उसने अभी इस प्रश्न को वहीं छोड़ दूसरी बात पूछी, ''आप जानते हैं कि मेरे माता-पिता हिन्दू हैं।''

''हाँ जानता हूँ। भला इस शहर में कौन है, जो पं. अम्बिका प्रसाद, एडवोकेट हाईकोर्ट को नहीं जानता?''

''आप यह भी जानते हैं कि हिन्दू मुसलमान से विवाह नहीं करते?''

''हाँ, मगर क्यों? मुझे तो यह बात बादलील (युक्तिसंगत) मालूम नहीं होती।''

''इसमें युक्ति तो है। वह यह कि पति-पत्नी में विचारों की जितनी अधिक समानता हो, उतना ही अच्छा है। हिन्दू-मुसलमानों में बहुत बातों में मतभेद है। मगर अब तो लोगों के खयालात ऐसे बनते जा रहे हैं, जो हिन्दू और मुसलमानी दायरों (सीमाओं) से बाहर हैं। अब जन्म से हिन्दू और जन्म से मुसलमान भी एक-जैसे विचार रखने वाले मिल सकते हैं। इसलिए मैं यह जानना चाहती हूँ कि आप इस्लाम की हदूद (सीमाओं) से बाहर आए हैं या नहीं?''

''इस्लाम का दायरा इतना वसीअ है कि संसार के सब लोग इसमें आ सकते हैं। मैं इंसान हूँ और इस्लाम इंसानियत का एक मयार (मापदंड) है। आपने इकबाल साहब के कलाम में पढ़ा नहीं 'मुस्लिम हैं हम, वतन है सारा जहाँ हमारा।''

''नहीं, मैं यह पहली बार सुन रही हूँ। मगर देखिए, मैं आपको इतिहास की एक घटना बताती हूँ। यहाँ से चार-पाँच मील के अंतर पर कोट खोजेशाह के समीप एक दस-ग्यारह वर्ष के बालक की समाधि है। उसे मुसलमान न बनने के लिए कत्ल कर देने का दंड हुआ था। वह मुसलमान नहीं बना और उसे कत्ल कर दिया गया था। इसके विषय में आप क्या समझते हैं?''

''मैं जहाँ उस लड़के के कत्ल करने वाले को बेवकूफ समझता हूँ, वहाँ उस लड़के को भी बेवकूफ कहता हूँ। मेरे लिए मजहब कुछ भी हकीकत नहीं रखता। मैं इन दोनों किस्म के लोगों से ऊपर हूँ।''

श्रीकान्ता इस युक्ति से संतुष्ट नहीं हुई। उसने फिर पूछा, ''मान लो, कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्ख आपको कहे कि आप मुसलमान नहीं हैं, तो आप क्या कहेंगे ?''

''मैं कहूँगा, वह ठीक कहता है।''

''और अगर वह कहे कि आप इस बात की घोषणा कर दें, तो ?''

''मैं कर दूँगा।''

''ठीक है। तो मैं इस घोषणा में प्रथम बात यह समझती हूँ कि आप अपना नाम मुहम्मद असलम छोड़कर कोई ऐसा रख लें, जो साम्प्रदायिक न हो।''

''वह क्या नाम है ?''

''मुहम्मद असलम नाम का सम्बन्ध हजरत मुहम्मद से स्पष्ट प्रतीत होता है। यदि आपका नाम 'भद्रसेन' हो जाय तो आपत्ति नहीं रहेगी। 'भद्रसेन' संस्कृत भाषा का शब्द है, जो संसार-भर की सब भाषाओं की माँ समझी जाती है।''

''मैं किसी के कहने पर नाम नहीं बदल सकता।''

''परन्तु आप अभी तो कह रहे थे कि हकीकतराय ने काजी के कहने और धमकाने पर मजहब न बदलकर मूर्खता की थी।''

''यह नाम बदलना बहुत झंझट की बात है और इसकी मैं आवश्यकता नहीं समझता।''

''नाम बदलना संसार में एक प्रकार की घोषणा करना है कि आपका इस्लाम से जो जन्म से सम्बन्ध था, अब नहीं रहा।''

''क्या यह घोषणा नाम बदले बिना नहीं हो सकती ?''

''यदि होगी तो अधूरी होगी। इसका अर्थ यह होगा कि जो बात आप मुख से कहते हैं, कार्य-रूप में नहीं लाते। नाम बदलना घोषणा का क्रियात्मक अंग है।''

मुहम्मद असलम निरुत्तर हो बोला, ''प्रिय श्रीकान्ता! क्या हमारी मुहब्बत इतनी फीकी है कि उसमें इस दलीलबाजी की गुंजाइश है ?''

श्रीकान्ता यह भावुकतामय कथन सुन चुप हो गई। असलम ने उसे चुप देख अपनी बात की पुष्टि से कहना जारी रखा, ''मुहब्बत सच्ची होनी चाहिए। इसका इम्तिहान भी दिया जा सकता है। मगर इसको इतनी बाजारू चीज़ न बना दो कि इसका भाव-ताव करने लगो। देखो कान्ता! मेरे कहने का मतलब समझो और उस पर गौर करो। मैं समझता हूँ कि हमें इस मामले पर फिर कभी बातचीत करनी चाहिए।''

इस वार्तालाप के कुछ दिन पीछे ही मुहम्मद असलम की दृष्टि मीरा पर पड़ी। पश्चात् उससे परिचय हुआ और असलम को अनुभव होने लगा कि वह मीरा की दृष्टि में जँचने लगा है।

दूसरी ओर श्रीकान्ता के विचारों को दूसरी ठेस गोष्ठी में और गोष्ठी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात् मदन की बातचीत ने दी। उसका कथन था कि हिन्दू राज्य का अर्थ है, कर्म, योग्यता और न्याय पर स्थित राज्य। फिर हिन्दुत्व एक जीवन-मीमांसा है, जिसमें कर्म को प्रधान माना गया है। साथ ही उसका यह कहना कि स्वराज्य-स्थापना के पश्चात् धर्म-शास्त्र और पीनल कोड एक हो जाएँगे, एक उच्च आदर्श की बात थी। कम्यूनिस्ट की जीवन-मीमांसा इससे भिन्न थी। इस जीवन-मीमांसा का पूर्ण आधार प्रकृति और प्राकृतिक जीवन था। मदन ने अपने वार्तालाप में कहा था कि प्राकृतिक जीवन पशुपन की ओर ले जाने वाला है और हिन्दू लोग इच्छाओं और वासनाओं को, जो कि स्वाभाविक हैं, अपने अधीन कर व्यवहार करने में हित समझते हैं।

इन बातों से श्रीकान्ता, जो कम्यूनिज्म के प्रभाव से अहिन्दू होती जाती थी, पुनः हिन्दुत्व की ओर खिंच गई। कम्यूनिज्म के सम्पर्क से जो कुछ उसने एक वर्ष में सीखा था, वह एक दिन की टक्कर से चूर-चूर हो नष्ट-भ्रष्ट हो गया।

:: 13 ::

मीरा नित्य भाई साहब की गोष्ठी में जाने लगी। मदन भी जब समय मिलता, साथ जाता था। असलम मीरा को नित्य मिलने लगा। इस सबका परिणाम यह हुआ कि मीरा दिन-प्रतिदिन कम्यूनिज्म की ओर झुकने लगी और असलम मीरा से अधिकाधिक प्रेम करने लगा। उसे मीरा, श्रीकान्ता से, सर्वथा भिन्न प्रकृति की प्रतीत हुई। मीरा भावुकता से ओतप्रोत थी। उसे युक्ति इतनी प्रेरित नहीं करती थी, जितनी मन की भावना। इस कारण जब उसे यह बतलाया गया कि निर्धनों के सब कष्टों का कारण धनी-मानी लोग हैं और जब उसे गरीब मज़दूरों के गंदे क्वार्टर दिखलाए गए तो वह निर्धनों का पक्ष लेने के लिए उद्यत हो गई। उसके लिए अब अधिक युक्ति करने की बात नहीं रही थी। मदन से उसका सम्बन्ध भावों का था। अब इन भावों से भी अधिक प्रबल भाव अर्थात् पूँजीपतियों के पंजे से श्रम-जीवियों को बचाना, आ विद्यमान हुआ। मदन से उसका व्यवहार शिथिल हो गया।

एक दिन उसे पता लगा कि असलम बिना बाप का बेटा है। बताने वाले ने बताया कि वह एक काश्मीरी हॉजी (नाविक) की लड़की का लड़का है। उसके पिता का नाम कोई नहीं जानता। जब उसकी माँ युवा हुई तो किसी सैलानी की झपेट में आ गई और मुहम्मद असलम का जन्म हो गया। उसका जन्म होते ही उसकी माँ का देहांत हो गया और उसके नाना ने उसे पाल--पोसकर बड़ा किया। जब वह ग्यारह वर्ष का था तो एक रूसी सौदागर ने, जो कि काश्मीर में भ्रमणार्थ आया हुआ था और उसके नाना के नौका--गृह में ठहरा था, उसे नौकर रख लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अपने साथ ले गया। उसकी नौकरी में असलम पढ़-लिखकर योग्य हुआ तो उसे कम्यूनिज्म का शौक सवार हो गया और वह पार्टी का सदस्य बन कार्य करने के लिए लाहौर आ गया। यहाँ आए उसे लगभग दो वर्ष हो चुके थे।

इस वृत्तांत के सुनने से मीरा के मन में ग्लानि नहीं हुई, प्रत्युत वह असलम को सम्मान के भाव से देखने लगी। भावुकता किसी युक्ति की भित्ति पर खड़ी नहीं होती।

इसके विपरीत श्रीकान्ता उस दिन के मदन के वार्तालाप के पश्चात् फिर कभी गोष्ठी में नहीं गई। उसके लिए यह नीरस हो गई। ज्यों-ज्यों वह मदन की बातों पर विचार करती थी, उसके मन में उससे मिलने की लालसा और प्रबल होती जाती थी। मदन अब कॉलेज नहीं जाता था, अत: वहाँ मेल होना असम्भव था। एक दिन वह अपने मन की इच्छा को रोक नहीं सकी। उसने विचार किया कि मीरा को मिलने के बहाने उससे मिला जा सकता है। इसलिए कॉलेज जाने के समय वह मीरा के घर जा पहुँची।

मीरा की माँ महिला आश्रम जाने के लिए घर से निकली ही थी कि श्रीकान्ता पहुँच गई। उसने पूछा, "चाचीजी! मीरा घर पर है?"

"है बेटी! सेठानीजी के यहाँ जाने को तैयार हो रही है। आओ, भीतर आ जाओ।"

मीरा को स्वप्न में भी विचार नहीं आया था कि श्रीकान्ता कभी उससे मिलने उसके घर भी आ सकती है। इससे विस्मय में डूबी वह छत से उतरी और श्रीकान्ता के सामने आ हैरानी में पूछने लगी, "अरे, आज कॉलेज नहीं गई क्या?"

"तुम्हारे लिए यह विस्मय करने की बात नहीं, मीरा!"

"नहीं, परन्तु हमारे-जैसे गरीबों के घर आना तो है न?"

"हट!" श्रीकान्ता ने मीरा की बाँह-में-बाँह डालते हुए कहा, "बैठने को नहीं कहोगी, मीरा?"

मीरा कुछ लज्जित हुई और बोली, "आओ, ऊपर आ जाओ। भोजन करोगी।"

"नहीं, अभी भोजन करके आई हूँ।"

मीरा उसे ऊपर की छत पर अपने कमरे में ले गई। फर्श पर दरी बिछी थी और उस पर सफेद चादर। एक ओर सितार रखी थी, दूसरी ओर एक डैस्क और उस पर लिखने का सामान था। मीरा ने कमरे में प्रवेश करने से पूर्व श्रीकान्ता को जूता उतारने को कहा, "हमारे यहाँ मेज-कुर्सी तो है नहीं। इसी पर बैठना और इसी पर सोना होता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकान्ता ने सैंडल उतार दिए और डैस्क के पास जा बैठी और मीरा से, जो उसके सम्मुख बैठ गई थी, पूछने लगी, ''दिन-भर क्या करती रहती हो, मीरा? कॉलेज की पढ़ाई तो समाप्त है न?''

''हाँ! प्रातः उठना, स्नान करना, पश्चात् सितार पर एक-आध घंटा अभ्यास करना। पीछे भोजन तैयार करना। ग्यारह बजे माँ भोजन कर आश्रम चली जाती हैं और मैं मदनजी के घर। सायं चार बजे माँ लौट आती हैं। मैं भी घर लौट आती हूँ। कुछ जलपान किया और कम्यूनिस्ट पार्टी में चली जाती हूँ। वहाँ से आते-आते प्रायः आठ बज जाते हैं। आकर भोजन किया और फिर पढ़ते-पढ़ते यहीं सो जाती हूँ।''

''मदनजी अब कम मिलते होंगे?'' श्रीकान्ता ने अपने मन की बात पूछी।

''नहीं तो। प्रायः नित्य मिलते हैं। वे जब दोपहर का खाना खाने घर आते हैं तो खाना मैं ही खिलाती हूँ।''

''तुम खिलाती हो! क्यों?''

''जब तक भाभी न आ जाय, तब तक यह काम माँ अथवा बहन का ही होता है।''

''ठीक,'' श्रीकान्ता को मीरा का धर्म-बहन होना स्मरण हो आया। ''तो आज भी जाओगी। कहीं भाईजी भूखे ही न रह जाएँ?''

''ऐसी बात नहीं। ताईजी जो वहाँ हैं। देखो श्रीकान्ता! मैं तुम्हें अपने मन की बात बताती हूँ। जब से सोशियलिज़्म (समाजवाद) का अध्ययन करने लगी हूँ, मुझे धनी लोगों से घृणा होती जाती है, परन्तु मदनजी के माता-पिता की बात विलक्षण प्रतीत होती है। इनका व्यवहार इतना सुहृदयतापूर्ण है कि मुझे वहाँ जाकर समाजवाद की बातें विस्मरण ही हो जाती हैं और फिर वहाँ दान-दक्षिणा इतनी होती है कि उनका धनाढ्य होना कुछ अखरता नहीं।''

''कहाँ दान करते हैं?''

''मदनजी बता रहे थे कि पिछले वर्ष पाँच लाख रुपया दानखाते में गया है। सैकड़ों ब्राह्मण और निर्धन विद्यार्थियों को छात्र-वृत्ति मिलती है। दस के लगभग तीर्थ-स्थानों पर धर्मशालाएँ हैं। एक 'महिला-अपाहिज आश्रम' है और ऋषिकेश में संस्कृत पाठशाला है। सबसे बड़ी बात यह है कि दान देते समय सेठजी ने कभी यह विचार नहीं किया कि दान से उनको हानि होगी या लाभ। एक दिन मैंने उनसे कह दिया, 'हमारी पार्टी को पुस्तकालय खोलने की आवश्यकता है।' पूछने लगे, 'क्या होता है वहाँ?' मैंने बताया, 'हम मज़दूरों का संगठन करते हैं, जिससे वे लोग अपने अधिकार पहिचानें और फिर उन्हें प्राप्त करने का यत्न करें।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'इस पर उन्होंने पाँच हज़ार का चेक काट दिया। मदनजी ने कहा भी कि मीरा का अभिप्राय कम्यूनिस्ट पार्टी से है, जो धनिकों की घोर शत्रु है। सेठजी ने सहज-स्वभाव से कह दिया, 'अज्ञानवश की गई शत्रुता मिटाने का उपाय अज्ञान दूर करना है, जिसके लिए पुस्तकालय से उत्तम साधन और क्या हो सकता है? मीरा बेटी! यह लो और फिर कभी विशेष आवश्यकता आन पड़े तो बताना।''

श्रीकान्ता को सेठजी की बातों से जहाँ संतोष हो रहा था, वहाँ अचम्भा भी। बातों-ही-बातों में असलम के सम्बन्ध में बातें होने लगीं। मीरा ने, असलम के जन्म तथा शिक्षा के विषय में जो कुछ सुना था, बताया। इससे तो श्रीकान्ता के मन में उसके प्रति जो कुछ थोड़ा-सा भी अनुराग रह गया था, छूट गया। उसे अब यह स्मरण हो आया कि वह उससे विवाह की अनुमति देने वाली थी, तो काँप उठी।

इसके विपरीत मीरा ने कहा, ''इतनी कठिनाई और मुसीबत के वातावरण में पलकर भी वह इतनी ऊँची पदवी पर पहुँचा है, यह केवल उसकी विशेष प्रतिभा के कारण ही हो सकता है। ऐसी परिस्थितियों में ही तो मनुष्य की परीक्षा होती है।''

इसी प्रकार बातें होती रहीं। मीरा आज मदन के घर नहीं गई और इससे खाना खाने के पश्चात् मदन मीरा के घर आया। मीरा इसकी आशा कर रही थी। पहले भी जब वह उसके घर नहीं जा पाती थी, तो वह मीरा को देखने इधर आया करता था।

आज श्रीकान्ता को मीरा के यहाँ आई देख वह विस्मय में पूछने लगा, ''यह कैसे हुआ?''

मदन, मीरा और श्रीकान्ता के सम्मुख, डैस्क की दूसरी ओर बैठ गया। श्रीकान्ता ने मुस्कराते हुए कहा, ''क्यों, क्या हुआ है?''

''चाँद भूमि पर उतर आया है।''

श्रीकान्ता का मुख लज्जा से लाल हो उठा। इस पर भी उसने बात बना कह दी, ''कमलालया भी तो कमल के लोभ में कीचड़ में आकर बस जाती है।''

''ठीक है, एवमस्तु।'' मदन ने कहा। इस पर तीनों हँसने लगे।

मदन आज सदा से काफी अधिक समय तक बैठा रहा। पहले जब मीरा अकेली होती थी; तो दो-चार क्षण बैठ और कभी तो नीचे से ही कुशल समाचार पूछ चला जाया करता था। आज श्रीकान्ता के कारण तीन घंटे तक बातें होती रहीं। अनेकानेक विषयों पर बातें हुईं। सायं तीन बजे श्रीकान्ता और मदन, दोनों घर से निकले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदन से आज की भेंट ने श्रीकान्ता के मन में उथल-पुथल मचा दी थी। उसे मदन से अनुराग होने लगा था। जब घर पहुँची तो माँ ने पूछा, "आज कॉलेज नहीं गईं? तुम्हारे पढ़ने की किताबें मेज़ पर तैयार पड़ी थीं, परन्तु तुम नहीं थीं।"

"मैं आज कॉलेज नहीं गई।"

"क्यों?"

"जी नहीं किया।"

"क्या बात है, कान्ता?"

"कुछ नहीं, माँ!"

यह कह श्रीकान्ता अपने कमरे में चली गई। उस रात उसे भली-भाँति नींद नहीं आई। अगले दिन रतजगे के कारण उसकी आँखें लाल हो रही थीं। कॉलेज तो गई पर समय से पहले ही लौट आई और आकर सो गई।

सायंकाल उसकी इच्छा मदन से पुनः मिलने की हुई, परन्तु कोई बहाना नहीं ढूँढ सकी। इससे मन की चंचलता मिटाने के लिए 'माल' पर घूमने चली गई। किंतु आज उसे घूमना भी रुचिकर प्रतीत नहीं हुआ। वह लौटने ही वाली थी कि उसे मीरा की आवाज़ सुनाई दी। वह उसे ही बुला रही थी। श्रीकान्ता ने घूमकर देखा। मीरा असलम के साथ आ रही थी। वह रुक गई। समीप पहुँच मीरा और असलम ने हाथ जोड़ नमस्ते कही। श्रीकान्ता ने भी उत्तर दिया। मीरा ने उसकी बाँह-में-बाँह डालकर पूछा, "सखी कान्ता! किधर जा रही हो?"

"ऐसे ही घूमने को चित्त कर रहा था, परन्तु यहाँ भी कुछ आकर्षण न पा लौटने की सोच रही थी।"

"चलो हमारे साथ। हम चिड़ियाघर देखने जा रहे हैं।"

"क्या है आज? मनुष्यों की बातें छोड़ जानवरों को देखने चल पड़ी हो?"

असलम हँस पड़ा। श्रीकान्ता भी कुछ हँसी। असलम ने कहा, "मनुष्यों से जानवर कई बातों में अच्छे होते हैं। वे प्रीत ही नहीं लगाते, जिससे बेवफाई का दोष ही न लग सके। मनुष्य तो प्रीत करता है और फिर भूल जाता है और द्वेष करता है।"

श्रीकान्ता इसका अर्थ अपने पर लगाकर क्रोध से लाल हो गई। एक बार उसके मन में तो आया कि उसे दो-चार जली-कटी सुना दे, परन्तु फिर अपने को काबू में कर चुप कर रही। वह असलम के प्रति अपना प्रेम और फिर अब घृणा होना मीरा को बताना तो चाहती थी, परन्तु इसके लिए अनुकूल अवसर नहीं पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी। उसने केवल इतना कहा, ''इस पर भी मनुष्य इतर जीव-जंतुओं से अधिक योग्य और सुखी है।''

''यही तो देखना है।'' मीरा ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

''परन्तु आँखें होने से ही तो देखा जा सकेगा।''

श्रीकान्ता लंबे वाद-विवाद में पड़ना नहीं चाहती थी। वह चाहती थी कि मीरा को असलम की संगति में न रहने दे और उसे अपनी आपबीती बतलाकर सचेत कर दे। इससे उसने मीरा से कहा, ''मेरे घर नहीं आओगी, मीरा? आओ, माताजी तुमसे मिलने को कहती थीं।''

''वे मुझे कैसे जानती हैं?''

''आपकी माताजी से परिचित हैं। आश्रम में रामायण सुन चुकी हैं।''

''तो कभी आऊँगी।''

''अभी क्यों नहीं?''

''नहीं, अभी एक घंटे में हमने पार्टी के अधिवेशन में जाना है।''

श्रीकान्ता को जहाँ असलम से अपने छुटकारा पाने की खुशी थी, वहाँ मीरा को उसी स्थिति में फँसते देख चिंता भी होने लगी थी। उसने मदन को इस विषय में सचेत कर देने का निश्चय कर लिया। अत: वह अगले दिन फिर मीरा के घर गई, परन्तु घर ताला लगा था। मीरा घर पर नहीं थी। श्रीकान्ता मदन को तो मिल नहीं सकी, हाँ उसका कॉलेज से फिर नागा हो गया।

इस प्रकार जल्दी-जल्दी कॉलेज से श्रीकान्ता को नागे करते देख उसकी माँ चिंतित हो उठी और उसी सायंकाल उसने इसकी सूचना श्रीकान्ता के पिता पं. अम्बिकाप्रसाद को दे दी।

:: 15 ::

श्री अम्बिकाप्रसाद लाहौर के एक प्रसिद्ध वकील थे। केवल हाई-कोर्ट का काम लेते थे और दस हज़ार रुपया मासिक तक सुगमता से बना लेते थे। दो हज़ार रुपया एक दिन की उपस्थिति का लेते थे और मास में पाँच-छह दिन से अधिक पेशियाँ नहीं करते थे।

पं. अम्बिकाप्रसाद का एक लड़का था। उसका नाम श्रीनाथ था। उसने भी वकालत पास की हुई थी, परन्तु वह मुकद्दमे नहीं लेता था। उसने अपना एक मुद्रणालय खोल रखा था और वहाँ से 'कानूनी रिपोर्ट' नामक पत्रिका निकालता था। जब पं. अम्बिकाप्रसाद को उनकी धर्म-पत्नी ने श्रीकान्ता के आलस्य और कॉलेज न जाने की बात बताई तो वे कहने लगे, ''लड़की सयानी हो गई है। अब इसका विवाह हो जाना चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात् कुछ सोचकर बोले, ''अच्छी बात है। मैं प्रबंध करूँगा।''

उसी सायंकाल वर्कील साहब ने श्रीनाथ को बुलाकर कहा, ''देखो श्रीनाथ! श्रीकान्ता का जीवन-क्रम अव्यवस्थित हो रहा है। तुम्हें कारण ढूँढना चाहिए। मैं समझता हूँ किसी लड़के से प्रेम करने लगी है।''

''हो सकता है,'' श्रीनाथ ने उत्तर में कहा, ''मैं जानने का यत्न करूँगा। यदि कोई लड़का इसमें कारण हुआ तो पता करूँगा कि वह कौन है।''

श्रीनाथ का विवाह हो चुका था। उसकी पत्नी निर्मला एक निर्धन परिवार की लड़की थी और केवल हिन्दी प्रभाकर तथा अंग्रेजी मैट्रिक पढ़ी थी। निर्मला का पिता नगर कांग्रेस कमेटी का प्रधान था। दो बार जेल-यात्रा कर चुका था। निर्मला के पिता ने उसका लालन-पालन अपने ही विचारों और मान्यताओं के अनुसार किया था, अतः वह अपने पिता के-से विचारों और आचार--व्यवहार को लेकर ससुराल आई थी। वहाँ चर्खा कातती थी और कांग्रेस के जलसे-जुलूसों में सम्मिलित होती रहती थी। वह मोटा खद्दर पहनती थी। यद्यपि ससुराल वालों से उसके विचार नहीं मिलते थे, इस पर भी परस्पर व्यवहार में विषमता नहीं आती थी।

आज श्रीनाथ ने पिताजी का आदेश बता निर्मला से सहायता माँगी। निर्मला ने बताया कि श्रीकान्ता कम्यूनिस्ट पार्टी की सदस्या है। एक कॉमरेड असलम के साथ वह कई बार जाती देखी गई है। उसने भी कुछ दिनों से श्रीकान्ता के मुख पर अनिश्चय झलकता देखा था। इसकी चर्चा भी उसने अपने पति से की।

''उसके कॉलेज की कुछ लड़कियाँ आती रहती हैं। सबसे अधिक मेल-जोल ललिता नाम की एक लड़की से था। परन्तु कई मास से वह नहीं आई। ललिता, अनारकली बाज़ार, चंगर मुहल्ला में पैसा अखबार बिल्डिंग के सामने एक मकान में रहती है।''

ललिता का पता सुन श्रीनाथ को अपने मुद्रणालय के एक 'मशीन--मैन' की याद आई। वह भी कॉमरेड था और पैसा अखबार बिल्डिंग के सामने रहता था। उससे शेष पता करने के विचार से श्रीनाथ ने अगले दिन 'मशीन-मैन' खुशीराम को बुलाकर पूछा, ''तुम ललिता देवी को जानते हो?''

''जी हाँ; मेरी बहन है।''

''विवाह हो गया है?''

''जी नहीं।''

''वह भी कॉमरेड है क्या?''

''जी हाँ; हमारा पूर्ण परिवार कम्यूनिस्ट है।''

''माता-पिता भी?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''पिता नहीं हैं। माँ भी पार्टी की सदस्या हैं।''

''श्रीकान्ता तुम्हारे घर जाती रहती है क्या?''

खुशीराम गम्भीर विचार में पड़ गया। उसे डर लग रहा था कि कुछ गड़बड़ न हो गई हो। श्रीनाथ उसके मुख का उतार-चढ़ाव देखता रहा। आखिर उसने बताया, ''ललिता की सहेली हैं। पार्टी में जाती थीं, परन्तु सदस्या नहीं बनीं। उन्हीं के कारण ललिता का विवाह, जिससे होना था, रुक गया। फिर ललिता और उनमें झगड़ा हो गया और जहाँ तक मैं जानता हूँ, अब उनमें बोलचाल भी नहीं है।''

''वह कौन था, जिससे ललिता का विवाह होना था?''

''कॉमरेड असलम है। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति का आदमी है।''

''वह कहाँ रहता है?''

''परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीकान्ता देवी और उसका भी झगड़ा हो गया है। श्रीकान्ता देवी आजकल पार्टी में नहीं जातीं।''

इतना कुछ जानकर भी श्रीनाथ को कुछ पता नहीं मिला। श्रीनाथ खुशीराम से पता लेकर असलम से मिला। उसने बताया कि श्रीकान्ता सदस्य बनने के लिए तैयार नहीं हो सकी। अब तो कई सप्ताह से वह पार्टी में गई ही नहीं।

इस प्रयत्न से भी किसी परिणाम पर पहुँचने में असफल हो श्रीनाथ ने श्रीकान्ता का पीछा करने का विचार किया।

कई दिन तक श्रीकान्ता कॉलेज के अतिरिक्त कहीं नहीं गई। श्रीनाथ अप्रकट रहकर श्रीकान्ता को देखता रहा। वह उसकी देख-रेख छोड़ने वाला था कि एक दिन श्रीकान्ता कॉलेज से लौटते समय घर जाने के स्थान अनारकली बाज़ार में कुछ खरीदने को गई। मार्ग में एक युवक से मिली तो उससे कुछ देर तक बातचीत कर, उसी की घोड़ागाड़ी में सवार हो उसके साथ चली गई।

वह युवक कपड़े की एक दुकान से निकला था। श्रीनाथ उस दुकान पर पहुँचकर पूछने लगा, ''यह घोड़ागाड़ी में कौन साहब थे?''

दुकानदार ने बताया, ''सेठ घनश्यामदास, रेशम की कोठी वाले, के सुपुत्र हैं। दुकान के काम से आए थे।''

श्रीनाथ ने आज की बात पिताजी से बताई तो उन्होंने सेठ घनश्यामदास के विषय में जानने के लिए कहा। श्रीनाथ अगले दिन सेठ साहब की दुकान पर जा पहुँचा। वही युवक, जिसके साथ श्रीकान्ता पिछले दिन घोड़ागाड़ी में सवार हो गई थी, वहाँ बैठा था। सेठ साहब वहाँ दुकान पर नहीं थे।

श्रीनाथ ने रेशमी माल खरीदने का बहाना कर बातचीत आरम्भ कर दी, ''यह माल कहाँ का है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''भागलपुर का।''

''यह तिल्ले का काम तो वहाँ नहीं होता?''

''इस पर काम तो हमारे कारखाने में किया गया है। हमारे पास बनारस में किए काम की साड़ियाँ भी हैं।''

''दिखाइए तो।''

मदन ने एक-से-एक बढ़िया साड़ी निकालकर दिखलानी आरम्भ कीं। श्रीनाथ माल देखकर चकाचौंध रह गया। उसने प्रशंसा से कहा, ''यह तो बहुत बढ़िया कढ़ाई है।''

''जी हाँ, लाहौर में इतना अच्छा काम करने वाले कारीगर नहीं मिलते।''

''एक कारीगर कितना रोज कमा लेता होगा?''

''यहाँ तो हम दो रुपये से पाँच रुपये रोज तक देते हैं।''

''कितने दिन में साड़ी तैयार हो जाती हैं?''

''चार से पाँच दिन में।''

''क्या कारीगर इससे संतुष्ट हैं?''

''इससे कम लेकर संतुष्ट रहते थे परन्तु आज तो संतोष का नाम ही नहीं है।''

''क्यों?''

''संतोष रुपये-पैसे से नहीं होता। यह तो मन की भावना पर निर्भर है। मन का संतोष पाश्चात्य विचार-धाराओं ने मिटा दिया है।''

''यह भी तो कहा जा सकता है कि इन लोगों को ज्ञान हो गया है कि वे भी मनुष्य हैं और इनको भी सफाई से रहना है; अच्छा खाना और पहनना है और यह बिना पैसा अधिक पाए नहीं हो सकता।''

''यह बात पुस्तकों में मैंने भी पढ़ी थी, परन्तु व्यवहार में इससे उलट देखा है।''

''आपने पढ़ी थी? क्षमा करें मुझे मेरी उत्सुकता पर। आप कहाँ तक पढ़े हैं?''

''मैं गवर्नमेंट कॉलेज में फोर्थ ईयर में पढ़ता हूँ....यह कहिए कि पढ़ता था।''

''पढ़ते हैं? पढ़ते थे?'' हलकी हँसी हँसते हुए श्रीनाथ ने पूछा, ''मैं नहीं समझा।''

''जी हाँ, मैं अर्थशास्त्र का विद्यार्थी था। अब पढ़ना छोड़ दिया है।''

''कब से?''

''तीन मास हो गए हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीनाथ समझ गया कि श्रीकान्ता का सहपाठी है। इससे अधिक जानने के लिए पूछने लगा, ''आपने क्या व्यवहार देखा है इन गरीब कारीगरों का, जो आपको पसंद नहीं?''

''मेरे पसंद या नापसंद का प्रश्न नहीं।'' मदन ने ध्यान से ग्राहक के मुख पर देखते हुए कहा, ''मैं तो यह कह रहा था कि संतोष रुपये-पैसे से नहीं होता। न ही सफाई, कपड़े और मकान का इन बातों से अधिक सम्बन्ध है। हमारा एक अहाता है। वहाँ हमारे कारीगर रहते हैं। हम किराया नहीं लेते। पाँच रुपये रोज लेने वाले मुसलमान के घर और उसके रहन-सहन का मुकाबला हमारे चपरासी श्रीपति, जो चालीस रुपया महावार लेता है, के रहन-सहन से करें तो आपको विदित हो जाएगा। श्रीपति प्रातः उठ, स्नान इत्यादि कर रामायण का पाठ करता है। उसकी स्त्री घर को गोबर से लीप-पोतकर साफ कर खाना बनाती है। श्रीपति नौकरी करने दुकान पर आता है और उसका लड़का पढ़ने स्कूल चला जाता है। घर में गाय रखी है, जिसका दूध अपने बच्चे के लिए रख, शेष हमारे पास बेच देते हैं। स्त्री गाय की सेवा-सुश्रूषा करती है। मक्खन हम खाते हैं, छाछ वह ले जाती है। वह संतुष्ट है। वह देखिए दरवाज़े पर बैठा सुपारी चबा रहा है।

''उसी अहाते में दूसरी ओर गुलामनबी हमारा सबसे अच्छा कारीगर रहता है। पाँच रुपया रोज लेता है। कॉमरेड है; पार्टी की सभा में सदैव जाता है। हमारे कारीगरों की यूनियन का सदर है। कभी-कभी शराब पीता है। दो बीवियाँ हैं और वे सदैव लड़ती रहती हैं। पहली बीवी का एक लड़का है। वह भी हमारे कारखाने में दो रुपया रोज पर नौकर है, मगर अपने बाप को कुछ नहीं देता, सिनेमा और होटल में सब खर्च कर देता है।

''गुलामनबी के घर में जाइए तो कोने-कोने में पड़ी हड्डियों और अंडों के छिलकों की सड़ांध से नाक सड़ने लगती है। घर की सफाई कभी छह महीने में एक बार होती है। वह भी हम अहाते की सफेदी कराने के समय होली-दिवाली पर करवाते हैं। कपड़े गंदे रहते हैं। प्रायः फटे रहते हैं। जिस दिन घर पर बीवियों में झगड़ा होता है, यहाँ बाप-बेटे में झगड़ा हो जाता है। दोनों कुछ काम नहीं कर सकते और हमारे यहाँ उनकी गैरहाजिरी हो जाती है। आज दोनों लड़ते-लड़ते कारखाने से चले गए हैं। एक तो शायद इस समय सिनेमा देख रहा होगा और दूसरा ज़रूर शराबखाने में होगा।''

श्रीनाथ ने बात बदल दी। वह कहने लगा, ''मेरी बहन के विवाह का प्रबंध हो रहा है। उसके दहेज के लिए हमें इक्कीस साड़ियाँ चाहिए। साथ ही ब्लाउजों के लिए इक्कीस टुकड़े चाहिएँ। दस सलवार-कुर्ते और दुपट्टों के सूट के लिए भी कपड़ा चाहिए। मैं चाहता हूँ कि सब भिन्न-भिन्न नमूने के हों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिन्न-भिन्न प्रकार के कपड़े और रंग के हों। मैं समझता हूँ कि आजकल के फैशनों का आपको ज्ञान है ही, आप चुनाव कर दें।''

''लड़की या लड़की की माता यदि आकर चुन लेतीं तो बहुत अच्छा रहता। कारण यह है कि फैशन और पसंद अपनी-अपनी होती है।''

''उनका आना बहुत कठिन है। माताजी तो फैशन जानती ही नहीं। उनका चुनाव आज से तीस वर्ष पहले का होगा और लड़की तो कॉलेज में पढ़ती है, परन्तु....मैं समझता हूँ कि वह नहीं आएगी।''

''कॉलेज में पढ़ती है और नहीं आएगी? विचित्र बात है।''

''हाँ, कुछ ऐसा ही है। पढ़ती तो गवर्नमेंट कॉलेज में ही है, परन्तु उसे आने की फुरसत ही नहीं। कभी कह देती है, 'पढ़ाई का जोर है, मेरा दिमाग काम नहीं करता' और कभी कहती है, 'भैया! जो कुछ भी ला दोगे मुझे स्वीकार है'।''

''विचित्र लड़की है। कौन सी श्रेणी में पढ़ती है?''

यही बताने के लिए तो श्रीनाथ ने इतनी भूमिका बाँधी थी। उसने कह दिया, ''यदि सचमुच आप भी उसी कॉलेज में पढ़ते रहे हैं, तो आप उसे जानते होंगे। फोर्थ ईयर में इकॉनामिक्स-हिस्ट्री पढ़ती हैं। नाम है....'' श्रीनाथ ने कुछ ठहरकर और मदन के मुख को ध्यान से देखते हुए कहा, ''श्रीकान्ता।''

मदन की हँसी निकल गई। श्रीनाथ को इससे उलटे व्यवहार की आशा थी। वह समझता था कि यह युवक श्रीकान्ता के विवाह की बात सुन उदास हो पूछेगा कि उसका विवाह कहाँ हो रहा है; परन्तु मदन ने तो हँसते हुए कहा, ''उसकी पसंद को मैं जानता हूँ और यदि आप उसे इस दुकान का नाम बताएँ तो उसे यहाँ आकर चुनाव करने में संकोच नहीं होना चाहिए। फिर यदि आप कहें तो मैं जितने प्रकार का माल चाहें, आपको घर ले जाकर पसंद करवाने के लिए दे सकता हूँ।''

''यह ठीक है,'' श्रीनाथ ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, ''आप अच्छे-अच्छे नमूने निकाल रखें। मैं कल आऊँगा और फिर ले जाऊँगा।''

इतना कह वह वहाँ से चल दिया। मदन के अलिप्त भाव को देख उसे मन-ही-मन विस्मय हो रहा था। घर पहुँच उसने सब बात अपने पिता से कही। पं. अम्बिकाप्रसाद ने कहा, ''यह मदन या तो अति धूर्त है या अत्यंत सरल-चित्त प्रतीत होता है।''

''परन्तु पिताजी!'' श्रीनाथ ने कहा, ''शायद श्रीकान्ता के विषय में हमारी धारणा ही गलत हो। उसका दो दिन कॉलेज न जाना एक साधारण घटना-मात्र भी हो सकती है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकान्ता मदन से मिलने का बहाना कई दिन तक ढूँढती रही और अंत में एक दिन कॉलेज से आते समय अनारकली बाज़ार में मदन को कपड़े की एक दुकान में खड़ा देख वहाँ जा पहुँची। नमस्ते हुई और जब मदन ने पूछा, ''कुछ खरीदना है क्या?'' तो बोली, ''नहीं, आपको खड़ा देख चली आई हूँ।''

मदन अपना काम शीघ्र समाप्त कर बाहर चला आया और घोड़ा-गाड़ी में, जिसमें वह वहाँ आया था, दोनों बैठ चल पड़े। गाड़ी में बैठ मदन ने पूछा, ''किधर चलिएगा?''

''आपसे कुछ बातचीत करनी है। कई दिन से अवसर देख रही थी। यदि आज कुछ समय के लिए अवकाश हो तो हमारे घर आइए।''

''आपके घर? नहीं, अभी नहीं।''

''चलिए, लारेंस गार्डन चलें।''

जब दोनों वहाँ पहुँचे तो एकान्त स्थल पर घास पर बैठ मदन ने पूछा, ''क्या बात है?''

उत्तर में श्रीकान्ता ने असलम की जीवन-कथा, जितनी वह जानती थी, बता दी। पश्चात् कहा, ''आपने कहा था कि मीरा आपकी धर्म की बहन है। इससे आपको सचेत करना चाहती हूँ। जो वस्तु मैंने अपने लिए ठीक नहीं समझी, वह मैं आपकी बहन के लिए भी उपयुक्त नहीं समझती। मैं मीरा से कहती, परन्तु उसका मेरी बात को ईर्ष्यावश कहा गया समझ लेना स्वाभाविक ही है।''

मदन यह सब वृत्तांत सुन चिन्तातुर हो उठा। इस पर भी कुछ कह नहीं सका। बहुत समय तक दोनों विचार-मग्न चुपचाप बैठ रहे, पश्चात् मदन उठ खड़ा हुआ। श्रीकान्ता भी उठ पड़ी। दोनों घोड़ा-गाड़ी में, जो कुछ दूर सड़क पर खड़ी थी, जा बैठे। श्रीकान्ता को उसके मकान के समीप उतारते हुए मदन ने कहा, ''आपका, इस सूचना के लिए धन्यवाद है। मैं मीरा को समझाने का यत्न करूँगा, यद्यपि कुछ भी आशा नहीं कि वह समझे। इस विषय में आपसे मैं फिर मिलूँगा।''

अगले दिन श्रीकान्ता के विवाह की बात उसके भाई के मुख से सुन, मदन को श्रीकान्ता से मिलने की तथा वास्तविकता जानने की उत्सुकता हो उठी। परन्तु, फिर इस व्यवहार को अशिष्टतापूर्ण समझ मन से बात निकालने का यत्न करने लगा।

सायंकाल जब वह घर गया तो उसने मीरा की चर्चा अपने माता-पिता से कर दी। श्रीकान्ता ने असलम के विषय में जो कुछ कहा था, सब सुना दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके साथ ही मदन ने सुझाव दिया कि मीरा को समझाना चाहिए कि उससे मेल-मिलाप न रखे।

सेठजी यह वृत्तांत सुनकर गम्भीर हो उठे। कुछ उदासीन भाव में बोले, "मीरा को मैंने अपने घर में इसलिए आने-जाने दिया था कि उसके संस्कार अच्छे बने रहें, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व-जन्म के कुछ संस्कार इनसे भी प्रबल हैं और वे उसे घेर-घार कर कहीं और लिये जा रहे हैं।"

"पिताजी!" मदन ने कहा, "हमें कुछ तो करना ही चाहिए।"

"हाँ, हम उसके लिए भगवान से प्रार्थना कर सकते हैं।"

"भगवान् से अधिक हमें अपनी बुद्धि, युक्ति और सतर्कता पर विश्वास नहीं करना चाहिए क्या?"

"क्यों नहीं; परन्तु हमें ठीक मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी तो वही देता है। वह हमारे आचार-व्यवहार में पथ-प्रदर्शक बनकर हमसे कार्य करवा सकता है।"

मदन ने इसका यह अर्थ समझा कि वह अपने मन की प्रेरणा के अनुसार कार्य करे। वह मीरा से मिलकर बात करने का अनुकूल अवसर ढूँढने लगा। प्रायः दोपहर को मीरा का समाचार लेने वह उसके घर जाया ही करता था। अगले दिन जब मीरा से मिलने गया तो उसने नीचे से ही आवाज़ दी। मदन को आश्चर्य मिश्रित सुख हुआ जबकि खिड़की में से मीरा के स्थान पर श्रीकान्ता ने झाँका।

"ओहो! आप भी हैं?" मदन के मुख से निकल पड़ा।

इतना कह मदन भी ऊपर चला गया। वह चाहता था कि मीरा से बातचीत करने के लिए समय निश्चित कर ले। रविवार होने के कारण श्रीकान्ता कॉलेज नहीं गई थी और मदन से मिलने की आशा में मीरा के घर आ गई थी। आज मीरा की माँ भी घर पर थी। रविवार के दिन आश्रम-निवासी कपड़े धोते थे और आश्रम की सफाई किया करते थे, इस कारण कथा नहीं होती थी।

मदन पहुँचा तो मीरा ने कहा, "भैया! कान्ता बहन निमंत्रण देने आई हैं।"

मदन ने समझा कि पिछले दिन उसका भाई साड़ी खरीदने आया था, शायद सचमुच ही श्रीकान्ता का विवाह समीप है। इस कारण उसने कह दिया, "मुझे मालूम है कि कैसा निमंत्रण है।"

"कैसा है?" श्रीकान्ता ने पूछा, "भला बताइए तो कैसा है?"

"आपके विवाह का! ठीक है न?"

मीरा हँस पड़ी, परन्तु श्रीकान्ता लज्जा से लाल होते हुए बोली, "लाल बुझक्कड़।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो झूठ है यह ?'' मदन ने अधिकारपूर्ण मुद्रा बनाकर पूछा।

मीरा ने श्रीकान्ता के गले में बाँह डालकर अपनी ओर घसीटते हुए कान में पूछा, ''तुम तो कुछ और कहती थीं ?''

श्रीकान्ता ने इस प्रकार हँसी उड़ती देखी तो मीरा की बाँह गले से निकाल सीधी हो कहा, ''यह किसने कहा है आपसे ?''

''आप हमें नहीं बताना चाहतीं तो बात दूसरी है। मुझे तो उसने बताया है, जिस पर मैं अविश्वास नहीं कर सकता।''

''किसने बहकाया है आपको ?''

''बहकाने के लिए कोई तो प्रयोजन नहीं हो सकता उसका।''

''फिर भी कौन है वह, जो मुझसे भी अधिक जानता है ?''

मदन ने कुछ सोचकर बताया, ''कल एक नवयुवक दुकान पर आए थे। नेवी ब्ल्यू सूट पहने थे। हलकी नीले रंग की नैकटाई लगाए थे। लम्बा कद, ऊँचा मस्तक था, बाल कुछ घुँघराले थे। रंग गोरा, क्लीन शेव। नाक बिलकुल आपकी तरह शुक के समान नीचे को झुकी हुई और हाथ में अँगूठी थी जिस पर अंग्रेजी का अक्षर 'S' खुदा हुआ था। वे साड़ियाँ खरीदते हुए बोले, 'अपनी बहन की शादी पर देने के लिए चाहिएँ।' मैंने कहा, 'बहनजी को साथ लेते आते तो चुनाव ठीक रहता।' कहने लगे, 'बहन नहीं आ सकती, गवर्नमेंट कॉलेज में फोर्थ ईयर में इकॉनोमिक्स-हिस्ट्री पढ़ती है। उसे फुरसत नहीं।' जब मैंने कहा कि मैं भी उसी श्रेणी में पढ़ता हूँ तो बोले, 'फिर तो तुम उसे जानते होंगे। उसका नाम श्रीकान्ता है।' कल वे अपने घर भाँति-भाँति के कपड़े ले जाकर अपनी बहन से पसंद करवाने वाले हैं।''

मीरा इस वृत्तांत को सुन, घूरकर श्रीकान्ता की ओर देखती हुई बोली, ''क्यों ? क्या अब भी इंकार है ?''

श्रीकान्ता ने कहा, ''मदनजी उपन्यास लिखने का अभ्यास कर रहे हैं। इसमें वास्तविकता नहीं है।'' इतना कहते-कहते उसका मुख पीला पड़ गया और माथे पर पसीना छलकने लगा। वह मन में सोच रही थी कि शायद पिताजी चोरी-चोरी उसे बताए बिना कोई प्रबंध कर रहे हैं। उसे इस प्रकार दुःखी देख मदन ने क्षमा-याचना का भाव बना कहा, ''श्रीकान्ताजी! क्षमा करना। मैंने जो कुछ कहा है सत्य कहा है। मुझे क्या मालूम कि वे, आपके भाई, झूठ बोल रहे थे और फिर किसलिए ?''

मीरा की माँ मदन के पीछे खड़ी मदन की बातें सुन रही थी। उसने भी श्रीकान्ता के मुख का रंग विवर्ण होते देखा था। उसने मदन को डाँटकर कहा, ''मदन भैया! लड़कियों के विवाह की बातें लड़कियों से नहीं की जातीं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''पर चाची!'' श्रीकान्ता ने साहस कर कहा, ''यह सब असत्य है। मेरे विवाह का निश्चय नहीं हुआ?''

मीरा की माँ हँस पड़ी और बोली, ''पगली! निश्चय तुम्हें करना है क्या?''

''हाँ माँ! इसी ने तो करना है।'' इससे पहले कि श्रीकान्ता कुछ कहती मीरा ने उत्तर दिया।

''छी:-छी: देखो मीरा! ऐसी बातें लड़कियाँ नहीं करतीं। यह कृस्तानों का ढंग हम हिन्दुओं को शोभा नहीं देता।''

मीरा को यह विधान अपने मार्ग में बाधा प्रतीत हुआ। इस कारण श्रीकान्ता की आड़ ले अपने मन की बात कहने लगी, ''आज कोई भी पढ़ी-लिखी लड़की अपनी इच्छा के विरुद्ध विवाह पसंद नहीं करेगी।''

मदन ने मीरा को इस सम्बन्ध में और अधिक कहने को प्रोत्साहित करने के विचार से कहा, ''ठीक—ठीक, परन्तु मीरा! मैं पूछता हूँ, क्यों? इसका कारण क्या है?''

''विवाह करने वाले को अपनी आवश्यकता का ज्ञान रहता है। इसलिए।''

मदन ने गम्भीर हो कहा, ''परन्तु यह बात केवल वहाँ सत्य हो सकती है, जहाँ माता-पिता अनपढ़ हों और बच्चे पढ़-लिखकर विद्वान हो गए हों। श्रीकान्ता के विषय में तो बात ऐसी नहीं है। इनके पिता और भाई दोनों आयु, शिक्षा और अनुभव में इनसे श्रेष्ठ हैं।''

''फिर भी....।''

''फिर भी का तो केवल एक ही अभिप्राय हो सकता है। वह है रूप-रेखा की पसंद। इस विषय में भी मैं समझता हूँ कि पढ़े-लिखे माता-पिता बालक से अधिक सौंदर्य-ज्ञान रखते होंगे।''

''अच्छी बात है। मैं ताईजी से कहूँगी कि भैया का विवाह किसी काली-कलूटी बौनी से कर दें।''

श्रीकान्ता और मीरा की माता हँस पड़ीं। मदन ने मुस्कराते हुए कहा, ''मैं समझता हूँ कि माताजी तुमसे अधिक समझदार हैं। मुझे विश्वास है कि मेरे हित-अहित को अधिक समझती हैं। मीरा बहन! भूल सब कर सकते हैं, परन्तु जिन्होंने संसार देखा है, उनके भूल करने की सम्भावना कम ही होती है।''

बात मीरा की समझ में नहीं आई। तो भी उसने बात को आगे नहीं बढ़ाया। उसे भय था कि कहीं उसके विवाह की बात न चल पड़े। श्रीकान्ता ने भी बात बदल देना ही उचित समझा। उसने कहा, ''कल मेरा जन्म-दिन है। प्रति वर्ष इस अवसर पर माताजी दावत दिया करती हैं और मैं अपनी सखी-सहेलियों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमंत्रण दिया करती हूँ। सो कल भाई-बहन दोनों आएँ तो बहुत ही अच्छा हो।''

''परन्तु मैं आपकी सखी हूँ या सहेली?'' मदन ने हँसते हुए पूछा।

''जो बनें, वही।''

सब हँस पड़े। श्रीकान्ता ने अपना निमंत्रण पुनः दुहराया और आने का आग्रह किया। निमंत्रण स्वीकार हो गया।

:: 17 ::

दावत पर जाते हुए मार्ग में मदन को मीरा से एकान्त में बात करने का अवसर मिल गया। मदन ने कहा, ''मीरा! अब तो घर पर खुलकर बातचीत हो ही नहीं पाती। मैं कई दिन से एक विषय पर तुमसे विचार-विमर्श का अवसर ढूँढ रहा था।''

''कहो, क्या बात है?'' मीरा ने संशित मन से कहा।

''हाँ, बात यह है कि तुम्हारे और असलम के विषय में कुछ चर्चा होने लगी है। मुहल्ले के लोग देख रहे हैं कि तुम दोनों इकट्ठे आते-जाते हो। इससे तुम्हारे विवाह की बात चल रही है।''

मीरा चुप रही। उसने उत्तर नहीं दिया। मदन ने कहना जारी रखा, ''क्या तुम मेरा अधिकार समझती हो कि मैं तुमसे इस विषय में कुछ पूछूँ या राय दूँ?''

मीरा सामने देखते हुए चुपचाप चलती रही। उसे इस प्रकार खामोश देख मदन ने फिर कहा, ''मैं और पिताजी कल तुम्हारे विषय में विचार कर रहे थे। पिताजी का मत था कि तुमसे कुछ न कहा जाए। तुम स्वयं ही विचार कर ठीक मार्ग का अवलम्बन करोगी। फिर भी यदि तुम्हारे मन के विचार का पता चल जाए तो हम कुछ राय तुम्हें दे सकते हैं।''

मीरा ने साहस कर कहा, ''तो आप मेरा असलम साहब से मेल-मिलाप पसंद नहीं करते?''

''प्रश्न मेल-मिलाप का नहीं; प्रश्न है विवाह का और इसी विषय में हम तुम्हारा विचार जानना चाहते हैं। क्या लोग जो कहते हैं वह ठीक है?''

''इसका अर्थ यह हुआ कि आप मेरा उनसे विवाह पसंद नहीं करेंगे?''

''यदि हमसे राय करोगी तो हम मना करेंगे।''

''क्यों?''

''इसलिए कि हमारे समाज का रहन-सहन और आचार-विचार उसके समाज से नहीं मिलता।''

''उसके समाज से आपका क्या मतलब है? कम्यूनिस्ट समाज अथवा मुसलमान समाज?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, दोनों के विषय में। यों तो कम्यूनिस्ट विचारधारा का सम्बन्ध समाज की आर्थिक व्यवस्था से समझा जाता है परन्तु इसमें हम हिन्दू कुछ विशेष आपत्ति नहीं मानते। परन्तु कम्यूनिस्ट विचारधारा केवल आर्थिक समस्याओं के समाधान ही नहीं सुझाती, इससे अधिक, वह मनुष्य-समाज की एक ऐसी विकृत रूप-रेखा प्रस्तुत करती है कि कोई हिन्दू उससे मतभेद प्रकट किए बिना रह नहीं सकता।"

"मैं ऐसी कोई बात नहीं जानती। इस विषय में हिन्दू समाज के मतभेद का कारण उसके पक्षपातपूर्ण विचार हैं।" मीरा ने बिना मदन की ओर देखे उत्तर दिया।

"नहीं मीरा! इसमें पक्षपात की कोई बात नहीं। यह तो एक विचार का विषय है। क्या यह बात असत्य नहीं कि कम्यूनिस्ट विचारधारा के अनुसार मनुष्य-समाज का इतिहास, भोजन और जीवन-सुविधाएँ प्राप्ति का इतिहास है? हमारी हिन्दू विचारधारा इसके विपरीत है। हम समझते हैं कि संसार में आसुरी प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करने के लिए दैवी प्रवृत्तियाँ यत्नशील रहती हैं और मनुष्य-समाज का इतिहास इसी संघर्ष का इतिहास है। यह ठीक है कि देवता लोगों को भी भूख लगती है और सर्दी-गर्मी सताती है, परन्तु दैवी प्रवृत्ति के लोग इन बातों के लिए रक्त की नदियाँ नहीं बहाते। प्रत्युत इन बातों को जीवन का लक्ष्य समझने वाले जो अनर्थ और अत्याचार करते हैं, उसे रोकने का यत्न करते हैं।"

"मुझे तो दोनों में कोई अंतर प्रतीत नहीं होता।" मीरा ने बिना मदन की आँखों-से-आँखें मिलाए चलते हुए कहा।

"अंतर तो है। देखती नहीं हो कि यूरोपीय जातियाँ उपनिवेश बनाती हैं, केवल इसलिए कि वहाँ की धन-दौलत लूटकर अपने देश का जीवन-स्तर ऊँचा कर सकें। यह आसुरी प्रवृत्ति है। इसके विपरीत प्राचीन हिन्दुओं ने भी उपनिवेश बनाए थे। वहाँ से लूट-खसोट करने के लिए नहीं, प्रत्युत वहाँ पर विद्या, ज्ञान-विज्ञान फैलाने के लिए। इन दोनों में अंतर नहीं समझतीं तुम? वास्तव में कम्यूनिस्टों के ये विचार यूरोपीय फिलॉसफरों की देन हैं और इसमें वे उनसे भिन्न नहीं हैं।"

"तो क्या हिन्दुओं में आसुरी प्रवृत्ति के लोग नहीं हैं? यदि मैं किसी हिन्दू से विवाह करूँ तो कैसे विदित होगा कि वह आपके विचारानुकूल दैवी प्रवृत्ति वाला होगा?"

"हिन्दू वर और कन्या की जब देख-भाल की जाती है तो इसी बात को देखने के लिए ही तो की जाती है। परन्तु जिस समाज में जीवन-सिद्धांत ही निकृष्ट है, वहाँ हम ढूँढेंगे ही क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''कम्यूनिस्ट विचारधारा का सम्बन्ध तो केवल आर्थिक प्रश्नों से ही है। शेष बातों में तो वे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई इत्यादि कोई भी धर्म रख सकते हैं।''

मदन हँस पड़ा। उसने कहा, ''यह तुम अपने को धोखा दे रही हो या मुझे? आर्थिक विषयों में पति-पत्नी में सहमति अथवा मतभेद होना कुछ अर्थ नहीं रखता। ये तो दूसरी, व्यवहार की बातें ही हैं, जिनसे विवाहित जीवन सफल, सुखमय और सुंदर बन सकता है। ये दूसरी बातें ही कम्यूनिस्ट समाज और हिन्दू समाज में भिन्न-भिन्न हैं।''

''मदन भैया!'' मीरा ने व्यग्र होकर कहा, ''मैंने इन सब बातों पर विचार कर लिया है। मैं समझती हूँ कि मेरे विचार असलम साहब से भली-भाँति मिलते हैं और हम सुखी रह सकेंगे।''

इसके पश्चात् कहने को और कुछ नहीं रहा था। मदन को मीरा के इस प्रकार वार्तालाप का दरवाज़ा बंद करने से दुख हुआ था; परन्तु जबरदस्ती क्या हो सकता था? हताश, वह चुप हो गया था। मीरा मदन की युक्तियों से अधिक अपनी माता के विरोध से डरती थी और अब असलम से विवाह करने की इच्छा की घोषणा के पश्चात् उसे मन-ही-मन माँ और सेठ और सेठानी जी की ओर से प्रतिक्रिया की आशंका होने लगी थी।

इस प्रकार चुपचाप चलते-चलते दोनों पं. अम्बिकाप्रसाद के मकान पर पहुँच गए। वे दरवाज़े पर पहुँचे तो चपरासी ने उठकर सलाम किया और भीतर जाने का मार्ग बता दिया।

: 18 ::

श्रीकान्ता के जन्म-दिन के उपलक्ष्य में चाय-पार्टी का प्रबंध था। पिछले वर्ष श्रीकान्ता ने दस सहेलियों को बुलाया था। उनमें ललिता भी एक थी। इस वर्ष भी प्रबंध दस-बारह का किया गया था। परन्तु पार्टी के लिए कुर्सी लगाते समय ठीक संख्या जानने के विचार से माँ ने पूछा, ''कितनी सहेलियाँ आ रही हैं, कान्ता?''

श्रीकान्ता का उत्तर था, ''केवल दो। एक सखी है और दूसरे उसके धर्मभाई हैं।''

''बस?'' माँ ने अचम्भे में पूछा।

''हाँ, इस बार कॉलेज से कोई नहीं आ रही।''

''क्यों?''

''ऐसे ही। मन नहीं किया।''

''कौन आ रही है?''

''पंडिताइन प्रेमवती की पुत्री मीरा है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत: घर के लोगों के अतिरिक्त केवल दो और जनों के लिए कुर्सियाँ लगाई गईं। जब मदन और मीरा पहुँचे तो घर के सब लोग उपस्थित थे। श्रीनाथ मदन को देख चकित रह गया। उसकी पिछले दिन की धारणा कि श्रीकान्ता का कॉलेज से अनुपस्थित रहना साधारण घटना-मात्र होगी, अब विलीन होने लगी थी। इस पर भी वह सोचता था कि यदि श्रीकान्ता का यही चुनाव है तो भी निराशा की कोई बात नहीं। उस दिन की दो-चार बातों से ही श्रीनाथ पर मदन का प्रभाव ठीक ही पड़ा था।

श्रीनाथ अपने पिता के पास बैठा था। उसके दूसरी ओर मदन को स्थान दिया गया। मदन के समीप मीरा और फिर श्रीकान्ता थी। श्रीकान्ता के साथ श्रीनाथ की धर्म-पत्नी निर्मला और उसके आगे श्रीनाथ की माता बैठी थीं।

श्रीनाथ ने धीरे-से अपने पिता के कान में कहा, "यह वही लड़का है, जिसकी दुकान पर मैं साड़ियाँ लेने गया था।"

मदन ने कुर्सी पर बैठते ही श्रीनाथ से पूछा, "आप साड़ियाँ लेने नहीं आए? कहीं और से खरीद ली हैं क्या?"

"नहीं तो। दो-तीन दिन में आऊँगा।"

"कहें तो सब प्रकार के नमूने यहीं घर पर भेज दूँ।"

श्रीकान्ता के कान में भनक पड़ गई। उसने पूछा, "भैया, साड़ियाँ भाभी के लिए खरीदनी हैं। भाभी को वहीं दुकान पर ले जाऊँ?"

श्रीनाथ हँस पड़ा और बोला, "नहीं, किसी लड़की के विवाह पर देने के लिए लेनी हैं।"

"किसके?"

"है एक।"

मीरा और मदन दोनों हँस पड़े। मीरा ने श्रीकान्ता के कान में कहा, "अब तो सिद्ध हो गया है न?"

श्रीकान्ता मन-ही-मन कुढ़ रही थी। वह जानना चाहती थी कि क्या सचमुच ही उसके विवाह का प्रबंध हो रहा है। परन्तु बात बढ़ाने में लज्जा अनुभव कर रही थी। मदन उसके मन की अवस्था जान गया था। वह उसकी सहायता करने का निश्चय कर बोला, "हम हिन्दू हैं और यदि घर में सयानी लड़की हो तो उसके विवाह की चिंता करना बड़े लोग अपना कर्त्तव्य समझते हैं।"

"हूँ।" पं. अम्बिकाप्रसाद ने मदन की बात सुन कहा।

मदन ने इससे उत्साहित हो कहा, "एक हिन्दू परिवार में एक लड़की के लिए लड़की से अधिक उसके माता-पिता का चिंतित होना एक साधारण-सी बात है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''पर मैं समझती हूँ,'' श्रीकान्ता की माता ने कहा, ''आज के ज़माने में बच्चों से राय कर लेना ठीक रहता है। ठीक या गलत, वे भी अपने को बड़ा बुद्धिमान मानते हैं।''

वकील साहब इस दो-धारी काट पर हँस पड़े। कहने लगे, ''एक बात आप लोग नहीं समझते। वह है विवाह के लिए उपयुक्त तैयारी की। इस हवाई जहाज़ की गति से भागते हुए ज़माने में कब, किस समय विवाह होना निश्चित हो जाए और फिर कितनी जल्दी विवाह करना पड़ जाए, कोई नहीं कह सकता। इसलिए सब सामान तैयार रखना माता-पिता का कर्त्तव्य है। मैं आभूषण भी बनवा रहा हूँ और कपड़े खरीदने के लिए भी मैंने श्रीनाथ को कह दिया है।''

''और पहनने वाली की रुचि जाने बिना ही यह सब-कुछ हो रहा है।'' श्रीकान्ता ने साहस कर कहा।

''हम तुम्हें बचपन से जानते हैं, तो क्या तुम्हारी रुचि नहीं जानते?''

मदन ने देखा कि वार्त्तालाप में कुछ कटुता आती जा रही है। इससे उसने वार्त्ता का विषय ही बदल देने के विचार से श्रीकान्ता से पूछा, ''यह तुम्हारा कौन-सा जन्म-दिन है?''

''कहते हैं, उन्नीसवां।''

इस समय श्रीनाथ कहने लगा, ''पिताजी की आयु बावन वर्ष की है। मैं समझता हूँ कि मनुष्य को सांसारिक बातों का ज्ञान पंद्रह वर्ष की आयु से आरम्भ होता है। इससे श्रीकान्ता की ज्ञानमय आयु चार वर्ष है और पिताजी की सैंतीस वर्ष। अभिप्राय यह है कि यदि और सब बातें छोड़ भी दी जाएँ, तब भी पिताजी का अनुभव कम-से-कम नौ गुना अधिक है।''

मदन ने तो बात बदलने के लिए आयु पूछी थी, परन्तु श्रीनाथ ने बात फिर वहीं ला खड़ी की। इससे वह चुप हो गया। निर्मला को एक बात सूझी और उसने मदन की ओर देखकर पूछा, ''आपकी माताजी का नाम रुक्मणी देवी है न?''

''जी हाँ, आप उन्हें जानती हैं?''

''हम कई बार कांग्रेस और अछूतोद्धार के लिए चंदा लेने उनके पास जा चुके हैं।'' फिर निर्मला ने मदन के परिवार की बात आरम्भ कर दी। ''आपके माता-पिता सनातन धर्मावलम्बी हैं। यज्ञ, दान, पूजा, पाठ खूब होता रहता है। यद्यपि आप लोग कांग्रेस के कार्यक्रम पर विश्वास नहीं रखते, तो भी दान-दक्षिणा में कभी संकोच नहीं करते। हमें कभी भी आपके यहाँ से निराश नहीं लौटना पड़ा।''

मदन के परिवार की प्रशंसा सुन पं. अम्बिकाप्रसाद जो चाय पी चुके थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछने लगे, ''तो आप सनातन धर्म सभा में हैं।''

''पिताजी स्थानीय सभा के प्रधान हैं।''

''तो आप तो अपनी बिरादरी में ही विवाह-शादी पसंद करते होंगे?''

''परन्तु बिरादरी के अर्थ बदल रहे हैं। हम टंडन खत्री थे, परन्तु मैं अब पढ़े-लिखों की, देश-भक्तों की, हिन्दू सभ्यता से प्यार करने वालों की और न्याय प्रिय लोगों की बिरादरी में हूँ।''

पं. अम्बिकाप्रसाद बिरादरी की मीमांसा सुन फड़क उठे और बोले, ''खूब! बहुत खूब!! परन्तु मदनजी! क्या आपके माता-पिता भी ऐसा ही समझते हैं?''

मदन ने अपने चाय के प्याले में चम्मच फेरते हुए और आँखें नीचे किए हुए कहा, ''मैंने अपनी बहुत-सी शिक्षा अपने घर की पाठशाला में ही प्राप्त की है।''

इससे वकील साहब उत्साहित हो मदन के विचारों की परीक्षा करने के लिए पूछने लगे, ''परन्तु देश-भक्ति, देशभक्ति में अंतर है। उदाहरण के रूप में कांग्रेस वालों की देश-भक्ति और हिन्दू महासभा वालों की देश-भक्ति में अंतर मानते हो या नहीं?''

''नहीं।''

''नहीं? भला यह कैसे? दोनों में घोर विरोध है।''

''विरोध अवश्य दिखता है। परन्तु मैं यह भी देखता हूँ कि यह विरोध नासमझी के कारण है। दोनों देश और राष्ट्र में अंतर नहीं मानते। देश एक भौगोलिक सत्ता का नाम है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई मीलों में नापी जाती है। इसकी सीमाएँ पहाड़, नदियाँ और समुद्र बनाते हैं। इसमें उपजाऊ, भूमि और खनिज द्रव्य हैं। यहाँ सौरभयुक्त रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियाँ हैं। इसमें मलयानिल बहता है। यह देश है, परन्तु राष्ट्र तो इससे भिन्न वस्तु है। यह एक देश में रहने वाले ऐसे लोगों का समूह है, जो एक विशेष प्रकार का आचार-व्यवहार, विश्वास, श्रद्धा-भक्ति और जीवन-लक्ष्य रखते हैं। भारत देश एक वस्तु है और भारत राष्ट्र दूसरी वस्तु है। कांग्रेस भारत देश को ही राष्ट्र मान रही है और हिन्दू महासभा राष्ट्र को ही देश समझती है। देश के प्रबंध को राज्य कहते हैं और राष्ट्र की सुव्यवस्था का नाम सभ्यता अथवा संस्कृति है।''

वकील अम्बिकाप्रसाद मदन की देश और राष्ट्र की व्याख्या को सुनने में अपने-आपको भूल गए थे। श्रीनाथ और श्रीकान्ता भी चाय का ध्यान छोड़ मदन की बात सुनने लगे थे। मीरा और निर्मला का ध्यान खाने की ओर था। दोनों चाय बनाने में लगी थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदन जब बात समाप्त कर चुका, तब भी वकील साहब विस्मय में मदन का मुख देखते रहे। मदन ने समझा कि वह अपना अभिप्राय स्पष्ट नहीं कर सका, इस कारण फिर कहने लगा, ''राष्ट्र के निर्माण में व्यक्तिगत और सामूहिक चरित्र-गठन प्रथम बात है। चरित्र का आधार धर्म-व्यवस्था और जीवन-सम्बन्धी विचारधारा हैं। ये दोनों बातें परम्परा और प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओं पर निर्भर हैं। इससे भारतवर्ष में राष्ट्र हिन्दू-राष्ट्र है। हिन्दू महासभा वास्तव में इसी की रक्षा और उन्नति के लिए यत्नशील है। दूसरी ओर कांग्रेस देश को ही सब-कुछ मान बैठी है और उसको स्वतंत्र करने में लगी है। राष्ट्रीयता में प्रचुर उन्नति हुए बिना यदि देश स्वतंत्र हुआ भी तो देश-वासी स्वतंत्र नहीं रह सकेंगे। खूब खाते-पीते और राग-रंग मनाते हुए भी देश के लोग दासता से मुक्त नहीं होंगे।''

वकील साहब अपने स्थान से उठे और बोले, ''मदन! इधर आना तो।''

मदन समझा नहीं। इस पर वकील साहब मदन के समीप आ उससे हाथ मिलाने के लिए, उसका हाथ पकड़ हिलाने लगे। मदन अब समझा कि श्रीकान्ता के पिता उसका मान करने के लिए कह रहे हैं। वह उठा तो वकील साहब ने उसे गले लगा लिया।

श्रीकान्ता मदन का इस प्रकार आदर होता देख प्रसन्नता से खिल उठी। श्रीकान्ता की माता और भाई भी प्रसन्न थे। मीरा और निर्मला इनकी बातें नहीं सुन रही थीं और जब उन्होंने दोनों को इस प्रकार खड़े हो गले मिलते देखा तो विस्मय में देखने लगीं कि यह क्या हो रहा है।

मदन और वकील साहब अपने-अपने स्थान पर बैठ मिठाई खाने लगे। श्रीनाथ ने इस चुप्पी को तोड़ने के लिए कहा, ''हम आर्यसमाजी हैं। महर्षि दयानन्द ने हिन्दू समाज में एक नई चेतना उत्पन्न की है और हमें वह पसंद है।''

मदन ने वार्तालाप का स्तर स्थिर रखने के लिए कह दिया, ''आर्यसमाज भी तो वैदिक सनातनधर्म की एक शाखा ही है।''

''दोनों में भारी अंतर है।''

''एक ही बात के भिन्न-भिन्न अर्थ लगाने पर लगाते समय दो विद्वान् पुरुषों में अथवा दो विद्वत्-मंडलियों में किसी एक बात के अर्थ लगाने में मतभेद हो जाना स्वाभाविक ही है।''

''पर आर्यसमाज की व्याख्या और अर्थ अधिक युक्तिसंगत प्रतीत होते हैं।'' श्रीनाथ बोला।

''हो सकते हैं। इस पर भी जो लोग पुरातन व्याख्या को मानते हैं, वे उसे ही युक्ति-संगत मानते हैं। देखिए श्रीनाथजी! वेदों के अर्थ लगाने में कई मत हैं। वैष्णव, तांत्रिक और वेदांत व्याख्याएँ तो बहुत ही विख्यात हैं। आर्यसमाज भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदों की एक पृथक् व्याख्या ही करता है। इससे यह वैदिक सनातन धर्म की एक शाखा-मात्र ही है। जैसे वैष्णवों और वेदान्तियों में आकाश-पाताल का अंतर है, वैसे ही आर्यसमाजी और वेदान्तियों में।''

''यह तो ठीक है। पर देखो न, आर्यसमाजी तो जात-पांत छोड़कर विवाह कर सकते हैं। परन्तु सनातनधर्मी ऐसा नहीं कर सकते।''

मदन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, ''विवाह-सम्बन्धी नियम तो स्मृतियों ने बनाए हैं और स्मृतियाँ बदलती रहती हैं। यदि हम लोग अभी तक मनुस्मृति को प्रमाण मानते हैं तो इसका कारण यह है कि हमारा नेतृत्व करने वाला कोई स्वतंत्र वेद-विज्ञ, भारतवासी ब्राह्मण नहीं मिल रहा। आजकल की परतंत्र अवस्था में कोई ठीक व्यवस्था दे सकेगा, कहना कठिन है। स्वामी दयानन्द भी एक भारी व्यवस्थापक हुए हैं, इस पर भी वे ऐसे समय में यहाँ आए, जब देश परतंत्रता की शृंखलाओं में जकड़ा हुआ था। परतंत्र देशवासियों की बुद्धि पर इतना भरोसा नहीं किया जा सकता, जितना स्तवंत्र भारतवासियों की बुद्धि पर करना चाहिए। नई स्मृतियाँ तो जब भारतीय राष्ट्र स्वतंत्र होगा, तब ही बनेंगी। तब तक ज्यों-त्यों कर काम चलाना चाहिए।''

श्रीनाथ हँस पड़ा। पं. अम्बिकाप्रसाद भी 'ज्यों-त्यों' का शब्द सुन सतर्क हो सुनने लगे। मदन ने अपना कहना जारी रखा, ''ज्यों-त्यों से मेरा अभिप्राय यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को काल और परिस्थिति देखकर अपने व्यवहार का निश्चय कर लेना चाहिए। इस पर भी एक व्यक्ति के व्यवहार से हम स्मृति में संशोधन कर दें, ठीक नहीं होगा।''

अब तक निर्मला और मीरा भी इन बातों में रुचि लेने लगी थीं। इस पर निर्मला ने कह दिया, ''भारतीय राज्य, अर्थात् हिन्दू राज्य तो अब स्थापित न हो सकेगा। अब तो स्वराज्य होने पर हिन्दू और मुसलमानों का संयुक्त राज्य ही होगा और कानून जो बनेंगे, उनका आधार वेद और स्मृतियाँ नहीं होंगी।''

''यही तो मैं कह रहा हूँ।'' मदन ने निर्मला को उत्तर देते हुए कहा, ''कांग्रेस विचारधारा में यही भूल है। वे राज्य और राष्ट्र में अंतर नहीं समझते। राज्य देश में प्रबंध करने तथा शांति स्थापित करने के लिए होता है। राष्ट्र अर्थात् देश में बसी जाति को सुव्यवस्थित रूप देने के लिए सभ्यता की आवश्यकता है। सभ्यता तो किसी मिठाई की भाँति, किसी की आज्ञा से निर्माण नहीं हो सकती। यह तो पूर्ण जाति के प्राचीन इतिहास, घटनाओं, साहित्य और परम्परा के आधार पर स्वयं बनती जाती है। स्मृतियाँ तो इसे लिख देने का अधिकार रखती हैं। इस देश की संस्कृति भला कैसे वेद, शास्त्र, पुराण, स्मृतियों, गीता और फिर राम, सीता, लक्ष्मण, युधिष्ठिर, कृष्ण इत्यादि महापुरुषों के जीवन की अवहेलना कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बन सकती है ? राज्य तो हिन्दू और मुसलमानों का संयुक्त हो सकता है पर राष्ट्र हिन्दू राष्ट्र ही होगा।''

निर्मला इसको समझ नहीं सकी। उसने कहा, ''यह भला कैसे हो सकता है ? राज्य और राष्ट्र भिन्न-भिन्न कैसे होंगे ? राष्ट्र की रक्षा के लिए ही तो राज्य होगा। दोनों में समानता हुए बिना काम कैसे चलेगा ?''

''जैसे इंगलैंड में चल रहा है। वहाँ पर यहूदी, रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट तीनों ही रहते हैं, परन्तु राष्ट्र प्रोटेस्टेंट है। राज्य की ओर से गिरजाघरों को तथा प्रोटेस्टेंट धर्म को सहायता मिलती है। साथ ही शिक्षा में धर्म का प्रचार भी होता है। इस पर भी राज्य-प्रबंध में यहूदी अथवा कैथोलिक नियुक्त हो सकते हैं, परन्तु जहाँ तक धर्म, शिक्षा, आचार-व्यवहार और इसी प्रकार की अन्य बातों का सम्बन्ध है, रोमन कैथोलिक और यहूदी हस्तक्षेप नहीं कर सकते। एक-आध बार इंग्लैंड का महामंत्री यहूदी भी हुआ है, परन्तु उसको अधिकार नहीं था कि राज्य की ओर से गिरजाघरों को दी जाने वाली सहायता रोक सके। इसी प्रकार यहाँ चलेगा।''

निर्मला, जो कांग्रेसी वातावरण में पली थी, इन बातों को भ्रम-मूलक समझती थी। वह राष्ट्र और राज्य को एक ही वस्तु मानती थी। इस पर भी वह मदन से, जिससे उसका परिचय आज ही हुआ था, अधिक वाद-विवाद में पड़ना नहीं चाहती थी।

पं. अम्बिकाप्रसाद मदन के विषय में मन-ही-मन कुछ सोच रहे थे। मीरा को मदन की बातें पसंद नहीं आ रही थीं। उसे इस तर्क पर से विश्वास उठता जाता था।

आज की पार्टी में मदन ही वार्तालाप का केंद्र रहा। उसी से ही सब बातें हुईं और उसने अपनी प्रतिभा तथा योग्यता का अच्छा प्रमाण दिया। जब चाय समाप्त हुई और सब लोग श्रीकान्ता को बधाई देने लगे तो वकील साहब ने अपनी लड़की को एक बहुत बढ़िया कलम भेंट की। श्रीकान्ता की माँ ने लड़की को सोने के कांटों की जोड़ी दी। श्रीनाथ ने श्रीकान्ता को बैग दिया। मदन भी इसके लिए तैयार आया था। उसने जेब से एक लिफाफा निकाला। उसमें से एक मखमली डिब्बा निकाल भेंट में दिया। श्रीकान्ता ने उत्सुकता से उस डिब्बे को खोला। उसमें हाथी-दाँत की एक सुंदर माला देख प्रसन्न हो मदन से बोली, ''धन्यवाद!''

मदन ने कहा, ''डरते-डरते लाया हूँ कि आपको पसंद भी आएगी या नहीं। आपने इसे स्वीकार किया है, सो अत्यंत धन्यवाद है।''

श्रीकान्ता यह उपहार पाकर दैदीप्यमान हो उठी। उसे प्रसन्न देख मदन को भी बहुत आनंद हुआ। मदन द्वारा दिए गए उपहार को बारी-बारी से सबने देखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो

मनुष्य में पशुता

ललिता और खुशीराम के पिता का जब देहांत हुआ तो अभी वे बच्चे ही थे। उनकी माँ आत्मादेवी को हिन्दी का साधारण ज्ञान था। जब बच्चों के पालन का प्रश्न उठा तो उसे एक प्रारम्भिक विद्यालय में हिन्दी पढ़ने के लिए अध्यापिका का कार्य करना पड़ा। बीस रुपया मासिक वेतन में उसने अपना निर्वाह और बच्चों के पढ़ाने और पालन-पोषण का प्रबंध करना आरम्भ कर दिया। खुशीराम ललिता से बड़ा था।

वह जिन दिनों अध्यापन-कार्य करती थी और दोनों बच्चे पढ़ते थे, आत्मादेवी का निर्वाह कठिनाई से चलता था। इन दिनों उसे समाजवादियों की विचारधारा से परिचय प्राप्त हुआ। आत्मादेवी की एक सहकारिणी थी। उसका पति एक क्रांतिकारी पार्टी का सदस्य था और वह भी समाजवाद के सिद्धांतों को समझती थी। जब कभी आत्मादेवी अपनी कठिनाई का वर्णन करती तो वह उसका दोष धनी-मानी लोगों पर सिद्ध कर देती थी। वह धर्म के ठेकेदारों को उसके विधवा रहने में अपराधी ठहरा देती थी। इस प्रकार धीरे-धीरे आत्मादेवी समाजवाद के सिद्धांतों और इनसे प्रतिपादित जीवन-मीमांसा को समझने लगी थी। इस ज्ञान से उसके मन में स्वयं अपने जीवन तथा समाज, दोनों से असंतोष उत्पन्न होने लगा था। जिधर भी उसकी दृष्टि जाती थी, उसे अन्याय, अत्याचार और अनर्थ होता प्रतीत होता था। वह सोचती थी कि मैं विधवा हूँ और दूसरा विवाह नहीं कर सकती, केवल इसलिए ही न कि समाज भ्रम से, मेरा दूसरा विवाह पसंद नहीं करता। ललिता का पिता बहुत अच्छा आदमी था, परन्तु वह तो चला गया और अब लौटकर आ नहीं सकता तो फिर मैं उसके नाम की माला क्यों जपती रहा करूँ? कभी उसके मन में विचार आता कि पुनः विवाह कर ले। परन्तु उसका देहाती श्वसुर यह पसंद नहीं करेगा। इस पर वह सोचती थी कि उसके श्वसुर का उस पर अधिकार ही क्या है? विवाह के पश्चात् वह अपनी पोती-पोते माँगेगा, तो ले जाए। किंतु यहाँ पहुँचकर वह रुक जाती। ललिता बहुत ही प्रिय लड़की थी। उसे छोड़ने को वह अपने मन को तैयार नहीं कर सकी। खुशीराम तो कुरूप और कुछ उजड्ड-सा लड़का था। उसके बाबा के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले जाने से उसे दुःख न होता, परन्तु ललिता की बात दूसरी थी।

ललिता की समस्या को वह सुलझा नहीं सकी। साथ ही उसकी अंतरात्मा जीवन की पूर्णता के लिए चीख-पुकार करती रहती थी। यदि बच्चों का ही प्रश्न होता तो वह कुछ प्रबंध कर भी लेती, परन्तु यहाँ तो अनेक समस्याएँ थीं। मकान भाड़े का था। पड़ोस के लोग प्राचीन हिन्दू विचार के थे। उन परिवारों की स्त्रियों से उसका मेल-मिलाप था। पुनर्विवाह पर वे स्त्रियाँ क्या कहेंगी? सबसे बड़ा प्रश्न स्कूल का था। वह सनातन धर्म कन्या पाठशाला में पढ़ाती थी। पुनर्विवाह से नौकरी का छूट जाना तो निश्चित था। साथ ही, विवाह करे तो आदमी कहाँ से ढूँढे? कौन ढूँढने में सहायता करेगा? ऐसी अनेक कठिनाइयाँ उसके सामने थीं।

इस पर भी जब से उसकी समझ में यह आया कि वर्तमान जीवन ही सब-कुछ है, इसके पूर्व तथा पश्चात् यदि कुछ है तो उसका वर्तमान के साथ कुछ सम्बन्ध नहीं, तब से उसका मन अपनी अपूर्णता को मिटा पूर्णता की ओर जाने को छटपटाने लगा था, परन्तु परिस्थितियाँ उसके मार्ग में बाधक थीं।

एक दिन उसने देखा कि उसके पड़ोस की एक नव-विवाहिता वधू बहुत सध-धजकर अपने पति के साथ सायंकाल सिनेमा देखने गई है। एक बार उसने ललिता के पिता के साथ सिनेमा देखा था। उसे वह बहुत भला प्रतीत हुआ था। अपनी पड़ोसिन को देख उसका मन क्षोभ से उबल पड़ा। वह सोचती थी कि वह क्यों नहीं जा सकती? उत्तर था कि वह विधवा है, निर्धन है और उसके बच्चे हैं।

एक दिन साहस कर और कठिनाई से तीन रुपये बचाकर वह ललिता और खुशीराम को दिखाने के बहाने सिनेमा देखने चली गई। एक रुपये वाली श्रेणी में, एक पूरा और दो बच्चों के टिकट ले जा बैठी। खुशीराम को खेल पसंद नहीं आया और वह वापस घर चलने को कहता रहा। ललिता खेल समझने के अयोग्य थी। वह नायिका के शृंगार-बनाव के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझ सकी। उसने माँ से कहा, ''माँ! ये कानों के बुंदे बहुत सुंदर हैं।'' एक बार उसने कहा, ''माँ! देखो, यह बेनी कैसी बाँधी है।''

सिनेमा तो देखा परन्तु जेब में से तीन रुपये कम हो गए। साथ ही इसका एक परिणाम और हुआ। वह एक युवक की दृष्टि में चढ़ गई। उसने देखा कि औरत उन्नीस-बीस वर्ष की है। अभी लड़की-सी ही प्रतीत होती है। शृंगार-शून्य होने से विधवा जान पड़ती है। साथ दो बच्चे हैं। उन्हें सिनेमा दिखाने लाई है। युवक का नाम मधुर था।

मधुर ने इनका पीछा कर घर का पता ज्ञात कर लिया और फिर गली के बाहर चक्कर काटने आरम्भ किए। कुछ ही दिनों में वह जान गया कि वह पाठशाला में पढ़ाने जाती है और बीस रुपये महीना वेतन पाती है। उसमें से पाँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपये मकान का भाड़ा देती है। शेष पंद्रह रुपये में रोटी, कपड़ा और बच्चों की शिक्षा का प्रबंध कैसे करती होगी, यह वह समझ नहीं पा रहा था। उसके मन में अपनी कामना-पूर्ति की आशा बँध गई।

एक दिन ललिता की माँ जब पाठशाला से लौट रही थी तो उसने पूछ ही तो लिया, ''क्षमा करें, आपका नाम क्या है?''

''प्रयोजन?'' उसने पूछा।

''मुझे आपसे कुछ काम है।'' मधुर उनके साथ-साथ चलने लगा।

''मुझसे या मेरे नाम से?''

''दोनों से। आपके लाभ की बात ही कहना चाहता हूँ।''

''क्या बात है?'' उसने झिझकते हुए पूछा।

''देखिए, मैं आपके विषय में जो कुछ जानता हूँ, वह ऐसा है कि उसमें मैं कुछ सहायता कर सकता हूँ।''

'इसमें मेरा नाम जानने की क्या आवश्यकता है?''

''यह जानने के लिए कि आप ही वह हैं, जिनकी बात मैं कर रहा हूँ।''

ललिता की माँ ने ध्यान से मधुर की ओर देखा और फिर मन में सोचने लगी कि आखिर यह चाहता क्या है। मधुर की रूप-रेखा न तो बहुत आकर्षक थी और न ही अनाकर्षक। पाँव में चप्पल, खद्दर की धोती और कुर्ता, सिर पर गांधी टोपी और मोटे-मोटे शीशों का चश्मा लगा था। कुछ अधिक आयु का भी प्रतीत नहीं होता था। छब्बीस-सत्ताईस के लगभग होगा। उसके मुख पर घबराहट नहीं थी। माथे पर चिंता की रेखाएँ अवश्य प्रतीत होती थीं। उसे अपनी ओर देखते हुए पा मधुर ने विश्वास बैठाने के लिए कहा, ''आपका नाम आत्मादेवी है न?''

''हाँ।'' विवश ललिता की माँ को उत्तर देना पड़ा।

''आप विधवा हैं और स्कूल में बीस रुपये मासिक की नौकरी करती हैं?''

''हाँ।'' आत्मादेवी ने अचम्भा अनुभव करते हुए कहा।

''मुझे आपसे कुछ कहना है। आप मेरे साथ घर चल सकती हैं?''

ऐसा उसे कभी किसी ने नहीं कहा था। यह नहीं कि लाहौर जैसे नगर में उस पर कभी किसी की दृष्टि पड़ी ही न हो, कभी किसी ने उसके यौवन का ग्राहक बनना ही न चाहा हो, परन्तु इस प्रकार के लोग तो उससे मिलते ही कहते थे, 'कुछ कृपा-दृष्टि इधर भी कर दो'। 'हम भी संसार में रहते हैं।' 'ललिता की माँ! कभी कुछ रुपये की आवश्यकता हो तो मैं हाजिर हूँ।' 'चलो, होटल में चाय पिला लाऊँ' इत्यादि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस युवक की वाणी में प्रलोभन नहीं, याचना थी। फिर वह जानता है कि वह कौन है, स्कूल में अध्यापिका का कार्य करती है। देखने में भी भला प्रतीत होता है। ललिता की माँ ने यह सोचकर कुछ उत्साहित हो कहा, ''मैं आपको जाने बिना कैसे आपके घर जा सकती हूँ? लोग निंदा करेंगे।''

''इससे क्या होगा? जब तक आप स्वयं अपने को निंदनीय नहीं मान लेतीं, तब तक दूसरों के कहने से क्या होता है? मैं आपको कोई ऐसी बात करने को नहीं कहूँगा, जो आपको अपनी दृष्टि में ही गिरा दे।''

''आप यहीं बता दें। आप क्या कहना चाहते हैं?''

''यहाँ बाज़ार में नहीं।''

''तो आप मेरे घर चलिए।''

''इससे आपकी निंदा न होगी?''

आत्मादेवी सोचने लगी कि यह भद्र पुरुष ठीक ही तो कहता है। मुहल्ले के सब लोग मेरे सब सम्बन्धियों को जानते हैं। इस अपरिचित को देख अवश्य भाँति-भाँति के विचार करेंगे और जहाँ यह रहता होगा....''पर आप कहाँ रहते हैं?'' उसने पूछा।

''पैसा अखबार बाज़ार में।''

आत्मादेवी ने सोचा, ''वहाँ मुझे कोई नहीं जानता। मैं वहाँ कभी नहीं गई। यदि निंदा होगी तो इसकी होगी।'' इतना विचार कर उसने पूछा, ''मैं यही सोचती हूँ कि इस सबसे क्या लाभ होगा?''

''इतना तो विश्वास दिला सकता हूँ कि कुछ हानि नहीं होगी।''

''कब चलूँ?''

''अभी चलिए।''

''घर पर बच्चे प्रतीक्षा करते होंगे।''

''उनको भी साथ ले चलिए।''

इससे तो आत्मादेवी को और भी विस्मय हुआ। उसके मन के भावों का अनुमान कर मधुर ने कहा, ''मैं गली के बाहर कुछ दूर जाकर खड़ा रहूँगा। आप घर जाकर बच्चों को ले आएँ। सैर-की-सैर हो जाएगी और अपनी बातचीत भी।''

:: 2 ::

आत्मादेवी घर पहुँची। खुशीराम और ललिता को नए कपड़े पहना, साथ ले, बाहर निकली। एक पड़ोसिन ने देखा तो पूछ ही लिया, ''कहाँ जा रही हो, ललिता की माँ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''इनको ज़रा घुमाने जा रही हूँ।'' इतना कहते-कहते उसके मुख पर लालिमा छा गई। पड़ोसिन को संदेह हुआ या नहीं, परन्तु वह स्वयं अनुभव करने लगी कि उसे संदेह हो गया है। उसके पूरे शरीर में रोमांच हो आया और कुछ दूर जाकर उसने पीछे घूमकर देखा कि कोई देख तो नहीं रहा।

गली के बाहर मधुर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह लाहौरी दरवाज़े की ओर चल पड़ी। मधुर उसके साथ-साथ चलता गया। दोनों में कोई बातचीत नहीं हो रही थी। दरवाज़े से बाहर निकल मधुर ने मोरी दरवाज़े की ओर घूमने को कहा। कुछ दूर जा वह उन्हें आर्य समाज मंदिर के साथ की गली में ले गया। वहाँ से वे पैसा अखबार बाज़ार में जा पहुँचे। बाज़ार के दूसरी ओर की एक गली में, एक मकान के सम्मुख खड़े हो मधुर ने कहा, ''यह मेरा घर है।''

इतना कह उसने कुर्ते की जेब से चाबी निकाल ताला खोला। आत्मादेवी ने पूछा, ''आपके घर में कोई औरत नहीं रहती?''

''नहीं।''

यह सुन वह सोचने लगी कि घर में जाए अथवा नहीं। मधुर ने कहा, ''यहाँ इस प्रकार खड़े-खड़े विचार करने से तो व्यर्थ में दूसरों का ध्यान आकर्षित करेंगी। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि आपको हानि नहीं होगी।''

आत्मादेवी मकान में चली गई। मधुर मकान में अकेला रहता था। इस पर भी घर में सुव्यवस्था थी। मकान में तीन कमरे थे—रसोईघर था, स्नानागार था। एक कमरा बैठक-घर बना था, दूसरा शयनागार। उसने उनको बैठक-घर में ले जाकर बैठा दिया। मधुर ने लड़की को अपने पास बैठाकर पूछा, ''क्या खाओगी, ललिता?''

आत्मादेवी को उसके इतना कुछ जानने पर आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, ''आप मेरे और इन बच्चों के विषय में यह सब-कुछ कैसे जानते हैं?''

''मैं बहुत-कुछ जानता हूँ,'' कहते-कहते मधुर उठा और उसने किताबों की अलमारी के ऊपर से बिस्कुटों का डिब्बा निकाला और उसे खोलकर बच्चों की माँ के सम्मुख रख दिया। ''खाइए, मैं पानी लाता हूँ। कहो तो चाय बना दूँ?''

''नहीं, आवश्यकता नहीं है।'' ललिता की माँ ने कहा।

इस पर भी सुराही में से तीन गिलास पानी भरकर मधुर ले आया। आत्मादेवी के मना करने पर भी मधुर के आग्रह पर बच्चे बिस्कुट खाने लगे। मधुर ने कहा, ''आपको यहाँ लाने का प्रयोजन बताने से पूर्व मैं अपना परिचय देना चाहता हूँ। मैं गढ़वाल का रहने वाला हूँ। अंग्रेजी और हिन्दी दोनों इतनी पढ़ा हूँ कि मैं पुस्तकें लिखता हूँ। मैं विचार से नास्तिक हूँ। नास्तिक के अर्थ तो आप जानती ही होंगी?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हाँ, कुछ समझती हूँ।''

''तो ठीक है। पुस्तकों से मुझे कुछ आय होती है और मेरा निर्वाह हो रहा है। परन्तु मैं देखता हूँ कि यहाँ किसी बात की त्रुटि है।''

इतना कहकर मधुर विचार करने के लिए ठहर गया। आत्मादेवी इसका कुछ अर्थ नहीं समझ सकी, इस कारण चुप बैठी रही। मधुर ने कुछ काल तक ठहरकर कहा, ''जब कोई कार्य मनुष्य अकेला न कर सके तो उसे दूसरों की सहायता प्राप्त करने की आवश्यकता रहती है। बड़े-बड़े कारखानों और छोटी-छोटी दुकानों, सबमें किसी-न-किसी के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। मैंने अनुभव किया है कि मेरी गाड़ी अकेले में चल नहीं रही है। मैं सहयोग प्राप्त करने के लिए साथी ढूँढ रहा हूँ। किसी प्रकार मुझे आपके विषय में पता चला है कि आप भी जीवन-नौका खेने में कठिनाई अनुभव कर रही हैं। अतः मैं यह प्रस्ताव करना चाहता था कि हम जीवन-यात्रा में एक-दूसरे के साथी बन जाएँ तो क्या ठीक न होगा?''

बात तो वही थी, जो विषय-लोलुप उसे कहा करते थे, 'ललिता की माँ! यदि रुपये की आवश्कता हो तो मैं हाजिर हूँ।' इस नवयुवक की बात मानने का परिणाम भी वही होना था, जो अन्य प्रलोभन देने वालों की बात मानने से होता; परन्तु दोनों के कहने के ढंग में अंतर था। इससे आत्मादेवी को इतनी घबराहट अथवा क्रोध नहीं हुआ, जितना कि दूसरे लोगों की बात से हुआ करता था। इस पर भी उसने युवक की परीक्षा के लिए कह दिया, ''मैं तो आपके विषय में कुछ नहीं जानती, किंतु प्रतीत होता है आप मेरे विषय में जाँच करते रहे हैं।''

''हाँ, मेरा नाम मधुर है। यदि आप हिन्दी उपन्यास पढ़ती होंगी तो आपने मेरा नाम सुना होगा।''

''मधुर?'' आत्मादेवी ने आश्चर्य से कहा। ''हाँ, नाम सुना है। आपकी एक पुस्तक भी पढ़ी है। परन्तु मैं तो समझती थी कि उस पुस्तक का लेखक कोई ऐसा कवि होगा, जो आकाश में विचरता होगा। उसके दर्शन करने के लिए बद्रीनारायण की यात्रा के तुल्य परिश्रम करना पड़ेगा। मैं तो स्वप्न में भी नहीं मान सकती थी कि मधुर कमल मेरा सहयोग पाने की इच्छा प्रकट करेगा।''

''अब आप वास्तविकता को जान गई हैं। मैं अपूर्ण हूँ और पूर्णता प्राप्त करने में यत्नशील हूँ।''

''इस पर भी ऐसी साझेदारी इतनी जल्दी तो स्वीकार नहीं की जा सकती। कई बातें विचार करने की हैं। मैं हूँ, मेरे सम्बन्धी हूँ, मेरे बच्चे हैं और फिर शायद और बच्चे हो जाएँगे। मेरी इच्छाएँ और कामनाएँ हैं। इन सब बातों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको अपनी बातों से सामंजस्य करना है। आप कर सकेंगे या नहीं? मैं भी कहाँ तक साथ दे सकूँगी, कह नहीं सकती।''

आत्मादेवी के यह उद्‌गार सुन मधुर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा, ''तो हम कब तक इस बात पर विचार करने योग्य हो सकेंगे? क्या हम कल फिर मिल सकते हैं?''

''हाँ मिल सकते हैं, परन्तु कल तक निर्णय हो सकेगा या नहीं, कह नहीं सकती।''

:: 3 ::

आत्मादेवी की आँखों के सम्मुख उसकी सब संचित कामनाएँ और वासनाएँ मूर्तिमान बन नाचने लगीं। वह मन में सोचती कि पड़ोसी और सम्बन्धी पसंद नहीं करेंगे, तो क्या होगा? मेरा उनसे कौन काम अटक जाएगा? बच्चे मन में क्या सोचेंगे? जब बड़े होंगे तो वे भी मेरे मन की अवस्था का अनुमान लगा सकेंगे। शारीरिक आवश्यकताओं का अनुभव उन्हें शरीर के पूर्ण विकसित होने पर होगा। इस समय उनका कुछ भी समझ लेना, कुछ भी अर्थ नहीं रखता।

इस प्रकार समाज के आचार-व्यवहार के प्रति विद्रोह की भावना जो पहले मन में ही छिपी थी, अब कार्यरूप में आने के लिए छटपटाने लगी। अगले दिन वह मधुर के मकान पर स्वयं गई और जीवन की अनेक व्याख्याओं पर विचार करती रही। विवाह हो या नहीं? बच्चों को कैसे रखा जाएगा? सम्बन्धियों को क्या कहेगी? स्वयं नौकरी करेगी या नहीं? घर-गृहस्थी कैसे चलेगी? यदि और बच्चे हुए तो उनका प्रबंध पहले के मुकाबले में क्या होगा? ये सब बातें एक दिन में समाप्त नहीं हो पाईं।

वे अगले दिन मिले और फिर मिले। लगभग एक सप्ताह के विचार-विनिमय करने के उपरांत, मधुर ने पड़ोस का एक बड़ा मकान भाड़े पर ले लिया। मधुर और आत्मादेवी दोनों उसमें जाकर रहने लगे। बच्चे मधुर को चाचा मानते थे।

जो बात अति मधुर और सुंदर प्रतीत होती थी, समीप आने पर भली प्रतीत नहीं हुई। कुछ दिन तक तो मधुर और आत्मादेवी इकट्ठे घूमते, बैठते, गाते, पढ़ते और खाते-पीते रहे, परन्तु धीरे-धीरे यह जीवन फीका प्रतीत होने लगा।

इस सम्बन्ध से पूर्व आत्मादेवी अत्यंत निर्धनता का जीवन व्यतीत करती थी। रात-दिन उसे निर्वाह की चिंता बनी रहती थी। इससे वह केवल एक ही बात के प्रति सचेष्ट रहती थी। वह थी पाठशाला में अध्यापन-कार्य भली-भाँति करना। और ऐसा करने में उसे इतनी मेहनत करनी पड़ती थी कि शेष किसी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
काम करने की शक्ति उसमें रह ही नहीं जाती थी। तब बच्चों का देखभाल तो भगवान के भरोसे ही रहती थी। अब उसे बच्चों की चिंता नहीं रही थी। मधुर स्वयं उन्हें पढ़ाता था और पाठशाला छोड़ आता था। उसने स्वयं पाठशाला में पढ़ाने का कार्य छोड़ दिया था। इससे दिन भर खाली रहती थी। मकान की सफाई और मधुर के सुख-चैन का ध्यान रखना मात्र ही तो कार्य रह गया था।

मधुर ने आत्मादेवी में एक विशेष सौम्यता देखी थी। वह वैधव्य के कारण थी। वैधव्य छूटने के पश्चात् वह सौम्यता चंचलता और चपलता में बदलने लगी। समय बहुत होता था। कार्य कम था। साथ ही रुचि वासना की ओर प्रवृत्त हो रही थी। अब उसने शृंगार करना आरम्भ कर दिया। धीरे-धीरे बढ़िया रेशमी कपड़े और फिर अन्य सुख-साधन की सामग्री भी उपलब्ध की जाने लगी। कुछ ही दिनों में आत्मादेवी का मधुर के साथ बाज़ार में से गुजरना लोगों के आकर्षण का कारण बन गया। मधुर गम्भीर, मौन, सरल तथा साधारण वस्त्र पहने होता था। आत्मादेवी चंचल, सुसज्जित, भड़कीले वस्त्रों में और आने-जाने वालों पर अपने नयनों के बाण छोड़ती हुई चलती थी। कुछ सीमा तक तो मधुर इसे सहन करता गया, परन्तु शीघ्र ही उसके सहने की सीमा का उल्लंघन हो गया।

मधुर और आत्मादेवी 'स्टैंडर्ड' में बैठे चाय पी रहे थे। एक अन्य ग्राहक, जो सामने मेज़ पर बैठा व्हिस्की और सोडा मिला सुड़कियाँ लगा रहा था, आत्मादेवी को देख रहा था। उसे ऐसा अनुभव हुआ कि वह भी उसकी ओर देख रही है। इससे वह एक बड़ा-सा घूँट सोडा-व्हिस्की का पी, कुर्सी से ढासना लगा, आत्मादेवी और मधुर की ओर देखने लगा। उसकी सूरत देख अथवा किसी कारण से आत्मादेवी मुस्कराई और उसकी आँखें झपक गईं। मधुर अपने मन में अपनी नई पुस्तक में लिखी जा रही कहानी पर विचार कर रहा था। उसका ध्यान चाय के प्याले की ओर था।

मधुर का ध्यान तब भंग हुआ, जब सामने की मेज़ पर बैठा वह ग्राहक अपनी बोतल और गिलास उठाकर मधुर के समीप आकर बैठ गया और पूछने लगा, "मुआफ करें, मैं आपका नाम जान सकता हूँ क्या?"

मधुर को क्रोध भी आया और विस्मय भी हुआ। बड़ी कठिनाई से क्रोध को भीतर-ही-भीतर दबाकर बोला, "आप किससे बात करना चाहते हैं?"

उसने निस्संकोच भाव से गिलास में से एक घूँट पीते हुए आत्मादेवी की ओर उंगली कर कहा, "मैं इनसे बात करना चाहता हूँ।"

आत्मादेवी इस बात से घबराई। उसने तुरंत कहा, "मैं आपको नहीं जानती।"

नए आकर बैठने वाले ने प्रति प्रश्न कर दिया, "वाह, आप मुझे नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानतीं? आप बलवंतसिंह ठेकेदार, डायरेक्टर खालसा बैंक और मालवा इन्श्योरेंस कम्पनी और चेयरमैन लाहौर आयरन सिंडीकेट को नहीं जानतीं? मैं तो आपको भली-भाँति जानता हूँ और....।''

मधुर यह सुनकर अवाक् रह गया। वह रह-रहकर बलवंतसिंह और आत्मादेवी की ओर देख रहा था। यद्यपि आत्मादेवी का मुख विवर्ण हो रहा था, परन्तु पाउडर और रूज के कारण वैसा दिखाई नहीं देता था। इस पर भी उसके काँपते हुए होंठ स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

बलवंतसिंह ने देखा कि होटल में बैठे दूसरे लोग उनकी ओर देखने लगे हैं। इससे मुआमले को शांति से निपटाने के लिए मधुर के कंधे पर हाथ रखकर बोला, ''मैं आपसे पृथक् में बात करना चाहता हूँ।''

मधुर ने समझा कि उसे पृथक् में ले जाकर, बातचीत कर टाल देगा। इस कारण वह उठा और बलवंत सिंह को उस मेज़ पर ले गया जहाँ वह पहले बैठा था। फिर उसकी बोतल और गिलास भी वहाँ ले जाकर रख दिए; वह उसके समीप बैठ गया और पूछने लगा, ''क्या बात है?''

''आपने इसके लिए कितना रुपया खर्च किया है?''

''किसके लिए?''

''इस औरत के लिए, एक रात का?''

''यह मेरी औरत है।''

''ठीक है। आप कितने में एक रात के लिए इसे देंगे?''

बलवंतसिंह का डील-डौल मधुर से दुगुना रहा होगा और फिर वह शराब के नशे में था। इस कारण कुछ चतुराई से कार्य करने के लिए मधुर ने कहा, ''आप यहीं बैठें, मैं अभी राय कर बताता हूँ।''

मधुर उठ आत्मादेवी के समीप आकर बैठ गया। एक ओर उसने होटल का दाम चुकाया और दूसरी ओर उसने आत्मादेवी से कहा, ''यहाँ से निकल चलना चाहिए।'' यह कहकर वह पुनः बलवंतसिंह के पास आकर बोला, ''कल इसी समय यहाँ आकर आपसे मिलेगी।''

''कितने पर तय किया है?''

इस प्रकार की बातचीत से मधुर के मन में ग्लानि उत्पन्न हो रही थी। पर क्या करता? वह जानता था कि होटल से बाहर निकल यदि इसने कोई झगड़ा कर दिया तो नगर-भर में बदनामी हो जाएगी। उसे पुलिस की सहायता में विश्वास नहीं था और न ही स्वयं इतना शक्तिशाली था कि बलवंतसिंह को पीटकर अपने और आत्मादेवी के मान की रक्षा कर सकता। इस कारण उसने कह दिया, ''एक सौ रुपया।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''ठीक है। कल सायं पाँच बजे से परसों प्रातःकाल तक।'' इतना कह वह जेब से रुपया निकाल देने लगा।

''कल स्वयं उसी को देना।'' इतना कह मधुर उठा और आत्मादेवी को साथ ले, होटल के बाहर निकल आया। वहाँ से वे दोनों सीधे अपने घर की ओर लौट पड़े। मार्ग में दोनों में किसी प्रकार की बातचीत नहीं हुई। दोनों अपने-अपने मन में इस घटना पर मनन कर रहे थे। मधुर सोच रहा था कि क्या सचमुच यह औरत उसके पास आने से पूर्व, वेश्यावृत्ति करती रही है ? सम्भव है। अन्यथा बीस रुपये मासिक में दो बच्चों के साथ निर्वाह करना कैसे सम्भव हो सकता था? यदि यह सत्य है तो इसके अन्य मित्र भी मिलने पर तंग करेंगे। उधर आत्मादेवी मन में सोच रही थी कि वह पति ही क्या है, जो अपनी स्त्री को अपमान से बचा नहीं सकता।

:: 4 ::

घर पहुँच मधुर अपनी खाट पर जाकर लेट गया। वह सोच रहा था कि उससे कहाँ भूल हुई है। अंत में वह एक ही परिणाम पर पहुँचा। उसे आत्मादेवी के व्यवहार में भूल प्रतीत होती थी। आत्मादेवी मधुर को इस प्रकार निरुत्साहपूर्वक खाट पर लेटा देख और भी क्षुब्ध हो उठी। वह सोचती थी कि कि यह कैसे नपुंसकों की भाँति पड़ रहा है। उसने उसे उत्तेजित करने के लिए कह दिया, ''यदि स्त्री की रक्षा करने का बल और साहस नहीं था, तो विवाह ही क्यों किया था?''

इस लांछन से मधुर को भी क्रोध चढ़ आया। और लांछन की सत्यता ने इस क्रोधाग्नि को भड़काने में घी का काम किया। वह उठकर खाट पर बैठ गया और बोला, ''यदि तुम्हारी पहले ही ऐसे लोगों से मित्रता थी, तो मुझसे विवाह करने की क्या आवश्यकता थी?''

''कौन कहता है मेरी उससे मित्रता थी?''

''तुम्हारी बेचैनी और घबराहट बताती थी।''

''यह झूठ है।''

''तो मैं झूठ बोलता हूँ?''

''हाँ, अपनी दुर्बलता छिपाने के लिए।''

''मेरी शक्ति एक दुराचारिणी को बचाने के लिए नहीं है।''

दोनों क्रोध से विक्षुब्ध हो रहे थे और घटना के वास्तविक कारण तक पहुँचने में अशक्त थे। अपने को दुराचारिणी कहा जाना आत्मादेवी से सहन नहीं हो सका। वह बोली, ''मैं नहीं जानती थी कि ऐसे मूर्ख से पाला पड़ेगा। खैर, मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी तुम्हारा घर छोड़कर जा रही हूँ। जो होगा देखा जाएगा।''

इतना कह वह साथ के कमरे में बैठे खुशीराम और ललिता को बुलाने लगी, ''खुशी-लाली! इधर आओ। अब इस घर का एक दाना खाना भी हराम है।''

मधुर चुपचाप बैठा उसका मुख देखता रहा। आत्मादेवी बच्चों को तैयार करने के बहाने, एक से दूसरे कमरे में और दूसरे से तीसरे कमरे में जा-जाकर समय टालने लगी। लगभग पंद्रह मिनट तक ऐसे ही चलता रहा। मधुर खाट पर बैठा यह सब कुछ देख रहा था। वह सोचने लगा कि यदि यह औरत चली गई तो फिर वेश्यावृत्ति में फँस जाएगी। साथ ही आत्मादेवी अब गर्भवती प्रतीत होती थी। इससे यदि उन्हें एक-दूसरे को छोड़ना ही है तो उसके लिए यह समय उपयुक्त नहीं है। पंद्रह मिनट में मधुर का क्रोध शांत हो गया और उधर आत्मादेवी भी जब अंततः जाने ही लगी तब तक यह तय नहीं कर सकी थी कि आखिर कहाँ जाए। इससे मधुर के यह कहते ही कि ''देखो देवी! जाने से पहले कई बातें विचार करने की होंगी, सो उनको विचार कर जाना। अभी ठहरो।'' वह एक कोने में फर्श पर बैठ गई और गम्भीर हो विचार करने लगी।

आत्मादेवी ने पहला, कूचा चिड़ीमाराँ वाला मकान खाली कर मालिक मकान को वापस कर दिया था। उसके सम्बन्धियों को भी यह बात पता चल चुकी थी कि वह बिना विवाह किए किसी पुरुष के पास रहने लगी है। इससे किसी सम्बन्धी के पास जाकर रहना असम्भव था। फिर वह कहाँ जाएगी? इसी विचार से वह विवश थी। साथ ही निर्वाह का प्रश्न था। अब तो विद्यालय की नौकरी भी छूट चुकी थी।

रात तक दोनों का क्रोध शांत हो चुका था और दोनों अपना व्यवहार बुद्धियुक्त करने पर तत्पर हो चुके थे। मधुर घर से चला गया था। वह रात के ग्यारह बजे लौटा तो उसे पता चला कि घर में खाना नहीं बना और बच्चों ने भी कुछ नहीं खाया। उसने पूछा—''खाना क्यों नहीं बनाया?''

''मन नहीं किया।''

''तो बच्चे क्या खाएँगे?''

''मर जाएँ। मैं क्या करूँ?'' इतना कहते-कहते आत्मादेवी के आँसू निकल आए।

मधुर ने कहा, ''मैंने तुम्हें जाने को नहीं कहा था। तुम्हें भोजन बनाने-खाने से भी मना नहीं किया था।''

''तो क्या एक दुराचारिणी को घर पर रखने का विचार है?''

''क्या हानि है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''और उस पर मुसीबत पड़े तो उसकी रक्षा के लिए आप लड़ना नहीं चाहते न?''

इस प्रश्न पर मधुर कुछ झेंप गया। फिर अपने को काबू में कर बोला, ''जब कोई दुर्बल के आश्रय रहना चाहे, तो क्या किया जाए?''

''परन्तु कोई दुर्बल बने ही क्यों?''

''ठीक, और भोजन न करने से दुर्बलता कम नहीं होगी न? अतः देखो देवी! मैं बाज़ार से दूध और डबल-रोटी ले आता हूँ। खाओ और सो रहो। कल से डंड पेलूँगा, अन्यथा इस संसार में रहना कठिन हो जाएगा।''

उस दिन तो बात समाप्त हो गई, परन्तु एक-दूसरे के प्रति दोनों के मन की कटुता समाप्त नहीं हुई थी। परिणाम यह हुआ कि इसके पश्चात् मधुर आत्मादेवी को साथ ले, घर से बाहर नहीं निकल सका। दोनों घूमने जाते तो अकेले-अकेले जाते। घर के भीतर दोनों का परस्पर व्यवहार अवश्य साधारण हो गया।

उस दिन की घटना का कारण तो अब भी ज्यों-का-त्यों बना हुआ था। आत्मादेवी ने शृंगार करना छोड़ा नहीं था। जब भी वह घर से बाहर जाती थी तो बढ़िया वस्त्र, मुख पर पाउडर, होंठों पर सुर्खी, गले में मोतियों की माला, कसी ऊँची जैकेट, जिससे पेट के नीचे का भाग थोड़ा दिखाई देता रहता था, उलटी साड़ी और चमकदार सैंडल, हाथ-पाँव के नाखून होंठों की भाँति रँगे हुए और फिर सिर के पीछे बड़ा-सा जूड़ा, जिस पर बाज़ार घूमने के समय मोतिया के फूलों की लड़ लिपटी रहती थी। ये सब किसी भी रसिक को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए पर्याप्त थे।

अपने मुहले में भी आत्मादेवी लोगों का ध्यान आकर्षित किए बिना नहीं रही। यह बात तो सबको विदित हो चुकी थी कि आत्मादेवी मधुर की विवाहिता पत्नी नहीं अपितु संगिनी-भर है और मधुर को मुहल्ले के लोगों ने कई बार टोका भी था कि यह वेश्या कहाँ से ला रखी है। परन्तु वह उनकी सुनता नहीं था।

मधुर की दुनिया पृथक् थी। वह छह-छह मास तक बिना किसी से मिले अथवा बोले पुस्तक लिखने में लीन रहता। केवल घूमने घर से बाहर जाता और फिर जब पुस्तक समाप्त हो जाती तो प्रकाशक ढूँढने में लग जाता। इस प्रकार उसे मुहल्ले वालों के घर अथवा अन्य किसी स्थान पर जाने का न तो अवकाश था और न ही रुचि। उसकी पुस्तकें खूब चलती थीं। और वह दिन-प्रतिदिन पैसे वाला होता जाता था। आत्मादेवी के आ जाने से अब उसे घर के प्रबंध-सम्बन्धी अनेक झंझटों से भी छुटकारा मिल गया था। फिर जब से आत्मादेवी से झगड़ा हुआ था, वह आत्मादेवी की सेवाओं का उपभोग तो करता था, परन्तु कुछ रुपये दे देने के अतिरिक्त उसके प्रति अपना कोई अधिक उत्तरदायित्व नहीं समझता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार समय व्यतीत हो रहा था। आत्मादेवी के बच्चा हुआ, परन्तु दो मास के भीतर ही मर गया। प्रसव के पश्चात् आत्मादेवी बीमार हो गई। दिनोंदिन उसका स्वास्थ्य गिरने लगा। वह डॉक्टर को दिखाने गई तो डॉक्टर ने बताया, ''तुम्हें धीमा-धीमा ज्वर रहता है और तपेदिक हो जाने की सम्भावना है। तुम्हें पहाड़ पर चला जाना चाहिए और वहाँ रहकर ओषधि सेवन करनी चाहिए।''

आत्मादेवी ने यह बात डॉक्टर से लिखवा ली और उसकी यह पर्ची रात को मधुर के सम्मुख रख दी। मधुर ने सम्मति पढ़ी तो ध्यान से आत्मादेवी की ओर देखा। वास्तव में उसका मुख पीला पड़ गया था। उसने उसके गाल पर हाथ लगाकर देखा। वह जलता प्रतीत हुआ।

मधुर ने अपनी मेज़ की दराज में से चैकबुक निकाल एक सहस्त्र रुपये का चैक काटकर दे दिया और कहा, ''जहाँ मन करे, चली जाओ।''

''आप साथ नहीं चलेंगे?''

''नहीं, मोटेराम ऐंड सन्ज मेरी पुस्तक छपवा रहे हैं और मैं प्रूफ देखने के लिए यहीं रहूँगा।''

अगले दिन आत्मादेवी डॉक्टर से राय कर, अकेली सोलन चली गई। बच्चों को अभी स्कूल से छुट्टियाँ नहीं हुई थीं। इसलिए वे मधुर के पास ही रह गए।

सोलन में आत्मादेवी का स्वास्थ्य शीघ्र ही सुधरने लगा था, परन्तु मधुर उसे यही लिखता रहा, ''जब तक ठीक न हो जाओ वहीं रहो। पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर आना।'' दो मास उपरांत एक सहस्त्र रुपया और भेज दिया गया और फिर दो महीने पीछे और रुपया भेजा गया। बच्चों को स्कूल से छुट्टियाँ हुईं, परन्तु मधुर को उन्हें लेकर सोलन जाने का अवकाश नहीं था। आत्मादेवी ने कई बार लिखा, परन्तु परिणाम कुछ नहीं हुआ।

आत्मादेवी का स्वास्थ्य सुधर रहा था। इस कारण वह सोलन छोड़ नहीं सकी। गर्मी गई, बरसात गई और फिर जाड़ा आ गया। आत्मादेवी अब पूर्ण रूप से स्वस्थ थी। ज्वर इत्यादि नहीं था। उसका वजन भी बढ़ गया था। उसने मधुर को लिखा कि वह लाहौर लौट आना चाहती है। मधुर का उत्तर नहीं आया, परन्तु खुशीराम की एक चिट्ठी आई, लिखा था, ''माँ! मैं और ललिता बहुत उदास हैं। चाची हमें दूध नहीं देती। चाचा कहता है तो हाँ करती है पर देती कभी नहीं। मेरे कपड़े मैले हो रहे हैं। वह धोती नहीं। धोबी कई दिन से नहीं आया। कल चाचा और चाची रोटी खाने किसी के घर गए थे। हमें साथ नहीं ले गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमने दूध पिया। पेट नहीं भरा, परन्तु और पैसे नहीं थे। आज प्रातः ललिता ने चाची से कहा, तो उसने एक चपत मुख पर लगा दी। माँ! अब तुम आ जाओ—खुशी।''

लिफाफे पर पता लिखा था, 'आत्मादेवी, सोलन।' पता ठीक न लिखने के कारण चिट्ठी कई दिन तक डाकघर में पड़ी रही। आत्मादेवी डाकघर के सम्मुख से गुजरी तो अपनी चिट्ठी पूछने भीतर चली गई। वहाँ बोर्ड पर अपने बालक के हाथ से लिखे पते की चिट्ठी देख चकित रह गई। चिट्ठी पढ़ी तो वह चिंता में डूब गई। यह 'चाची' कौन है ? उसका अधिकार बच्चों को पीटने का कैसे हो गया ? दूध नहीं देती। कपड़े मैले रहते हैं। यह सब पढ़ वह लाहौर जाने के लिए उतावली हो उठी।

दो दिन में वह लाहौर जा पहुँची। मकान पर पहुँची तो बच्चे स्कूल गये हुए थे। मधुर दिल्ली गया हुआ था और वहाँ पर एक लड़की बैठी देवकीनंदन खत्री लिखित चंद्रकान्ता पढ़ रही थी।

जब कुली बिस्तर लेकर मकान पर पहुँचा तो उसने पूछा, ''किसका सामान है ?''

कुली ने उत्तर दिया, ''बीवीजी आ रही हैं।''

''ठहरो, मत रखो इसे। पहले बीवीजी को आने दो।''

कुली ठहर गया। आत्मादेवी तांगे का भाड़ा दे ऊपर आई तो उस लड़की ने अकड़कर पूछा, ''आप कौन हैं ?''

आत्मादेवी ने उसे सिर से पाँव तक देख कहा, ''मेरा नाम आत्मादेवी है। मधुर जी से मिलने आई हुई हूँ।''

''वे घर पर नहीं हैं।''

''तो मैं प्रतीक्षा करूँगी।''

''वे कई दिन तक नहीं आएँगे।''

''मैं तब तक प्रतीक्षा करूँगी।''

लड़की अभी सोच ही रही थी कि क्या करे कि आत्मादेवी ने कुली से सामान रखवा लिया। लड़की समझ तो गई थी कि आने वाली औरत ललिता की माँ है, परन्तु यह प्रकट करना नहीं चाहती थी।

आत्मादेवी ने बैठक में एक कुर्सी पर बैठते हुए पूछा, ''आप कब से यहाँ हैं ?''

''जब से मेरा विवाह हुआ है।'' यह कह वह हँस पड़ी।

''ठीक है, क्या मैं आपका नाम जान सकती हूँ ?''

''बताने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''अच्छी बात है। तो बहिन जी! आप किस कमरे में ठहरी हैं?''

''मैं सारे मकान में ठहरी हूँ।''

''ललिता और खुशीराम किस स्थान पर रहते हैं?''

''ऊपर बरसाती में।''

''अच्छी बात है, मैं वहीं ठहरूँगी।''

''बिना मकान-मालिक की स्वीकृति के?''

''उनकी स्वीकृति मेरे पास है।''

''किनकी?''

''मालिक की।''

''सो तो मैं हूँ।''

इस पर आत्मादेवी को क्रोध आया। बैठक की दीवार के साथ लगी खूँटी पर छाता लटक रहा था। उसने उसे उतार लिया और दाहिने हाथ में पकड़ बोली, ''बहुत बड़बड़ की तो धक्के देकर बाहर निकाल दूँगी।''

लड़की युवती थी। आत्मादेवी क्रोध से उतावली हो रही थी। दोनों गुत्थम-गुत्था हो गईं। छाता लड़की के सिर पर लगा तो टूट गया। पश्चात् नाखूनों और दाँतों से लड़ाई होने लगी। वह युद्ध पंद्रह मिनट तक चलता रहा। कभी आत्मादेवी नीचे हो जाती थी और कभी वह लड़की। जब दोनों थककर चूर-चूर हो गईं तो एक-दूसरे को छोड़ आमने-सामने की दीवारों का ढासना ले, बैठ हाँफने लगीं।

दोनों के मुख लहू-लुहान हो गए थे और बाल खुल गए थे। कुछ साँस लेने के पश्चात् वे एक-दूसरे को गाली देने लगीं। जब गाली देती-देती थक गईं तो आत्मादेवी रोने लगी। उसे रोते देख दूसरी हँसने लगी।

इस पर आत्मादेवी ने कहा, ''भगवान करे तू भी रोए और मुझसे अधिक रोए।''

''डोम के कहने से गउएँ नहीं मरतीं।''

इस प्रकार दोनों लड़ती-झगड़ती, गाली बकती और कभी-कभी समीप पड़ी वस्तु को एक-दूसरे पर फेंकती रहीं।

साढ़े ग्यारह बज गए। ललिता और खुशीराम स्कूल से लौट आए। दोनों माँ की यह अवस्था देख विह्वल हो माँ के गले से लिपट गए। आत्मादेवी उनको लेकर ऊपर बरसाती में चली गई।

:: 6 ::

मधुर को दिल्ली से लौटने में कई दिन लग गए। तब तक आत्मादेवी मकान की छत पर बरसाती में रही। बच्चों को स्कूल भेजती और उनके खाने-पहनने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबंध कर देती। उसके आ जाने से उनका सारा प्रबंध अब उसे ही करना पड़ गया था। स्वयं वह घर से बाहर नहीं निकलती थी। उसे भय था कि उसके बाहर जाने पर उसके लिए घर का दरवाज़ा ही बंद हो जाएगा।

जब मधुर आया तो दोनों स्त्रियों के मुख के घाव ठीक हो चुके थे। दोनों कई दिनों से शांतिपूर्वक उसके आने की प्रतीक्षा कर रही थीं। मधुर जब स्नानादि से निश्चिंत हुआ तो आत्मादेवी छत से उतर उसके सम्मुख आकर खड़ी हो गई। आत्मादेवी के मुख पर घृणा की मुद्रा बनी हुई थी।

मधुर ने उसे देखा तो बिना किसी प्रकार की घबराहट तथा चिंता प्रकट किए पूछा, ''तो तुम आ गई हो ? मेरा विचार था कि अभी एक-आधा मास और वहाँ रहोगी।''

आत्मादेवी ने कहा, ''यह नई बीवी जो ले आए हो। इससे मेरा वहाँ रहना कठिन हो गया और मुझे आना पड़ा।''

मधुर ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मैं समझता हूँ, वहाँ से यहाँ अधिक कठिन रहा होगा।''

आत्मादेवी ने जब देखा कि उसे बैठने तक के लिए नहीं कहा गया तो ढीठ बन स्वयं मधुर के सामने बैठ गई और बोली, ''हाँ, परन्तु बच्चों को कष्ट होने लगा था।''

''कुछ था और यह स्वाभाविक ही था। परन्तु उतना कष्ट नहीं था, जितना तुम्हारे इस घर में आने से पूर्व था।''

आत्मादेवी ने सोचा कि मधुर ठीक ही कहता है। तब तो बच्चों को दूध भी कभी नहीं मिलता था। उन्होंने घी कभी नहीं खाया था। तेल का ही प्रयोग होता था। इससे कुछ लज्जा अनुभव कर बोली, ''आपकी अत्यंत कृपा है। पर अब मैं क्या करूँ ? इस प्रकार आपकी इस नई बीवी के साथ रहना तो असम्भव है।''

''मैं भी यही समझता हूँ। और मुझमें दो स्त्रियों को रखने की योग्यता भी नहीं है। साथ ही मैंने जिस अवस्था में तुम्हें पाया था, उससे बुरी अवस्था तुम्हारी नहीं होने दूँगा।''

आत्मादेवी यद्यपि इस अवस्था से संतुष्ट नहीं थी तो भी मधुर को शांतिपूर्वक बातें करते देख उत्सुकता से उसको देखती रही। मधुर ने कहना जारी रखा, ''देखो देवी ! यह साथ का मकान, जहाँ मैं पहले रहता था, मैंने फिर भाड़े पर ले लिया है। उसका किराया मैं दे दिया करूँगा। साथ ही बीस रुपये मासिक, जो वेतन तुम पाठशाला से पाती थीं दे दिया करूँगा। जब तुम किसी प्रकार से ऐसी स्थिति में हो जाओ कि तुम्हें मेरी सहायता की आवश्यकता न रहे, तो तुम स्वयं अपना निर्वाह कर लिया करना। मैं कमला के साथ इस घर में रहूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मादेवी का मस्तिष्क चक्कर खाने लगा था। यद्यपि उसके भूखों मर जाने की सम्भावना नहीं थी और उसके बच्चों का पालन-पोषण भी हो सकता था, इस पर भी मधुर का उसे इस प्रकार छोड़ देना, जैसे कोई पुरानी जूती उतार कर फेंक देता है, उसे पसंद नहीं आया। मधुर ने अपनी ओर से आत्मादेवी के लिए किया गया प्रबंध उसे बताकर कमला को आवाज़ दी। कमला आ गई और माथे पर त्योरी चढ़ाकर आत्मादेवी की ओर देखने लगी। मधुर ने कहा, ''देखो, ललिता की माँ को मैंने सब बात बता दी है। तुम मेरे साथ मकान में रहोगी और इसने हमारे बगल का मकान किराये पर ले लिया है।''

कमला ने इस प्रबंध पर अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा, ''यह बगल वाला मकान ही क्यों?''

''उसकी यही इच्छा है।''

''पर मेरी यह इच्छा नहीं है।''

''तो तुम उसे मना कर दो।''

''उस दिन के छाता लगने से मेरा सिर अभी तक दुख रहा है।''

''तो चुप कर रहो। कहीं अब घुटना भी दुखने न लगे।''

आत्मादेवी की हँसी निकल गई। इस पर मधुर ने कहा, ''देखो देवी! मैं दो मेंढ़ों को परस्पर लड़ते देखना नहीं चाहता। मुझे मेंढ़ों की लड़ाई देखने का शौक कभी नहीं रहा।''

''अच्छी बात है।'' इतना कह आत्मादेवी अपना सामान उठवा बगल के मकान में जाकर रहने लगी। कमला में ऐसी कौन-सी बात है जिससे मधुर उसकी ओर आकर्षित हुआ था, यह बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। वह इस रहस्य को जानने के लिए बहुत उत्सुक थी।

कुछ काल तक मधुर मकान का भाड़ा और बीस रुपये मासिक आत्मादेवी को देता रहा। जब आत्मादेवी को म्युनिसिपल बोर्ड की एक पाठशाला में चालीस रुपये मासिक मिलने लगे, तो मधुर ने सहायता देनी बंद कर दी।

: 7 ::

सनातन धर्म पाठशाला और म्युनिसिपल बोर्ड की पाठशाला के वातावरण में अंतर था और आत्मादेवी को, अपने अफसरों के कुछ प्रसन्नवदन रहने से, तरक्की और सुविधाएँ मिलने लगी थीं। कमेटी के स्कूलों का एक इंस्पेक्टर रफी अहमद ज़ैदी आत्मादेवी में दिलचस्पी लेने लगा। उसने आत्मादेवी से कहा, ''यदि तुम थोड़ी अंग्रेजी पढ़ लो तो वेतन सौ रुपया करवा दूँगा।''

आत्मादेवी ने एक नवयुवक अध्यापक, बृजबिहारी से अंग्रेजी सीखनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ कर दी। अंग्रेजी की तो छह मास में तीन पुस्तकें पढ़ ली गईं, परन्तु बृजबिहारी धीरे-धीरे उसके साथ घर में ही रहने लगा।

आत्मादेवी को अब पाँचवीं श्रेणी को अंग्रेजी और हिन्दी पढ़ाने का काम दिया गया और उसका वेतन एक सौ दस रुपया कर दिया गया। यह सब तरक्की इंस्पेक्टर ज़ैदी साहब ने दिलवाई थी। आत्मादेवी को उसे प्रसन्न करने के लिए कभी-कभी उसके साथ सिनेमा देखने जाना पड़ता था।

गाड़ी इसी प्रकार चल रही थी कि एक दिन मधुर बहुत अस्त-पस्त अवस्था में अपने मकान के नीचे बाज़ार में खड़ा दिखाई दिया। आत्मादेवी, ज़ैदी साहब की मोटर साइकिल के पीछे बैठी हुई, सायंकाल का 'सिनेमा शो' देखकर आई थी। मोटर साईकिल से उतरी तो मधुर को परेशान खड़ा देख प्रश्न-भरी दृष्टि से उसको देखने लगी। मधुर उसके समीप आ पूछने लगा, ''देवी! कहीं कमला को तो नहीं देखा?''

''मैं तो सुबह की घर से गई हुई थी। क्या बात है?''

''मुझे आज छापेखाने में काम था। मैं घर से नौ बजे ही चला गया था। अभी आठ बजे आया हूँ तो मकान का दरवाज़ा खुला पाया है और सिवाय फर्नीचर के शेष सब सामान गायब है। कमला का भी पता नहीं।''

ज़ैदी ने देखा कि चोरी का मामला है। इससे आत्मादेवी को 'गुड नाइट' कर विदा हो गया। आत्मादेवी भी मधुर को यह कह कि पुलिस में रिपोर्ट कर दे, अपने घर की ओर चल दी।

इसके दो दिन पश्चात् मधुर आत्मादेवी से मिलने आया। रविवार का दिन था। आत्मादेवी स्कूल नहीं गई थी। सिर धो मकान की छत पर बैठी बाल सुखा रही थी। बृजबिहारी अपने काम से नगर से बाहर गया हुआ था। बच्चे नीचे की मंजिल पर खेल रहे थे।

मधुर अपने मकान की छत पर से कूदकर आत्मादेवी के मकान की छत पर आ गया। आत्मादेवी ने उसे आते देख पूछा, ''कमला का पता मिला?''

''नहीं! इतना पता चला है कि दो आदमी एक ट्रक में आए थे और उनकी सहायता से कमला सब सामान ट्रक में रखवाकर ले गई है।''

''तो आपने पुलिस में रिपोर्ट लिखवा दी है?''

''नहीं।''

''क्यों?''

''पुलिस बहुत-सी बातें पूछती, जो मैं बताना नहीं चाहता।''

''तो आप ऐसी बातें करते ही क्यों हैं, जो आप दूसरों को बता नहीं सकते?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''दूसरे लोगों के मन का विकास वैसा नहीं है, जैसा मेरा। मैं विवाह की रस्म को व्यर्थ समझता हूँ। स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध एक सुविधा की बात है। जब तक रहता है रहे, जब नहीं रह सकता तो टूट जाए।''

आत्मादेवी इस मीमांसा को सुन मुस्कराई और बोली, ''तो ठीक है। कमला को सुविधा नहीं रही सो चली गई, जैसे आपको सुविधा न रहने पर आपने मुझे घर से निकाल दिया था।''

मधुर को कुछ लज्जा आई। आँखें नीचे किए हुए उसने कहा, ''मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूँ।''

''इससे क्या लाभ होगा? एक समय था कि आपकी गाड़ी बिना किसी घरवाली के चलती नहीं थी और मेरा भी निर्वाह नहीं हो रहा था। हम दोनों एक-दूसरे के सहयोग के इच्छुक थे। अब मुझे आपकी आवश्यकता नहीं रही।''

''सुना है तुम सौ रुपया मासिक वेतन पाती हो। परन्तु मैं तुम्हें और अधिक दे सकता हूँ।''

आत्मादेवी की हँसी निकल गई। वह बोली, ''पुरुषों को रुपये और कमाई का बहुत मान है न। मैं अब आपकी कमाई के आश्रय पर रहने की आवश्यकता नहीं समझती।''

''परन्तु कमाई के अतिरिक्त भी तो कुछ बातों की आवश्यकता रहती है।''

''वे सब मुझे प्राप्त हैं।''

इसके आगे कुछ कहने को नहीं रहा। मधुर वापस अपने मकान पर लौट गया।

:: 8 ::

आत्मादेवी का निर्वाह पहले से अधिक अच्छी प्रकार होता था। बच्चों को अच्छे वस्त्र, अच्छा भोजन मिल जाता था, परन्तु घर का वातावरण उनकी दृष्टि में 'सायरबीन' के बदलते दृश्य की भाँति था। खुशीराम ज्यों-ज्यों बड़ा होता जाता था, अपने चारों ओर बदलते हुए दृश्यों को देखने लगा था और फिर उन दृश्यों का अपने मन में अर्थ लगाने लगा था। उसे स्मरण था कि उसकी माँ कूचा चिड़ीमाराँ में रहती थी। तब उनको रात में पीने को दूध नहीं मिलता था। कपड़े फटे रहते थे, घर पर धोए जाते थे और फटने पर बार-बार सिये जाते थे। माँ प्रायः रोया करती थी और पड़ोसी उनसे प्यार करते थे। फिर उसके मन पर स्पष्ट अंकित था कि वे लोग पैसा अखबार बाज़ार में आए और मधुर चाचा के प्यार के भाजन बन गए। इसके पश्चात् कमला चाची से उनका पाला पड़ा। अपनी माँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कमला चाची को लड़ते उन्होंने देखा था। परिणामस्वरूप उन्हें घर छोड़ना पड़ा था। अब चित्र फिर बदला। पहले-सी निर्धनता, पश्चात् माँ का म्युनिसिपल मेम्बरों और अफसरों के घरों में जाना, उनसे मेल-मिलाप पैदा करना। इससे भोजन-वस्त्र की सुविधाओं में पुनः वृद्धि होने लगी थी। चित्र फिर बदला। बृजबिहारी चाचा का घर में आकर रहना और रफी अहमद ज़ैदी की मोटरसाईकल पर सवार होकर माँ का नित्य सायंकाल जाना, खुशीराम से छुपा नहीं था।

इधर ललिता की देखभाल का भार खुशीराम पर अधिक और अधिक पड़ता जा रहा था। खुशीराम अब आठवीं श्रेणी में पढ़ता था। उसे संसार का ज्ञान हो रहा था। तब तक बृजबिहारी भी छोड़कर जा चुका था और उसके कमरे में एक कृष्ण चाचा आकर रहने लगे थे। ललिता सातवीं श्रेणी में पढ़ती थी और अच्छी सुंदर प्रतीत होने लगी थी।

कृष्ण चाचा के आने से खुशीराम को ऐसा अनुभव होने लगा कि वह ललिता से अधिक प्यार रखता है। उसकी प्रत्येक आवश्यकता तुरंत पूर्ण हो जाती है। खुशीराम के साथ तो वह कभी बात भी नहीं करता। इससे खुशीराम के मन में ईर्ष्या उत्पन्न होने लगी थी।

इन्हीं दिनों एक और अनुभव उसे हुआ। जब वह बाज़ार में से गुजरता तो दूकानदार अपना काम छोड़ उसकी ओर देखने लगते थे। जब कभी वह हलवाई की दुकान पर जाकर खड़ा होता तो लोग उसे ऐसे देखने चले आते, जैसे वह कोई चिड़ियाघर का दर्शनीय प्राणी हो। वह अपने मन में इस सबका कारण जानना चाहता था, परन्तु जान नहीं पाता था। एक दिन स्कूल की छुट्टी के समय एक लड़के से झगड़ा हो गया। इसने उस लड़के को पीटा। उसने इसे गाली दी, "रण्डी के लड़के।"

खुशीराम ने इसके प्रतिकार में गाली दी, "रण्डी तुम्हारी माँ।"

इस पर लड़के, जो लड़ाई देख रहे थे, हँसने लगे। उस लड़के ने कहा, "इन सबसे पूछ लो रण्डी तुम्हारी माँ है।"

"हाँ! हाँ!!" बहुत से लड़कों ने कहा और तालियाँ पीटने लगे। खुशीराम क्रुद्ध हो तालियाँ पीटने वालों पर झपटा। कुछ लड़के भाग खड़े हुए। कुछ ने मिलकर उसे खूब पीटा।

खुशीराम लड़ता-लड़ता थक गया तो चक्कर खाकर सड़क के किनारे बैठ गया। एक राह चलते भले मनुष्य ने उसे लड़कों से छुट्टी दिलाई और उसे घर विदा किया। घर पहुँचा तो उसने देखा कि ललिता कृष्ण चाचा के कमरे में है और वह उसका मुख चूम रहा है। खुशीराम के क्रोध का वार-पार न रहा। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललिता को जोर से पुकारा, ''ललिता!''

ललिता लपककर एक तरफ हट गई। कृष्ण चाचा हँसने लगा।

खुशीराम के कपड़े लड़कों से लड़ाई में फट गए थे। उसने कपड़े बदले, हाथ-मुँह धोये, और रसोई-घर में चला गया। ललिता वहाँ पहुँच चुकी थी। अपने तथा भाई के लिए थाली में भोजन परोस रही थी।

खुशीराम ने क्रोध में कहा, ''देखो लाली! कृष्ण चाचा के कमरे में अकेली मत जाया करो।''

''क्यों?'' उसने अचम्भे में पूछा।

''माँ नाराज़ होंगी।''

''नहीं होंगी।''

''मैं तुम्हें पीटूँगा।''

''क्यों?''

''बताऊँ क्यों?'' खुशीराम ने एक चाँटा उसके मुख पर लगा दिया। ललिता ने थाली से रोटी उठा उसके मुख पर दे मारी।

इस समय आत्मादेवी आ गई। वह बच्चों को इस प्रकार लड़ते देख डाँटकर पूछने लगी, ''क्या है ललिता!''

''भैया ने तमाचा मारा है?''

''क्यों खुशी? क्यों मारा है?''

''यह कहना नहीं मानती।''

''ललिता! तुम भैया से छोटी हो। तुम्हें इसका कहना मानना चाहिए।''

इस समय कृष्ण आ उपस्थित हुआ और कहने लगा, ''खुशीराम स्कूल में लड़कों से लड़कर आया है। मालूम होता है वहाँ मार खाई है और अपना क्रोध ललिता पर निकाल रहा है। ज़रा इसके स्कूल के कपड़े देखो।''

आत्मादेवी को फुरसत नहीं थी। ज़ैदी साहब नीचे खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इस कारण उसने कृष्ण को मना किया, खुशीराम को डाँटा और ललिता को प्यार किया और तुरंत कपड़े बदल मकान के नीचे उतर गई।

इस दिन की घटना ने तो खुशीराम को अपनी और घर की बातों पर और भी विचार करने पर विवश कर दिया।

:: 9 ::

उसमें माँ से पूछने का साहस नहीं था, वह कृष्ण से घृणा करता था और दूसरे लोग उससे घृणा करते थे। इससे घर की अवस्था का चित्र वह अपनी बुद्धि के अनुसार बनाता रहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह यह तो समझने लगा था कि उसकी माता को लोग अच्छा नहीं समझते, पर क्यों? यह वह समझ नहीं पाता था। अब वह दसवीं श्रेणी में पढ़ता था। उसे संसार का ज्ञान होता जाता था। स्त्री-पुरुष के परस्पर सम्बन्ध को वह समझने लगा था और जो कुछ लोग कहते थे उसकी समझ में आने लगा था, परन्तु उसने अपनी माता के व्यवहार में कभी कोई ऐसी बात नहीं देखी थी, जिससे उसे लोगों के कहने में कुछ तथ्य प्रतीत होता।

एक दिन हलवाई की दुकान पर दूध पी रहा था कि किसी ने हलवाई से कह दिया, ''इन बाबू से तो दुगुने दाम लेते होंगे?''

हलवाई ने मुस्कराते हुए पूछा, ''क्यों?''

उसने उत्तर दिया, ''हराम की कमाई है। कौन मेहनत करनी पड़ती है।''

''भाई! हराम की है या हलाल की, तुम्हें इससे क्या? तुम्हारी जेब से तो नहीं जाती।''

''हमारी जेब से जाती तो हम कृत-कृत्य हो जाते।''

खुशीराम ऐसा बैठा था, मानो वह कुछ सुन ही नहीं रहा हो, परन्तु अंतिम बात सुन वह अपने को वश में नहीं रख सका। वह अपने स्थान से उठा। उसके बाएँ हाथ में दूध की 'बाटी' थी। उसने वही हँसी करने वाले के मुख पर दे मारी और दाहिने हाथ का मुक्का कस उस पर पिल पड़ा।

दूसरी ओर भी लड़ने वाला व्यक्ति दुर्बल नहीं था। दोनों गुत्थम-गुत्था हो गए। बाज़ार में दर्शकों की भीड़ लग गई। खुशीराम अभी बच्चा था और मार खा रहा था, परन्तु वह अपमान का बदला लेने के लिए लड़ना आवश्यक समझता था। दूसरा दो-तीन मुक्के तथा ठोकरें मारता तो एक-आध खुशीराम भी मार देता था। इस प्रकार लड़ाई चल रही थी। खुशीराम जब भी लपककर अपने विरोधी पर आक्रमण करता तो दर्शक लोग उसको प्रोत्साहन देने के लिए कहते, 'शाबाश बच्चू।'

खुशीराम थकता जा रहा था और उसी आँखों के सामने बाज़ार, मकान और दर्शक चक्कर काटने लगे थे। यदि झगड़ा एक-दो मिनट भी और चलता तो वह अचेत हो भूमि पर गिर पड़ता। तभी मधुर भीड़ को चीरता हुआ दोनों लड़ने वालों के बीच आ खड़ा हो गया। यह सुअवसर देखा खुशीराम अपने प्रतिपक्षी पर फिर झपटा, परन्तु मधुर ने उसे अपनी भुजाओं में दबोच लिया।

मधुर खुशीराम को भीड़ में से निकालकर एक ओर ले गया। खुशीराम का धीरज टूट गया और वह रोने लगा। मधुर उसे अपने मकान पर ले गया। उसका मुख धुलाया, उसे आराम से बैठाया और झगड़े का कारण पूछने लगा—''क्या हुआ था, खुशी?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रश्न पर उसके आँसू फिर टपकने लगे। मधुर ने पीठ पर हाथ फेरते हुए फिर कहा, ''देखो रोओ नहीं। क्यों लड़ रहे थे उससे?''

बहुत प्यार और सहानुभूति से पूछने पर खुशीराम ने वह सब, जो कुछ हलवाई की दुकान पर हुआ था, बता दिया। पश्चात् कहा, ''सब लोग मुझे रण्डी का लड़का कहते हैं। माँ क्या करती है, मैं नहीं जानता। वह स्कूल में पढ़ाने जाती है। उसने काम पर से कभी गैर-हाजिरी नहीं की। बहुत मेहनत से कृष्ण चाचा से अंग्रेजी पढ़ उसने तरक्की पाई है। फिर भी लोग उसकी कमाई को हराम की कहते हैं। इससे मेरा मस्तिष्क चक्कर काटने लगता है। मुझे क्रोध आ जाता है और मैं लोगों से लड़ पड़ता हूँ।''

मधुर ने खुशीराम की सब बात ध्यान से सुनी और फिर बोला, ''देखो खुशी! लोग यदि कहें कुएँ में गिर पड़ो तो गिर पड़ोगे?''

''नहीं।''

''जब तुम्हारे घर में दूध नहीं आ सकता था, तुम्हारी माँ के पास दूध के लिए दाम नहीं होते थे, तो तुम्हें कौन दूध दे जाता था? जो तब तुम्हारी सहायता नहीं करते थे, अब तुम्हें सुखी देख तुम पर ईर्ष्या करते हैं।''

''परन्तु चाचा जी!'' खुशीराम ने ग्लानि के भाव से कहा, ''क्या सचमुच माँ दुराचारिणी है?''

''छी:। जो अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए इतना कष्ट सहती है, उसे तुम दुराचारिणी कैसे कह सकते हो?''

''पर क्या वह रण्डी का काम करती है?''

''कैसे मूर्ख हो तुम! तुमने कभी उसे ऐसा करते देखा है?''

''तो फिर वह ज़ैदी साहब के साथ सायंकाल कहाँ जाती है?''

''वे मित्र हैं, साथ-साथ सैर करने जाते हैं।''

''इसी से तो लोग संदेह करते हैं।''

''क्या संदेह करते हैं?''

''कहते हैं कि ज़ैदी साहब माँ के अविवाहित पति हैं।''

''होगा। लोगों को इससे क्या लाभ अथवा हानि है? जहाँ औरत होगी, वहाँ उसका पति भी होगा। आपत्ति की बात तो यह है कि न औरत जने-खने की पत्नी हो और न पुरुष जने-खने का पति।''

''पर दुनिया जो निंदा करती है।''

''दुनिया का क्या अधिकार है कि किसी के कामों पर टीका-टिप्पणी करे! बुद्धिमान लोग दूसरों के कहने की परवाह नहीं करते। वे अपने लाभ-हानि को देखकर बात करते हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुशीराम को मधुर की बातें मस्तिष्क को शांति देने वाली प्रतीत हुईं। साथ ही उसके अंदर विचार करने की शक्ति उत्पन्न हो गई। ''बुद्धिमान, लोगों के कहने की परवाह नहीं करते।'' यह बात उसके मन में बैठ गई। उसने अपने मन के संदेह को नि:शेष करने के लिए पूछा, ''हमारा लाभ अथवा हानि किसमें है?''

''देखो खुशी! मनुष्य की कुछ आवश्यकताएँ हैं, जिनको पूरा किए बिना जीवन रह नहीं सकता। उनको पूरा करना लाभ है और उनको पूरा न करना हानि। तुम्हें भूख लगती है न? इसलिए भूख-निवारण करना लाभ है और अपने मुख की रोटी छिनती देखना हानि की बात है।''

हानि-लाभ की इस मीमांसा ने तो खुशीराम के मस्तिष्क में हलचल मचा दी। इस घटना के पश्चात् उसने बाज़ार के हलवाई से दूध पीना बंद कर दिया। उसने बाज़ार में ठहरना अथवा लोगों की बात पर ध्यान देना बंद कर दिया। गर्दन ऊँची कर चलने का उसे अभ्यास होता जाता था।

वह मैट्रिक की परीक्षा दे चुका था और खाली था। ललिता नवीं श्रेणी में पढ़ती थी, परन्तु स्कूल में छुट्टियाँ थीं। एकाएक ललिता बीमार हो गई। उसको खाया-पिया हज़म नहीं होता था। एक-दो दिन तक तो चूर्ण इत्यादि से ठीक करने का यत्न किया गया, परन्तु जब ठीक नहीं हुई तो डॉक्टर के पास ले जाया गया। डॉक्टर ने दो-तीन दिन तक चिकित्सा कर उसे अस्पताल में भेज दिया। वहाँ पता लगा कि उसके गर्भ ठहर गया है।

आत्मादेवी उसे घर ले आई और परिस्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगी। ललिता से एकान्त में पूछा गया तो उसने अपने दोष को न्यून-से-न्यून कर बतलाने और उसे घर में किसी और से बाँटने के विचार से खुशीराम का नाम ले दिया। माँ ने खुशीराम को बहुत पीटा। छड़ी ले उसे ताड़-ताड़ लगानी आरम्भ कर दीं। वह यदि चाहता तो माँ को उठाकर घर से नीचे फेंक देता, परन्तु वह चुपचाप मार खाता गया। उसका विचार था कि कृष्ण चाचा ने चुगली खाई है और उसके विरुद्ध उसकी बात पर विश्वास नहीं किया जाएगा। उसके चुपचाप मार खाने से माँ को उसके दोषी होने पर विश्वास हो गया। अब आत्मादेवी जी-भर मार चुकी तो बोली, ''देखो खुशी! कहीं जाकर नौकरी करो। अब मैं तुम्हारे खाने-पहनने का बंदोबस्त नहीं कर सकती।''

खुशीराम उठा और आँखों से आँसू पोंछ, मुख धोने गुसलखाने में चला गया। वहाँ जा उसने अपने शरीर पर छड़ी से पिटने के चिह्न देखे। उन्हें देख वह अधीर हो उठा। और गुसलखाने के किवाड़ को भीतर से बंद कर खूब रोया। पीटे जाने का कारण उसे अभी तक विदित नहीं हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधा घंटा रो-धोकर वह बाहर आया और कपड़े पहन घर से निकल गया। मकान के नीचे उतरकर सोचने लगा कि कहाँ जाय। वह नौकरी ढूँढना चाहता था। इस समय उसे मधुर चाचा की याद आई। मधुर के मकान का दरवाज़ा खुला था। वह ऊपर चढ़ गया। मधुर उसे देख विस्मय से उसका मुख ताकने लगा। खुशीराम उसके सम्मुख जा खड़ा हुआ। मधुर अपनी लिखने की मेज़ के सामने बैठा था। खुशीराम मेज़ के दूसरी ओर जाकर खड़ा हो गया। उसे चुप खड़ा देख मधुर ने पूछा, ''फिर किसी से झगड़ा कर आए हो?''

खुशीराम ने सिर हिलाकर इंकार किया, परन्तु उसकी आँखें डबडबा आईं। मधुर उसे इस अवस्था में देख उठ खड़ा हुआ और उसे बाँह से पकड़ अपनी कुर्सी के पास ले आया और फिर स्वयं कुर्सी पर बैठ, उसे अपने समीप खड़ा कर उसकी पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए पूछने लगा, ''क्या हुआ है, खुशी?''

''माँ ने बहुत पीटा है।'' खुशीराम ने हिचकियाँ भरते हुए कहा। साथ ही उसने पीठ पर छड़ी लगने के चिह्न दिखा दिए।

मधुर ने चिंता अनुभव करते हुए पूछा, ''क्यों पीटा है?''

''बताया नहीं।''

''तुमने क्या अपराध किया है?''

''अपनी जान में कुछ नहीं किया।''

''तुमने पूछा नहीं?''

''नहीं।''

''अजीब लड़के हो तुम! पूछते तो सही कि मार क्यों पड़ रही है?''

''यह तो मारने वाले को बताना चाहिए था।''

''मैं जाकर तुम्हारी माँ से पूछूँ?''

''जैसी आपकी इच्छा।''

''बड़े अजीब हो तुम। तुम यह भी जानना नहीं चाहते कि माँ ने तुम्हें क्यों पीटा है?''

''जानने से क्या होगा? कृष्ण चाचा ने कुछ निंदा की होगी, जो झूठी होने पर भी सदैव सत्य मानी जाएगी।''

''तो फिर मुझसे क्या चाहते हो?''

''माँ ने घर से निकाल दिया है। नौकरी करना चाहता हूँ।''

''क्या काम कर सकते हो तुम?''

''जो भी मिले। चौका-बासन भी कर लूँगा।''

''कौन-सी श्रेणी तक पढ़े हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैट्रिक की परीक्षा दी है।''

''अच्छी बात है। आज ही नौकरी मिल जाएगी, परन्तु रहोगे कहाँ?''

''बाग में सो रहा करूँगा। नदी में स्नान कर लिया करूँगा और ढाबे पर खा लिया करूँगा।''

मधुर हँस पड़ा और बोला, ''ऊपर की बरसाती में सो सकोगे?''

खुशीराम चुप रहा।

:: 10 ::

इन दिनों श्रीनाथ के मुद्रणालय में मधुर की पुस्तकें छप रही थीं। वह खुशीराम को वहाँ ले गया और वहाँ उसे बीस रुपये मासिक पर काम सीखने के लिए लगवा दिया।

खुशीराम मधुर के घर रहने लगा था। भोजन वहीं करता था और मधुर का रसद-पानी लाने का काम कर देता था।

आत्मादेवी ने जब देखा कि खुशीराम मधुर के घर रहने लगा है तो उसे विश्वास हो गया कि खुशीराम के कारण ही ललिता के गर्भ हुआ है। ललिता के गर्भ का प्रबंध रफी अहमद ज़ैदी ने करवा दिया। इसमें आत्मादेवी का तीन सौ रुपया खर्च हो गया।

खुशीराम माँ से नहीं बोलता था। कभी बाज़ार में परस्पर सामना हो जाता तो मुख फेर निकल जाता। ललिता बीमार होने के कारण घर से बाहर नहीं निकल रही थी। वह उसके स्वास्थ्य के विषय में जानने को उत्सुक रहता था।

एक दिन वह छापाखाने से वापस आ रहा था। ललिता भी कहीं से आ रही थी। उसके रक्त-विहीन होंठों को देख खुशीराम ने समझा कि वह अभी तक बीमार है। उसने ललिता की ओर बढ़कर पूछा, ''ललिता! कैसा हाल है?''

ललिता खुशीराम से बात करने में डरती थी। वह समझती थी कि खुशीराम को यह ज्ञान है कि उसने झूठ बोलकर खुशीराम को पिटवाया था। इस कारण वह बिना उसके प्रश्न का उत्तर दिए अपने मकान पर चढ़ गई। खुशीराम को यह बहुत बुरा लगा। वह सोचता था कि माँ का तो कृष्ण से सम्बन्ध है, इसलिए उसकी बात मान माँ ने उसे पीट दिया, परन्तु ललिता तो उससे स्नेह करती थी। उसके मन में भारी क्षोभ होने लगा।

उस दिन खुशीराम का मुख मलिन देख मधुर ने पूछा, ''आज क्या बात है?''

''मन बहुत दुखी है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यह तो तुम्हारा मुख देखने से पता चल जाता है। मैं पूछता हूँ क्यों दुखी हो?''

खुशीराम ने झिझकते हुए कहा, ''ललिता बहुत बीमार प्रतीत होती है। आज बाज़ार में मिली थी। मैंने पूछा तो बिना बात किए घर चली गई।''

''तो इसका अभिप्राय यह हुआ कि वह भी तुम्हें दोषी मानती है।''

''पर मैंने क्या अपराध किया है, मैं नहीं जानता।''

''मैंने तो तुमसे पूछा था कि कहो तो मालूम करूँ।''

''हाँ, करिए। अब तो मुझे क्रोध आ रहा है।''

उसी रात मधुर आत्मादेवी से मिलने गया और उससे बात सुनकर विस्मय में बोला, ''वह तो कहता है कि उसने कोई अपराध नहीं किया।''

''झूठ बोलता है।''

''तुम्हें किसने बताया है?''

''ललिता ने स्वयं।''

मधुर चुप रह गया। अगले दिन उसने खुशीराम को समीप बुलाकर पूछा, ''जानते हो ललिता को क्या था?''

''नहीं।''

''उसको बच्चा होने वाला था।''

''फिर?''

''वह कुंआरी है। उसका विवाह नहीं हुआ।''

''तो।''

''ललिता कहती थी कि वह बच्चा तुमसे है।''

''मुझसे?'' खुशीराम का मुख क्रोध से लाल हो उठा। फिर कुछ शांत हो उसने पूछा, ''ललिता ने आपको कहा है?''

''नहीं! तुम्हारी माँ ही कहती है।''

''सब झूठ है।''

मधुर मन में सोचता था कि आत्मादेवी, जो स्वयं सती-साध्वी नहीं, क्यों लड़के के आचरण पर रुष्ट हो गई है। जो बात वह स्वयं निस्संकोच करती है, उसी के लिए अपने लड़के को क्यों अपराधी मानती है? आत्मादेवी के मन की इस अवस्था का कारण जानने के लिए वह गम्भीर विचार में पड़ गया।

खुशीराम के दिमाग में ललिता से सच्ची बात जानने की लालसा उत्कट हो उठी थी। रात-भर उसे नींद नहीं आई। अगले दिन वह नीचे बाज़ार में जाकर ललिता के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

उसकी माँ मकान से नीचे उतरी और स्कूल पढ़ाने के लिए चली गई। फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ काल पश्चात् ललिता कृष्ण के साथ मकान से उतरी। ललिता के हाथ में दवाई के लिए बोतल थी। इससे पता चल गया कि वह दवाई लेने जा रही है। दोनों मकान को ताला लगाकर चल पड़े तो खुशीराम उनके पीछे चल पड़ा। वे डॉक्टर मित्रा की दुकान पर पहुँचे। खुशीराम बाहर खड़ा रहा। दवाई लेकर ललिता बाहर निकली तो कृष्ण उसके पीछे-पीछे था। खुशीराम ने समझा कि यह तो एकान्त में बात करने को अवसर ही नहीं देगा, इससे सीधा ललिता के सामने, मार्ग रोक खड़ा हो गया। ललिता एक ओर हटकर निकल जाना चाहती थी, परन्तु खुशीराम ने हाथ पकड़कर कहा, ''ठहरो, तुमने माँ से झूठ कहा है न?''

कृष्ण ने आगे कुछ कहने का अवसर नहीं दिया और खुशीराम को धकेल कर एक तरफ करने का यत्न किया। खुशीराम का मुक्का तन गया और उसने घूरकर कृष्ण की ओर देखा। कृष्ण खुशीराम को धकेलता-धकेलता रुक गया। इस पर खुशीराम ने डाँटकर कहा, ''यहाँ बाज़ार में झगड़ा किया तो सब भंडा फोड़ दूँगा। पुलिस में ले जाए बिना दम नहीं लूँगा और सबकी बदनामी होगी।''

कृष्ण ने जब देखा कि बाज़ार चलते लोग इकट्ठे होने लगे हैं और खुशीराम लड़ाई के लिए तुला हुआ है, तो वह शांत हो बोला, ''तो घर चलो, यहाँ बाज़ार में क्यों झगड़ा करते हो?''

''चलो।'' खुशीराम ने ललिता को छोड़ते हुए कहा।

तीनों घर की ओर चल पड़े। ललिता नीम के पत्ते की भाँति काँप रही थी और उसके मुख पर पसीने की बूँदें झलकने लगी थीं। कृष्ण आगे-आगे चल रहा था। ललिता और खुशीराम पीछे थे।

घर पर पहुँच खड़े-खड़े खुशीराम ने कहा, ''कहो ललिता! तुमने माँ से झूठ क्यों बोला था?''

ललिता चुप थी। खुशीराम ने हाथों को कड़ा कर उसकी गर्दन की ओर बढ़ाकर कहा, ''गला घोंटकर मार डालूँगा यदि झूठ बोला तो। बताओ किसने खराबी की है तुमसे?''

ललिता ने खुशीराम की आँखों में क्रोध और सत्यता देखी तो वह काँप उठी। खुशीराम ने अपने हाथ उसकी गर्दन पर रख दिए। ललिता ने चीख की-सी आवाज़ में कहा, ''ठहरो।''

कृष्ण छड़ी उठा खुशीराम को पीटने वाला था, कि ललिता ने उसे 'ठहरो' कहकर रोक दिया। खुशीराम ने ललिता को छोड़ कृष्ण की ओर ध्यान दिया और मुक्का तानकर खड़ा हो गया। बोला, ''देखो चाचा! चुपचाप खड़े रहो, नहीं तो अच्छा नहीं होगा। कुछ भी गड़-बड़ की तो यहाँ खून हो जाएगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण रुका तो खुशीराम ने उसके हाथ से छड़ी छीन ली और बोला, ''मुझे आज सत्य-झूठ का निर्णय करना है। बताओ ललिता! कौन है वह?''

ललिता ने कृष्ण को खुशीराम से डरा देख साहस कर रहा, ''मुझे ये मारेंगे?''

''कौन मारेंगे?''

''चाचा कृष्ण।''

''तो तुम्हारे बच्चे का बाप यह था?''

''इन्होंने कहा था कि किसी को बताऊँगी तो मार दी जाऊँगी।''

ललिता को छोड़ खुशीराम ने कृष्ण से कहा, ''देखो चाचा के बच्चे! यहाँ से बोरिया-बिस्तर गोल करो। चुपचाप चले जाओ, नहीं तो तुम्हारा मृत शव यहाँ से निकलेगा। फाँसी चढ़ जाऊँगा पर तुम्हें यहाँ रहने नहीं दूँगा।''

कृष्ण झगड़ा करना नहीं चाहता था। इस कारण उसने कह दिया, ''माँ को आने दो।''

खुशीराम ने कहा, ''वह भी यहाँ नहीं आ सकेगी। तुम लोगों ने जो दुराचार फैला रखा है, सबका रहस्य खोल पुलिस में रिपोर्ट दे दूँगा। यदि चाहते हो कि मैं चुप रहूँ तो यहाँ से चुपचाप चले जाओ।''

''एक दिन में कैसे जा सकता हूँ? कई वर्षों से रहता हूँ और फिर यहाँ की मालिक तुम्हारी माँ है या तुम?''

''तुम्हारी इच्छा जेल जाने की प्रतीत होती है।'' इतना कहते-कहते ही खुशीराम ने कृष्ण को कमर से पकड़, पाँव की अड़ेस दे, नीचे गिराने का यत्न किया। कृष्ण ने दीवार को पकड़ अपने को गिराने से बचाया।

यूँ तो कृष्ण डीलडौल में खुशीराम से अधिक बलशाली प्रतीत होता था, परन्तु खुशीराम को इस समय बहुत क्रोध आ रहा था और क्रोध से वह बावला हो रहा था। सत्रह वर्ष का जवान पट्ठा था। साथ ही अपमान से जल रहा था। जीवन-मरण की चिंता किए बिना कृष्ण के पीछे पड़ा था। कृष्ण के मन में चोर था। आत्मादेवी और ललिता दोनों से सम्बन्ध रखने का भेद खुल जाने से भयभीत था। सबसे बड़ी बात तो गर्भपात कराने की थी। यह एक भारी अपराध था। कृष्ण इसके दंड को स्मरण कर काँप रहा था। जब खुशीराम को शोर मचाते तथा लड़ने-झगड़ने पर तैयार देखा तो बोला, ''ठहरो! मैं स्वयं चला जाता हूँ।''

''तो उठाओ अपना सामान और निकल जाओ यहाँ से।'' खुशीराम ने उसे छोड़ते हुए कहा।

कृष्ण वैसे ही घर से चला जाना चाहता था, परन्तु खुशीराम ने उसे अपने कपड़ों का संदूक भी वहाँ से ले जाने पर विवश कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मादेवी को कृष्ण के व्यवहार पर क्रोध भी था और दु:ख भी। उसने खुशीराम को बहुत निर्दयता से पीटा था। इसका भी उसे दु:ख था। उसने खुशीराम से कहा कि वह मधुर का घर छोड़कर फिर उसके पास आ जाए। खुशीराम का कहना था कि यदि कृष्ण ने उस घर में रहना है तो वह वहाँ नहीं रह सकता। आत्मादेवी का कृष्ण से तीन वर्ष से सम्बन्ध था और सम्बन्ध तोड़ने को जी नहीं चाहता था। साथ ही उसे ललिता के भविष्य का भी विचार आता था। क्या उसे भी उसकी भाँति अपने निर्वाह के लिए भिन्न-भिन्न लोगों की पत्नी बनना पड़ेगा? इस प्रश्न का उत्तर उसके पास नहीं था।

आत्मादेवी जब अपने पूर्व इतिहास पर विचार करती थी तो उसे अपनी दुर्गति का कारण मधुर ही प्रतीत होता था। यदि मधुर कमला को घर पर रख उसे निकाल न देता तो वह उसकी पत्नी बन संतुष्ट रहती। उसने ही उसे इस अपमानयुक्त जीवन में प्रवेश करने पर विवश किया था।

जब खुशीराम उससे यह शर्त कर रहा था तो मधुर भी सम्मुख उपस्थित था। इससे आत्मादेवी ने मधुर पर दोषारोपण करते हुए कहा, "इस पतन के मार्ग पर तुमने ही मुझे धकेला था। जो कुछ हुआ उसका पाप तुम्हारे सिर पर ही है।"

"यह कैसे?" मधुर ने मुस्कराते हुए कहा, "मैंने तो तुम्हें रहने को मकान और निर्वाह के लिए बीस रुपये मासिक देने का वचन दिया था। तुम्हारा इससे पेट नहीं भरा। फिर यदि आवश्यकता पड़ने पर तुमने अपने शरीर को बेचा भी तो अब आवश्यकता नहीं रही। अब उसी बात को क्यों करती जाती हो?"

"अब कृष्ण एक ओर से धमकाता है और ज़ैदी साहब दूसरी ओर से डराते हैं। इस अवस्था में कैसे इस जाल से निकल सकती हूँ?"

खुशीराम ने पूछा, "कृष्ण क्या धमकी देता है?"

"कहता है, यदि उसे मकान में आकर रहने न दिया गया तो पुलिस में रिपोर्ट लिखवा देगा कि घर का सब सामान उसी का है और मुझे घर से निकलवा देगा।"

मधुर हँस पड़ा और बोला, "यह कुछ नहीं होगा। भला ज़ैदी साहब क्या कहते हैं?"

"कहते हैं कि स्कूल से नौकरी छुड़वा देंगे और घर से निकलवा देंगे। मालिक मकान उनका मित्र है।"

इसका उत्तर मधुर ने दिया, "देखो देवी! बहुत नौकरी हो चुकी। अब खुशीराम काम सीखने लगा है। अगले मास से इसे साठ रुपया महीना मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगेगा और तुम्हारी नौकरी छूट जाने पर भी निर्वाह होता रहेगा। रही मकान से निकलवा देने की धमकी सो नहीं होगा। मकान का मालिक मेरा भी तो परिचित है और मैं उसके स्वभाव को जानता हूँ।''

''इसका अर्थ यह हुआ कि अब पुन: मैं आपके संरक्षण में आ जाऊँ।''

''क्या हानि है ? मैंने तो कभी भी तुम्हें अपने संरक्षण से बाहर नहीं किया। यदि तुम उतने पर संतोष करतीं, जो मैंने देने का वचन दिया था, तो समय-कुसमय विशेष सहायता की आशा भी कर सकती थीं।''

आत्मादेवी को वे दिन भूले नहीं थे, जब मधुर के साथ रहती थी। उसके बीमार हो जाने पर उसने दो सहस्र रुपये से ऊपर खर्च कर दिया था और आज तक उसकी चर्चा नहीं की थी। सौभाग्य से फिर कभी बीमार नहीं हुई। दिन-रात काम करते हुए भी वह स्वस्थ रही थी। केवल ललिता के बीमार होने पर उसे सहायता की आवश्यकता पड़ी थी। ज़ैदी साहब ने लेडी डॉक्टर का प्रबंध कर दिया परन्तु डॉक्टर की फीस का बिल आत्मादेवी को भेज दिया। इससे तीन सौ रुपये का प्रबंध उसे करना पड़ा था। पश्चात् ओषधि कृष्ण लेने जाता था और नित्य जाने के समय ओषधि के लिए दाम माँग लेता था। इस प्रकार मधुर का संरक्षण उसे अधिक सुविधाजनक प्रतीत हुआ। मधुर ने जब कहा कि उसके संरक्षण में उसके घर आने में उसे कोई हानि नहीं होगी तो वह मन में संतोष और सुख अनुभव करने लगी।

उस दिन से ही उसने कृष्ण को घर पर आने से मना कर दिया। कृष्ण बहुत छटपटाया, परन्तु आत्मादेवी को मधुर के आश्वासन से आत्मविश्वास हो गया था। इससे डाँटकर बोली, ''तुम्हें लड़की से व्यभिचार करते लज्जा नहीं आई और फिर मुझ पर तुम्हारा क्या अधिकार है ? जो कुछ तुमने मेरे लिए किया होगा, बदले में मैंने उससे अधिक दे दिया है।''

कृष्ण यह कहता हुआ कि 'मैं समझ लूँगा' वहाँ से चला गया। ज़ैदी साहब से छुट्टी पाना इतना सुगम नहीं था। उसके लिए मधुर को नीति से काम लेना पड़ा। उसने मुहल्ले के एक आदमी से षड्यंत्र कर म्युनिसिपल बोर्ड के सेक्रेटरी को आत्मादेवी तथा ज़ैदी साहब के सम्बन्ध के विषय में चिट्ठी लिखवा दी। उसमें यह भी लिखा था कि ''यदि ऐसी औरत को लड़कियों के स्कूल से निकाला न गया तो नगर भर में आंदोलन किया जाएगा। नगर के भले लोग अपनी लड़कियों को ऐसा अध्यापिका से शिक्षा नहीं दिलवा सकते।''

इस पत्र के साथ-ही लाहौर के 'सिविल ऐंड मिलिटरी गजट' में म्युनिसिपल बोर्ड के स्कूलों में लड़कियों की शिक्षा के लिए अच्छी चरित्रवान औरतों की आवश्यकता पर लेख छपवा दिया। जब सेक्रेटरी ने बात फैलते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखी तो ज़ैदी साहब को बुलाकर डाँटा और आत्मादेवी को नौकरी से निकाल दिया।

इस प्रकार आत्मादेवी को अपने जीवन की दो कड़ियों से छुटकारा मिल गया और मधुर से पुनः मेल-जोल उत्पन्न हो गया। इस बार मधुर ने उसे और उसके दोनों बच्चों, खुशीराम तथा ललिता, को बगल वाले मकान में ही रहने दिया।

खुशीराम अपनी माँ को इस प्रकार एक से दूसरे के हाथ में बदली जाती देख विचार करने लगा था। वह स्वयं चरित्रवान तथा निष्ठावान लड़का था, परन्तु अपनी माँ की अवस्था को देख उसे क्षोभ होता था। मधुर ने उसे समझाया भी। उसने उसे बताया कि, विवाह तो पति-पत्नी बनने की एक घोषणा मात्र है। प्रायः इसकी आवश्यकता नहीं रहती। इसमें दुःख मानने का कोई कारण नहीं।''

उसकी इस युक्ति से तो खुशीराम की बेचैनी और भी बढ़ गई। परन्तु वह अभी बच्चा था और हिन्दू-समाज के वातावरण से प्रभावित हो यही समझता था कि स्त्रियों को पतिव्रता-धर्म का पालन करना चाहिए।

इसी विचार-संघर्ष में तीन वर्ष निकल गए। ललिता ने मैट्रिक पास कर लिया था। माँ ने उसे जे.ए.वी. के प्रशिक्षण के लिए ट्रेनिंग स्कूल में भरती करवा दिया। इसी समय खुशीराम और ललिता कम्यूनिस्ट पार्टी के सम्पर्क में आए। ललिता अपनी स्कूल की सहेलियों द्वारा और खुशीराम छापेखाने के अन्य कर्मचारियों द्वारा पार्टी में प्रवेश पा गए। ललिता के कहने पर आत्मादेवी भी वहाँ जाने लगी।

ललिता स्कूल में श्रीकान्ता की श्रेणी में पढ़ती थी। दोनों का परस्पर मेल-जोल था। यद्यपि श्रीकान्ता गवर्नमेंट कॉलेज में भरती हुई थी और ललिता ट्रेनिंग स्कूल में, इस पर भी दोनों में सम्पर्क बना हुआ था। इस सम्पर्क का परिणाम यह हुआ कि श्रीकान्ता भी कम्यूनिस्ट पार्टी में जाने लगी।

जब श्रीकान्ता कम्यूनिस्ट पार्टी में गई थी तो मुहम्मद असलम ललिता से मेल-जोल रखता था। श्रीकान्ता के पार्टी में आने से मुहम्मद असलम उसके गिर्द चक्कर काटने लगा था। इससे ललिता और श्रीकान्ता में मन-मुटाव हो गया। एक दिन श्रीकान्ता और ललिता में तू-तू, मैं-मैं हो गई। इससे खुशीराम को भी पता चल गया कि ललिता असलम से विवाह करना चाहती थी, जो श्रीकान्ता के कारण सम्भव नहीं रहा।

अब ललिता ने जे.ए.वी. की परीक्षा पास कर ली थी, परन्तु किसी स्कूल की नौकरी करने के स्थान पर वह पार्टी का कार्य करने लगी थी और वहीं से निर्वाह के लिए वेतन पाती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मादेवी, ललिता और खुशीराम, परिवार के सब सदस्यों के पार्टी के सदस्य होने पर, उनकी पार्टी में बहुत महत्ता थी। प्रायः पार्टी के सदस्य कारखानों में काम करने वाले युवक तथा कॉलेजों के विद्यार्थी होते थे। पूरा परिवार-का-परिवार इस पार्टी का सदस्य हो, यह एक आश्चर्यजनक बात होने पर भी वास्तविकता थी।

पार्टी में पूर्ण बल आर्थिक अवस्था के सुधार पर दिया जाता था। वहाँ तो यह माना जाता था कि जितनी भी धर्म व्यवस्थाएँ हैं, सब ढोंग हैं। वास्तविक समस्या तो जीवन-निर्वाह की है। किसी व्यक्ति की भोजन, वस्त्र और मकान की आवश्यकता पूर्ण हो जाय तो उसे फिर किसी भी धर्म-कर्म की आवश्यकता नहीं रहती। कारण यह है कि मनुष्य के लिए आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग और नरक इत्यादि बातों में विश्वास अनावश्यक है।

यह सिद्धांत यद्यपि सर्वथा उज्ज्वल और निष्पंक प्रतीत होता था तथापि एक युवक अथवा युवती को अवांछित मार्ग पर ले जाने में सबल था और कम्यूनिस्ट पार्टी में युवक-युवतियाँ ही तो भरे हुए थे।

ललिता अब सयानी हो गई थी। उसकी आयु बीस वर्ष के लगभग थी। वह पढ़-लिख कर समझदार हो गई थी। जहाँ तक व्यावहारिक शिक्षा का सम्बन्ध था, वह उसे अपने घर में अपनी माँ के व्यवहार से मिल रही थी। मुहल्ले में तो प्रायः लोग उनसे मेल-मिलाप नहीं रखते थे, परन्तु पार्टी में उसकी माँ का और उसका सम्मान होता था।

वह स्वयं भी आकर्षण का केंद्र थी। लड़कियों की ओर लड़कों का और लड़कों की ओर लड़कियों का आकर्षण होना स्वाभाविक ही है। जहाँ वे इकट्ठे रहेंगे, वहाँ उनमें मेल-मिलाप होगा ही और फिर वह मेल-मिलाप शिष्ट सीमा का उल्लंघन कर जाय तो अचम्भा करने की बात नहीं थी।

ललिता को गर्भपात कराने में हुए कष्ट का अनुभव था। उस समय उसे अत्यंत वेदना हुई थी और यद्यपि उस घटना को हुए पाँच वर्ष से ऊपर हो चुके थे, तो भी वह उसे भूली नहीं थी। फिर उसे लेडी डॉक्टर का कहना स्मरण था कि इस बार तो वह बच गई है, पुनः ऐसा होने पर जीवन बचने की आशा नहीं।

इससे वह बहुत सचेत थी और अपने को सीमा के भीतर रखने के प्रति बहुत सजग रहती थी। इसका परिणाम यह हो रहा था कि ललिता की कामना करने वाले युवकों में प्रतिस्पर्धा आरम्भ हो गई थी। युवकों के खर्च पर ललिता के शृंगार की सामग्री खरीदी जाती थी। सिनेमा देखने के लिए निमंत्रण तो उसे निरंतर मिलते रहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थे। कोई-कोई मनचला तो साड़ी इत्यादि कीमती सामान भी ला देता था।

निशनाथ चैटर्जी पार्टी का एक सदस्य था। डी.ए.वी. कॉलेज से एम.ए. पास कर बेकार घूम रहा था। वह मेहनत-मज़दूरी कर एम.ए. तक पढ़ सका था और अब पढ़ाई समाप्त कर किसी नौकरी की खोज में था। ऐसे समय में उसका मन भी ललिता की ओर आकर्षित हुआ।

कई दिन के प्रयत्न के पश्चात् वह ललिता से एक दिन एकान्त में बातचीत कर सका। ललिता पार्टी-कार्यालय से निकली तो उसके साथ कोई लड़का नहीं था। निशनाथ ने अवसर देखा तो चुपचाप उसके पास आकर कहने लगा, "ललितादेवी! किधर जा रही हैं?"

ललिता जानती थी कि चैटर्जी एक निर्धन युवक है। इससे उससे छुटकारा पाने के लिए बोली, "सिनेमा जाने का विचार है।"

"कौन-सा चित्र देखने जा रही हैं?"

"जुलियस सीजर।"

"सुना है बहुत भीड़ है उसमें।"

"हाँ, परन्तु मैं तो 'बॉक्स' का टिकट लेना चाहती हूँ। वह तो मिल ही जाएगा।"

"तो मेरे साथ चलेंगी?"

"तो तुम भी सिनेमा देखते हो?"

चैटर्जी हँस पड़ा। मन में तो वह इससे अपमानित हुआ अनुभव कर रहा था; परन्तु दिखावे की हँसी हँसकर बोला, "हाँ कभी-कभी।"

"पर बॉक्स का टिकट तो बारह रुपये का होगा।"

निशनाथ ने कहा, "मेरे पास बारह रुपये हैं और मैं इतना खर्च कर सकता हूँ।"

"अच्छी बात है। चलो चलें।" ललिता ने कहा और दोनों ताँगा कर प्लाजा थियेटर को चल पड़े।

वे टिकट ले 'बॉक्स' में जा बैठे। निशनाथ इस अवसर की उत्कंठा से प्रतीक्षा कर रहा था। सुअवसर पा उसने बातचीत आरम्भ कर दी। उसने कहा, "ललितादेवी! कुछ पानी इत्यादि पीजिएगा?"

"हाँ, प्यास तो लगी है। विमटो मँगवा दो।"

उसने 'बॉक्स' से बाहर आकर विमटो लाने के लिए बैरा को कहा और वापस आ बातचीत आरम्भ कर दी, "आपको पार्टी का काम करने के लिए क्या मिलता है?"

"तीस रुपया मासिक।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो इतने में तो आपका एक दिन का खर्चा भी कठिनाई से चलता होगा?"

"नहीं, कुछ कठिनाई नहीं होती। व्यर्थ की बातों पर मैं अपनी जेब से एक पैसा भी खर्च नहीं करती।"

"परन्तु जो इतना कुछ व्यय करते हैं, वे आपसे उसका प्रतिकार भी तो माँगते होंगे?"

"हाँ, परन्तु मैं मूर्ख नहीं हूँ, जो उन मूर्खों के दाम अपने को बेचती फिरूँ।"

"तो क्या मैं जान सकता हूँ कि आपको किस दाम पर बिकना पसंद है?"

"देखो मिस्टर चैटर्जी! भाव-ताव उस बात का किया जाता है, जिसके लिए जेब में दाम हों। जहाँ तक मैं समझती हूँ, तुम्हें तो अपनी ही गुजर करना मुश्किल हो रही है। आज भी जो इतना खर्च कर रहे हो, न जाने कहाँ से रुपये उठा लाए हो?"

बात ठीक थी। कुछ दिन हुए निशनाथ को सड़क पर एक सौ रुपये का नोट पड़ा मिला था। इसे उसने सावधानी से बचा रखा था और इसकी सहायता से ललिता तक पहुँचने की इच्छा रखता था। ललिता के उक्त वाक्य उसे घृणा से भरे हुए प्रतीत हुए। उससे उसके मन में दुःख तो हुआ, परन्तु निरुत्साह नहीं हुआ। उसने कहा, "स्त्री का मूल्य ये कपड़े-भूषण इत्यादि नहीं होते, ललिता!"

"तो क्या स्त्रियों को भूख नहीं लगती, अथवा क्या उनको तन ढकने को कपड़ा नहीं चाहिए?"

"इतना कुछ तो बहुत ही साधारण-सी बात है। यह तो मेरे-जैसा साधारण मनुष्य भी कर सकेगा।"

"तो तुम मेरा मूल्य लगा रहे हो?"

"मैं तुम्हें पाना चाहता हूँ।"

ललिता ने माथे पर त्योरी चढ़ा कहा, "अपनी औकात देखो।"

इस समय बैरा 'विमटो' के दो गिलास ट्रे पर रखे हुए ले आया। निशनाथ ने एक गिलास उठा ललिता की ओर आगे कर कहा, "पीकर ज़रा ठंडी हो जाओ।"

ललिता ने घूरकर निशनाथ की ओर देखा, परन्तु उसने उधर नहीं देखा। वह दूसरा गिलास उठा सुरुकी लगा पीने लगा। जब बैरा 'बॉक्स' से बाहर चला गया तो निशनाथ ने कहा, "ललिता! नाराज़ होने की क्या बात है? क्या मैं इतना भी नहीं समझ सकता। मैंने तुमसे जो माँग की है वह मेरी आत्मा की माँग है। ऐसी माँग, मेरे अतिरिक्त और किसी से तुमने नहीं सुनी होगी। मैं निर्धन हूँ, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एक हृदय रखता हूँ, जो दूसरों के दु:ख और सुख को अनुभव करता है।''

''बस, बस!'' ललिता ने मुस्कराते हुए कहा, ''ये पूँजीपतियों की-सी बातें रहने दो। वह देखो 'पिक्चर' आरम्भ हो गई है।''

पिक्चर लम्बी थी। बीच में विश्रान्ति नहीं हुई। अतएव निशनाथ को फिर बातचीत करने का अवसर नहीं मिला। पिक्चर चालू थी, जब बैरा गिलास और दाम लेने आया, निशनाथ ने दाम दे दिए।

पिक्चर समाप्त होने पर वे 'हॉल' से बाहर आए तो ललिता ने पूछा, ''अब किधर जाइएगा?''

''एलफिन्स्टन में खाना खाने।''

''ओहो!'' ललिता ने अचम्भा प्रकट करते हुए कहा।

''हाँ और आप भी आइए।''

''आज किसकी जेब काटी है, मिस्टर चैटर्जी?''

''किसी अक्ल के अंधे की। आइए।'' इतना कह निशनाथ ने तांगे वाले को संकेत कर बुलाया और ललिता को बैठने का निमंत्रण दिया।

ललिता तांगे में बैठ गई और निशनाथ उसके समीप बैठ गया। ललिता ने पूछा, ''अभी कितना रुपया जेब में शेष है?''

''खाने भर के लिए है।''

''पर मैं तो 'स्टफ्ड फाउल' खाती हूँ।''

''मैंने कभी नहीं खाया। कितना दाम होता है?''

ललिता ने मुस्कराकर कहा, ''पाँच रुपये की एक प्लेट होगी और दो या तीन से पेट भरेगा।''

निशनाथ ने मुख पर घृणा की मुद्रा बनाकर तांगे वाले को कहा, ''एलफिन्स्टन होटल।''

ललिता मुस्कराई और चुप कर रही।

खाना खाते-खाते ललिता ने कहा, ''मिस्टर चैटर्जी! यह आज आपको क्या सूझी? तीस-चालीस रुपये का यूँ ही होम कर दिया।''

''कई दिन से मेरी आपके मनोभावों को जानने और समझने की इच्छा थी। मैंने यह चालीस रुपये व्यय कर मन की इच्छा पूरी कर ली है।''

''तो तुम मेरे मन के भावों को समझ गए हो?''

''हाँ।''

''क्या समझे हो?''

निशनाथ ने कांटा और छुरी प्लेट में रख दीं और ललिता के मुख की ओर देखकर कहा, ''सुनकर नाराज़ तो नहीं होगी?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यदि भली बात न कहोगे तो नाराज़ होऊँगी। क्यों न होऊँ?''

''तो मैं भली बात ही कहूँगा। ललिता देवी है। मन, वचन और कर्म से शुद्ध और पवित्र है। किसी प्रकार का मैल तो उसके मन को छू तक नहीं गया। वह अति सुंदर है। रम्भा को भी उसे देख लज्जा लगती है। धन-दौलत और भूषण उसे पसंद नहीं। उसका जीवन सात्विक है और लोग उसके दर्शन-मात्र से कृत-कृत्य हो जाते हैं। सती-साध्वी ललिता....।''

ललिता ने बात बीच में ही काटकर कहा, ''बस-बस, मिस्टर चैटर्जी! यह भांडों की भाँति गुणगान बंद करो।''

''जब आप वास्तविकता जानना नहीं चाहतीं तो क्या करूँ?''

''तो क्या तुम अपनी असलियत जानना चाहते हो?''

''तुम बता तो चुकी हो कि मैं बहुत निर्धन हूँ और आज के खर्चे के लिए किसी के रुपये उठा लाया हूँ।''

''केवल इतना ही नहीं, प्रत्युत् महामूर्ख भी हो। इतने रुपये में तो तुम दो-तीन पोशाक कपड़े बना लेते और वे तुम्हें नौकरी पाने में सहायक होते।''

''परन्तु जो कुछ ज्ञान-प्राप्ति आज हुई है, क्या वह कपड़ों से अधिक मूल्यवान नहीं है?''

''क्या ज्ञान प्राप्त हुआ है तुम्हें?''

निशनाथ ने छुरी-कांटा उठा फिर खाना आरम्भ कर दिया। ललिता उत्तर की प्रतीक्षा में थी, परन्तु जब निशनाथ को एकमन से चुपचाप खाते देखा तो बोली, ''मेरा पेट भर गया है।''

''बस? अभी तो दो प्लेट भी समाप्त नहीं हुईं।''

''मुझे भय है कि दाम चुकाने के लिए मुझे अपनी अँगूठी गिरवी न रखनी पड़े।''

''छीः। आपको धनिकों के लड़कों का अनुभव हुआ प्रतीत होता है। आज एक निर्धन के पुत्र की दावत खाकर भी देखिए।''

ललिता फिर छुरी-कांटा उठा खाने लगी।

खाना समाप्त होने पर बत्तीस रुपये का बिल आया। निशनाथ ने पैंतीस रुपये प्लेट में रखकर बैरे का सलाम लिया और ललिता से चलने को कहा। ललिता तीन रुपये बैरा को टिप के मिलते देख विस्मय में उसका मुख देखने लगी। निशनाथ ने कहा, ''श्रीमती जी! चलिए।''

बाहर निकल, तांगे पर ललिता को बैठा, पूछा, ''कहाँ जाएँगी?''

''पैसा अखबार बाज़ार में।''

निशनाथ ने तांगे वाले को एक रुपया देकर कहा, ''इनको छोड़ आओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो तुम नहीं चलोगे?'' ललिता ने पूछा।

''फिर मिलेंगे।''

''तथास्तु।''

:: 13 ::

निशनाथ के सौ में से पचास रुपये खर्च हो गए थे। इतना खर्चा करने पर उसे जो कुछ मिला, वह शून्य के बराबर था। कुछ अपमान-जनक शब्द फोकट में मिल गए थे। इससे वह सोचने पर विवश हो गया कि या तो उसे ललिता का विचार छोड़ देना चाहिए अथवा उसे पाने के लिए कम-से-कम सौ रुपया नित्य की आय का प्रबंध करना चाहिए। सौ रुपया नित्य की आय कर पाना उसके लिए असम्भव था। इस पर भी ललिता का विचार छोड़ना उसे 'अंगूर खट्टे' वाली बात प्रतीत हुई। ललिता सोचेगी कि एक बंगाली का बच्चा आया था और पैसा जेब में न होने से उसकी निंदा करने लगा है अथवा उससे घृणा करने लगा है। फिर वह अपने अपमानित किए जाने की बात भूल नहीं पा रहा था। उसका मन तो यह कहता था कि ललिता को पाने की योग्यता तो होनी चाहिए, किंतु इस योग्यता को प्राप्त कर वह उस पर थूक दे, तब ही ठीक होगा। परन्तु यह हो कैसे? इसी विचार में वह कई दिन तक लीन रहा।

एम. ए. करते ही वह नौकरी ढूँढने लगा। परन्तु सिफारिश न होने से अभी तक बेकार था। कम्यूनिस्ट पार्टी में तो मन की भड़ास निकालने जाया करता था। वहाँ नित्य पैसे वालों, सिफारिश वालों और धर्म-कर्म करने वालों को गालियाँ दी जाती थीं। इससे उसके दु:खी मन को शांति मिलती थी। परन्तु अब तो ललिता को नीचा दिखाने से ही उसके मन को शांति मिलने की बात थी। इस कारण पार्टी में जाने की रुचि फीकी पड़ गई।

इन दिनों उसे एक नई खुलने वाली सिनेमा कम्पनी का विज्ञापन दिखलाई दिया। कम्पनी को ऐक्टर-ऐक्ट्रेसों की आवश्यकता थी। निशनाथ को कभी गाने का शौक था। उसने इस कम्पनी में काम पाने का यत्न करने का निश्चय किया। रात को घर पहुँचकर उसने अपनी संगीत की पुस्तक निकालीं और अभ्यास करने लगा। एक सप्ताह-भर के अभ्यास से उसने कई राग-रागनियों का अभ्यास कर लिया। एक दिन हज़ामत बनवाई, नई धोती, कुर्ता और चप्पल पहन, माल रोड पर सिनेमा कम्पनी के दफ़्तर में जा पहुँचा।

एक मेज़ के पीछे एक गुजराती महाशय घूमने वाली कुर्सी पर बैठे थे। मेज़ पर उसके सम्मुख वह कागज़ का टुकड़ा रखा था, जिस पर निशनाथ का नाम और योग्यता लिखी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में कोई दूसरी कुर्सी नहीं थी। निशनाथ को यह बहुत बुरा लगा परन्तु वह क्या कर सकता था। संतोष से मेज़ के समीप खड़ा हो 'गुडमॉर्निंग' कर मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया। बैठे सज्जन ने, आगे झुककर अपने हाथ से निशनाथ के हाथ को छूकर उसके मुख को देखा। पश्चात् सामने रखी पर्ची को उठा पढ़ने लगा, 'निशनाथ चैटर्जी, एम.ए.।' फिर उसके मुख की ओर देखकर पूछने लगा, ''यह निशनाथ क्या हुआ?''

''निशनाथ चन्द्रमा को कहते हैं।''

''ओह! रात के राजा हो? बेकार हो?''

''नहीं!'' निशनाथ ने झूठ बोल दिया, ''मैं ट्यूशन करता हूँ। लगभग दो सौ रुपया मासिक की आय कर लेता हूँ।''

''तो यहाँ किसलिए आए हो?''

''मुझे बचपन से नाटक करने का शौक रहा है। कुछ संगीत का अभ्यास भी है। अपने इस शौक को पूरा करने की इच्छा से आया हूँ।''

''कोई सर्टिफिकेट है?''

''कागज़ पर लिखा हुआ तो नहीं, परन्तु 'हाथ-कंगन को आरसी क्या?' कहें तो अभी किसी भाव का प्रदर्शन करूँ?''

''हाँ-हाँ, दिखाओ।'' इतना कहकर उस गुजराती महानुभाव ने आवाज़ दी, ''मुन्नी! ज़रा इधर आओ तो।''

बगल के कमरे से एक बीस-पच्चीस वर्ष की औरत आई और पूछने लगी, ''क्या है? बाल सुखा रही थी।'' शरीर से दुबली-पतली, गेहुँआ रंग परन्तु उसकी रूपरेखा अच्छी थी।

गुजराती महाशय ने मेज़ पर रखी घंटी बजाई। इसे सुनते ही कमरे के बाहर बैठा चपरासी भीतर आ गया। गुजराती महाशय ने उसे एक कुर्सी लाने को कहा। चपरासी उसी कमरे में से, जिसमें से औरत आई थी, कुर्सी उठा लाया और उसे गुजराती महाशय के समीप रख दिया। मुन्नी उस पर बैठ गई और महाशय ने निशनाथ को कहा, ''हाँ, अपना काम दिखाओ।''

निशनाथ ने आँखें मूँदकर कुछ सोचा, पश्चात् कमरे में इधर-उधर देखा। अंगीठी की कानस पर 'प्लास्टर ऑफ पैरिस' का बना किसी का एक 'बस्ट' रखा था। उसने उस 'बस्ट' को उठाकर मेज़ पर अपनी ओर मुख कर रख दिया। पश्चात् कुछ पग पीछे हटकर बोला, ''मैं लज्जा, अपमान और क्रोध के भावों का प्रदर्शन करने के लिए नाटक कर रहा हूँ। कुछ भूल हो जाए तो क्षमा चाहता हूँ।''

पश्चात् बिना किसी प्रकार के उत्तर तथा टीका-टिप्पणी की प्रतीक्षा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे बढ़ा। मेज़ के समीप पहुँच उस बस्ट की ओर देखकर कुछ कमर टेढ़ी कर, हाथ को माथे तक ले जाकर बोला, ''गुड मार्निंग सर! हजूर! बेकार हूँ। भूखा मर रहा हूँ। नौकरी चाहिए।''

इतना कह निशनाथ ने अपने स्थान से हट, पीठ मेज़ की तरफ कर, गम्भीर भाव बना कहा, ''यह तो तुम्हारी अर्जी से ही मालूम हो गया था। अब नई बात तुमने क्या बताई है?''

अब फिर अपने स्थान पर वापस आ निशनाथ ने कहा, ''सेठ साहब! एम.ए. पास हूँ।'' और इतना कह अगल-बगल में देख बोला, ''परन्तु आप तो मुझे बैठने को भी नहीं कहते। यहाँ तो आपने मिलने वाले के लिए कुर्सी भी नहीं रखी। क्या फरमाया हुजूर? नौकरी करने आया हूँ? हाँ, ठीक है। आप धनी आदमी हैं। मैं गरीब हूँ।'' इतना कह निशनाथ ने लज्जा की मुद्रा बनाकर सिर नीचा कर लिया। फिर धीरे-धीरे उंगलियों को मरोड़ता हुआ बोला, ''पर सरकार! इंसान हूँ। सोलह वर्ष तक पढ़ाई की है। अपने विषय में सब प्रकार से योग्य हूँ। एम.ए. फर्स्ट क्लास में पास किया है। पढ़ने में दिन-रात एक कर दिया है। शरीर के लहू को दिमाग के दीये में तेल बना वर्षों जलाया है।'' इतना कहते-कहते निशनाथ ने लज्जा की मुद्रा धीरे-धीरे तोड़ दी और आवेश की मुद्रा बना ली। पश्चात् तमतमाते मुख और आँखों से क्रोध की लपटें छोड़ते हुए कहने लगा, ''हुजूर! आपसे भीख माँगने नहीं आया। मैं अपाहिज नहीं, मूर्ख नहीं और न ही किसी प्रकार से अयोग्य हूँ। आपने मुझे क्या समझा है? मैं अपनी योग्यता से आपकी आय में वृद्धि करने आया हूँ। आप अपने धन से मेरी योग्यता के बिना कुछ नहीं कर सकते। तो मेरी योग्यता आपके धन के बराबर की हैसियत की वस्तु हो गई और हजरत! मैं आपके....।''

बस यहाँ पर निशनाथ ने कहना बंद कर दिया और ऐसा प्रकट किया कि जैसे क्रोध से उसका दम घुट रहा है।

सेठ साहब उसके हाव-भाव देखने में लीन थे। उसे एकाएक चुप कर क्रोध में लाल हो काँपते देखकर समझे कि वह नाटक नहीं कर रहा, प्रत्युत वास्तव में उनको फटकार रहा है। इससे निशनाथ को डाँटने वाले ही थे कि मुन्नी ने उनके कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'वंडरफुल! वंडरफुल!!'

इतने में निशनाथ ने अपने मन को वश में कर एकदम साधारण अवस्था में आ कहा, ''यह भाव इसी समय सूझी बात बनाकर दिखाया है। यदि सोच-समझ कर कर कोई भाव दिखाऊँगा तो फिर असल और नकल में भेद जानना कठिन हो जाएगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निशनाथ को इतनी जल्दी साधारण ढंग पर बात करते देख सेठ शांत हो पूछने लगा, ''तो तुम कुर्सी न मिलने पर असल में नाराज़ नहीं हो रहे थे?''

''वह तो नाटक ही था।''

सेठ ने घंटी बजाई। चपरासी भीतर आया। सेठ साहब ने कहा, ''एक कुर्सी और लाओ।''

चपरासी कुर्सी ले आया और निशनाथ के पास रख कमरे से बाहर चला गया। सेठ ने उसे बैठने को कहा तो वह धन्यवाद कर बैठ गया।

निशनाथ की नौकरी लग गई। उसे उसी दिन से काम करने के लिए कह दिया गया। चित्र में उसे मुख्य अभिनेता का काम दिया गया। चित्र था 'चपला'। मुख्य अभिनेत्री का काम मुन्नी कर रही थी।

मुन्नी बम्बई की एक एक्ट्रेस थी और सेठ साहब के मन पर विशेष अधिकार रखती थी। मुन्नी की ख्याति उसके यौवन तथा सौंदर्य के कारण थी। जहाँ तक उसके कला-ज्ञान का सम्बन्ध था, वह कुछ नहीं जानती थी।

:: 14 ::

यह बात सत्य है कि षड्यन्त्र करने में बंगाली मस्तिष्क भारतवर्ष में सबसे अधिक प्रखर है। निशनाथ ने जिस समय मुन्नी को देखा था, वह उसकी गुण-ग्राहकता तथा योग्यता को समझ गया था। तो भी उसने उसके स्थान पर ललिता को लाकर बैठाने का निश्चय कर लिया था।

हर रोज सायंकाल नाटक का अभ्यास होता था और निशनाथ, संगीत-निर्देशक तथा मुख्य-निर्देशक से बहुत हेल-मेल रखने लगा था। ये तथा अन्य लोग मुन्नी से डरते थे। वे जानते थे कि उसकी नाराज़गी पर वे निकाल दिए जा सकते हैं, परन्तु उनको यह भी अनुभव हो रहा था कि मुन्नी से चित्र का कार्य ठीक नहीं हो रहा और उसकी त्रुटियों से चित्र असफल रह जाएगा।

एक दिन मुन्नी को 'भीमपलास' में एक पद गाने को कहा गया। वह सदा शुद्ध ग लगाती थी, जिससे गाने में बेसुरापन आता था। 'विरहा की आग में जलभुन कोयला भई, वह एक घंटा भर अभ्यास करने पर भी इस पद को ठीक नहीं कर सकी। निशनाथ भी यत्न कर उसे समझा रहा था कि शुद्ध ग और कोमल ग में क्या अंतर है। पर न जाने क्यों यह उसकी समझ में न आता था। यह एक-आध बार ठीक हुआ भी, परन्तु फिर बिगड़ गया।

इससे संगीत-निर्देशक अमरनाथ घबरा उठा। वह मुन्नी को पियानो के पास ही खड़ा छोड़ स्टूडियो से बाहर निकल गया। निशनाथ ने मुन्नी का पक्ष लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कहा, ''कुछ-कुछ ठीक हो गया है। कल ठीक हो जाएगा। अब थक गई होगी। जाओ, आराम करो।''

मुन्नी ने यह सुन कि गाना ठीक हो रहा था, अभिमान में कहा, ''नाच न जाने आंगन टेढ़ा। स्वयं कुछ जानता नहीं और दूसरों को सिखाने आया है।''

निशनाथ ने कहा, ''बिलकुल ठीक है। व्यर्थ धन व्यय हो रहा है।''

मुन्नी ने इससे उत्साहित हो कहा, ''सेठ साहब से शिकायत करूँगी।''

निशनाथ मुन्नी को उसके कमरे तक छोड़ने गया और उसे अपनी मूर्खता को बुद्धिमत्ता समझने में उत्साहित करता रहा। जब मुन्नी भीतर चली गई तो वह अमरनाथ को ढूँढने गया। प्रारम्भिक अभ्यास के लिए स्टूडियो माल रोड वाले मकान की ऊपर की मंजिल पर था। नीचे की मंजिल पर एक रैस्टोराँ था। अमरनाथ वहाँ चाय पी रहा था। निशनाथ ने वहाँ पहुँच कहा, ''मिस्टर! आपकी शिकायत आज रात सेठ साहब से हुए बिना नहीं रहेगी और शायद कल आपको यहाँ से छुट्टी हो जाएगी।''

''मैं क्या परवाह करता हूँ। इन रंडियों से नाक में दम हो रहा है। सुना है जो 'ऐक्सट्रा' (अन्य अभिनेत्रियाँ) रखी जा रही हैं, सब-की-सब मुन्नी की सिफारिश पर आ रही हैं।''

''भाई! यहाँ तुम्हें एक हज़ार महीना मिलता है। बाहर तो इतनी कमाई नहीं हो सकेगी।''

''यह तो ठीक है, परन्तु यदि चित्र ही असफल रहा, तो न तो यह नौकरी रहेगी और न ही कहीं और मिलेगी।''

''देखो मित्र! तुम्हें एक उपाय बताऊँ।''

''हाँ, क्या है?''

इस पर निशनाथ ने मुख को उसके कान के समीप ले जाकर योजना बता दी। अमरनाथ को इसके सफल होने में संदेह था, परन्तु निशनाथ ने उसे आश्वासन देते हुए कहा, ''बस तुम यह कह देना। शेष मैं समझ लूँगा।''

चाय पीकर अमरनाथ और निशनाथ पुनः स्टूडियो में पहुँच दूसरे अभिनेताओं को अभ्यास कराने लगे। मुख्य-निर्देशक कमलनयन भी आ गया था। उसने मुन्नी के विषय में पूछा तो निशनाथ ने आँख का संकेत कर उसे चुप करा दिया। कमलनयन स्वयं उससे ऊब चुका था, इससे कोई रहस्यमय घटना होने की आशा कर चुप रहा।

इस प्रकार काम चलता रहा। सायंकाल को सेठ मगनलाल देसाई आया और मुन्नी के बिना अभ्यास होता देख, पूछने लगा, ''मुन्नी कहाँ है?''

सब चुप रहे। किसी को मालूम नहीं था कि क्या हुआ है। केवल निशनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अमरनाथ ही जानते थे। जब किसी ने कुछ नहीं बताया तो सेठ मुन्नी के कमरे में चला गया। आधा घंटे तक वह वहाँ रहा। इतने में कमलनयन ने उस दिन का कार्य बंद कर सब लोगों को छुट्टी दे दी। निशनाथ नीचे रैस्टोराँ में भोजन का आर्डर देने के बहाने चला गया था। कमलनयन ने अमरनाथ को अकेला पा पूछा, "क्या हुआ है ?"

"नित्य वाली बात है। श्रीमती को ग शुद्ध और ग कोमल में भेद समझ नहीं आता। घंटा-भर यत्न करने पर भी 'जलभुन कोयला भई' का पद ठीक नहीं उतरा।"

कमलनयन ने कहा, "मैं तो इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि कोई और 'मीठी आवाज़' मिले तो मुन्नी की आवाज़ के स्थान पर उसको भर लिया जाए।"

"परन्तु यह बात सेठ साहब को कहे कौन? उनको तो वह कोकिला प्रतीत होती है।"

"बहुत कठिनाई में फँसे हैं।"

"निशनाथ कहता था कि इस कांटे को निकाल देगा। हमसे यदि सेठ साहब पूछें तो हमने वही कहना है, जो चैटर्जी ने कहा है।" इतना कह अमरनाथ ने निशनाथ की योजना कमलनयन को बता दी। इतने में निशनाथ ऊपर आ गया और बोला, "आज सब ठीक हो जाएगा।"

मुन्नी से बातचीत कर जब सेठ बाहर आया तो निशनाथ को अपने कमरे में ले गया और वहाँ पर बैठाकर पूछने लगा, "क्या हुआ है आज ?" निशनाथ ने आँखें नीची कर लीं और उत्तर नहीं दिया। इस पर सेठ ने चकित हो पूछा, "क्या बात है ? बताते क्यों नहीं, चैटर्जी ?"

"आप नाराज़ हो जाएँगे।"

"नाराज़ हो जाऊँगा ? नाराज़ होने की कौन बात है इसमें ? क्या मुन्नी को गाना नहीं आता ?"

"गाने-वाने की कुछ बात नहीं, हुजूर! यह तो कुछ और बात है। क्या बाई जी ने गाने की बात बताई है ?"

"हाँ, वे तो कहती हैं कि वे ठीक गाती थीं। अमरनाथ उन्हें गलत कहता था और तुम इस बात को जानते हो।"

"हाँ, यही होगा साहब!"

"यही होगा ? क्या कहते हो तुम ? ठीक-ठीक क्यों नहीं बताते ? यदि गाने की बात नहीं तो और क्या बात थी ?"

"यदि आप ठीक-ठीक जानना चाहते हैं तो नीचे होटल के बैरा गुलाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसूल को बुलाकर पूछ क्यों नहीं लेते? आखिर मेरे मुख से यह पाप क्यों करवाते हैं? मैंने आज तक किसी को चुगली नहीं खाई।''

''गुलाम रसूल? जो खाना लाया करता है?''

''जी हाँ।''

''उसका इस मामले में क्या हाथ है?''

''अगर आप मुझे मुआफी दे देंगे तो वह आपको सब बता देगा।''

इस उलझन को सुन सेठ घबरा उठा। उसने क्रोध में आ चपरासी को बुलाया और कहा, ''नीचे होटल से गुलाम रसूल को बुला लाओ।''

:: 15 ::

गुलाम रसूल आया तो बिना बोले सामने हो गया। सेठ ने पूछा, ''आज मुन्नी से क्या मामला हुआ है?''

''हुजूर! यह 'मुन्नी' मेरी शादीशुदा बीवी है। पाँच साल हुए घर से भाग गई थी। यहाँ आपके पास उसे देखते ही मैंने उसे पहचान लिया। मैं हर रोज दोपहर को खाना खिलाने के बहाने उसके पास जाता हूँ। आज जब मैं गया तो मैंने खाविन्द का हक़ माँगा। उसने मेरी बात मानने से इंकार कर दिया। मैंने बल-प्रयोग किया तो बहुत झगड़ा हुआ। अंत में उसने कहा कि वह मुझे पुलिस के हवाले कर देगी। मैंने सोचा कि जब पुलिस में ही जाना है तो मैं उसे अपने घर में ले जाऊँ ताकि पुलिस में जाने पर वह पेश कर मेरे से झगड़ा न कर सके। मैं उसे पकड़कर ले जाना चाहता था। इस झगड़े का शोर सुन बाबू अमरनाथ भीतर आ गया। वह हमारे गाँव का रहने वाला है। वह जानता है कि मेरी बीवी भाग गई थी। वह जानता है कि मुन्नी मेरी बीवी है। जब उसने भी मेरी बात मानने के लिए कहा तो वह उससे झगड़ा करने लगी। इससे ये बाबू भी भीतर आ गए। ये मुन्नी का पक्ष लेते थे। मैंने मुन्नी को कहा कि आज शाम से पहले या तो मेरी आँखों से दूर कहीं चली जाए, नहीं तो कल मैं उसे पकड़कर अपने घर ले जाऊँगा। मेरे गवाह बाबू अमरनाथ और गाँव के बीसियों आदमी हैं। मेरी सास, मुन्नी की माँ, अभी जीती है। मैं उन सबको अदालत में हाजिर कर दूँगा।

''अदालत मेरे हक़में फैसला देगी। मेरे में किसी किस्म का नुक्स नहीं। होटल में मैं दस रुपये रोज कमाता हूँ और इसके शरीफ बनकर रहने का खर्चा दे सकता हूँ। शरअ के मुताबिक उसे पेशा करने के लिए तलाक देने की इजाजत नहीं मिलेगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''पेशा कराने के लिए?''

''तो और क्या है? आपसे उसकी शादी तो हुई नहीं, लेकिन रात को वह आपके पास रहती है। इसे ही तो पेशा करना कहते हैं।''

सेठ मगनलाल इस कहानी को सुनकर बहुत हैरान हुआ। उसने गुलाम रसूल को कहा, ''मुझे तुम्हारे कहने पर विश्वास नहीं होता।''

''वह तो अदालत में हो जाएगा।''

''उसे हमारी कम्पनी को देने का क्या दाम माँगते हो?''

''साहब! कौन खाविन्द होगा, जो अपनी बीवी को बेचेगा? हम गरीबों में यह रिवाज नहीं है।''

''हम इसे नहीं छोड़ेंगे, चाहे एक लाख खर्च हो जाए।''

''तो हुजूर की बहुत नेक-नामी होगी? आपके इश्तहारों का, जिनमें आपने मुन्नी को एक नेक शरीफ परिवार की लड़की लिखा है, भंडा फूट जाएगा। मैं आज रात ही थाने में रपट लिखाने जा रहा हूँ और इंशा अल्ला, आज रात ही उसे आपके कमरे में पकड़वाने का यत्न करूँगा।''

''जो मन में आए करो।'' सेठ ने कुर्सी से उठते हुए कहा। गुलाम रसूल कमरे से बाहर निकल गया। निशनाथ खड़ा-खड़ा यह सब-कुछ देख रहा था। सेठ ने कहा, ''यह सब झूठ है। वह पंजाबन है ही नहीं। हम इसे साबित कर देंगे।''

निशनाथ मूर्तिवत् सामने खड़ा रहा। न तो बोलकर न किसी हाव-भाव से उसने मन के भावों को प्रकट होने दिया। उसे चुप देख सेठ ने कहा, ''क्या समझते हो? मिस्टर चैटर्जी!''

''हुजूर! वह पंजाबन है। उसके बोलने से सिद्ध हो जाएगा।''

''तो फिर क्या हुआ? वह अपनी इच्छा से मेरे पास रहती है।''

''परन्तु बिना अपने पति को तलाक दिए नहीं रह सकती। साथ ही आपकी बदनामी होगी और मुसलमान एक मुसलमान औरत को किसी हिन्दू के पास नहीं रहने देंगे।''

इसको सुन सेठ मगनलाल को भारी क्रोध चढ़ आया। वह अपने स्थान से उठ कमरे में इधर-उधर घूमने लगा। फिर एकाएक खड़ा हो बोला, ''अमरनाथ को बुलाओ तो।''

अमरनाथ आया तो उससे पूछा, ''क्यों जी! तुम मुन्नी को जानते हो?''

''जी हाँ! परन्तु मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपके विरुद्ध साक्षी नहीं करूँगा।''

''परन्तु क्या गुलाम रसूल यह सिद्ध कर सकेगा कि मुन्नी का उससे विवाह हो चुका है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यदि गाँव के लोग आ गए तो सब-के-सब पहचान लेंगे। मुन्नी गाँव की लड़की है। सब लोग उसे बचपन से ही जानते हैं। फिर उसकी माँ जीती है।''

''बड़ी मुश्किल हुई। देखो अमरनाथ! मेरी इस छोकरी से मुहब्बत हो गई है और मैं उसे छोड़ नहीं सकता।''

''तो मैं एक उपाय बताता हूँ, इसे बम्बई भेज दीजिए।''

''पर यहाँ तो अब 'शूटिंग' होने वाली है।''

इस पर निशनाथ ने कहा, ''हुजूर! हलवा खाया भी जाए और रखा भी जाए, दोनों बातें कैसे हो सकती हैं?''

''तो तुम्हारा मतलब है कि इसे चपला पिक्चर में से छुट्टी कर दी जाए?''

''यही तो कह रहा हूँ, हुजूर, कि आपकी प्रेमिका भी हो और चित्र की अभिनेत्री भी, दोनों बातों का चलना कठिन हो गया है। यदि गुलाम रसूल ने पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई तो वह पकड़ ली जाएगी और मुकद्दमा होने तक उसकी जमानत होगी। इतने में आपकी, फिल्म कम्पनी की और फिर मुन्नी की बदनामी होगी। मुकद्दमे के समय तक शूटिंग में भाग नहीं ले सकेगी।''

''इस गुलाम रसूल के बच्चे को समझाना चाहिए। दो हज़ार—दस हज़ार तक देने को तैयार हूँ। जाओ उससे बात करो।''

निशनाथ कमरे से बाहर हो गुलाम रसूल से मिलने चला गया। उसके चले जाने के बाद सेठ ने अमरनाथ से कहा, ''मुन्नी तो कहती थी कि कुछ गाने का झगड़ा था। यहाँ तो बात कुछ और ही निकली है।''

''साहब! गाने का झगड़ा भी हुआ था। मगर यह बात तो उसके बाद हुई है। जब मैंने उसे बताया कि गुलाम रसूल उसका खाविन्द ही है और उसके माँ-बाप का नाम बताया और गाँव की दूसरी बातें बताईं तो उसने मुझे कहा कि मैं उसके विरुद्ध साक्षी न करूँ। मैंने कहा था कि मैं गवाही नहीं दूँगा, परन्तु गुलाम रसूल नहीं माना और उसने कहा कि वह मुझे भी उसे भगा ले जाने वालों में लिखाएगा। इस पर मुन्नी मुझे गाली देने लगी कि मैंने ही गुलाम रसूल को भड़काया है।''

सेठ साहब मुन्नी के कमरे में गए और उसे अमरनाथ के सामने ले आए। मुन्नी को बाहर हो रही बातों का कुछ ज्ञान नहीं था। इससे वह अभिमान से झूमती हुई और सेठ साहब की बगल में रखी कुर्सी पर बैठ अमरनाथ की ओर इस ढंग से देखने लगी, मानो वह अपराधी के रूप में सामने खड़ा है। उसकी आशा के विपरीत सेठ ने उससे ही प्रश्न करने आरम्भ कर दिए। सेठ ने पूछा, ''मुन्नी! तुम किस गाँव की रहने वाली हो?''

मुन्नी चुप रही। इससे सेठ के मन का संदेह कुछ दृढ़ हो गया। उसने पूछा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तुम गुलाम रसूल को जानती हो?''

इस प्रश्न से तो वह चकित रह गई। उसे कुछ समझ नहीं आया। इससे उसने पूछा, ''आपका मतलब क्या है?''

''मैं जानना चाहता हूँ कि वह तुम्हारे पास हर रोज दोपहर को आता है क्या?''

इस प्रश्न से तो मुन्नी के मुख का रंग उड़ गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके पाँव-तले से मिट्टी खिसक रही है। उसके मुख से आवाज़ नहीं निकली। इससे तो सेठ के मन में गुलाम रसूल के कहने पर विश्वास हो गया। उसने कुछ डाँटकर कहा, ''देखो मुन्नी! मैंने कितना रुपया तुम पर खर्च किया है। इस पर भी तुमने वही किया, जो पेशेवर रंडियाँ कर रही हैं।''

इस स्पष्ट लांछन से तो वह और भी घबराई। उसने तुतलाते हुए पूछा, ''कौन कहता है?''

''गुलाम रसूल ने स्वयं बताया है।''

''वह बेवफा है।''

''बेवफा! तो फिर ठीक है। तुम उसकी बीवी हो और जब से तुम यहाँ आई हो तुम उस....।''

इसके आगे सेठ साहब कुछ कह नहीं सके। कुर्सी से उठकर फिर कमरे में इधर-उधर घूमने लगे। इतने में मुन्नी को परिस्थिति का कुछ-कुछ ज्ञान हो गया और वह भी उठकर खड़ी हो गई और बोली, ''मैं उसको अपना नौकर समझती हूँ। इससे मैंने बेवफा कहा है। मैं उसकी बीवी नहीं हूँ।''

सेठ साहब खड़े हो मुन्नी की ओर घूरकर देखने लगे। मुन्नी क्रोध और भय से थर-थर काँप रही थी। मुन्नी ने काँपती हुई आवाज़ में कहा, ''यह ठीक है कि वह मुझसे मुहब्बत जाहिर करता है। मैं उसे मना नहीं कर सकी। इसकी वजह आप जानते हैं। क्या मैं इसके सामने बताऊँ?'' इतना कह मुन्नी ने अमरनाथ की ओर देखा। सेठ साहब निश्चय नहीं कर सके कि क्या कहें। मुन्नी ने देखा कि सेठजी नहीं समझते। इससे उसने बताया, ''मैं इक्कीस वर्ष की पंजाबी युवती हूँ। आप अपनी आयु और अपने स्वास्थ्य की ओर देखिए। मैंने कुछ गुनाह नहीं किया।''

''तो तुम पंजाबन हो। तुम मुसलमानिन हो। तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? मैं तुम्हें पूना से लाया था।''

''अब जो कुछ है सो है। मैं अपना पूर्व इतिहास बताना नहीं चाहती थी। बताइए, क्या चाहते हैं आप?''

''मेरे घर से निकल जाओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''बहुत अच्छा! अभी जाऊँ?''

''हाँ, गुलाम रसूल को बुलाता हूँ। तुम उसके साथ जा सकती हो।''

''इसकी क्या आवश्यकता है? मैं अभी कपड़े बदलकर आती हूँ।'' इतना कह, वह अपने कमरे में चली गई।

अमरनाथ इस घटना को इस प्रकार होते देख चकित रह गया। वह यह नहीं जानता था कि बात यहाँ तक बढ़ जाएगी और न ही वह इतना कुछ चाहता था। इससे उसने मुन्नी के चले जाने के पश्चात् सेठ से कहा, ''साहब! मुझे बहुत शोक है। मुझे न तो इसकी आशा थी और न ही मेरी इच्छा थी। बताइए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?''

''कुछ नहीं। इस बदकार औरत का यहाँ से चला जाना ही ठीक है।''

इस समय गुलाम रसूल और निशनाथ आ गए। सेठ उनको देख क्रोध में बोला, ''तुम्हारी बीवी तुम्हारे हवाले है। ले जाओ इसे यहाँ से। और देखो, फिर अपना काला मुख नहीं दिखाना। चले जाओ।'' इतना कह सेठ मुन्नी के कमरे में चला गया।

गुलाम रसूल निशनाथ का मुख देखने लगा। निशनाथ उसे और अमरनाथ को संकेत कर बाहर स्टूडियो में ले गया। वहाँ पहुँचते ही गुलाम रसूल ने कहा, ''अब क्या करूँ? इतनी महंगी औरत को मैं कहाँ रखूँगा?''

अमरनाथ हँस पड़ा। निशनाथ ने कहा, ''घबराओ नहीं, वह तुम्हारे साथ नहीं जाएगी। मकान के नीचे जाकर कह देना कि वह जहाँ चाहे, जा सकती है।''

अमरनाथ ने धीरे-से कहा, ''चैटर्जी! झूठ का भंडा फूट गया तो नौकरी छूट जाएगी।''

इस पर गुलाम रसूल ने कहा, ''आपने तो कहा था कि इससे रुपया मिलेगा और मिली है बदकार औरत—कांटों का हार जो मैं पहन नहीं सकता।''

''दोस्त! घबराओ नहीं। जो कुछ कहा है, वह ऐसा है कि मुन्नी बहुत-सी बातें छिपाने का यत्न करेगी और सेठ उसे अपने यहाँ नहीं रखेगा। अव्वल तो वह तुम्हारे साथ जाएगी नहीं और अगर गई भी तो बम्बई ले जाना। वहाँ उसे नौकरी मिल जाएगी और तुम उसके मुहाफिज बनकर रह सकोगे।''

अमरनाथ भयभीत था और नहीं जानता था कि इसका क्या परिणाम होगा। गुलाम रसूल यह बात समझ गया था कि मुन्नी खूबसूरत औरत है। यदि गले मढ़ भी दी गई तो भारी आमदन का स्रोत बन जाएगी। उसे लेकर बम्बई चला जाएगा और वहाँ किसी भी सिनेमा-कम्पनी में काम मिल जाएगा। इससे वह आशा कर रहा था कि शीघ्र ही जूठे बर्तन उठाने से उसे छुट्टी मिल जाएगी।

अमरनाथ को संगीत-कला में अपनी योग्यता पर विश्वास था। इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका भय शीघ्र ही छूट गया। वह समझने लगा था कि यदि मुन्नी से छुटकारा मिल गया तो इस 'चपला' फिल्म में ही अपनी योग्यता दिखाने के लिए अधिक अच्छा अवसर पाएगा और यदि सेठ मगनलाल ने उसे निकाल दिया तो वह शीघ्र ही अन्य कहीं काम पा जाएगा।

इस पर भी दोनों का मन धक-धक कर रहा था। भविष्य की अनिश्चितता से वे चंचल थे। निशनाथ उन दोनों से अधिक शांत मन था। वह प्रत्येक परिस्थिति के लिए अपना मार्ग सोच चुका था। इससे मुस्कराते हुए बोला, "मैं समझता हूँ, गुजराती लोग पक्के व्यापारी होते हैं और रुपये की हानि वे सह नहीं सकते। ऐसी अवस्था में सेठ सिनेमा कम्पनी को चालू रखने का पूरा यत्न करेगा। यदि उसके मन पर यह अंकित हो गया कि मुन्नी के रहने से कम्पनी को हानि की सम्भावना है, तो वह निकाल दी जाएगी।"

इस समय सेठ और मुन्नी दोनों बाहर आ गए। मुन्नी सर्वथा साधारण और श्वेत और सूती कपड़े पहने थी। उसने सब भूषण उतार दिए थे। वह खाली हाथ थी और अपना 'पर्स' भी, जो सदैव हाथ में लिये रहती थी, नहीं लिये हुए थी। बाहर आ सेठ ने गुलाम रसूल से कहा, "देखो जी, यह कहती है कि तुम्हारी विवाहिता है। ऐसी हालत में मैं इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहता। तुम्हारी बीवी है तो यह खड़ी है। तुम्हारे साथ जाती है तो ले जाओ। अब तुम दोनों यहाँ से नीचे उतर जाओ।"

मुन्नी का मुख उदास था। इस पर भी वह निश्चित मन प्रतीत होती थी। वह चुपचाप वहाँ से चल पड़ी। गुलाम रसूल उसके पीछे-पीछे हो लिया। दोनों मकान से नीचे उतर गए। नीचे सड़क के किनारे आकर मुन्नी ने गुलाम रसूल से कहा, "अब बताओ, है मेरा खर्चा सहने का दम तुममें? बड़े आए मेरे खाविन्द बनने वाले। चलो, कहाँ है घर तुम्हारा?"

गुलाम रसूल उसकी ऐसी बात सुन घबराया। अपनी सफाई देने के लिए बोला, "मेरी जान....।"

परन्तु मुन्नी ने वहाँ सड़क के किनारे झगड़ा करना ठीक नहीं समझा। इससे उसकी बात को टालकर बोली, "बेवकूफ के बच्चे! हम रंडियों से मज़ाक बहुत महंगा पड़ता है। चलो, कहाँ है घर तुम्हारा? ताँगा करो और चलो। यहाँ बकबक करने से क्या फायदा?"

गुलाम रसूल ने सड़क पर गुजरते हुए तांगे को आवाज़ दे बुलाया, "ओ ताँगा!"

ताँगा आया तो मुन्नी लपककर उसमें बैठ गई। गुलाम रसूल उसके पास बैठने लगा तो वह बोली, "आगे बैठो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाम रसूल तांगे वाले के पास बैठ गया। मुन्नी ने कहा, ''पता बताओ।''
गुलाम रसूल ने तांगे वाले को कहा, ''रतनचंद रोड पर ले चलो।''

:: 16 ::

मुन्नी के जाने के पश्चात् कितनी ही देर तक सेठ मगनलाल चुपचाप खड़ा उस दरवाज़े की ओर देखता रहा, जिससे मुन्नी बाहर गई थी। मानो वह अब भी प्रतीक्षा कर रहा हो कि शायद वह वापस आ जाएगी। अमरनाथ और निशनाथ चुपचाप उसके कुछ कहने की प्रतीक्षा करते रहे।

अंत में सेठ बोला, ''औरत भी एक पहेली है। जाते समय एक पैसे की वस्तु नहीं ले गई। सब भूषण और कीमती वस्त्र छोड़ गई है। इसमें संदेह होता है कि शायद वह गुलाम रसूल की बीवी नहीं है, इस पर भी उससे वास्तव में प्रेम करने लगी है। पर निशनाथ! देखो कितने अभिमान से सिर ऊँचा किए हुए थी और गुलाम रसूल उसके साथ ऐसे गया है, मानो अपनी ससुराल से उसे विदा करवा ले जा रहा है।''

उत्तर अमरनाथ ने दिया, ''मुझे बहुत शोक है कि बात इतनी बढ़ गई और उसे जाना पड़ा। मैं समझता था कि वह गुलाम रसूल के साथ जाने से इंकार करेगी।''

''परन्तु उसने बताया तो है कि वह गुलाम रसूल से मुहब्बत करती है। गुलाम रसूल ने भी बताया था कि वह उसके पास दोपहर के समय आया करता था। ऐसी अवस्था में मैं उसे अपने पास नहीं रख सकता था और मैंने जाने से नहीं रोका। उसने एक बार भी तो अपनी भूल स्वीकार नहीं की। केवल एक बार कहा कि वह गुलाम रसूल की बीवी नहीं, पर अब इस घर में नहीं रहेगी।''

अमरनाथ को अपनी किए पर पश्चात्ताप होने लगा था। निशनाथ उसके मन की अवस्था को जान गया। इससे उसने बात बदल दी, ''परन्तु मुझे तो इस बात की चिंता लग रही है कि अब चित्र का क्या होगा?''

सेठ साहब ने चौंककर कहा, ''हाँ! मैं आज ही हिसाब लगा रहा था। आज तक पचास हज़ार के लगभग व्यय हो चुका है। क्यों जी अमरनाथ! मुन्नी के बिना पिक्चर बन सकेगी?''

अमरनाथ ने धीरे से कहा, ''हमें 'हीरोइन' ढूँढनी पड़ेगी।''

''क्या कोई मुन्नी से अधिक सुंदर लड़की मिल सकेगी?''

निशनाथ को सेठ साहब के भावों पर हँसी आने को हुई। बड़ी कठिनाई से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने इसे रोका और कहा, ''कल से ही हम ढूँढने का यत्न करेंगे। स्कूलों, कॉलेजों, रंडी बाज़ार इत्यादि स्थानों का चक्कर काटना शुरू करेंगे। वैसे पंजाब में सुंदर लड़कियों की कमी तो नहीं होनी चाहिए।''

''पर हमारे काम के योग्य होगी कोई?''

अमरनाथ ने सेठ के बैठते दिल को ढाढस देने के लिए कह दिया, ''कोई ऐसी मिल जाना कठिन नहीं, जिससे आप मुन्नी को भी भूल जाएँ।''

निशनाथ ने कुछ सोचकर कहा, ''एक लड़की को मैं जानता हूँ। पर वह मानेगी या नहीं, यह मैं अभी नहीं कर सकता। हाँ, इतनी बात मैं जानता हूँ कि मुन्नी उसके जूते की भी बराबरी नहीं कर सकती।''

''सत्य?'' सेठ ने पूछा।

अमरनाथ ने कहा, ''हमें दिखा सकते हैं क्या?''

''मैं उसे यहाँ लाने का यत्न करूँगा।''

अपने षड्यंत्र में निशनाथ सफल हुआ। ललिता जैसी लड़की को स्टूडियो देखने का लोभ कहीं भी ले जा सकता था। अगले दिन निशनाथ पार्टी के दफ़्तर में पहुँचा तो ललिता से मिला। ललिता देख रही थी कि दिन-प्रति-दिन निशनाथ के मुख पर ओज और कपड़ों पर सफाई बढ़ रही है। वह समझ रही थी कि उसके पास कहीं-न-कहीं से रुपया आ रहा है। वह उसके फिल्म कम्पनी में नौकर हो जाने की बात नहीं जानती थी। निशनाथ ने इस दिन रेशमी कुर्ता और दूध समान श्वेत धोती तथा बिलकुल नई चप्पलें पहनी थीं।

ललिता ने निशनाथ को सिर से पाँव तक देखते हुए कहा, ''आज आपकी गति में स्फूर्ति और चपलता दिखाई दे रही है। क्या बात है?''

''आज फिर आपको सिनेमा तथा चाय का निमंत्रण देने आया हूँ।''

''क्या उस दिन मेरे सम्बन्ध में आपको पूरा ज्ञान नहीं हो पाया था?''

''मैं समझता हूँ कि ज्ञान-प्राप्ति तो हुई, पर उसका लाभ नहीं उठा सका था। सो आज यत्न करना चाहता हूँ।''

''बहुत भयंकर आदमी हैं आप?''

''आप मेरे विषय में सदैव भूल करती हैं।''

''क्या भूल की है?''

''उस दिन आप समझती थीं कि आपकी दावत का दाम नहीं चुका सकूँगा। आप मुझे तू-तू कह पुकारती थीं, जैसे कि मैं आपका चपरासी था। आज आप समझ रही हैं कि मैं आप पर बलात्कार करूँगा।''

''नहीं, मेरा यह अभिप्राय नहीं है।''

''तो भयंकर के क्या अर्थ होते हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''आप मेरे सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर मुझसे क्या लाभ उठाना चाहते हैं?''

''आपकी संगति का फल।''

''मैं क्या हूँ, जो मेरी संगत का फल पाना चाहते हैं?''

''एक सुंदर लड़की।''

''बहुत खुशामदी हो।''

''तो बताइए, चलिएगा?''

''कहाँ ले चलना चाहते हैं?''

''चाय के लिए 'स्टैंडर्ड' में। उसके पश्चात् यदि फिर 'पिक्चर' देखने का विचार हो, तो वहाँ।''

''पिक्चर के पश्चात् खाना नहीं?''

''हाँ, हाँ! वह भी।''

''तो चलो।''

दोनों पार्टी के दफ़्तर से बाहर निकल आए। सामने एक मोटर-टैक्सी खड़ी थी। निशनाथ ने कहा, ''आइए बैठिये।''

ललिता ने अचम्भे में पूछा, ''कहाँ से उड़ा लाए हैं?''

''भाड़े पर लाया हूँ।''

''प्रतीत होता है 'फाउस्ट' की भाँति आपने अपने को शैतान के हाथों बेच डाला है।''

''सब धनवान शैतान के पास बिके होते हैं।''

''पर आप धनवान कब से हुए हैं?''

''जब से ज्ञात हुआ है कि आप अच्छा खाना, अच्छा पहनना और सुख-आराम से रहना बहुत पसंद करती हैं।''

''तो मेरे लिए आपने अपने को शैतान के हाथों बेच डाला है?''

''हाँ, बैठिए गाड़ी में।''

ललिता मोटर में बैठ गई और निशनाथ उसके पास जा बैठा। गाड़ी चल पड़ी। ललिता चुपचाप मन में सोच रही थी कि निशनाथ को इतना धन कहाँ से मिल गया है। निशनाथ उसे विचार करने का अवसर देना चाहता था।

'स्टेंडर्ड रैस्टोराँ' के सामने गाड़ी जा खड़ी हुई। निशनाथ और ललिता गाड़ी से निकल, रैस्टोराँ में एक मेज़ पर जा बैठ गए। चाय इत्यादि खाने का सामान सामने रखा जाने लगा। ललिता आर्डर देती जाती थी और बैरा सामान लाता जाता था।

इस समय निशनाथ ने पूछा, ''कौन-सी पिक्चर देखे चलिएगा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैंने सब देखी हैं। जहाँ आपका मन करे चलूँगी।''

''यदि सब देखी हैं तो मैं एक प्रस्ताव करता हूँ। आओ, आज वहाँ चलें, जहाँ चित्र बनते हैं।''

''कहाँ?''

''इम्पीरियल स्टूडियो में।''

''वहाँ हमें कोई जाने देगा?''

''आशा तो है कि जा सकेंगे।''

''यदि इस समय 'शूटिंग' न होती होगी तो?''

''प्रति सायंकाल 'शूटिंग' होती है।''

''आपको यह सब कैसे पता है?''

''मेरे वहाँ एक परिचित हैं।''

:: 17 ::

ललिता क्या प्राय: सिनेमा देखने का प्रत्येक शौकीन स्टूडियो देखने के लिए उत्सुक रहता है। अतएव वह चलने के लिए तैयार हो गई। चाय आदि का मूल्य चुका दोनों बाहर निकले और टैक्सी में बैठ, नवाकोट के आगे इम्पीरियल स्टूडियो में जा पहुँचे। स्टूडियो के फाटक पर उतरकर निशनाथ ने चौकीदार को कुछ कहा और चौकीदार ने फाटक खोल दिया। वह पुन: मोटर में आ बैठा और मोटर स्टूडियो के दफ़्तर में जा पहुँची। वहाँ पर कमलनयन और अमरनाथ पहले ही उपस्थित थे। निशनाथ ने दोनों से हाथ मिलाया। ललिता का परिचय दिया और कहा, 'शूटिंग' होती देखने आई हैं।

''शूटिंग हो रही है। आधे घंटे में काम आरम्भ होगा। आप शौक से देखिए। मगर देखने से क्या होगा? आप इसमें हिस्सा लीजिए न!'' अमरनाथ ने कहा।

''हाँ,'' कमलनयन ने अमरनाथ का समर्थन कर दिया, ''भगवान की कृपा से आपकी रूप-रेखा और शरीर की बनावट ऐसी है कि थोड़े-से अभ्यास से ही आप चोटी की ऐक्ट्रेस बन जाएँगी।''

ललिता ने साहस कर कहा, ''पर मैं तो नकल से असल अधिक पसंद करती हूँ। मैं रंगमंच पर भाव चित्रित करने के स्थान पर समाज के पेट पर अंकित करना अधिक पसंद करती हूँ।''

''यह रंगमंच अवश्य है, परन्तु प्रभाव इसका समाज पर ही होता है। देखिए ललितादेवी! हम 'चपला' नाम का चित्र बना रहे हैं। इसमें हम एक ऐसी स्त्री के आचार-व्यवहार और स्वभाव को चित्रित कर रहे हैं, जो अस्थिर-चित्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है और फिर उस चित्त की अस्थिरता का परिणाम दर्शाने का यत्न कर रहे हैं। अब इस चित्र का प्रभाव समाज पर हुए बिना नहीं रहेगा। एक व्याख्यानदाता अपने व्याख्यान से महीनों में जो प्रभाव उत्पन्न करता है, वह हम एक घंटे के प्रदर्शन से उत्पन्न कर देते हैं। इस कारण यदि आप इस चित्र में सहयोग दें तो आप वास्तव में समाज की सेवा करने में हाथ बटाएँगी।''

''परन्तु, आपके 'चपला' चित्र का आशय कुछ मन को पसंद नहीं आया।''

इस पर निशनाथ ने कहा, ''सब काम अपने मन-पसंद के तो हो नहीं सकते। जब हम किसी एक संख्या में सम्मिलित होते हैं, तो सब के विचारों का समन्वय करना पड़ता है। हम अपने विचार प्रकट कर दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं।''

''मैं तो यह चाहती हूँ कि कोई ऐसा चित्र हो, जिसमें धनाढ्य समाज का निर्धनों पर अत्याचार दिखाया जाए। अपने धन के बल से धनी व्यक्ति को मज़दूर का खून चूसता दिखाया जाए। गरीब मज़दूर अपनी मुसीबतों को बहादुरी से सहन करते हुए संसार के 'प्रोलेटेरियट' को उठाने का यत्न करते दिखाए जाएँ।''

''बहुत सुंदर! बहुत विचित्र!! वाह, कितना बढ़िया भाव और कितनी सुंदर भाषा में व्यक्त किया है! हम मुंशी प्रमोद को आपसे मिला देंगे। आप उनसे बात करिएगा और वे आपके इन श्रेष्ठ विचारों को एक कहानी में बाँध देंगे। पश्चात् हम इसको चित्र रूप में बना डालेंगे।''

''यदि कोई ऐसा चित्र हो, तो मैं उसमें सहयोग दे सकती हूँ।''

''परन्तु सहयोग के पूर्व कुछ काम भी तो सीखना होगा। यदि आप इस चित्र में काम करना स्वीकार करें, तो मैं सेठजी से कहकर आपके विचार के अनुकूल नए चित्र की योजना करवा सकता हूँ।''

''कौन सेठजी?''

''सेठ मगनलाल। बड़ौदा के रहने वाले हैं, बम्बई में लाखों के कारोबार चलाते हैं।''

ललिता गम्भीर विचार में पड़ गई। निशनाथ पृथक् खड़ा अमरनाथ से बातें कर रहा था। उसने अपना व्यवहार ऐसा बना रखा था, मानो उसका कमलनयन के प्रस्तावों से कोई सम्बन्ध ही नहीं है। इस समय घंटी बजी। कमलनयन कुर्सी से उठते हुए कहने लगा, ''शूटिंग के लिए सब तैयार हैं। आइए आपको दिखाऊँ।''

ललिता उठ खड़ी हुई और सब उठकर स्टूडियो में चले गए। एक बहुत ऊँचा टीन का शैड था। इसके एक कोने में एक ड्राइंग-रूम का 'सैटिंग' बना था। लकड़ी के तख्तों से दीवारें और उनमें दरवाज़े-खिड़कियाँ बनी थीं, तसवीरें लगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं, फर्श पर कालीन बिछा था और सोफासैट लगे थे। ये दीवारें केवल आठ फुट ऊँची थीं। तीन और दीवारें थीं और कमरे के केवल एक ओर फोटो लेने का मूवी कैमरा था। आवाज़ पकड़ने का यंत्र और प्रकाश करने के बिजली के बड़े-बड़े हंडे लगे थे।

देखने वाले कैमरा के पीछे खड़े हो गए। कैमरामैन अपने स्थान पर खड़ा कैमरा को फोकस करने लगा। दूसरी ओर ध्वनि-इंजीनियर ने अपना माइक्रोफोन सीधा किया। कमलनयन एक ओर खड़ा हो बोला, ''तैयार? एक, दो, तीन।'' कैमरा चलने लगा। एक क्षण के पश्चात् दीवार में का दरवाज़ा खुला और एक युवक अंग्रेजी ढंग के कपड़े पहने उसमें से बाहर आया। युवक मुख से सीटी बजाता हुआ आया। उसने आकर बीच में रखी मेज़ पर एक लड़की के चित्र को देखा। फिर दोनों हाथों में उठा, आँखों से कुछ अंतर पर रख, सिर को कुछ दाहिनी ओर झुकाकर, बहुत ध्यान से उस चित्र को देखा। पश्चात् कुछ मुस्कराकर और अपने हृदय पर दाहिने हाथ को रखकर एक लम्बी साँस खींचकर कहने लगा, ''चपला!....हाय चपला!! न जाने क्या जादू है तुम्हारी आँखों में? कितना उन्माद है इनमें?''

इतना कह वह एक ग़ज़ल गाने लगा—

है किसने बुलाया मुझे करके इशारा।
किसने है ली चुटकी मेरे दिल के तार की॥
दिल में उठे वलवले हैं बेचैन कर रहे।
अब आरज़ू उठी है किसी के दीदार की॥

ग़ज़ल कहते समय अभिनय में फरक हो गया। इस पर कमलनयन ने संकेत से शूटिंग बंद करवा दी और स्वयं अभिनेत के स्थान पर खड़े हो, यह पद गाकर और अभिनय करके दिखाया—

अब आरज़ू उठी है किसी के दीदार की।

जब कमलनयन ने तीन बार स्वयं करके दिखाया और अपनी प्रत्येक गति का अर्थ समझा दिया तो अभिनेता को पुनः वैसा करने के लिए कहा गया। इस बार भी कमलनयन को संतोष नहीं हुआ। उसने फिर करके दिखाया। इस बार अभिनेता ने किया तो और भी खराब रहा। इस पर कमलनयन ने फिर करके दिखाया। इस प्रकार कई बार दोहराने पर भी जब कमलनयन को संतोष नहीं हुआ तो उसने दूसरा सैटिंग लगवाने को कह दिया। इस समय सेठ मगनलाल आ गए और एक ओर कुर्सी पर बैठ यह सब गतिविधि देखने लगे। कमलनयन ने ललिता के पास आकर कहा, ''यह हमारे मालिक हैं। कहो तो परिचय कराऊँ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''क्या हानि है ?''

''तो आइए।'' निशनाथ और अमरनाथ ललिता को ले सेठ के पास जा पहुँचे। वह उठा और आगे बढ़कर हाथ मिलाकर बोला, ''आइए, पधारिए।''

ललिता के लिए कुर्सी सेठ के सामने लगा दी गई और निशनाथ तथा अमरनाथ उसके पीछे बैठ गए। कमलनयन सेठ की बगल में रखी कुर्सी पर बैठ गया।

निशनाथ ने ललिता का परिचय दिया, ''हमारी पार्टी की प्रचारिका। आज यहाँ शूटिंग आदि देखने चली आई हैं।''

''शूटिंग देखा ?'' सेठ ने पूछा।

''जी हाँ!'' ललिता ने उत्तर दिया।

''पसंद आया ?''

''पर्दे पर देखने में अधिक आनंद आता है।''

''वह तो है ही। मिठाई बनी हुई कितनी स्वादिष्ट होती है, परन्तु बनाने वाले हलवाई की दशा कौन देखना चाहेगा! धनी लोगों को देखकर सब संसार ईर्ष्या करता है, परन्तु धनी बनने के समय जो फाके और कठिनाइयाँ सहन की जाती हैं, वह किसी बनिये के पूत को ही मालूम होती हैं।''

''इन्होंने एक विचार दिया है।'' निशनाथ ने कहा।

''क्या ?''

''ये कहती हैं कि ऐसा चित्र बनाया जाए, जिसमें धनी लोगों का अत्याचार और गरीबों की बहादुरी और त्याग दिखाया जाए।''

''बात तो ठीक है। आज, इस जमाने में ऐसी तस्वीर खूब चलेगी और लाखों का लाभ होगा।''

ललिता सेठ के दृष्टिकोण को जान मुस्कराई। इस पर भी यह विचार कर कि देश में क्रांति उत्पन्न होने पर सब लाखों पैदा किए हुए निकल जाएँगे, बोली, ''इस विचार पर एक सुंदर कहानी बनाई जा सकती है।''

''हाँ, हाँ, क्यों नहीं ?'' सेठ ने उत्तर दिया, ''सुंदर चित्र बनाने से ही तो हमें लाभ होगा। जहाँ कहानी मनोरंजक होनी चाहिए, वहाँ सैटिंग भी सुंदर होनी चाहिए। ऐक्टर और ऐक्ट्रेसेज़ भी सुंदर हों। दृश्य लुभायमान हों, कहीं पहाड़ हों, तो कहीं नदी-नाले। यदि किसी गरीब की झोंपड़ी दिखाई जाए, जहाँ न खाने को अन्न हो और न पहनने को कपड़ा, वहाँ साथ ही धनी महाजन का महल भी हो, जहाँ खा-खाकर लोग उल्टी करते हों; ताकि फिर खा सकें। क्यों, ललिता जी! ठीक है न ?''

''आप तो कवि प्रतीत होते हैं।'' ललिता ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
''हाँ, यही तो कारण है कि जितने भी चित्र मैंने बनवाए हैं, सब-के-सब चल रहे हैं। सबसे प्रथम चित्र जो मैंने अपने विचारानुकूल बनवाया था, वह 'चरण सरोज' है। दस लाख के लगभग उस पर व्यय किया था। इस समय तक उससे चौदह लाख से ऊपर आय कर चुका हूँ। मैंने अपने उस चित्र में काम करने वालों को भारी इनाम भी दिया, तो भी मैं बहुत मज़े में हूँ।''

''तो फिर इस नए आयोजन के विषय में आपका क्या विचार है?''

''देखो ललितादेवी! इस चित्र की सफलता के लिए एक लड़की चाहिए, जो बहुत बड़ी आयु की न हो। गरीबों में छोटी आयु की लड़कियाँ ब्याह दी जाती हैं। फिर वह लड़की इतनी सुंदर होनी चाहिए कि बिना बनाव-शृंगार के भी भली प्रतीत हो। फिर लड़की कुछ पढ़ी-लिखी भी होनी चाहिए, जिससे अभिनय करना सिखाने में बहुत मेहनत न करनी पड़े। साथ ही कहानी लिखने वाले के मन में गरीबों के लिए सहानुभूति हो, अन्यथा कहानी लिखने और वार्तालाप बनाने में वह ओज नहीं आएगा, जो सफल चित्र के लिए आवश्यक है। मैं समझता हूँ कि यदि आप इस चित्र के लिए नायिका का कार्य करना स्वीकार करें, तो फिर अन्य बातों का प्रबंध किया जा सकता है।''

ललिता के मन में देविकारानी और शांता आप्टे की ख्याति मूर्तिमान हो नाचने लगी। उसके मुख पर उल्लास और आँखों में चमक दिखाई देने लगी। इसी समय अमरनाथ ने यह बात कह दी, ''यदि इनके गाने की परीक्षा हो जाए तो अच्छा नहीं है क्या?''

''हाँ, हाँ।'' सेठ ने कहा, ''परीक्षा हो जाए। मैं तो समझता हूँ कि कोई ही लड़की होगी, जो गा न सकती हो।''

सेठ साहब के इस प्रशंसात्मक वचन पर सब हँसने लगे। अमरनाथ ने 'हारमोनियम' मँगवा लिया और उसे जाँघों पर रख, हाथ पर्दे पर चलाया और एक मधुर स्वर-लहरी निकालनी आरम्भ कर दी। यह अमरनाथ की विशेषता थी कि ऐसा राग और आलाप निकालता था कि सुनने वाले का हृदय स्पंदन करने लगता था। ललिता के मन में आया कि गा दे। उसने कभी लोगों के सामने नहीं गाया था। घर में अपने सोने के कमरे में अथवा गुसलखाने में स्नान के समय वह गाया करती थी। बाजे पर स्वरों की गूँज से उसके गले में खराश होने लगी। इस कारण बोली, ''मैंने लोगों के सामने कभी नहीं गाया। घर पर मुख रजाई में छुपाकर ज़रूर गुनगुनाती रहती हूँ।''

''क्या गुनगुनाती रहती हैं?'' अमरनाथ ने पूछा।

ललिता ने कुछ सोचकर कहा, ''देखिए, मैं यह गा सकती हूँ।''

ललिता ने ग़ज़ल का एक बंद सुनाया—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस्मत बुरी ने है दिखाया खेल ये।
बेसुरे रागों का तो है मेल ये॥
ज़िंदगी का है दिया बे-तेल ये।
पर चली आंधी बुझाने के लिए॥
ढूँढकर के किस जगह से लाऊँ मैं।
तिनके अपने आशियाने के लिए॥

"बहुत सुंदर! बहुत सुंदर!!" सब वाह-वाह करने लगे। अमरनाथ ने हारमोनियम के पर्दों पर हाथ चलाया तो एक स्वर निकला जिस पर कि यह ग़ज़ल गाई जा सकती थी। ललिता ने एक बार खाँस, गला साफ किया और पहला मिसरा गा दिया। कुछ संशोधन करने के लिए अमरनाथ ने गाकर दिखाया। ललिता ने उसके गाए के अनुसार दोहराया। अमरनाथ ने सिर हिलाकर प्रोत्साहन दिया। ललिता एक के बाद दूसरा पद गाती गई। जब बंद समाप्त हुआ तो सेठ साहब ने कहा, "एक बंद और।" ललिता को स्वयं ऐसा अनुभव हुआ कि जैसा वह घर पर गाया करती है, उससे बहुत बढ़िया गा रही है। इस कारण उसने दूसरा बंद भी गा दिया। उसने गाया—

ख्वाहिश बनी है फलक के टुकड़े करूँ,
उस अर्श को मैं फर्श पर लाकर धरूँ।
रोंद कर पाँवों में अपना जी भरूँ,
उरूज को पस्ती दिखाने के लिए।
ढूँढकर के किस जगह से लाऊँ मैं,
तिनके अपने आशियाने के लिए॥

कमलनयन बोल उठा, "बहुत शोखी है।"

सेठ साहब ने कहा, "भारी हिम्मत है। क्या कहना है, 'उरूज को पस्ती दिखाने के लिए!' गज़ब का साहस है, ललितादेवी!"

"अच्छा ललितादेवी! क्या लोगी हमारे इस चित्र में कार्य करने के लिए?"

"मैं क्या जानूँ?" ललिता ने ओंठों को गोल कर कहा।

सेठ ने सिर खुजलाते हुए कहा, "दो हज़ार रुपया मासिक।"

"दो हज़ार?" ललिता ने अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा।

"हाँ, और चित्र सफल होने पर पाँच प्रतिशत बोनस।"

निशनाथ ने आगे बढ़, ललिता से हाथ मिला उसे बधाई दी और कहा, "मुझे प्रसन्नता है कि तुम अपनी थाह पा रही हो।"

ललिता ने धीरे से पूछा, "क्या मतलब?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
''प्रत्येक स्त्री को जीवन में कोई आधार चाहिए और वह तुम्हें मिल रहा है।''

कॉन्ट्रैक्ट हो गया और अगले दिन से ललिता 'ऐक्ट्रेस' बन गई।

:: 18 ::

जब ललिता को विदित हुआ कि निशनाथ इस कम्पनी में पहले से ही कार्य करता है, तो उसे वहाँ लाया जाना निशनाथ का षड्यंत्र ही प्रतीत हुआ। ललिता 'चपला' चित्र में कार्य करने लगी। इसमें निशनाथ हीरो (नायक) का कार्य करता था। इससे जहाँ दोनों को एक-दूसरे के समीप रहने का दिनों-दिन अधिक अवसर मिल रहा था, वहाँ ललिता सेठ मगनलाल से भी मेल-मुलाकात रख रही थी।

सेठ किसी कार्य से अहमदाबाद गया था। शूटिंग रात के एक बजे तक होती थी। उस समय प्राय: सभी लोग थककर चूर हो गए थे। ऐसी अवस्था में ललिता की भी इच्छा थी कि शीघ्रातिशीघ्र घर पहुँचकर सो जाए।

कम्पनी की मोटर उसकी सेवा में थी। निशनाथ को बाइसिकल पर नवाकोट से दो मील के अंतर पर, शेरोंवाला दरवाज़ा के बाहर जाना था। इस कारण वह सोच रहा था कि वहीं 'स्टूडियो' में ही सो जाए।

अतएव 'स्टूडियो' के फाटक पर आ, चौकीदार से बोला कि उसकी बाईसिकल रात-भर वहीं रहेगी। इस समय ललिता कम्पनी की मोटर में फाटक में से निकली। ललिता ने निशनाथ को वहाँ खड़ा देखा तो मोटर रोक ली। उसने निशनाथ को संकेत कर बुलाया और पूछा, ''घर कैसे जाइएगा?''

''घर नहीं जा रहा। यहीं कहीं पड़ रहूँगा।''

''चलिए आपको छोड़ आऊँ।''

''आपके घर से बहुत दूर रहता हूँ। व्यर्थ पैट्रोल खर्च होगा।''

''जहाँ लाखों व्यय हो रहे हैं, वहाँ एक-आध गैलन से क्या होता है!'' इतना कह उसने ड्राइवर से पूछा, ''ले जाओगे या डाइरेक्टर साहब से कहलवा दूँ?''

''सेठ साहब का हुक्म है कि इन बाबू साहब को आपके साथ कभी भी न ले जाऊँ।''

''अच्छी बात है।'' इतना कह ललिता मोटर से नीचे उतर आई और ड्राइवर से बोली, ''ले जाओ मोटर सेठ साहब के पास। मैं इसमें नहीं जाऊँगी।''

ड्राइवर की समझ में अब आया कि उससे कितनी भारी भूल हो गई है। इससे वह क्षमा माँगने लगा। इस पर ललिता को और भी क्रोध आ गया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली, ''मूर्ख! तुमने तो कुछ अपराध किया नहीं। अपने मालिक का हुक्म ही तो बताया है न तुमने? फिर तुम क्षमा किस बात की माँगते हो? क्षमा तो तुम्हारे मालिक को माँगनी चाहिए। जाओ, चले जाओ।''

निशनाथ ने ललिता से कहा भी, ''ललिता, तुम चली जाओ। मेरी चिंता न करो। मैं यहाँ मजे में सो रहूँगा।'' परन्तु ललिता नहीं मानी। उसने स्पष्ट कह दिया कि वह सेठ को शिक्षा देना चाहती है।

दोनों मोटर को फाटक के समीप छोड़कर वापस कार्यालय में चले गए। ललिता ने वहाँ से टेलीफोन कर टैक्सी मँगवा ली। जिस समय दोनों टैक्सी की प्रतीक्षा कर रहे थे, उस समय कमलनयन चिंतातुर हो ललिता के पास आया और पूछने लगा, ''क्या बात हुई है, ललिता देवी! टैक्सी मँगवा रही हो?''

''मैं कम्पनी की गाड़ी में नहीं जाऊँगी।''

''आज क्या हुआ है?''

''ड्राइवर रहीम से पूछो।''

''वह तो मूर्ख है। उसकी बात पर गिला करना व्यर्थ है।''

''कुछ भी हो, मैं कम्पनी की गाड़ी में नहीं जा रही।''

जब ललिता और निशनाथ टैक्सी में सवार हो घर जा रहे थे, तो निशनाथ ने पूछा, ''सेठ ने ऐसा क्यों कहा होगा?''

''मैं जानती हूँ।''

''क्या जानती हैं आप?''

''एक दिन सेठ को संदेह हो गया कि हम केवल मित्र ही नहीं प्रत्युत प्रेमी भी हैं। मैंने कहा था कि उसकी धारणा गलत है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे मेरे कहने पर विश्वास नहीं हुआ, इसी कारण ड्राइवर को मना कर दिया गया होगा। मैं उसे बताना चाहती हूँ कि मैं उसकी नाराज़गी की कुछ परवाह नहीं करती।''

''परन्तु व्यर्थ में मालिक से झगड़ा करने की क्या ज़रूरत है?''

''व्यर्थ की बात नहीं। इससे उसे अपना स्थान विदित हो जाएगा।''

''क्या वह तुम्हारा प्रेमी नहीं?''

''वह मुझसे प्रेम प्रकट करता है।''

''क्या तुम्हें उसका व्यवहार पसंद नहीं?''

''न तो पसंद है और न ही नापसंद। प्रत्येक वस्तु इस दुनिया में रुपये-पैसे में आँकी जाती है।''

''ओह! तुमने अपनी कीमत किस प्रकार आँकी है?''

''एक सौ रुपया प्रति घंटा के हिसाब से।''

''बस? यह तो कुछ नहीं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यह तो मेरा उसके साथ खाना खाने, मोटर में सैर करने और बातें करने का मूल्य है।''

''और....।''

''बस और कुछ नहीं। इसलिए उसका दाम भी कुछ नहीं।''

''दूसरे लोग तो यह समझते हैं कि तुम्हारा उससे घना सम्बन्ध है।''

''समझें! मैं इसका कुछ अर्थ नहीं समझती।''

निशनाथ चुप रहा। उसे इससे कुछ भी मतलब नहीं था कि ललिता के विषय में लोग क्या-क्या अनुमान लगाते तथा समालोचनाएँ करते हैं। चंगर मुहल्ला में ललिता के मकान पर टैक्सी पहुँची, तो ललिता ने मनीबैग में से दस रुपये का नोट निकालकर टैक्सी वाले को देकर विदा कर दिया।

जब ललिता मकान पर चढ़ने लगी तो निशनाथ ने हाथ जोड़कर नमस्ते कर दी। ललिता ने पूछा, ''आप तो कश्मीरी दरवाज़े के बाहर रहते हैं न?''

''हाँ।''

''तो कैसे जाइएगा?''

''अब यहाँ तक तो आपकी कृपा से पहुँच गया हूँ। आगे भी चला ही जाऊँगा।''

ललिता ने कुछ क्षण सोचकर कहा, ''यहीं सो जाएँ तो क्या हानि है?''

''हानि मुझे तो कुछ नहीं होगी।''

''तो चले आइए।''

ललिता की माँ का कमरा बंद था। खुशीराम अभी भी एक उपन्यास पढ़ रहा था। ललिता के साथ किसी को बातें करते सुन कमरे से बाहर चला आया और निशनाथ को आया देख विस्मय और असंतोष अनुभव करने लगा। निशनाथ खुशीराम के मन के भावों को उसके मुख पर अंकित देख झेंप गया और बोला, ''ललिता देवी! यदि आप लोगों को मेरे रात यहाँ रहने से किंचित्मात्र भी कष्ट हो तो मैं चला जाता हूँ।'' ललिता भी खुशीराम के मनोभावों को समझ रही थी और उसके संदेहों का निराकरण करने के लिए बोली, ''खुशी! अपने कमरे में एक खाट इनके लिए लगा दो।''

खुशीराम अभी भी संतुष्ट नहीं हुआ। इस पर भी एक खाट ऊपर की मंजिल से उतारकर ले आया और अपने कमरे में लगाकर उस पर बिस्तर बिछा दिया।

निशनाथ थककर चूर हो रहा था। लेटते ही सो गया। खुशीराम चिरकाल तक ललिता के इस प्रकार स्वच्छंदता से घूमने-फिरने पर विचार करता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुशीराम के मन का विकास हो रहा था। यह विकास उन सब अनुभवों की भित्ति पर था, जो अपने घर की अवस्था तथा हिन्दू-समाज के विचारों को मनन कर प्राप्त किए थे। वह समझने लगा था कि उसकी माँ तथा बहन का व्यवहार ठीक नहीं है। परन्तु वह स्वयं बाईस वर्ष का युवक हो रहा था और उसे भी अपनी वासना की तृप्ति के लिए साधन चाहिए थे, परन्तु इनको वह पा नहीं रहा था। इससे वह मन में सोचता था कि शायद उसमें कहीं कुछ त्रुटि है जिसे अवश्य दूर करना चाहिए।

अपनी त्रुटियों को जानने में वह सदैव यत्नशील रहने लगा। अपने बाहरी रूप में उसे जो-जो कमी मालूम हुई, उसे दूर करने के लिए उसने यह उपाय किया कि दो बढ़िया सूट बनवाए। नेकटाई और कॉलर मोल ले आया। बढ़िया 'फ्लेक्स' का रबड़ सोल वाला जूता और एक हैट भी खरीद लाया। आधा दर्जन रेशमी रूमाल और फिर उन पर लगाने के लिए बढ़िया इतर ले आया।

यह सब-कुछ लाने में उसका डेढ़ सौ रुपया खर्च हो गया। कुछ रुपये जमा थे और शेष चालू मास के वेतन में से व्यय किए तो माँ को खर्चे के लिए रुपये नहीं दे सका। माँ ने पूछा, "खुशी! इस मास वेतन नहीं मिला क्या?"

"मिला था, पर माँ! खर्च हो गया।"

"कहाँ?"

"कपड़े सिलवाए हैं और जूते वगैरा खरीदे हैं।"

"सब खर्च कर डाले?"

"माँ! खर्चा तो डेढ़ सौ रुपया हो गया। नव्वे रुपये इस वेतन के थे, साठ रुपये बैंक से निकलवाकर दिए हैं।"

"तो रोटी और जेब-खर्च कहाँ से लाओगे? बैंक में और कितना रुपया है?"

"थोड़ा-सा ही है, परन्तु अब उनमें से निकालूँगा नहीं।"

"तो घर की रोटी कहाँ से चलेगी?"

"मधुर चाचा नहीं देंगे क्या?"

"वे क्यों देंगे? हमारे घर का खर्चा वे क्यों देंगे?"

"देंगे क्यों नहीं?...." खुशीराम कहता-कहता रुक गया। उसके मन में आया कि वह माँ से कह दे कि वह उसकी बीवी फोकट में है क्या, परन्तु वह कह नहीं सका। उसे लज्जा आ गई। फिर सोचकर बोला, "ठीक है, वे क्यों देंगे? और मैं भी सोच रहा हूँ कि मैं मधुर की स्त्री के घर का खर्चा क्यों दूँ? माँ! मैं आज से रोटी बाज़ार से खा लिया करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''जितना तुम देते हो, उतने से बाज़ार में पेट नहीं भरेगा।''

बात सत्य थी। इस पर खुशीराम ने कहा, ''यह तो ठीक है, पर माँ! इस घर में जितने लोग हैं, सबको ही तो खर्चा देना चाहिए न। ललिता भी तो कमाती है और तुम....।'' वह फिर अपने मन की बात कहने से रुक गया।

माँ ने भी समझा कि झगड़ा बढ़ रहा है। इससे बोली, ''अच्छा बाबा, इस मास खर्चा ललिता दे देगी।''

वास्तव में ललिता के लिए सौ रुपया दे देना कुछ भी कठिन नहीं था। वह इस समय फिल्म कम्पनी में काम करने लगी थी। इस रात के झगड़े से खुशीराम को खर्चा देने से छुट्टी मिल गई और वह अपने बनाव-शृंगार में धन और समय व्यय करने लगा।

बनाव-शृंगार जीवन का ध्येय नहीं। यह तो जीवन की किसी माँग की पूर्ति में साधन के रूप में होता है। जब कोई स्त्री शृंगार करती है तो अपने पति अथवा किसी अन्य पुरुष को आकर्षित करने के लिए ही तो करती है। यह ठीक है कि यह आकर्षण सदैव वासना-तृप्ति के लिए नहीं होता। इससे कुछ और भी लक्ष्य-सिद्धि की इच्छा हो सकती है। इसी प्रकार पुरुष जब बन-ठनकर तैयार होता है, तो अपने में दूसरों के लिए आकर्षण उत्पन्न करने के लिए होता है। अपनी मित्र-मंडली, अपने अफसर, अपने व्यापार में वास्ता पड़ने वालों अथवा स्त्री वर्ग को आकर्षित करने का लक्ष्य, कुछ-न-कुछ रहता ही है। खुशीराम को कारोबार अथवा छापेखाने में मालिक को प्रसन्न करने के लिए कोट-पतलून की आवश्यकता नहीं थी, न ही छापेखाने में इतर-तेल लगाकर जाने की आवश्यकता थी। यह पार्टी के कार्यालय की आवश्यकता भी नहीं थी। खुशीराम के लिए बनाव-शृंगार की आवश्यकता तो केवल स्त्री-वर्ग को आकर्षित करने के लिए ही थी।

अब वह छापेखाने में निश्चित काल के अतिरिक्त समय नहीं लगाता था। यद्यपि श्रीनाथ उससे कहता रहता था कि बहुत ज़रूरी काम अटका हुआ है, इस पर भी वह सदैव यह कह दिया करता था कि उसे बहुत आवश्यक कार्य है।

छापेखाने से पाँच बजे छुट्टी होती तो वह घर को भागता। वहाँ जा साबुन मल स्नान करता, कपड़े बदलता और कभी 'पार्क' में घूमने और कभी सिनेमा देखने चला जाता। पार्क अथवा सिनेमा में, जहाँ कहीं लड़कियाँ होतीं, वहाँ पहुँचता और उनके चारों ओर चक्कर काटने लगता। कभी किसी कारण से बाल बिगड़ जाते तो जेब से कंघी निकाल उन्हें ठीक कर लेता। कभी अपने को अधिक आकर्षक बनाने के लिए एक-आध फूल तोड़ कोट के 'बटन होल' में लगा लेता। प्रायः वह नंगे सिर जाया करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने कपड़ों के फैशन का, पार्क तथा सिनेमा में, अन्य लोगों के कपड़ों से मेल कर देखता रहता था कि कहीं कोई त्रुटि तो नहीं रह गई। कभी-कभी किसी 'रैस्टोराँ' में भी जा पहुँचता और वहाँ अपने को दिखाने के लिए व्यवहार में विशेषता लाने का यत्न करता रहता था।

इन सब प्रयत्नों पर भी और कितने ही महीनों का वेतन फूँककर भी वह किसी सुंदर लड़की को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सका। दूसरी ओर वह देख रहा था कि ललिता दिन-प्रतिदिन बढ़िया वस्त्र व आभूषण पहन रही थी और अपने रहन-सहन के स्तर को उन्नत कर रही थी। उसे मिलने के लिए आने वालों की संख्या बढ़ती जाती थी। कभी सेठ मगनलाल की मोटर उसकी सेवा में उपस्थित होती थी और कभी निशनाथ ताँगा या टैक्सी लिये हुए उसे ले जाने को आता था।

ललिता के व्यवहार से और अपनी शारीरिक माँग पूरी न हो सकने से वह अधिक और अधिक विकल होता जाता था। कई महीनों की भाग-दौड़ के पश्चात् जिस वस्तु को पार्कों और बाज़ारों में ढूँढ रहा था, वह एकाएक उसे अपने घर के पिछवाड़े की एक तंग गली में मिली। प्रत्येक सायं, वह बन-ठनकर घर से निकल उस गली में से गुज़रा करता था। एक दिन वर्षा होकर चुकी थी। गली में कीचड़ हो रहा था। खुशीराम धोबी-धुले कपड़े पहन, सिर के बालों को 'पोमेटम' तथा 'फिक्सो' लगाकर विधिवत् बैठाए हुए, चमचमाते बूटों को कीचड़ से बचाते हुए, सिनेमा देखने जा रहा था। किसी ने ऊपर की मंजिल से वर्षा का पानी एक बाल्टी में इकट्ठा कर बिना देखे-भाले खिड़की में से गली में उंडेल दिया। कीचड़-भरा जल खुशीराम के सिर पर गिरा। उसके कपड़े सर्वथा भीग गए। वह अपने को इस प्रकार गंदे पानी में स्नान कराया गया देख क्रोध से आग-बबूला हो उठा। उसने पहले अपनी सफेद पैन्ट तथा कोट की दुर्दशा देखी, फिर जिधर से वह पानी आया था, उस ओर देखने लगा। उसके मुख से निकल गया, ''कौन हरा....।'' वह गाली देने ही वाला था, परन्तु हाथ में बाल्टी लिये खिड़की से झुककर अपने किए का सुहावना परिणाम देखने के लिए निकला मुख देख चुप कर गया। एक अल्हड़ आयु की लड़की उसके बालों की दुर्दशा देख हँस रही थी। एक सुंदर लड़की को, जो मैले-कुचैले कपड़े पहने थी, अपने पर हँसते देख वह गाली भीतर-ही-भीतर पी गया।

लड़की ने जब उसे अपनी ओर घूरते हुए देखा तो शरमा गई और याचना का भाव बना कुछ बोली, जो खुशीराम ने नहीं सुना। लड़की खिड़की से पीछे हट गई। खुशीराम अपने कपड़ों को देख सोच रहा था कि वह अब सिनेमा देखने नहीं जा सकता। इतने में उसी मकान का दरवाज़ा खुला, जिसकी खिड़की में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी गिरा था। खुशीराम की दृष्टि उस ओर गई तो उसे वही लड़की दरवाज़े में खड़ी दिखाई दी। खुशीराम ने देखा कि उसकी आँखें जमीन की तरफ लज्जा से झुकी हुई हैं। वह एक रूमाल हाथ से आगे को कर रही थी, मानो कह रही थी कि इससे वह अपना मुख और सिर तो पोंछ ले। खुशीराम का क्रोध उसके इस भाव को समझ शांत हो गया। उसने आगे बढ़ उससे रूमाल ले लिया और मुख पोंछते हुए बोला, ''धन्यवाद।''

लड़की ने फिर बहुत धीमी आवाज़ में कहा, ''मुआफ करिएगा। मुझे क्या मालूम था कि नीचे से कोई गुजर रहा है।''

''सब काम बिगाड़ दिया है तुमने।'' खुशीराम ने अपनी पतलून पर पानी और गली के कीचड़ के छींटे पड़े देखकर कहा।

''अच्छा, मुआफ कर दो।''

खुशीराम रूमाल से सिर पोंछता हुआ अपने घर लौट आया। उसे रूमाल वापस करना याद नहीं रहा।

घर जाकर उसने कपड़े बदले। इस चक्कर में सिनेमा का वक्त निकल गया था। अब उसने पार्क जाने का विचार किया। कपड़े बदल जब वह घर से निकलने लगा तो उसे रूमाल की याद आई। उसने देखा कि रूमाल रेशमी था। लड़की यद्यपि बहुत सुंदर थी तो भी उस घर की नौकरानी प्रतीत होती थी। उसके कपड़े बहुत मैले थे। इससे खुशीराम ने अनुमान लगाया कि रूमाल उसके मालिक का होगा और रूमाल गुम हो जाने पर उसे डाँट पड़ेगी। ऐसा विचार कर उसने रूमाल उठा लिया, जिससे यदि वह अब खड़ी मिले तो वापस कर दे।

उस मकान के आगे से गुज़रा तो उसने देखा कि दरवाज़ा बिलकुल बंद नहीं था। दोनों किवाड़ों में एक पतली-सी दरार थी और उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह लड़की शायद रूमाल की प्रतीक्षा कर रही है। इस कारण वह दरवाज़े के सामने खड़ा हो गया और जेब से रूमाल निकाल दरवाज़े की ओर बढ़ाकर बोला, ''यह ले लो।''

दरवाज़ा खुला, लड़की ने रूमाल लेने के लिए हाथ बढ़ाया, तो खुशीराम ने अपना हाथ खींच लिया और पूछा, ''यह रूमाल किसका है?''

''खदीजा बहन का।''

''यह तो मैला हो गया है।''

लड़की का मुख लाल हो गया। खुशीराम ने पूछा, ''तुम्हें इस पर पीटा जाएगा न?''

''आपको इससे क्या? आपका तो बदला निकल जाएगा।''

''बहुत पीटी जाओगी क्या?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''रोज पिटाई होती है। अब दीजिए! इसे धोकर सुखाना है, तब कहीं रख सकूँगी।''

खुशीराम ने रूमाल दे दिया और उसके मुख की ओर देखा।

लड़की की मोटी-मोटी आँखों में आँसू थे।

:: 20 ::

इसके बाद, कई दिन तक खुशीराम को वह लड़की दिखाई नहीं दी। उसके मन में आता था कि यदि मिले तो उससे पूछे कि कितनी पीटी गई थी। जब कई दिन तक भी उस गली में से और मकान के आगे से गुजरने पर वह लड़की दिखाई नहीं दी, तो उसने उसे भुला दिया। एकाएक उसे एक दिन, जब वह छापेखाने जा रहा था तो उसी मकान के दरवाज़े से दो लड़कियाँ बुरकों में निकलती दिखाई दीं। एक का बुरका बहुत अच्छा तथा रेशमी था और दूसरी का काफी मैला। खुशीराम को खयाल आया कि मैले बुरके वाली वही लड़की हो सकती है और रेशमी बुरके वाली खदीजा बहन।

खुशीराम गली से बाहर निकला तो वे दोनों बुरके उसके पीछे-पीछे थे। बाज़ार में कुछ दूर जाकर वह एक ओर खड़ा हो गया। दोनों पीछे से आगे निकल गईं। खुशीराम उनके पीछे-पीछे चलता गया और छापेखाने जाना भूल गया। दोनों बुरके चलते गए और खुशीराम उनका पीछा करता गया। वे दोनों 'लोअरमाल' पर 'मुस्लिम कॉलेज फॉर विमैन' के दरवाज़े में घुस गए। खुशीराम बाहर खड़ा सोचता रहा कि वह मैला बुरका वापस आएगा या नहीं।

वह बुरका आया और वापस घर की ओर लौट पड़ा। खुशीराम उसके साथ-साथ चलने लगा। कुछ दूर तक चलने के पश्चात् बुरका मुख से उठ गया। खुशीराम को विदित हो गया कि वह भूल नहीं कर रहा। लड़की ने पूछा, ''आप मेरे पीछे-पीछे क्यों आ रहे हैं?''

''जानना चाहता था कि उस दिन तुम पीटी गई थीं या नहीं?''

''पीटी तो तकरीबन रोज जाती हूँ। मुझे इसकी आदत हो गई है।''

''तुम्हें यह बुरा नहीं लगता क्या?''

''मार किसको अच्छी लगती है? पर मैं हूँ नौकरानी। वे हैं मालिक। सुना है अब मेरी शादी हो जाएगी। आज तक अम्मी और खदीजा बहन पीटती हैं और आइंदा शौहर मियाँ पीटा करेंगे।''

''बहुत दुख की बात है। क्या खदीजा बहन का शौहर भी उसे पीटता है?''

''खदीजा बहन की शादी नहीं हुई और फिर वे बहुत पढ़ी हुई हैं। कॉलेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पढ़ाती हैं। सुना है ढाई सौ रुपया महीना तनखाह पाती हैं।''

''अब्बाजान अम्मी को पीटते हैं क्या?''

''नहीं, वे बहुत मुहब्बत करते हैं। मैंने उन्हें मुहब्बत करते देखा है।'' इतना कहते-कहते उसका मुख सिंदूरी हो गया।

''तो तुम्हारा शौहर तुम्हें क्यों पीटेगा?''

''मेरी शादी करीम काने से हो रही है। वह अपनी पहली बीवी को बहुत पीटा करता था।''

''तो तुम उसे जानती हो?''

''हाँ, मामूजान के घर रसोई बनाता है।''

''तो तुम ऐसे से शादी क्यों करती हो?''

''खदीजा ने एक बार अम्मी से कहा था। मगर अम्मी, मामूजान की सिफारिश को ना कैसे कर सकती हैं?''

''तो क्या तुम अम्मी को न नहीं कर सकतीं?''

''मेरे माँ-बाप नहीं हैं। वे दोनों मर गए हैं और इन लोगों की मेहरबानी से गुजर होता है। फिर मैं जाऊँ भी तो कहाँ? कौन मुझ गरीब से शादी करेगा? मेरे पास तो इन फटे कपड़ों के सिवाय कुछ है भी नहीं।''

''अगर तुम्हारे साथ कोई शादी करना चाहे तो तुम मान जाओगी?''

''मैं क्या जानूँ? पीछे कोई झगड़ा हो गया तो?''

''जो होगा देखा जाएगा। तुम मेरे साथ भाग चलो। हम किसी दूसरे शहर में चलकर विवाह कर लेंगे।''

उसका मुख लज्जा से फिर लाल हो गया। खुशीराम ने कहा, ''देखो जी! मैं तुम्हें बहुत प्यार करूँगा। तुम्हें खाने-पीने को बहुत-कुछ दूँगा। तुम्हें सुख मिलेगा और जीवन का आनंद पाओगी। इस नरक से निकल चलो। फिर हम दोनों मज़े में रहेंगे।''

''पर तुम तो हिन्दू मालूम होते हो!''

''मैं नहीं जानता कि हिन्दू क्या होता है। मैं एक युवक हूँ, तुम युवती हो। दोनों का खाविंद-बीवी बनना कुदरती बात है।''

लड़की के मुख पर लाली और अधिक हो गई और उसकी आँखें खुशी के आँसुओं में भर गईं। उसने कहा, ''जी तो चाहता है, पर क्या करूँ?''

''रात के आठ बजे चुपचाप मकान से उतरकर गली में आ जाना। मैं नीचे तुम्हारा इंतजार करूँगा। फिर दोनों लाहौर छोड़कर चले जाएँगे।''

''धोखा तो नहीं दोगे?''

''अपनी कसम खाकर कहता हूँ, तुम्हें सुखी रखूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
''खुदा परवरदिगार की कसम खाकर कहो।''

खुशीराम झेंपा। उसने खुदा, परमात्मा, भगवान् इत्यादि के विषय में कभी भी नहीं सोचा था। उसे केवल यह पता था कि वह एक युवक है। उसे बीवी चाहिए और कई महीनों से एक बीवी पाने के लिए व्यग्र घूम रहा था। अब उसे एक मिल रही थी। इससे बिना विचार किए बोल उठा, ''हाँ-हाँ, बाबा! खुदा की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं तुम्हें सुखी रखूँगा। हम-तुम दोनों मरने तक एक जान होकर रहेंगे।''

''मैं तुम पर एतबार करती हूँ। देखो, धोखा नहीं देना। भले आदमी मालूम होते हो। भले ही बनकर रहना।''

इस समय दोनों मुहल्ले के समीप पहुँच गए थे। लड़की ने मुख बुरके से ढाँप लिया। खुशीराम ने कहा, ''ठीक आठ बजे। याद रखना।''

आज खुशीराम छापेखाने नहीं गया। वह घर पहुँचा तो देखा ललिता तभी सोकर उठी थी। यह उसी रात का अगला दिन था, जब ललिता और निशनाथ रात के एक बजे इकट्ठे आए थे और निशनाथ उसी मकान में रहा था।

निशनाथ स्नान इत्यादि से छुट्टी पा, ललिता के कमरे में खड़ा आईने में अपना मुख देखते हुए, भैरवी अलाप रहा था और बीच-बीच में यह पद गाता जाता था, 'भले आए आज अलसाए नैन। अलसाए नैन बिलगाए बैन। भले....'

गीत से निशनाथ के मन की प्रसन्नता फूट-फूटकर निकलती प्रतीत होती थी। ललिता खाट पर बैठी अंगड़ाइयाँ लेती हुई निशनाथ की तान और आलाप सुन रही थी।

खुशीराम वहाँ पहुँचा तो निशनाथ चुप हो गया, मानो उसके किसी कार्य में विघ्न पड़ गया हो। ललिता ने खुशीराम से पूछा, ''भैया! क्या बात है? लौट क्यों आए हो?''

खुशीराम ने बहाना पहले ही सोच रखा था। कहने लगा, ''सिर दर्द होने लगा है। काम नहीं हो सका।''

निशनाथ ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, ''इधर आओ, तुम्हारी नाड़ी देखूँ कि तुम्हें क्या है।''

खुशीराम निशनाथ को डॉक्टर या हकीम नहीं मानता था। इस कारण बिना उत्तर दिए अपने कमरे में चला गया। दरवाज़ा भीतर से बंद कर, खाट पर लेट सोचने लगा कि किस प्रकार और कहाँ उस लड़की को ले जाने का प्रबंध करे।

वह यह जानता था कि सायंकाल न तो उसकी माँ घर पर होगी और न ही उसकी बहन। इससे उस समय उस लड़की को यहाँ लाकर, नए कपड़े पहना कहीं ले जाएगा। इस पर प्रश्न उत्पन्न हुआ कि कहाँ? उसके मन में उत्तर आया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'दिल्ली! गाड़ी रात को साढ़े नौ बजे जाती है।' तो ठीक है। उसने विचार किया, यहाँ से तांगे में बैठ रेल के स्टेशन पर, और वहाँ दो टिकट ले दिल्ली की गाड़ी में, कल प्रातःकाल दिल्ली पहुँच जाएँगे। वहाँ की बात वहाँ चलकर सोच लेगा।

अब प्रश्न उठा कि कपड़े क्या-क्या चाहिए? उसके अपने पास तो कपड़े थे, परन्तु उस लड़की को कौन-से कपड़े पहनाएगा? इस बात को तय करने में उसे बहुत देर लगी। अंत में विचार आया कि ललिता के कुछ कपड़े मिल जाते तो ठीक था। क्या वह ललिता से माँगे? वह पूछेगी कि किसके लिए चाहिए, तो बताना पड़ेगा। इस पर झगड़ा होगा। बात खुल गई तो सफलता नहीं मिलेगी। योजना को चलाने के लिए सब-कुछ गुप्त रखना आवश्यक था।

कपड़ों के साथ-साथ रुपयों का प्रश्न था। परदेस में जाना है। बैंक में उसके पाँच रुपये शेष रह गए थे। महीने का अंत था, इस कारण जेब में भी कुछ विशेष रुपये नहीं थे। रुपये प्राप्त करने अत्यावश्यक थे। क्या माँ से माँगे? वह जानता था कि वह नहीं देगी और ललिता ज्यों-ज्यों धनी हो रही थी, त्यों-त्यों कंजूस और स्वार्थी होती जा रही थी।

दोपहर के दो बज गए। ज्यों-ज्यों सायंकाल समीप आता जाता था, वह उतावला होता जाता था। मन में सोचता था कि शायद यह प्रथम और अंतिम अवसर है कि उसे बीवी मिल सके। उसे इसको खोना नहीं चाहिए।

मन में निश्चय कर कि ललिता या माँ से रुपये और कपड़े माँगने चाहिएँ, वह खाट से उठा और कमरे का दरवाज़ा खोल बाहर आया। उसकी माँ और ललिता घर पर नहीं थीं। ललिता के कमरे को ताला लगा था, परन्तु तालियों का गुच्छा सदा की भाँति दरवाज़े के ऊपर डाट में रखा था। बिना किसी प्रकार का विचार किए उसने तालियों का गुच्छा उठा लिया और माँ का कमरा खोला। माँ के कमरे में खड़ा हो वह कितनी देर तक सोचता रहा कि क्या करे। एकाएक उसे विचार आया कि लड़की माँ की भाँति दुबली-पतली और नाटे कद की है तो अवश्य माँ के कपड़े उसे आ जाएँगे। यह सोच उसने माँ के कपड़ों का संदूक खोला। उसमें से दो साड़ियाँ, दो जम्पर और दूसरे आवश्यक कपड़े निकाल लिये। कपड़ों को देख उसे संतोष हुआ। पश्चात् कपड़ों को रखने के लिए संदूक या सूटकेस की आवश्यकता अनुभव हुई। ललिता के पास एक बढ़िया सूटकेस था। उसे ले लेने का विचार कर उसने ललिता का कमरा खोला। चमड़े का बड़ा-सा सूटकेस रखा था। ताली सूटकेस के ताले में लगी थी। वह सब उसे अपनी योजना के सफल होने के लक्षण ही प्रतीत हो रहे थे।

उसने सूटकेस खोला तो ललिता का हैंडबैग भी उसमें मिला, जो वह प्रायः अपने साथ रखती थी। हैंडबैग में शृंगार-सामग्री थी। खुशीराम ने वह हैंडबैग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ज्यों-का-त्यों ले लिया। सूटकेस में ललिता के कपड़े थे। उन्हें निकालकर बाहर मेज़ पर रख दिया। कपड़ों के नीचे दस-दस रुपये के नोटों के दो बंडल भी थे। खुशीराम ने उठाकर जेब में रख लिये।

सूटकेस और हैंडबैग उठा वह ललिता के कमरे से बाहर आ गया और कमरे को पूर्ववत् ताला लगा दिया। माँ के कमरे में उसने कपड़े सूटकेस में रखे और सूटकेस अपने कमरे में ले आया। पश्चात् माँ के कमरे को भी ताला लगा दिया। फिर उसने अपने और माँ के उठाए हुए कपड़े सजाकर सूटकेस में रख दिए। फिर सूटकेस के ऊपर हैंडबैग रख, नया सूट पहन वह चलने के लिए तैयार हो गया।

घड़ी में अभी चार बजे थे और जाने में चार घंटे शेष थे। ललिता तो स्टूडियो गई थी और रात के बारह बजे से पहले उसके आने की आशा नहीं थी। माँ के आने की सम्भावना थी। इस पर भी खुशीराम को चिंता नहीं थी। इस समय उसके मन में केवल एक बात थी और वह थी, उस लड़की को उस घर से निकालकर ले जाना और बीवी बना लेना। इस समय उसे विचार आया कि रुपया तो गिन ले कितना है। उसने ललिता के सूटकेस से निकाले गए नोटों के बंडल गिनने के लिए जेब से निकाले। रुपये गिनते हुए उसे ध्यान आया कि कहीं माँ न आ जाए। अतः उसने उठकर कमरे का दरवाज़ा भीतर से बंद कर लिया। नोट गिने तो एक हज़ार चार सौ पचास रुपये थे। इतना रुपया अपने हाथ में देख उसे कुछ पश्चात्ताप हुआ। उसके मन में आया कि उसने चोरी की है। परन्तु शीघ्र ही उसके मन का यह भाव दब गया। ललिता और माँ की कमाई के स्रोत को वह जानता था। इसे स्मरण कर, निःशंक हो, उसने नोटों के बंडल पुनः जेब में रख लिये और टाँगें पसारकर खाट पर लेट गया।

:: 21 ::

वह पौने आठ बजे उठा, दरवाज़ा खोला और माँ और ललिता के कमरे का ताला लगा देख, निश्चिंत हो, अपने कमरे को ताला लगा मकान के नीचे उतर गया।

निश्चित स्थान पर पहुँचा तो लड़की को उन्हीं मैले-कुचैले कपड़ों में देख संतोष अनुभव कर बोला, ''आ जाओ।''

लड़की ने बुरका नहीं पहना था। उसे ले वह अपने मकान पर चला आया। अपना कमरा खेल, भीतर का दरवाज़ा बंद कर, उसे कहने लगा, ''जल्दी करो। ये कपड़े पहन लो।''

लड़की साड़ी पहनना नहीं जानती थी। खुशीराम ने उसे पहनने में सहायता दी। सिर के बालों में मिट्टी भरी थी, उनको खोलकर तेल लगा, कंघी कर चोटी बाँधने के पश्चात् बोला, ''ज़रा खड़ी हो जाओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह खड़ी हो गई। खुशीराम ने सिर से पाँवों तक देखा। पाँवों को देख निराश हुआ। उसने देखा कि नंगे पाँवों में टूटा हुआ जूता है। उसके पाँव का अंदाजा करने पर उसने देखा कि यद्यपि वह ठिगने कद की है तो भी पाँव अनुपात में बड़े हैं। ललिता का कमरा खोल उसके सैंडल उठा लाया। वे कुछ ढीले थे। काम-चलाऊ देख उससे बोला, ''साबुन लेकर पाँव धो डालो और सैंडल पहन लो, नहीं तो कोई समझेगा कि चोरी कर लाया हूँ।''

जब अपने मन से तैयार हो चुका, तो हैंडबैग लड़की के हाथ में देकर बोला, ''चलो।'' स्वयं सूटकेस उठा उसके पीछे-पीछे हो लिया।

मकान के नीचे उतर, ताँगा कर, स्टेशन तक पहुँचने में बीस मिनट से अधिक नहीं लगे। वह दिल्ली के दो 'इंटर क्लास' के टिकट ले गाड़ी में जा बैठा।

दिल्ली पहुँचने तक कुछ दिक्कत नहीं हुई। गाड़ी में भीड़ काफी थी और सब अपने-अपने में मस्त थे। न तो खुशीराम को लड़की से और न ही उसे अपने साथी मुसाफिरों से बातचीत करने का अवसर मिला। गाड़ी में सामने की सीट पर एक सिख मुसाफिर भी बैठा था। वह बार-बार इनकी ओर देखता था। इससे खुशीराम को संदेह हो रहा था कि शायद वह उनको पहचान रहा है। अत: वह रात भर सोया नहीं। न ही वह इस सिख से आँखें मिला सका। वह सदैव अपनी साथिन की ओर, या खिड़की के बाहर अँधेरे में देखता रहा। लड़की उसका ढासना ले सो गई थी। उसके उष्ण श्वास खुशीराम के हाथों पर लग रहे थे और उसे इससे सुख लाभ हो रहा था। कभी-कभी उसके सोए मुख की ओर देखता था तो उसके सौंदर्य को देखकर आनंद-विभोर हो जाता था तथा उसके शरीर पर रोमांच हो आता था।

दिल्ली पहुँचने पर वह गाड़ी से उतर, सामान कुली से उठवाकर बाहर निकलने के लिए फाटक की ओर आया। ड्योढ़े दर्जे के फाटक पर उसी सिख को, जो उसके डिब्बे में सामने बैठा था, खड़ा देख खुशीराम झेंपा, पर मन कड़ा कर बाबू को टिकट दे निकल गया।

स्टेशन पर कितने ही होटल के एजेंटों ने उसे घेर लिया। आखिर रॉयल होटल का निश्चय कर उस एजेंट को तांगे में साथ बैठा, चल पड़ा। होटल में एक कमरा किराये पर लेकर ठहर गया। स्नानादि से छुट्टी पा दोनों ने खाना खाया और फिर अपने-अपने पलंग पर लेट आगे का कार्यक्रम बनाने लगे।

लड़की ने पूछा, ''अब आगे क्या होगा?''

''मैं दिल्ली में तो नहीं रहूँगा। यहाँ एक-दो दिन ठहरकर बम्बई चलेंगे। वहाँ रहने का और नौकरी का प्रबंध हो जाएगा। तब तक के खाने के लिए रुपया है....।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''पर हमारा निकाह पढ़ा जाना चाहिए।'' लड़की ने कहा।

खुशीराम ने कहा, ''क्या हमारा आपस में इकरार काफी नहीं?''

''खुदा की नजर में तो हमें खाविंद-बीवी बन जाना चाहिए।''

अब इस विचार के उठते ही और अपने को उसके पास अकेला जान खुशीराम अपने पर काबू नहीं रख सका। उठकर उसके पलंग पर आ बैठा, परन्तु लड़की उठकर पलंग से नीचे हो गई। बोली, ''नहीं, अभी नहीं। पहले निकाह पढ़ाने का इन्तज़ाम करो।''

खुशीराम लज्जित हो अपने पलंग पर आकर बोला, ''तुम तो मुझसे ऐसे डरती हो, मानो मैं भूत हूँ।''

लड़की ने वापस पलंग पर आकर कहा, ''निकाह पढ़ा लीजिए, फिर तो मैं आपकी ही रहूँगी।''

खुशीराम ने कहा, ''मगर मैं तो किसी को जानता नहीं, जो निकाह पढ़ सके।''

''जानने की क्या ज़रूरत है? किसी भी मस्जिद में चले जाना। बताना कि आप हिन्दू हैं और मुसलमान लड़की से, जिसके माँ-बाप नहीं, निकाह पढ़ाना चाहते हैं। और फिर मुल्ला को कुछ रकम, जो वह माँगे, दे देना। वह आकर निकाह पढ़ जाएगा।''

खुशीराम इस सबसे घबरा रहा था। वह इसका मतलब समझता था कि उसे मुसलमान होना पड़ेगा। इससे उसे एक बात स्मरण हो आई। उसने कहा, ''मैं आर्यसमाज में विवाह का प्रबंध कर सकता हूँ।''

खुशीराम छापेखाने में श्रीनाथ को मुसलमानों तथा मुसलमान औरतों को, शुद्ध कर हिन्दुओं से विवाह करने की कहानियाँ कहते सुन चुका था। यद्यपि दिल्ली में वह किसी आर्यसमाजी को नहीं जानता था, तो भी उसे आशा थी कि आर्यसमाज उसकी सहायता करेगा।

लड़की ने कहा, ''मैं मुसलमानिन हूँ और बिना मुल्ला से निकाह पढ़ाए आपको छूऊँगी भी नहीं।''

खुशीराम विवश हो उठा और बोला, ''मैं अभी जाता हूँ। तुम भीतर से किवाड़ बंद कर रहना।''

:: 22 ::

लड़की कमरे का दरवाज़ा भीतर से बंद करके लेटी तो सो गई। खुशीराम को गए दो घंटे से ऊपर हो चुके थे, जब किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। लड़की की नींद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खुली और उसने दरवाज़े की खटखटाहट सुनी तो समझी कि वह आ गया है। उसने आँखें मलते हुए दरवाज़ा खोला तो बाहर एक सिख को खड़े देखा। उसने पूछा, ''क्या है?''

''बाबूजी ने बुलाया है। कहा है जल्दी चली आओ।''

''कहाँ हैं वे?''

''जामा मस्जिद के पास खड़े हैं। बुलाया है।''

''वे खुद क्यों नहीं आए?''

''कुछ चीज़ें, कपड़े वगैरह खरीद रहे हैं। मोटरगाड़ी भेजी है। आपको बुलाया है।''

लड़की को विश्वास नहीं आया। वह पूछने लगी, ''किन बाबूजी ने बुलाया है?''

''वही, जो आपके साथ स्टेशन से आए हैं। आप लाहौर से आए हैं न?''

इस सूचना से उसे कुछ ढांढस बँधा। फिर भी उसने कहा, ''उनको खुद आना चाहिए था।''

दरवाज़े पर खड़े सिख ने कहा, ''कहते थे, जल्दी है। कमरे का नम्बर बताया और कहा उन्हें ले आओ।''

लड़की के मन में संशय निर्मूल नहीं हुआ, परन्तु यह सोच कि इतने बड़े नगर में कोई उसका क्या बिगाड़ लेगा और फिर उसके पास न तो नगदी है न ही आभूषण, कोई लेगा तो क्या लेगा? यह सोच वह उठी, कमरे को ताला लगाया और उस सिख के साथ चल पड़ी। होटल के बाहर मोटर-टैक्सी खड़ी थी। सिख ने उसे पीछे की सीट पर बैठाया और स्वयं गाड़ी चलाकर ले गया।

खुशीराम अकेला लौटा। जब होटल में पहुँचा तो अपने कमरे को बाहर से ताला लगा देख विस्मय में डूब गया। पहले तो संदेह हुआ कि वह कमरा भूल गया है। बहुत विचार के पश्चात्, अपने सूटकेस के ताले को कमरे पर लगा देख, निश्चय कर होटल के दफ़्तर में इस बात को जानने के लिए गया कि उसकी स्त्री कहाँ गई है।

होटल मैनेजर कुछ नहीं जानता था। होटल के चपरासी ने बताया कि वह एक सिख के साथ चली गई है। वह सिख मोटर-टैक्सी में आया था। मोटर-टैक्सी का नम्बर नहीं देखा गया।

खुशीराम को इस प्रकार होटल के नौकरों से पूछताछ करते सुन मैनेजर ने उसे अपने कार्यालय में बुलाकर बैठाया और पूछा, ''कहाँ से आए थे तुम लोग?''

''लाहौर से।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''किस प्रयोजन से आए हो ?''

''सैर करने।''

''यह तुम्हारी बीवी थी ?''

''जी हाँ।''

''क्या नाम है उसका ?''

खुशीराम ने अभी तक उसका नाम नहीं पूछा था। इससे घबरा गया और उत्तर नहीं दे सका। इससे मैनेजर को संदेह हो गया। उसने ज़रा डाँटकर पूछा, ''क्या नाम है उसका ?''

खुशीराम ने झिझकते हुए कहा, ''बात असल में यह है कि....यह....हमारे पड़ोस में रहती थी। हमारा....आज विवाह करने का विचार....।'' इससे अधिक वह कह नहीं सका।

मैनेजर ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, ''तो तुम उसे घर से भगा लाए हो। देखो मिस्टर! वह सिख तो पीछे पकड़ा जाएगा, पहले तुम पकड़े जाओगे। पहले चोर तो तुम हो। देखो, मेरा कहा मानो। अपना सामान देख लो और यहाँ से वापस चले जाओ। पकड़े गए तो तीन-चार साल से कम की कैद नहीं होगी।''

खुशीराम वहाँ से उठ बाज़ार चला गया। वहाँ से ताला तोड़ने के लिए एक लुहार को बुला लाया। ताला खुलवा सामान देखने लगा। उसने देखा कि सिवाय उन कपड़ों के, जो वह पहने थी और कुछ नहीं गया। रुपया तो सब उसकी अपनी जेब में था। इससे विशेष आर्थिक हानि नहीं हुई थी। इस पर भी मन की सब आशाएँ और सुख-स्वप्न मिट्टी में मिल गए देख, वह न मसोसकर, पलंग पर लेट रहा।

उसका मस्तिष्क कुछ काम नहीं कर रहा था कि क्या करे। पुलिस में रिपोर्ट देने का विचार उसके मन में नहीं आया। होटल के मैनेजर की बात सत्य प्रतीत होती थी। इस पर भी वह उस लड़की का विचार इतनी जल्दी मन से निकालने में असमर्थ था। वह कोई उपाय करना चाहता था, जिससे उसका पता कर सके और उसे छुड़ा सके। परन्तु वह नहीं जानता था कि वह कहाँ गई है, कौन उसको ले गया है और फिर धोखा देकर ले जाई गई है या अपनी इच्छा से गई है। इन्हीं विचारों में लीन वह सायंकाल तक कमरे में बंद पड़ा रहा। एक बात उसकी समझ में आई कि लड़की के चले जाने में उस सिख का हाथ ज़रूर है, जो उसके साथ रेल के डिब्बे में बैठा था। इससे वह पुनः उस सिख को ढूँढ निकालने की योजना बनाने लगा।

सायंकाल तक लेटे-लेटे उकता जाने से वह उठा और कमरे को बंद कर होटल के बाहर चला गया। उसकी इच्छा थी कि उस सिख को ढूँढ निकाले जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके डिब्बे में लाहौर से आया था। उसे ढूँढ निकालने में उसने एक स्थान से दूसरे स्थान पर, एक बाज़ार से दूसरे बाज़ार में, एक चौक से दूसरे चौक में जाकर खड़ा हो लोगों को देखना आरम्भ कर दिया। सिनेमा-हालों के बाहर, होटलों और टैक्सी-स्टैंडों पर खड़े-खड़े रात के बारह बज गए। जब थककर चूर हो गया तो होटल में आकर सो रहा।

अगले दिन प्रातः वह उठा, नाश्ता कर वह शहर के बाज़ारों, गलियों और कूचों के चक्कर काटने लगा। भूख लगी तो वहीं कुछ खा लिया और फिर गलियों और सड़कों के चक्कर काटने लगा।

सायंकाल चार बजे के लगभग वह इतना थक गया कि उसकी टाँगों ने चलने से जवाब दे दिया। वह एक बाज़ार के किनारे दीवार का ढासना ले खड़ा हो गया। खड़े-खड़े उसको नींद आ गई। लगभग दस मिनट तक वह सोया रहा। जब नींद खुली तो उसने देखा कि खड़ा नहीं बल्कि बैठा है। उसने दीवार का आश्रय लिया और खड़ा हो गया। खड़े होने पर उसे मालूम हुआ कि उसकी जेब कतरी हुई है और उसकी जेब में रखे नोटों के बंडल नहीं हैं। इस बात का ज्ञान होते ही उसके मस्तिष्क में चक्कर आने लगा। वह पुनः वहीं भूमि पर बैठ गया और सिर को दोनों हाथों से पकड़ अपनी अवस्था पर विचार करने लगा।

उसने समझ लिया कि लड़की को ढूँढना तो दूर अब वह लाहौर वापस भी नहीं जा सकता। एक बार फिर उसके मन में आया कि पुलिस स्टेशन में जा कर रुपये चोरी की रपट लिखवाए, फिर यह सोच कि यदि पुलिस ने पूछा कि उसके पास रुपया कहाँ से आया तो क्या बताएगा। वह उठा और चुपचाप होटल को लौट पड़ा। कोट की जेब में दो रुपये और साढ़े तीन आने थे। ये लाहौर वापस जाने के लिए काफी नहीं थे।

होटल में पहुँच उसने यह सोचा कि अपना सूटकेस बेचकर जो रुपये मिलें, उनसे लाहौर वापस जाने का प्रबंध कर ले। कमरे में खूँटी पर ललिता का हैंडबैग लटका हुआ था। यह उसने उस लड़की को दिया था। इसे देख खुशीराम ने सोचा कि पहले इसे ही बेच दे तो ठीक रहेगा। इससे उसने बैग को उतार उसे खाली करने को खोला।

हैंडबैग में एक रूमाल, लिपिस्टिक, गालों पर लगाने के रूज की डिब्बी और कैमॉयस लेदर का पफ था। फिर एक मकब्बे का डिब्बा था, जिसमें रबड़ की उंगली की भाँति खोल रखे थे। यह सब सामान निकालकर खुशीराम ने सामने मेज़ पर रख दिया। हैंडबैग में एक छोटा-सा फाउण्टेन पैन था, एक-दो खुशबू लगे लिफाफे और चिट्ठी लिखने के कागज़ों का पैड था। फाउण्टेन पैन को खुशीराम ने जेब में रख लिया और शेष सामान मेज़ पर रख दिया। एक लिफाफा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ फूला हुआ था। उसमें कोई कागज़ रखा था। चिट्ठी समझ उसने लिफाफे को खोला तो उसमें दस रुपये का नोट रखा मिला।

इन रुपयों को देख खुशीराम ने सुख की साँस ली। लाहौर जाने का किराया तो मिला। इतना विचारकर उसने सब सामान वहीं छोड़कर लाहौर जाने का निश्चय कर लिया। होटल का बिल पंद्रह रुपये से ऊपर हो चुका था। उसको चुकाने के लिए उसके पास रुपया नहीं था। सायंकाल का भोजन होटल में किया और अपने एक सूट को एक चादर में लपेट, बगल में दबा, कमरे के बाहर निकल आया। जब वह कमरे को ताला लगा रहा था तो मैनेजर ने आकर पूछा, "कमरा कब खाली कर रहे हो?"

इस प्रश्न से खुशीराम घबराया। फिर मन को कड़ा कर, ताला लगा, मैनेजर की आँखों में देखते हुए बोला, "उस लड़की का कुछ-कुछ पता मिल गया है। मैं उसे छुड़ाकर उससे विवाह करना चाहता हूँ। इसमें दो दिन और लग जाएँगे।"

"हमारा बिल बढ़ रहा है।" मैनेजर ने कहा।

"कितना हो गया है?"

"बीस रुपये के लगभग हो गया है।"

"बस?" खुशीराम ने ऐसा भाव बनाया, मानो बीस-तीस रुपये उसके लिए कोई गणना नहीं रखते। "सुबह पिछला बिल चुका दूँगा।" इतना कह वह बिना अधिक बातचीत किए होटल से बाहर निकल गया।

होटल से निकल सीधा रेल के स्टेशन पर गया। वहाँ से टिकट ले, प्लेटफॉर्म पर जा पहुँचा और गाड़ी के प्लेटफॉर्म पर पहुँचते ही उसमें बैठ गया।

:: 23 ::

लाहौर से खुशीराम के चले जाने की किसी को चिंता न होती, यदि उसकी माँ और बहन का सामान न चला जाता। ललिता नित्य की भाँति रात के बारह बजे घर आई। आज भी निशनाथ साथ था और पहली रात की भाँति निशनाथ खुशीराम के कमरे में सोने चला गया। उसने देखा कि खुशीराम अपनी खाट पर नहीं है, परन्तु इसे एक साधारण-सी बात समझ वह लेट गया।

खुशीराम की माँ आजकल प्राय: मधुर के घर रहती थी। इससे वह रात अपने कमरे में आई ही नहीं। ललिता अपने कमरे में गई तो उसकी दृष्टि पलंग पर पड़े कपड़ों के ढेर पर गई। उसने इस प्रकार कभी कपड़े नहीं रखे थे, इससे वह चकित तथा संशित मन हो देखने लगी। कपड़े तो उसके सूटकेस में रखे थे। इससे उसने सूटकेस को देखा। वह अपने स्थान पर नहीं था। उसके मुख का रंग उड़ गया। उसे अपने रुपयों का ध्यान आ गया और वह कपड़े उठा-उठाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने लगी, परन्तु वहाँ रुपये नहीं थे। इस पर उसने निशनाथ को आवाज़ दी। निशनाथ भागता हुआ आया और पूछने लगा, ''क्या है ?''

''चोरी हो गई है।''

''अरे! क्या गया है ?''

''मेरा हैंडबैग और सैंडलों का जोड़ा।''

''अरे, ये कपड़े जो पलंग पर पड़े हैं। ये भी तो खूब कीमती थे ?''

''न जाने चोर ये क्यों नहीं ले गया ?''

ललिता ने खुशीराम को आवाज़ दी। इस पर निशनाथ ने कहा, ''वह अपने कमरे में नहीं है।''

इससे ललिता को विस्मय हुआ। कारण यह कि खुशीराम घर से कभी अनुपस्थित नहीं रहता था। खुशीराम की अनुपस्थिति का वृत्तांत सुन ललिता खुशीराम के कमरे में चली आई। निशनाथ उसके साथ-साथ था। दोनों जब कमरे में पहुँचे तो दोनों की दृष्टि किसी लड़की के मैले कपड़ों पर गई। ललिता ने देखा कि कई स्थानों पर फटी और मरम्मत की हुई सफेद मारकीन की एक सलवार पड़ी थी। कुर्ता और चुन्नी भी थी। सब कपड़े मैले, फटे और मरम्मत किए हुए थे। समीप ही उसका टूटा हुआ जूता पड़ा था। निशनाथ यह देख सब समझ गया और खिलखिलाकर हँस पड़ा। ललिता ने विस्मय में पूछा, ''क्या समझे हैं इससे ? ये खुशीराम के अथवा घर में से किसी के नहीं हैं।''

''ये कपड़े किसी लड़की के हैं। मालूम होता है किसी भिखारिन के हैं। खुशीराम के कमरे में एक भिखारिन के कपड़े और फिर तुम्हारा सूटकेस गायब, सैंडल गायब, शायद तुम्हारी साड़ी और दूसरे कपड़े भी गायब हैं। इससे पता चलता है कि तुम्हारे भाई साहब गलियों में भीख माँगने वाली किसी भिखारिन पर लट्टू हो गए हैं और उसे यहाँ लाए हैं। फिर तुम्हारे कपड़े पहना, तुम्हारे ही रुपये ले दोनों यहाँ से भाग निकले हैं।''

बात स्पष्ट थी। इस पर भी ललिता को एक बात समझ नहीं आई। उसने पूछा, ''यदि भिखारिन थी तो भागने की क्या आवश्यकता थी ?''

''कई कारणों से भागने की आवश्यकता हो सकती है। पर, इस पर मस्तिष्क खराब करने की क्या आवश्यकता है ? प्रश्न तो यह है कि अब क्या करोगी ? थाने में रिपोर्ट लिखाओगी ?''

''क्यों नहीं लिखाऊँगी ?''

''इसलिए कि ऐसा करने पर तुम्हारे भाई को कैद कर लिया जाएगा।''

कैद का शब्द सुन ललिता तो ठिठक गई। वह वहीं खाट पर बैठ सोचने लगी। निशनाथ ने कहा, ''ज़रा माँ से भी विचार तो कर लो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''कुछ आवश्यकता नहीं।''

अगले दिन आत्मादेवी घर आई तो अपने कमरे में संदूक खुला और कपड़े इधर-उधर बिखरे पड़े देख घबराई, परन्तु जब ललिता ने बात बताई तो वह खुशीराम के लिए चिंता प्रकट करने लगी।

मधुर से राय की गई और निश्चय किया गया कि पुलिस में रिपोर्ट न लिखाई जाए। मधुर का सदैव यह मत रहता था कि दुनिया उनकी बात समझ नहीं सकती, अत: दुनिया के कानून उनकी सहायता नहीं कर सकते।

:: 24 ::

निशनाथ और ललिता की मित्रता गहरी होती जाती थी। जब खुशीराम अपना कमरा छोड़ गया तो निशनाथ उसमें टिक गया। खुशीराम के जाने के दूसरे दिन की बात है। निशनाथ ललिता के कमरे में ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़ा बाल सँवार रहा था कि ललिता हाथ में तार लिये कमरे में आई और उसे पढ़ते हुए बोली, ''सेठ साहब बम्बई से लिखते हैं, 'मैं आज हवाई जाहज से दिल्ली पहुँच रहा हूँ'।''

''बहुत अच्छी बात है।''

''परन्तु हम आज विवाह की दावत जो दे रहे हैं।''

''वह कल कर दी जाएगी।''

''क्यों?''

''इसलिए कि कहीं सेठ साहब नाराज़ हो गए तो नौकरी न छूट जाए।''

''तो नौकरी मुझसे अधिक प्रिय है आपको?''

''नौकरी से ही तो तुमसे विवाह सम्भव हुआ है। इससे पहले तुम मुझे क्या समझती थीं, याद है न? सिनेमा दिखाने के लिए ले गया था तो तुम समझती थीं कि मैं किसी की जेब काट लाया हूँ।''

ललिता उस दिन की घटना स्मरण कर मुस्कराई और फिर गम्भीर हो गई। उसे गम्भीर देख निशनाथ ने कहा, ''मैं नौकरी नहीं छोड़ सकता। हमारा पूर्ण जीवन इसी पर निर्भर है।''

''ठीक है। मैं जीवन के इस कठोर सत्य को समझती हूँ। इस पर भी कहती हूँ कि आज सायंकाल ऐलफिन्स्टन में हमारे विवाह की यह दावत अवश्य होगी। स्टूडियो में काम करने वाले सब अभिनेता और अभिनेत्रियाँ और अन्य लोग उसमें सम्मिलित होंगे। सेठ साहब भी उसमें आमंत्रित किए जाएँगे।''

''यदि उन्होंने अस्वीकार किया तो।''

''नहीं करेंगे। इसको तुम मुझ पर छोड़ो। मुझे विश्वास है कि वे दावत में सम्मिलित होंगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यह तो हुई दावत, परन्तु विवाह कब होगा और कैसे होगा?'' निशनाथ ने गम्भीरतापूर्वक पूछा।

''जब तुम मुझे अपनी माँ के पास और अपने घर ले चलोगे।''

निशनाथ का पिता नहीं था। निशनाथ के नौकरी पा जाने पर उसकी माँ उसके विवाह की चिंता कर रही थी। यह बात निशनाथ ने ललिता से कही थी और इसीलिए ललिता ने वहाँ चलने को कहा था। निशनाथ ने कहा, ''पर माँ तो हिन्दू रीति से विवाह करने को कहेगी।''

''इस व्यर्थ की बात के लिए मैं किसी से झगड़ा करना नहीं चाहूँगी। जिस प्रकार जिसका मन चाहे, विवाह की रस्म कर ले। मेरा विवाह मेरे विचारानुकूल तो कल ही, जब मैंने विवाह की स्वीकृति दी थी, हो गया है।''

''तब ठीक है। मैं समझता हूँ कि अभी चलें और माँ से बातचीत कर आवें। फिर सेठ साहब को निमंत्रण देने जाना होगा।''

:: 25 ::

निशनाथ की माँ का नाम भगवतीदेवी था। जब से विधवा हुई थी, अति निर्धन होने के कारण अपने सम्बन्धियों को प्रायः छोड़ बैठी थी। उस समय निशनाथ चौथी श्रेणी में पढ़ता था। तब वह पास-पड़ोस के लोगों के कपड़े सीकर निर्वाह किया करती और इस प्रकार निशनाथ की पढ़ाई आदि का खर्च निकालती रही थी। जब निशनाथ कॉलेज में गया तो उसने ट्यूशन का काम कर अपनी पढ़ाई का प्रबंध करना आरम्भ कर दिया था। इस प्रकार एम.ए. पास हुआ। माँ-पुत्र दोनों शेरांवाला दरवाज़ा के बाहर दस रुपये मासिक भाड़े के एक छोटे-से मकान में रहते थे। निशनाथ पढ़ने-लिखने के अतिरिक्त कॉलेज के खेल-कूद तथा ड्रामेटिक क्लब में बहुत रुचि लेता था। इससे वह कॉलेज का एक विख्यात विद्यार्थी था। इसपर भी कोई सिफारिश न होने के कारण एम.ए. पास करने पर वह कोई अच्छे वेतन की नौकरी नहीं पा सका था।

जिस दिन फिल्म कम्पनी में नौकरी पाकर घर पहुँचा तो निशनाथ ने माँ को बताया, ''माँ! नौकरी मिल गई है।''

''कितना वेतन मिलेगा?''

''माँ! सात सौ रुपये महीना।''

माँ बहुत हर्षित हुई। फिर वह उठी और आटा गूंध उसका दीया बनाया और उसमें घी भरकर रुई की बत्ती रखकर उसे जलाया। फिर एक थाल में दीपक, जल और थोड़े-से केसर-छुहारे रखकर लड़के के पास ले आई। यह देख निशनाथ को हँसी आ गई। पूछने लगा, ''माँ! यह क्या है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''बेटा! तुम्हारी आरती उतारूँगी।''

''मैं क्या परमात्मा हूँ, माँ!''

''हाँ बेटा! सफलता भगवान् की देन है। वे स्वयं सफल व्यक्ति के भीतर विराजमान होते हैं। इससे सफल व्यक्ति की पूजा भगवान् की ही पूजा होती है, बेटा!'' ऐसा कह माँ आरती उतारने लगी। निशनाथ हँस रहा था और माँ मुख में ही गा रही थी, ''जै-जै शिव भोले....।''

आरती कर, निशनाथ के माथे पर केसर का तिलक लगा माँ ने उसका माथा चूमा, और उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए बोली, ''अब तुम्हारे विवाह के लिए भी भगवान से कहूँगी।''

''भगवान्? कितनी लड़कियाँ हैं भगवान् के घर में, माँ?''

''करोड़ों हैं। संसार की सब स्त्रियाँ उसी की संतान तो हैं, बेटा!''

''अच्छा माँ! यह भी हो जाएगा।''

आज एकाएक ललिता को साथ ले निशनाथ आया और माँ से बोला, ''माँ! देखो ये कौन आई हैं।''

माँ ने उठ ललिता का स्वागत किया। उसे चौकी पर बैठा निशनाथ से पूछने लगी, ''क्या स्वागत करूँ इनका? चाय पिएँगी?''

''नहीं माँ! इसकी झोली में फल-नारियल दो।''

माँ ललिता का मुख देखने लगी। ललिता आँखें नीचे किए बैठी रही। माँ ने दोनों हाथों में उसका मुख लेकर उसका सिर ऊपर उठाया और ललिता की आँखों में प्रेम- भरी दृष्टि से देखा। ललिता को ऐसा प्रतीत हुआ कि निशनाथ की माँ की आँखें उसकी अंतरात्मा की बातें खोज रही हैं। इससे वह घबरा उठी और उसने अपनी आँखें जोर से भींच लीं। माँ ने निशनाथ की ओर मुख करके पूछा, ''तुम्हें पसंद है, बेटा?''

''हाँ, माँ! पसंद करके ही लाया हूँ।''

''तो मुझे भी स्वीकार है। ठहरो बेटी!'' इतना कह माँ पिछली कोठरी में गई और चौदह छुहारे, एक नारियल और ठाकुर के आगे रखे फूलों में से दो फूल उठा लाई। लाकर ललिता की साड़ी के आँचल में बाँध दिए और बोली, ''बेटी! सती-साध्वी हो। भगवान् तुम्हें सौभाग्यवती करें।''

''माँ! आज हमारे विवाह के उपलक्ष्य में दावत है। तुम चलोगी न?''

''कहाँ होगी? इसके पिता के घर?''

''नहीं माँ! इसके पिता नहीं हैं। होटल में दावत कर रहे हैं।''

''देखो निशनाथ! मैं तो होटल में जाऊँगी नहीं। विवाह कब होगा?''

''आज सायं हमारे घर में ही ठीक रहेगा क्या?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''नहीं, माँ जी!'' ललिता ने बात रोककर कहा, ''यहाँ नहीं। विवाह हमारे घर में होगा। कल प्रात:काल आठ बजे का मुहूर्त्त है।''

''तो मैं वहाँ आऊँगी। कन्या-दान कौन करेगा?''

''मेरी माँ हैं, मेरे चाचा मधुरजी हैं।''

''अच्छी बात है।''

:: 26 ::

सायंकाल 'एलफिन्स्टन' में पचास आदमियों के खाने के लिए स्थान सुरक्षित रखा गया था। आज ललिता व निशनाथ के विवाह की खुशी में फिल्म शूटिंग का काम बंद था और स्टूडियो में काम करने वाले सभी कर्मचारी तथा अभिनेता और अभिनेत्रियाँ इस भोज में आमंत्रित थे। निशनाथ होटल में आने वाले मेहमानों का स्वागत कर रहा था। सब आने वाले पूछते थे, ''ललिता कहाँ है?''

''अभी समय नहीं हुआ। आती ही होगी।''

ठीक समय पर भी जब ललिता नहीं आई तो सब लोग सिर हिला-हिलाकर संदेह प्रकट करने लगे। कमलनयन ने निशनाथ के पास पहुँच उसे पृथक् ले जाकर पूछा, ''कहाँ है ललिता? यदि न आई तो?''

''भाई! दावत तो होगी ही।''

''पर, 'ब्राईड' (वधू) के बिना ही?''

'' 'ब्राईड' भी आ जाएगी। चिंता न करें।''

''अभी से ही लोग बातें बनाने लगे हैं।''

''लोगों की बातें सुनने वाले कृतकार्य नहीं होते, कमलनयन!'' कलाई पर बँधी घड़ी में समय देख निशनाथ ने कहा, ''अभी आठ ही बजे हैं। हिन्दुस्तानी इतने समय के पाबंद नहीं होते।''

कमलनयन वापस अपने स्थान पर आ गया। उसके समीप मुंशी प्रमोद बैठा था। उसने पूछा, ''क्या हुआ है?''

''ललिता अभी नहीं आई।'' कमलनयन ने कहा।

''आएगी भी या नहीं?''

इस पर कमलनयन ने कुछ ऊँचे स्वर में कहा, ''बाबू साहब कहते हैं, नहीं आएगी तो न सही। उसका स्थान रिक्त नहीं रहेगा। कोई और यहाँ है, जो उस स्थान को सुशोभित कर देगी।''

सब हँस पड़े। मुंशी प्रमोद जानता था कि निशनाथ का पीछा करने वाली कई लड़कियाँ वहाँ उपस्थित थीं। कमलनयन की इस घोषणा से सब लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़कियों के मुख की ओर देखने लगे। एक असगरी रण्डी थी, जो पिक्चर में चपला की माँ का अभिनय कर रही थी। आयु में पचास के लगभग होगी। कमलनयन की बात सुन बोल उठी, ''क्यों नहीं? मैं ही ललिता का स्थान लेने को तैयार हूँ। बाबू निशनाथ को चिंता नहीं करनी चाहिए। आज की दावत की इज्जत रखने में उनकी मदद मैं कर सकती हूँ।''

इस पर सब हँसने लगे। प्रमोद ने कहा, ''तुम माँ ही बनने योग्य हो। तुम्हें बहू कौन मानेगा?''

''क्या मैं बहुत बूढ़ी दिखाई देती हूँ? अभी कल की ही बात है कि युवक मेरी गली के चक्कर काटते थकते नहीं थे। सिर्फ पचास लाल की युवती हूँ। क्यों मुंशी साहब! मुझ-सी युवा आपके भाग्य में है क्या?''

मुंशी प्रमोद ने कह दिया—

''अति पक गए रसाल में रस फीका हो जाए।
देखने को चित्त ना करे ना खावन को भाय॥''

सब हँसने लगे।

इसी समय नवशृंगार से विभूषित ललिता सेठ मगनलाल के साथ होटल में पहुँच गई। सब लोग ललिता के सौंदर्य को देख चकित रह गए। उसके सौंदर्य से भी अधिक चकित करने वाली बात थी सेठ मगनलाल का प्रसन्न-वदन, ललिता के साथ-साथ वहाँ आकर उस दावत की शोभा बढ़ाना। प्राय: लोग यही समझते थे कि सेठजी कभी भी यह स्वीकार नहीं करेंगे कि ललिता किसी की स्त्री बने। ललिता के उस दावत में समय पर न आने से लोगों को विश्वास-सा हो रहा था कि सेठ साहब ने उसे रोक रखा है और निशनाथ के भाग्य में निराशा ही बँधी है। परन्तु दोनों के इस प्रकार आने से सबको अचम्भा हुआ।

दावत के लिए एकत्रित सब लोगों में कम-से-कम एक को न केवल अचम्भा ही हुआ, प्रत्युत निराशा भी हुई। यह थी कमलिनी बैनर्जी। वह फिल्म कम्पनी में एक 'एक्स्ट्रा' का कार्य करती थी। उसके नाक-नक्श साधारण थे और एक साधारण क्लर्क मणीन्द्र बैनर्जी की लड़की होने से कुछ अधिक पढ़ी-लिखी भी नहीं थी। निशनाथ ने ही उसे कम्पनी में नौकर कराया था। वह निशनाथ से प्रेम करने लगी थी। ललिता के आ जाने से वह छाया में पड़ गई थी। जब-जब भी वह निशनाथ से मिलती थी, बहुत आदर और संकोच भाव से मिलती थी। एक-आध बार उसने अपने हाव-भाव तथा टूटे-फूटे शब्दों में निशनाथ के सम्मुख प्रकट भी किया था कि वह उससे प्रेम करती है। निशनाथ ने उसके अर्थ को समझा भी था और यद्यपि उसे ठुकराया नहीं था, तो भी ललिता की चमक-दमक के सम्मुख वह उसे अपना प्रेम-प्रसाद दे नहीं सका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। आज ललिता के आने में देर हुई तो उसके मन में आशा का अंकुर पुनः प्रस्फुटित होने लगा था, परन्तु बाढ़ में खेत के ही उखड़कर बह जाने से जो दशा अंकुर की होती है, वही उसके मन में उगती आशा का परिणाम हुआ।

ललिता के उग्र सौंदर्य और बनाव-शृंगार को देख वह अचेत-सी हो सुध-बुध भूल गई। सेठ ने सबको बैठने का संकेत किया तो वह भी काठ की पुतली की भाँति बैठ गई। ललिता के एक ओर निशनाथ और दूसरी ओर सेठ मगनलाल बैठ गए। भाँति-भाँति के व्यंजन परोसे जाने लगे और सब लोग भोजन करने लगे। कमलिनी के सामने भी भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यंजन रखे जा रहे थे, परन्तु वह एकटक ललिता को देख रही थी और मन में बनाए हवाई किलों के विध्वंस होने के हृदय-विदारक दृश्य को देख भीतर-ही-भीतर रो रही थी।

निशनाथ अत्यंत प्रेम-भरी दृष्टि से ललिता की ओर देख पूछ रहा था, "यह कैसे हुआ ललिता? मुझे यह आशा नहीं थी कि तुम इन्हें साथ ले आओगी।"

अरुण होंठों में मोती के समान श्वेत दाँतों का प्रदर्शन कर ललिता मुस्करा भर दी। उसने बहुत कम खाया। निशनाथ इतना प्रसन्न था कि बहुत खा गया। कमलिनी ने बिल्कुल नहीं खाया।

भोजन के पश्चात् मेज़ें साफ कर दी गईं। व्हिस्की की बोतलें और शराब पीने के छोटे-छोटे गिलास लगा दिए गए। निशनाथ ने शराब नहीं पी। सेठ ने खूब जी भर पी। ललिता ने केवल एक गिलास भरकर रख लिया और उसमें से नलकी लगाकर थोड़ी चख ली। उसके सम्मुख बैठी कमलिनी ने एक के बाद दूसरा और इस प्रकार कई गिलास पी डाले। जब ललिता ने उठकर आए हुए सब अतिथियों का धन्यवाद करना आरम्भ किया तो कमलिनी अपने स्थान पर नहीं थी। वह उठकर चली गई थी और उसका स्थान खाली था। ललिता के पश्चात् निशनाथ ने सबका धन्यवाद किया और अंत में सेठ साहब ने आशीर्वाद दिया।

दावत समाप्त हुई। सब चले गए। सेठजी और ललिता जैसे मोटर में इकट्ठे आए थे, वैसे ही चले गए। निशनाथ ताँगा कर अपने घर काश्मीरी गेट की ओर चला गया।

:: 27 ::

दिल्ली से गाड़ी प्रातः सात बजे लाहौर पहुँचती थी। खुशीराम गाड़ी से उतरा तो स्टेशन से निकल, तांगे पर सवार हो, सीधा घर पहुँचा। उसके घर के दरवाज़े पर लाल कपड़े पर सुनहरी अक्षरों में लिखा 'स्वागतम्' लगा था। आम के पत्तों तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलों का तोरण दरवाज़े पर लगा था। एक ओर श्वेत वर्दी पहने तीस बैंड-बाजे वाले खड़े थे। रात-भर मकान की सजावट होती रही थी। बाज़ार के लोग इस पर आश्चर्य प्रकट करते हुए छोटे-छोटे झुंडों में इधर-उधर खड़े थे। कुछ अपरिचित लोग मकान में प्रवेश कर रहे थे।

खुशीराम चहल-पहल भरे इस नए वातावरण को देख, चकित हो दरवाज़े के बाहर ही खड़ा रह गया। वह कभी लोगों के मुख की ओर देखता था और कभी अपने घर के दरवाज़े की सजावट को। मानो वह अपने मन के इस संदेह का कि वह किसी अन्य के मकान पर तो नहीं पहुँच गया, निराकरण कर रहा हो।

इतने में भर्र से एक सैलून मोटर आई और उनके दरवाज़े के सामने खड़ी हो गई। फिल्म कम्पनी के मालिक सेठ मगनलाल उस मोटर से निकले और ऊपर चढ़ गए। खुशीराम मगनलाल को पहचानता था। इससे उसके मन में और भी अचम्भा हुआ। मगनलाल के पीछे गाड़ी में से एक और आदमी निकला। उसके हाथ में एक बड़ा-सा थाल था। उसमें कुछ रखा था, जो एक लाल रंग के रेशमी रूमाल से ढका हुआ था।

खुशीराम समझ नहीं सका कि उनके घर में क्या हो रहा है। इतने में एक मोटर टैक्सी आई और उसमें से निशनाथ और एक दुबली-पतली, अधेड़ आयु की बंगालिन स्त्री निकली। निशनाथ सर्वथा नए और दूल्हा के कपड़े पहने था। इसे देख तो खुशीराम के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा। उसे परिस्थिति और वास्तविकता का कुछ-कुछ ज्ञान होने लगा था। वह समझने लगा था कि हो न हो ललिता का विवाह हो रहा है। इस विचार के आते ही वह लपककर मकान की सीढ़ियों पर चढ़ गया। ऊपर गया तो खुली छत पर वेदी बनी हुई थी और उसकी माँ, मधुर चाचा तथा अन्य कई लोग वहाँ पर खड़े थे। खुशीराम को इस प्रकार एकाएक आया देख सब अचम्भे में उसकी ओर देखने लगे। मधुर लपककर उसकी ओर बढ़ा। खुशीराम चुपचाप खड़ा उसके द्वारा कुछ पूछे जाने की प्रतीक्षा करने लगा। मधुर ने देखा कि उसके कपड़े मैले हो रहे हैं और दाढ़ी बढ़ रही है तथा सिर के बाल अस्त-व्यस्त हो रहे हैं। उसकी यह दुर्दशा देख मधुर ने केवल यह पूछा, ''कहाँ गए थे?''

खुशीराम ने आँखें नीची किए हुए कहा, ''दिल्ली गया था।''

''कब आए हो?''

''स्टेशन से सीधा ही आ रहा हूँ।''

''सामान कहाँ है?''

खुशीराम के पास अपने कपड़ों की एक पोटली ही थी। उसने उत्तर दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
''कुछ चोरी हो गया है और कुछ होटल में छोड़ आया हूँ। होटल का किराया देने को पैसा नहीं रहा था।''

मधुर हँस पड़ा। खुशीराम अपने कमरे में जाने लगा तो मधुर ने कहा, ''जल्दी तैयार हो जाओ। बहन की शादी है।''

खुशीराम कमरे में गया। स्नानादि से निवृत्त हो, कपड़े पहन, जब बाहर आया तो ललिता वेदी पर निशनाथ के बाईं ओर बैठी थी और पंडित वेद मंत्र पढ़ता हुआ हवन करवा रहा था। खुशीराम भी अपनी माँ के पीछे जाकर बैठ गया।

विवाह समाप्त हुआ तो निशनाथ ललिता को ले विदा हो गया। विदा होने से पूर्व ललिता ने खुशीराम से पूछा, ''मेरा सूटकेस कहाँ छोड़ आए हो?''

खुशीराम ने उत्तर दिया, ''दिल्ली छूट गया है।''

''और वह लड़की, जिसके मैले-फटे कपड़े तुम्हारे कमरे में थे?''

''चोरी हो गई।''

इस पर ललिता और निशनाथ दोनों हँस पड़े।

ललिता गम्भीर हो रही थी। उसने अपने रुपये के विषय में पूछा तो खुशीराम ने फिर कहा, ''चोरी हो गया है।''

''वह लड़की लेकर भाग गई?''

''नहीं, किसी ने जेब काट ली थी।''

ललिता तो विदा हो गई, अब आत्मादेवी की बारी थी। उसने मधुर के सामने पूछा, ''मेरी साड़ियाँ और दूसरे कपड़े, सब वह लेकर भाग गई है न?''

''वह तो केवल वही कपड़े ले गई है, जो पहने हुए थी। शेष मैं होटल में छोड़ आया हूँ।''

''उन पर मेरा दो सौ रुपया खर्च हुआ था, सो तुम्हें देना होगा।''

''होगा तो दे दूँगा।''

:: 28 ::

बात यहीं समाप्त नहीं हुई। अगले दिन जब छापेखाने में कार्य करने गया तो श्रीनाथ ने पूछा, ''खुशीराम! चार दिन तक बिना बताए गैर-हाजिर रहे। क्या बात है?''

खुशीराम चुप रहा। श्रीनाथ ने उसे अपने कमरे में बुलाकर कहा, ''मैं जानता हूँ कि तुम कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्य हो और सदैव अपने साथियों को मालिक के विरुद्ध भड़काते रहते हो। मैं तुमसे पूछता हूँ कि क्या यह बिन-बताए गैर-हाजिर हो जाना अनुचित नहीं था, इससे काम की कितनी हानि हुई?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
''आपकी क्या हानि हुई है ? मैं जितने दिन नहीं आया आप मेरा उतने दिन का वेतन न दें।''

श्रीनाथ हँस पड़ा और बोला, ''क्या एक संस्था में केवल वेतन देने और लेने का ही सम्बन्ध रहता है ? वेतन के अतिरिक्त क्या और उत्तरदायित्व और धर्म नहीं ? अब आप लोग हड़ताल करते हैं तो अपने स्थान पर क्या किसी दूसरे की नियुक्ति पसंद करते हैं ? यदि नहीं करते तो क्यों ? क्या इसका यह अर्थ नहीं कि वेतन पाने के अतिरिक्त भी नौकर का कुछ उत्तरदायित्व है ? तुम्हें छुट्टी लेकर गैर-हाजिर रहना चाहिए था।''

खुशीराम के मन में बात बैठ गई। वह समझ गया कि पार्टी में हर रोज बताया जाता है कि हड़ताल के समय मालिक नए नौकर रखे तो अनुचित होता है। तो क्या इसी प्रकार काम और वेतन पाने के अतिरिक्त नौकर का और कुछ भी कर्त्तव्य नहीं है ? क्या मालिक की उन्नति और लाभ का उत्तरदायित्व नौकर पर नहीं आ जाता ? उसे स्मरण था कि श्रीनाथ कई वर्ष से उनको वार्षिक बोनस देता रहा है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह उन्हें अपने लाभ में से भाग देता है। वह यद्यपि पूर्ण लाभ का बहुत न्यून भाग होता था, इस पर भी था तो। उसे एक बात और याद आई कि जब एक बार छापेखाने में एक कम्पोजिटर की पत्नी बीमार हो गई थी तो उसकी सूचना पाते ही श्रीनाथ ने अपने डाक्टर को उसके घर चिकित्सा के लिए भेज दिया था। डॉक्टर तीन मास तक इलाज करता रहा था और कम्पोजिटर को एक पाई भी अपने पास से नहीं देनी पड़ी थी।

इस प्रकार श्रीनाथ की सज्जनता का विचार कर खुशीराम ने कहा, ''आप ठीक कहते हैं। मुझसे भारी भूल हो गई है। आप मुझे क्षमा कर दें।''

श्रीनाथ ध्यान से खुशीराम का मुख देख रहा था। उसे इस प्रकार क्षमा माँगते समय लज्जा से लाल होते देख, वह अपने स्थान से उठ पड़ा और उसे इस लज्जास्पद अवस्था से निकालने के लिए उससे हाथ मिलाकर, उसकी पीठ ठोंकते हुए कहा, ''क्षमा की बात नहीं है, भाई! अच्छा, जाओ काम करो। मैंने तुम्हारी चार दिन की वेतन-सहित छुट्टी स्वीकार कर ली है। जाओ, अब दिल लगाकर काम करो।''

खुशीराम को अचम्भा भी हुआ और खुशी भी। जब वह मशीन पर पहुँचा तो उसके अधीन काम करने वाले ने बताया कि जो सरकारी किताब छप रही थी, वह समय पर न पहुँच सकने के कारण वापस हो गई है। कहते हैं पाँच हज़ार का काम था और फिर जो काम हो चुका था, वह लगभग एक हज़ार के मूल्य का था। वह सब बेकार गया। इससे तो वेतन सहित छुट्टी मिल जाने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महिमा उसकी दृष्टि में और भी बढ़ गई। उसने मन में निश्चय किया कि भविष्य में वह ऐसा कभी नहीं करेगा।

उस दिन सायंकाल फर्मा मशीन पर चढ़ा हुआ था। एक हज़ार के लगभग दाब शेष रहती थी और समय हो गया था। खुशीराम के अधीन काम करने वाले ने कहा, "बाबूजी से कहकर 'ओवरटाइम' लगवा लें तो ठीक रहेगा।" खुशीराम ने कहा, "ओवरटाईम की क्या आवश्यकता है? अभी आधे घंटे में यह सब छपाई खत्म होती है।"

"खुशीराम! पर आधा घंटा भी क्यों फालतू लगाएँ?"

"बाबूजी की बहुत हानि हुई है न, इसलिए?"

"हानि हुई है तो हम क्या करें?"

"भाई! आज तो काम ऐसे ही करना होगा।"

"मैं नहीं करूँगा।"

खुशीराम ने मन में कुछ सोचकर कहा, "अच्छी बात है। एक घंटे के ओवरटाईम का तुम्हें क्या कुछ मिलता है?"

"आठ आने।"

"तो मैं दूँगा। बाबूजी से कुछ नहीं कहना।"

पौन घंटा अधिक लगा। खुशीराम और उसके अधीन कार्य करने वाले जब छापेखाने से बाहर निकलने लगे तो उनके नामों के आगे मुंशी एक घंटा अतिरिक्त कार्य लिखने लगा। खुशीराम ने कहा, "भाई! हमने तो समय पर ही कार्य बंद कर दिया था। बातें करते-करते देर हो गई है।"

"पर तुम्हारी मशीन तो चल रही थी।"

"मुंशी जी! आपको भ्रम हो गया है। वह हमारे साथ की मशीन रही होगी।" खुशीराम ने कहा।

"ठहरो!" इतना कह मुंशी ने रजिस्टर देखा और फिर बोला, "उस पर काम करने वाले तो एक घंटा हुआ चले गए हैं।"

"अजी, मैं तो कहता हूँ कि हमने काम बंद कर दिया था।"

खुशीराम की बात सुन मुंशी अवाक् हो उसको देखता रह गया। खुशीराम ने उसके अचम्भे को कम करने के लिए कहा, "रजिस्टर इधर करो, मैं हस्ताक्षर कर दूँ।" मुंशी ने समय लिखे बिना रजिस्टर उसकी ओर कर दिया। खुशीराम ने अपने और अपने साथी के नाम के आगे पाँच बजे सायंकाल का समय लिख दिया और अपने नाम के आगे हस्ताक्षर कर दिए। उसके साथी ने भी हस्ताक्षर कर दिए।

मुंशी यह घटना श्रीनाथ को बताए बिना नहीं रह सका। श्रीनाथ के मन पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका प्रभाव यह हुआ कि वह खुशीराम को बहुत ही कोमल-हृदय समझने लगा। इससे खुशीराम के प्रति उसके मन में आदर का भाव पैदा हो गया।

अगले दिन खुशीराम समय से पूर्व ही अपनी मशीन की सफाई में लगा हुआ था। इससे पहले भी सफाई मशीनमैन ही किया करते थे, परन्तु वे समय के अंदर करते थे। परिणाम यह होता था कि छापाखाना नौ बजे खुलता था परन्तु कार्य साढ़े नौ बजे से पूर्व आरम्भ नहीं हो पाता था। श्रीनाथ पौने नौ बजे छापेखाने में आया तो उसने देखा कि खुशीराम पहले ही अपनी मशीन की सफाई में लगा हुआ है। श्रीनाथ को मुंशी की रात वाली बात याद आ गई। इससे वह खुशीराम के पास जाकर खड़ा हो गया।

खुशीराम ने नमस्ते कह दी। श्रीनाथ खुशीराम के मुख को ध्यान से देख रहा था। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि अभी भी वह कुछ लज्जा अनुभव कर रहा है। श्रीनाथ की समझ में यह आया कि शायद इसने कोई ऐसा कार्य किया है या इसके अनुभव में कोई ऐसी घटना आई है, जिसने इसके मन पर गहरा प्रभाव उत्पन्न किया है और यह उस घटना से मन-ही-मन लज्जित हो रहा है। ऐसी अवस्था में उससे अधिक बातचीत करना उचित न समझ, श्रीनाथ अपने कार्यालय में जाकर काम में संलग्न हो गया। इतना उसने कर दिया कि मुंशी को कहकर खुशीराम के आने और जाने का समय लिखवाना आरम्भ कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन

मनुष्यता की ओर

निशनाथ की माँ को ललिता की आँखों में निर्लज्जता दिखाई दी थी। इसी से उसने निशनाथ से पूछा था कि 'तुम्हें पसंद है बेटा?' निशनाथ के हाँ कहने पर उसने स्वीकार कर लिया था। परन्तु उसके मन में आशंका बनी ही थी। इससे ललिता और निशनाथ के चले जाने पर वह ठाकुरजी के सम्मुख जा मन से प्रार्थना करने लगी कि वे बच्चों को सुमति दें।

जब ललिता विवाह के पश्चात् घर आई तो उसने अपने समीप बैठाकर कहा, "बेटी, लज्जा स्त्री का गुण है, सतीत्व हमारा धर्म है, सरलता चरित्र है और घर स्त्री का राज-स्थान है।"

ललिता हँस पड़ी। वह मन में सोचती थी कि उक्त चारों बातों में एक को भी वह न तो पसंद करती है, न ही उसमें वे हैं। माँ ने समझा कि उसे उसकी बातों पर विश्वास नहीं आया। इससे उसी गम्भीर मुद्रा में वह अपनी बात कहती गई, "निशनाथ चौथी श्रेणी में पढ़ता था, जब उसके पिता का देहांत हो गया। उनके देहांत को अब इतना समय हो गया कि मैं उनके रूप को भलीभाँति स्मरण नहीं रख सकी हूँ और उनके देहांत के पश्चात् मेरा पूर्ण ध्यान निशनाथ के पालन-पोषण में लग गया। उस समय हमारे घर में केवल पचास रुपये थे। शेष सब-कुछ, मेरे दो-चार अदद भूषण भी उनकी चिकित्सा में लग चुके थे। ये पचास रुपये उनके अन्त्येष्टि संस्कार में व्यय हो गए और अगले ही दिन से मुझे अपने और निशनाथ के पेट भरने के लिए मेहनत करनी पड़ी।

"मुझे बच्चों के कपड़े सीने आते थे। मैंने यही कार्य आरम्भ कर दिया। पहले हाथ से सीती थी। फिर मशीन ले आई। धीरे-धीरे मेरे सिले कपड़े पास-पड़ोस में पसंद किए जाने लगे और कुछ दर्जी भी मुझ से कपड़े बनवाने लगे।

"निशनाथ भगवान की कृपा से शीघ्र ही पढ़कर तैयार हो गया और अब नौकरी और बहू पा गया है। मुझे सीने-पिरोने का कार्य बंद किए छह मास हो गए हैं। अब उसकी आवश्यकता नहीं समझती और वही समय भगवान के भजन में लगाती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''अब तुम आ गई हो। घर का काम-काज तुम सम्भालोगी तो मैं हरिद्वार जाकर अपना अंत समय सुधारने का यत्न करूँगी। क्यों बेटी! ठीक है न?''

ललिता मन-ही-मन निशनाथ की माँ की कहानी का अपनी माँ की कहानी से मिलान कर रही थी। दोनों के जीवन में दुर्घटना जीवन के आरम्भ में हुई थी। इससे कुछ उत्साहित हो उसने अपनी सास से पूछा, ''इनके पिता के देहांत के समय आपकी आयु कितनी रही होगी?''

''इक्कीस वर्ष।''

ठीक यही आयु उसकी माँ की थी। ललिता अपनी माँ का पूर्ण इतिहास जानती थी। अत: जब उसने अनुभव किया कि निशनाथ की माँ गम्भीर, संतुष्ट, प्रसन्न वदन और भविष्य को सीधी गर्दन कर देखने वाली महिला है तो वह उसकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकी। वह जानती थी कि उसकी माँ अब भी बीसियों रुपये अपने शृंगार में व्यय करती है। सायंकाल को मधुर चाचा के घर लौटने के समय बन-ठनकर उनके स्वागत के लिए तैयार रहती है। कई बार वह उससे कहती भी थी कि पुरुष को अपने वश में रखने के लिए स्त्री के पास यह सुलभ उपाय है। साथ ही, वह यह भी समझ रही थी कि माँ को यह सुलभ उपाय दिन-प्रतिदिन दुस्तर होता जाता है। इधर यह स्त्री कितनी संतुष्ट और प्रसन्न प्रतीत हो रही है। ललिता यह भी अनुभव कर रही थी कि शायद उसके प्रसन्न रहने का कारण यह है कि उसका लड़का उसके जीवन का आश्रय है और वह उसके बुढ़ापे में उसे खाने-पहनने को देगा और देने की शक्ति रखता है। क्या उसका भाई खुशीराम भी माँ के पालन का भार उठाएगा और क्या उसमें यह उठाने की शक्ति भी है? इस प्रश्न के साथ-साथ उसके मन में एक विचार और उठा। वह यह कि निशनाथ एम.ए. तक पढ़ा है और खुशीराम केवल मैट्रिक तक। फिर निशनाथ को एम.ए. पास कराने में उसकी माँ ने ही तो तपस्या की है। खुशीराम यदि मैट्रिक से अधिक नहीं पढ़ सका तो उसकी माँ का ही तो दोष है। माँ अपने सुख और आराम में लिप्त रही और खुशीराम की शिक्षा ठीक प्रकार से चला नहीं सकी। इस पर उसे वह दिन स्मरण हो आया, जब खुशीराम को माँ ने छड़ी से बुरी भाँति पीटा था और उसके पीटे जाने का कारण स्वयं उसका बोला हुआ झूठ था। माँ ने उस दिन खुशीराम से दो टूक कह दिया था कि अब वह उसका पालन-पोषण नहीं कर सकती। खुशीराम को नौकरी इसीलिए करनी पड़ी थी।

उसकी सास उससे कह रही थी, ''देख बेटी! यह सांसारिक सुख नाशवान है। यह मिले तो भगवान की कृपा और अपने पुण्य-कर्मों का फल है, परन्तु वह मनुष्य केवल-मात्र पशु ही रहेगा, जो सांसारिक सुख के लिए अपने जन्म-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्मांतर के पुण्य-कर्मों को त्याग कर अपना भविष्य काला कर ले।''

''ललिता ने मुस्कराते हुए कहा, ''माँ जी! भूत और भविष्य किसने देखा है? वर्तमान ही सब-कुछ नहीं है क्या?''

निशनाथ की माँ हँस पड़ी और बोली, ''यदि मैं केवल वर्तमान का ही ध्यान करती तो न आज निशनाथ पढ़-लिखकर योग्य हुआ होता और न ही तुम्हारी जैसी सुंदर बहू पाता और फिर उस काल का वर्तमान....'' यह कहते-कहते वह काँप उठी। आँखें नीची कर, हाथ की उंगली पर अपनी धोती का छोर लपेटते हुए बोली, ''मैं नितांत युवा थी। घर में अकेली रहती थी। निर्धन थी और भगवान का दिया रूप भी था। प्रलोभन पग-पग पर घेरे रहते थे। पाँव पकड़ घसीटकर डिगाने वालों की कमी नहीं थी। उस समय भगवान पर भरोसा ही मेरा आश्रय था। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन, मैं उसकी आराधना में लगी रहती थी। सोते, उठते, बैठते, पहनते, काम करते भगवान के चरणों में लीन रहती थी। उस समय मन में चलने वाले संघर्ष को अब जब मैं स्मरण करती हूँ तो काँप उठती हूँ। कई बार गड्ढे में गिरते-गिरते बची थी। उस तपस्या के परिणामस्वरूप अब तुम्हें प्रत्यक्ष अपने सम्मुख बैठे देखती हूँ तो अपने को धन्य मानती हूँ।''

इस समय निशनाथ बाहर से आया। वह अपने साथ बाज़ार से पूरी, मिठाई आदि लाया था। इसे तीनों ने मिल-बैठकर खाया।

:: 2 ::

खुशीराम को दिल्ली से लौटे कई दिन हो चुके थे। उसे रुचिपूर्वक काम करते देख श्रीनाथ को अचम्भा और प्रसन्नता दोनों हो रहे थे। वह सोच रहा था कि इस लड़के के मन में उत्पन्न परिवर्तन के कारण की खोज करनी चाहिए, परन्तु वह उसके मन के भीतर की बात पूछने में संकोच करता था। वह सोचता था कि पूछने से इसको दुःख हुआ तो ठीक न होगा। परन्तु इस बात का अवसर स्वयं आया जबकि खुशीराम अपनी समस्या को लेकर श्रीनाथ के पास पहुँचा। श्रीनाथ को कार्यालय में अकेला बैठा देख वह दरवाज़े पर खड़ा हो पूछने लगा, ''क्या मैं भीतर आ सकता हूँ?''

''हाँ, आ जाओ। खुशीराम, आज यह पूछने की आवश्यकता क्यों पड़ी?''

''आपसे एक ऐसी बात कहनी है, जिसका सम्बन्ध मेरी नौकरी और आपके छापेखाने से नहीं है।''

''तो क्या हुआ? आओ। इस कुर्सी पर बैठो और बताओ क्या बात है?''

खुशीराम कुर्सी पर बैठने में संकोच करता था। कुर्सी गद्देदार थी। गद्दे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफेद खद्दर का गिलाफ चढ़ा हुआ था और खुशीराम काम करने के कपड़े पहने हुए था, जो छापेखाने की स्याही से काले हो रहे थे।

श्रीनाथ ने कहा, ''जब तुम कारखाने के अतिरिक्त बात करने आए हो तब तो कारखाने से बाहर का आदमी मानकर ही तुमसे व्यवहार करना चाहिए न?''

खुशीराम ने कहा, ''बाबूजी! यह बात नहीं। मैं हूँ तो आपका कर्मचारी ही और फिर मेरे कपड़े मैले हैं।''

''कुछ हानि नहीं। बैठकर आराम से बात करो।''

खुशीराम संकोच करता हुआ कुर्सी के कोने पर बैठकर कहने लगा, ''मैं आपसे राय और सहायता लेने आया हूँ।''

''बताओ।''

''मेरी इच्छा विवाह करने की थी। विवाह करने के लिए ही मैं पीछे चार दिन तक बिना छुट्टी लिये छापेखाने से अनुपस्थित रहा था। बात यह है कि हमारे घर की परिस्थिति ऐसी है कि किसी भले घर में मेरे विवाह की आशा नहीं। इससे मैं एक पड़ोसी की नौकरानी को लेकर दिल्ली भाग गया था। घर से बहन के कुछ रुपये और कपड़े चोरी कर ले गया था। परन्तु दिल्ली पहुँच वह लड़की चली गई। अपने-आप गई या कोई धोखा दे उसे ले गया, नहीं जानता। रुपया चोरी हो गया। चांदनी चौक में घूमते हुए जेब कतरी गई और होटल का बिल देने को जेब में कुछ नहीं रहा। इस पर कपड़े इत्यादि सब-कुछ छोड़ लाहौर भाग आया।''

श्रीनाथ खुशीराम की आपबीती और उसका प्रयोजन सुनने के लिए चुपचाप बैठा रहा। खुशीराम ने कुछ सोचकर कहा, ''जब मैं उस लड़की को भगाकर दिल्ली ले जा रहा था तो हमारे डिब्बे में एक सिख बैठा था। आज प्रातःकाल वह मुझे मिला और पूछने लगा कि मेरा विवाह हो गया या नहीं। मैंने बताया 'नहीं'। इस पर उसने कहा कि एक सुंदर लड़की है। अगर मैं उसका दाम दे सकूँ तो मेरा उससे विवाह हो सकता है।''

इतना कहकर खुशीराम फिर कुछ सोचने लगा, श्रीनाथ अब भी चुप था। वह अभी और अधिक परिचय पाना चाहता था। कुछ विचार कर खुशीराम ने फिर कहना आरम्भ कर दिया, ''मुझे कुछ ऐसा अनुभव हो रहा है कि वही लड़की इस सिख के पास है और वह मुझसे रुपया ऐंठ, उसे ही पुनः मुझे देना चाहता है।''

खुशीराम के इस अनुमान पर संदेह प्रकट करते हुए श्रीनाथ ने कहा, ''वह कोई और भी तो हो सकती है?''

''हाँ, परन्तु कई ऐसी बातें हैं जिनसे मुझे भारी संदेह हो रहा है कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की उसी के पास है। कुछ भी हो, मैं अपनी बात की परीक्षा करना चाहता हूँ और आपकी इसमें सहायता चाहता हूँ। आप वकील हैं और पैसे वाले हैं। यदि आप चाहें तो मेरी बहुत-कुछ सहायता कर सकते हैं।''

श्रीनाथ सहायता की इस माँग से गम्भीर विचार में पड़ गया। वह एक परिणाम पर पहुँचा। यह परिणाम उसकी न्याय-बुद्धि और उदारता का परिणाम था। उसने अपना निर्णय खुशीराम को बताया।

''यदि तुम चाहते हो कि उस लड़की को या जो भी लड़की है, उसे इन 'बरदाफरोशों' (लड़कियाँ बेचने वालों) के चंगुल से बचाया जाए तो मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। उसका तुमसे विवाह हो जाए अथवा उसका किसी दूसरे से विवाह हो इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं होगा। यह तुम उस लड़की के सम्बन्धियों से निश्चय कर लेना।''

''तो मैं इस झगड़े को क्यों अपने गले बाँधू?''

''केवल मनुष्य के नाते। देखो खुशीराम! तुम बहुत समझदार आदमी हो। तुम अपने मन से पूछो कि मैं तुम्हारी सहायता क्यों करूँ? इसीलिए न कि तुम मनुष्य हो और तुम्हारी सहायता करना किसी भी मनुष्य का कर्त्तव्य है। इसमें मुझे क्या मिलेगा? कुछ नहीं। शायद किसी प्रकार की बदनामी ही मिले। इस पर भी तुम मुझसे सहायता की आशा करते हो। इसी प्रकार उस लड़की का छुड़ाना भी मनुष्यता के नाते हमारा कर्त्तव्य हो जाता है।''

''इसी नाते आप मेरे विवाह में भी सहायता कर दें।''

''ठीक है। इस पर भी यदि उस लड़की को अथवा उसके सम्बन्धियों को तुमसे विवाह स्वीकार न हो तो फिर यह कार्य जहाँ तुम्हारे साथ न्याय होगा, वहाँ उस लड़की के साथ अन्याय और अधर्म हो जाएगा।''

''आप उसको छुड़ा दें, फिर विवाह के लिए राज़ी मैं कर लूँगा।''

''अच्छी बात है। तुम उस सिख से मिलो और उससे कहो कि तुमने मुझसे रुपया उधार माँगा है और मैंने रुपया देना स्वीकार कर लिया है, परन्तु लड़की मेरे सामने तुम्हें मिलनी चाहिए।''

खुशीराम बात समझ गया और उसी दिन सायंकाल बताए गए स्थान पर उस सिख से जाकर मिला। खुशीराम की बात सुन वह लड़की बेचने वाला संदेह से उसका मुँह ताकने लगा। खुशीराम गम्भीर विचार में मग्न हो भूमि की ओर देखता रहा। सिख ने कहा, ''तुमने यह बात अपने मालिक से क्यों की?''

''मेरे पास रुपया नहीं है और मैं ठगा जाना नहीं चाहता। पहले एक बार ठगा जा चुका हूँ।''

''कैसे?'' सिख ने सशंक पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''एक लड़की मैंने मोल ली थी। उससे दिल्ली ले जाकर विवाह करने की बात थी। वहाँ से वह लड़की भाग गई और मेरी जेब कतरी गई। मुझे विश्वास है कि उसे कोई भगा ले गया है।''

वह सिख हँस पड़ा और बोला, ''मैं धोखा नहीं करूँगा।''

''मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमारे बाबूजी बहुत ही सज्जन पुरुष हैं। मुझसे बहुत मुहब्बत करते हैं और आप चलकर उनसे एक बार मिलेंगे तो आपको विश्वास हो जाएगा कि किसी देवता से बातें कर रहे हैं।''

वह सिख श्रीनाथ से मिलने पर राजी हो गया और अगले दिन छापेखाने में दोनों की मुलाकात हो गई। कुछ समय तक खुशीराम बातचीत में भाग लेता रहा। पश्चात् उससे क्षमापूर्वक बाहर जाने को कहा गया।

बातचीत संतोषजनक रही। श्रीनाथ और वह सिख महाशय कार्यालय से बाहर निकले तो प्रसन्न थे और विदा होते समय दोनों ने उत्साह से हाथ मिलाए।

:: 3 ::

जब ललिता का विवाह निशनाथ से सम्पन्न हो गया तो वह असलम को चिढ़ाने के लिए पार्टी में निशनाथ के साथ गई। कई महीनों के पश्चात् वह वहाँ गई थी। असलम दफ़्तर में बैठा नित्य की भाँति चिट्ठी-पत्री देख रहा था। मीरा एक दूसरी मेज़ पर बैठी कुछ लिख रही थी। ललिता मीरा के पास जा बैठी और पूछने लगी, '' 'लोकसेवा' कब तक निकलने वाला है?''

''आज उसका पहला सम्पादकीय लिख रही हूँ। इस सप्ताह का पत्र....।'' इतना कहते-कहते मीरा ने कलम को मेज़ पर रखकर ललिता की ओर देखा। उसकी माँग में सिंदूर देखकर हँस पड़ी। पूछने लगी, ''यह किसके जाल में फँस गई हो?''

''कोई तो है ही।'' ललिता ने उत्तर दिया, ''बताओ, तुम्हारी माँग कब भरने वाली है?''

''मैं इस प्रकार की व्यर्थ बातों पर विश्वास नहीं रखती।''

''मेरी सास-जैसी सास मिले तो विश्वास न रखने की सब बात निकल जाए।''

''तो बहुत पीटती है सास तुम्हें?'' मीरा ने हँसते हुए पूछा।

''नहीं, वह बेचारी दुबली, बूढ़ी औरत एक पंजाबी युवती को क्या पीटेगी? बात यह है कि उसका बात करने का ढंग इतना नम्र, मीठा और प्रेम-भरा होता है कि इंकार हो ही नहीं सकता। इस माँग की बात ही सुन लो। मैं आज जब यहाँ आने लगी तो बिना सिंदूर लगाए चलने को तैयार हो गई। सास ने देखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो बोली, 'ललिता बेटी! सिंदूर चुक गया है क्या?' मैंने उत्तर दिया, 'नहीं माँजी! मैं आज एक ऐसे स्थान पर जा रही हूँ, जहाँ के लोग इसे पसंद नहीं करते।' इस पर वह बोलीं, 'भला तुम तो पसंद करती हो?' मैं कैसे कह सकती थी 'नहीं'। वास्तव में वह अति सुंदर प्रतीत होता है। मैंने कह दिया, 'मुझे तो पसंद है माँजी! पर वे लोग हँसी करेंगे।' वह मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए बोली, 'छी: बेटी! क्या हम दूसरों के कहने से अपना जीवन चलाते हैं? यदि कहीं जंगली लोगों के देश में चले जाएँ, जो कपड़ा पहनना पसंद नहीं करते, तो क्या हम भी नंगे ही घूमने लगेंगे। छी: भला यह भी कोई मानने की बात है! देखो बेटी! यह सुहाग का चिह्न है। इसे लगाने का अर्थ है कि तुम सुहागवती हो और भगवान की तुम पर कृपा है।' मैंने कहा, 'पर माँजी! मेरी वहाँ हँसी होगी।' 'तो तुम उन पर हँसना, बेटी! तुम्हारे हँसने से लोग तुम्हारे सुंदर दाँतों को देखने लगेंगे और तुम्हारे मस्तक के सिंदूर को भूल जाएँगे।' जब इतना कहने पर भी मैं सिंदूर लगाने को तैयार न हुई तो वह मेरे कमरे में गईं और सिंदूर की डिबिया उठा लाईं। मैंने इस पर भी इंकार किया। वह सिंदूर लगाने लगीं तो मैंने उनके हाथ को दूर हटा दिया। इस पर वह रुक गईं और सिंदूर को एक ओर रख चटाई पर बैठ गईं। मेरी दृष्टि उधर गई। मैंने देखा उनकी आँखों में आँसू छलछला रहे थे। मेरे दिल में कुछ हुआ और मैं डिबिया उठा माँग में सिंदूर लगा, उनके चरण छूने के लिए झुकी तो वह सिंदूर देख हँस पड़ीं और बोलीं, 'बेटी! मेरे से हँसी करती थी न।' मेरा माथा चूम बोलीं, 'बेटी! जुग-जुग जिओ।' प्रसन्नता से फूलती हुई वे आँखें पोंछने लगीं। अब बताओ, ऐसे सरल हृदय को मैं कैसे इंकार कर सकती हूँ?''

मीरा उसकी कथा सुन हँस पड़ी और बोली, ''यह मेरा सौभाग्य है कि मेरी सास नहीं होगी, जो इस प्रकार की बेहूदा बातें करने को कहेगी।''

ललिता ने मीरा के असलम से विवाह होने की चर्चा सुन रखी थी। इससे ऐसी सास न पाने का मूल्य उसे क्या देना पड़ेगा, यह वह जानती थी। असलम के विचारों का बदलना भी उसे पहले से ही भलीभाँति विदित था। पहले वह उससे प्रेम प्रकट किया करता था, फिर वह श्रीकान्ता के पीछे-पीछे घूमता रहा था और अब मीरा के पीछे लगा हुआ दिखाई देता था।

उधर निशनाथ असलम के पास बैठा बातें कर रहा था। असलम ने कहा, ''निशनाथ जी! इस विवाह पर मैं आपको मुबारकबाद दे सकता हूँ क्या?''

''क्यों नहीं? अगर विवाह कोई मुबारकबादी की बात है तो बधाई दे दो।''

''तो हमें दावत दो। बिना दावत के बधाई फीकी रहेगी।''

''दावत तो बहुत ही सस्ती वस्तु है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो यह विवाह बहुत मूल्यवान वस्तु प्रतीत हुई है आपको ?''

''इसका मूल्य आँकने के लिए समय चाहिए। अभी तो दो सप्ताह ही हुए हैं।''

''स्ट्रेंज! क्या अभी विवाहिता पत्नी का उपभोग आरम्भ नहीं हुआ ?'' और असलम खिलखिलाकर हँस पड़ा।

निशनाथ इससे घबराया नहीं। गम्भीर हो असलम की ओर देखता रहा। असलम के इस प्रकार हँसने से मीरा और ललिता का ध्यान भी इस ओर आकर्षित हो गया और दोनों उठकर इनके पास चली आईं। ललिता ने निशनाथ से पूछा, ''इस गँवार आदमी से क्या बातचीत कर रहे हैं ?''

मीरा के माथे पर त्योरी चढ़ गई। निशनाथ ने इसे देख लिया और पुनः शांति-स्थापन के विचार से बोला, ''कॉमरेड असलम हमारे विवाह की दावत माँगते हैं।''

''तो आपने कौन-सा दिन दावत का निश्चय किया है ?''

''मैंने तो कहा है कि अभी तुरंत ही लीजिए। मैंने ललितादेवी को विवाह के लिए कहा तो वे तुरंत विवाह के लिए तैयार हो गईं और तुरंत ही हमारा विवाह हो गया। इसी प्रकार माँगी गई दावत भी तुरंत हो सकती है।''

मीरा के माथे का बल नहीं उतरा। असलम को गँवार कहा जाना उसे औचित्य की सीमा का उल्लंघन प्रतीत हो रहा था। ललिता भाँप गई कि बात ने कोई और ही रूप धारण कर लिया है। इससे उसने कह दिया, ''तो बहन मीरा को नहीं बुलाओगे ?''

''अरे बाबा! तमाम कार्यालय को बुलाता हूँ। परन्तु मीरा बहन दावत के लिए इतनी उत्सुक प्रतीत नहीं होतीं।''

''हैं क्यों नहीं ?'' ललिता ने कहा।

''नहीं, कुछ विशेष नहीं।'' मीरा ने कहा।

''क्यों ?'' निशनाथ ने पूछा।

''मैं आपके विवाह को जीवन की कोई विशेष घटना नहीं समझती, जिसके लिए दावत दी जाए अथवा ली जाए।''

''परन्तु दावत तो साधारण घटनाओं पर भी दी जा सकती है।'' ललिता का कहना था।

''कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बन्ध रखने वाली भी जब जंगलियों की भाँति माथा रंग कर आई है, तो उसकी दावत में सम्मिलित होकर जंगली ही तो बनना पड़ेगा।''

उत्तर निशनाथ ने दिया, ''किसी ने माथा रँग लिया और किसी ने होंठ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाल रँग लिये। यह तो एक ही बात है। इसलिए यदि एक जंगली है तो दूसरा सभ्य कैसे हो गया?''

''मैं उनमें नहीं हूँ।'' मीरा ने कहा।

''विवाह होने पर देखा जाएगा।''

उत्तर असलम ने दिया, ''हमारा विवाह हो चुका है।''

''ओह, कब?''

''आज एक मास से ऊपर हो चुका है। एक शाम हमने निश्चय किया कि हमारा विवाह हो ही जाना चाहिए। सो हमने एक-दूसरे को पत्र लिखकर अपने निश्चय की सूचना दे दी और हमने विवाह कर लिया।''

''यह तो बिलकुल जंगल के जानवरों की भाँति ही हुआ है।'' ललिता ने कनखियों से समीप बैठी मीरा की ओर देखते हुए कहा।

असलम ने उत्तर दिया, ''जानवर तो चिट्ठी नहीं लिख सकते।''

''मुख से अथवा संकेत से बात करने में और लिखकर बात कर लेने में क्या अंतर है?''

''तो आग जलाकर व्यर्थ घी जलाने से क्या हो जाता है?''

''घी इत्यादि जलाने से कुछ प्रयोजन है या नहीं, कहा नहीं जा सकता।'' निशनाथ कह रहा था, ''हाँ, दस-बीस लोगों के सम्मुख वचन देना अथवा अदालत में जाकर मैजिस्ट्रेट के सम्मुख शपथ लेकर वचन देना अत्यावश्यक है।''

इस पर असलम ने कहा, ''यह सब झगड़े पूँजीपतियों के हैं। जब बाप की जायदाद लड़के अथवा लड़की को मिलती हो, तब शादी की रजिस्ट्री अथवा गवाहों की ज़रूरत रहती है। जब हमारे-जैसे फक्कड़ों ने कोई जायदाद बनानी ही नहीं अथवा कुछ हुआ भी तो अपने बच्चों को देना ही नहीं, तो विवाह में गवाहों की क्या आवश्यकता है?''

''संतान के उत्तराधिकारी माने जाने के अतिरिक्त भी तो विवाह होने के प्रमाणों की आवश्यकता हो सकती है।''

मीरा ने अपने स्थान से उठते हुए कहा, ''हमें कुछ आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।''

निशनाथ भी अपने स्थान से उठ पड़ा। असलम ने पूछा, ''तो दावत बातों-बातों में ही हवा हो गई?''

उत्तर ललिता ने दिया, ''जो विवाह की आवश्यकता नहीं समझते, जिनको अपने विवाह में साक्षियों की भी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, उनको विवाह-सम्बन्धी दावत की भी आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।''

निशनाथ ललिता के इस तर्कपूर्ण उत्तर पर हँस पड़ा और कहने लगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विवाह के अतिरिक्त भी तो दावत हो सकती है, ललिता!"

"यह बात दूसरी है।"

"मैं दावत में सम्मिलित नहीं हो रही।" मीरा ने कहा।

"मैं चल रहा हूँ।" असलम ने कहा।

"तो चलो।" फिर निशनाथ ने कुछ ऊँचे स्वर में अन्य लोगों को सम्बोधित कर कहा, "जितने भी लोग यहाँ हैं मैं उन सबको कल अपने घर सायंकाल के खाने के लिए आमंत्रित करता हूँ।"

निमंत्रण दे दिया गया, परन्तु निशनाथ के घर कोई नहीं गया और बीस लोगों के लिए बना खाना मेहतर को देना पड़ा। मीरा ने प्रस्ताव करा दिया था कि निशनाथ पार्टी के सिद्धांतों से च्युत हो गया है, इसलिए उसकी दावत का बहिष्कार किया जाए। यह प्रस्ताव पास कराने के लिए मीरा को भारी यत्न करना पड़ा था।

:: 4 ::

जिस दिन मदन श्रीकान्ता के जन्म-दिन की दावत पर गया था, उसी रात पं. अम्बिकाप्रसाद ने श्रीकान्ता के विवाह का निश्चय कर लिया था। परन्तु श्रीकान्ता की माँ सोच रही थी कि कैसे सेठजी के घर जाकर मदन की माँ से बात करे। मदन जात का खत्री था और श्रीकान्ता ब्राह्मण। मदन तो जात-पांत को मानता नहीं था, परन्तु उसके घरवालों और विशेष रूप से उसकी माँ के भी वही विचार होंगे, निश्चय नहीं था। इसी सोच-विचार में दिन व्यतीत हो रहे थे कि एक दिन अचानक मदन की माँ उनके घर आ पहुँची।

श्रीकान्ता की माँ ने जब एक अपरिचित स्त्री को घर में आया देखा तो उसे बैठाया और पूछा, "कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ?"

"आप ही वकील साहब के घर से हैं?"

"जी हाँ, आप किनसे मिलना चाहती हैं? कहाँ से आई हैं?"

"मैं?....मैं....हमारा घर किनारी बाज़ार में है। रेशम की कोठी वाले सेठ मशहूर हैं न?" वह अपना परिचय देने के स्थान पर कहने लगी, "आपकी लड़की श्रीकान्ता हमें जानती है।"

"ओह! समझ गई।" श्रीकान्ता की माँ ने कहा, "आपके लड़के का नाम मदन मोहन है न? हमने उसे देखा है। श्रीकान्ता के जन्म-दिन पर हमारे घर आया था। बताइए, क्या पीजिएगा? शर्बत बनवाऊँ?"

फिर उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना उसने अपनी पुत्र-वधू को आवाज़ दी, "निर्मला जी! इधर आना; देखो, कौन आई हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्मला अपने कमरे से बाहर निकल आई। मदन की माँ को पहचान बोली, ''आप? अहोभाग्य हैं हमारे, जो आपने स्वयं ही दर्शन दिए हैं।''

मदन की माँ ने कहा, ''मदन ने कई बार कहा कि मैं आपके घर आऊँ और आप लोगों के परिचय और दर्शनों से लाभ प्राप्त करूँ, परन्तु आने में संकोच ही बना रहा। न जाने आप इसे पसंद करेंगी या नहीं। वकील साहब बड़े आदमी हैं और हम साधारण दुकानदार।''

''हम तो स्वयं आपके घर आने वाले थे,'' निर्मला ने कहा, ''माँ जी तो हर रोज चलने को कहती थीं, परन्तु आज-कल करते-करते इतने दिन निकल गए। खैर, आपके लिए दूध मँगवाऊँ?''

निर्मला ने नौकर को मिठाई लाने का संकेत कर दिया और स्वयं दूध लेने चली गई। मदन की माँ ने अपने आने का आशय और स्पष्ट करने के लिए कहा, ''आने का हक़ तो मेरा ही बनता है। मैं तो आपसे कुछ माँगने ही आई हूँ और माँगने वाला ही दूसरे के द्वार पर जाता है।'' इतना कहते-कहते सेठानी जी ने अपना आँचल फैला दिया।

''आप हमें लज्जित कर रही हैं। हम तो इस योग्य नहीं कि आपकी झोली भर सकें। जो कुछ भी हम दे सकते हैं, वह तो इतने बड़े आँचल के एक कोने में ही समा जाएगा।''

इस समय निर्मला चाँदी के गिलास में दूध भर कर ले आई। नौकर एक तश्तरी में मिठाई रख लाया। निर्मला ने सेठानी जी को आँचल फैलाए देखा तो आशय समझ हँस पड़ी। फिर अपनी सास से बोली, ''माताजी! इनका आँचल भर दीजिए न। लाऊँ नारियल?''

''राम! राम!! बेटी! इतना बड़ा आँचल भरने के लिए धन कहाँ से लाऊँ? हाँ जाओ, नारियल और कुछ फल ले आओ।''

इस प्रकार बात तय हो गई। निर्मला ने कहा, ''मौसीजी! यदि आप हमें एक पत्र ही डाल देतीं तो हम यह सब-कुछ लेकर स्वयं वहाँ पहुँच जाते। आपने कष्ट किया, इसके लिए हम आपके आभारी हैं।''

मदन की माँ यद्यपि निराश नहीं थी तो भी इतनी जल्दी बात तय हो जाने की उसे आशा नहीं थी। इस प्रकार अपने सम्मुख फल, मिठाई और रुपये रखे जाते देख अति प्रसन्न हो कहने लगी, ''मदन के पिताजी ने कहा था कि हम दान लेने वाले हैं, इसलिए हमें ही माँगने जाना चाहिए। इसी में लड़की वालों की और लड़की की मान-मर्यादा है। सो जब मदन ने कहा कि मुझे ही आना चाहिए तो मैं चली आई और आप लोगों का ईश्वर भला करे कि आपने हमारी प्रार्थना सुन ली।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदन की माँ यह सब-कुछ लेकर घर आई तो सेठ साहब को, मदन को, मीरा की माँ तथा मीरा को और अन्य मुहल्ले वालों को मदन की सगाई का शुभ समाचार बताने के लिए बुलाया गया।

मीरा की माँ आई तो उसकी आँखें रोने के कारण लाल हो रही थीं और उसका मुख मुरझाया हुआ था। मदन ने उससे पूछा, "चाची! मीरा कहाँ है?"

मीरा की माँ ने बात टालते हुए कहा, "बेटा मदन! अब तो मनपसंद बहू पा गए हो न?"

परन्तु मदन मीरा से बधाई लेने का इच्छुक था। वह उसे बहन मानता था और उसे न आया देख चिंतित था। इसलिए उसने फिर पूछा, "चाची! अब तो रात के आठ बज गए हैं। मीरा घर नहीं आई क्या?"

मीरा की माँ मदन की माँ को बधाई देने लगी, "बहनजी! बहुत-बहुत बधाई हो।"

मदन समझ गया कि कुछ बात अवश्य है, जिससे कि मीरा की माँ उत्तर टाल रही है। वह चुप कर गया।

थोड़ी देर में मदन को उसकी ससुराल से आई केसर से टीका लगाया और वहाँ से आई मिठाई से उसका मुख मीठा किया गया। फिर मुहल्ले के लोगों में मिठाई बाँटी गई।

जब सब लोग विदा हो चुके तो मदन ने मीरा की माँ से फिर पूछा, "मीरा नहीं आई, चाची?"

मीरा की माँ बहुत यत्न से आँसू रोके हुए थी। इस बार वे नहीं रुक सके और उसकी आँखें डबडबा आईं। मदन का माथा ठनका। उसको वस्तु-स्थिति का कुछ-कुछ भास होने लगा। मीरा की माँ ने अपनी चादर के छोर से आँखें पोंछीं तो मदन की माँ का ध्यान भी इस ओर गए बिना न रहा। वह समीप आ गई। मीरा की माँ ने अपने ब्लाउज की जेब में रखे एक खुले लिफाफे में से कोई चिट्ठी निकाल मदन को देते हुए कहा, "लो तुम भी पढ़ लो।"

मदन ने चिट्ठी खोली। उस पर उसी दिन की तिथि लिखी थी। चिट्ठी में लिखा था—

"परम पूजनीय माताजी,

मैं आज आपका घर छोड़ रही हूँ। इस कारण कि मैंने उस व्यक्ति से विवाह करने का अंतिम निर्णय कर लिया है, जिससे विवाह करने के लिए आप सब लोग मना करते थे। मदन भैया ने मुझे उनसे विवाह करने से रोका था। आपने भी उन्हें स्वीकार नहीं किया था। ताऊजी तथा ताईजी की बातों से भी मुझे ऐसा ही समझ पड़ा है कि उनको भी मेरा उनसे विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसंद नहीं है। सबके मना करने पर भी मैं उनसे विवाह करना चाहती थी। मेरे विचार उनसे मिलते हैं। मेरा जीवन-कार्य उनसे मिलता है। मेरे मनोद्‌गार उनके मनोद्‌गार हैं। हम दोनों एक ही मार्ग के राही होने से विवाह-बंधन में बंध जाने पर परस्पर जीवन-निर्वाह भलीभाँति कर सकेंगे।

अतएव आपसे तथा अन्य प्रियजनों से आप लोगों के भावों का आदर न कर सकने के लिए क्षमा-प्रार्थना करती हूँ। बड़ों की आज्ञा का उल्लंघन करना भारी पाप है। इसपर भी मन द्वारा सोच-विचार कर निश्चित योजना का त्याग भी कम पाप नहीं होता। इससे मैं आज विवाह करने जा रही हूँ।

मैं आपसे मिलने आऊँगी या नहीं, यह तो अब आप लोगों के व्यवहार पर निर्भर है।

—मीरा''

चिट्ठी पढ़ मदन अवाक् खड़ा रह गया। मदन की माँ ने चिट्ठी सुनी तो क्रोध से आग-बबूला हो बोली, ''अब कौन तुझ पतिता का मुख देखना चाहेगा?''

मीरा की माँ निष्प्रभ हो चुपचाप बैठी रही। उसकी आँखों से आँसू टप्-टप् टपक रहे थे। सेठ साहब भी इन तीनों को इस प्रकार गम्भीर तथा चुप देख समीप आए और कारण पूछने लगे। जब उन्हें सब वृत्तांत विदित हुआ तो वे चिरकाल तक विचारमग्न हो चुपचाप अपने स्थान पर खड़े रहे। सबको मदन की सगाई की जितनी प्रसन्नता हुई थी, मीरा के विवाह के समाचार ने वह सब विलीन कर दी।

सबसे पहले सेठ साहब बोले, ''अब इस समय चिंता करने की क्या आवश्यकता है? कल प्रातःकाल विचार कर व्यवहार निश्चय किया जाएगा। यह चिट्ठी कब मिली है?''

''मैं आश्रम से आई तो ताला कुंडे के साथ लगा था, परन्तु बंद नहीं था। मैं समझी कि मीरा कहीं गई है, परन्तु भूल से ताला खुला रह गया है। भीतर गई तो मेरी खाट पर इस लिफाफे में यह चिट्ठी और उस पर चाबी रखी थी। चिट्ठी पर मेरा नाम था। लिखावट मीरा की थी। पढ़ने पर सब बात विदित हो गई। मैं समझती हूँ कि अब तक विवाह हो चुका होगा और भगवान जाने वह कहाँ होगी। लाहौर में भी होगी या नहीं, कौन जानता है? इससे अब मेरे करने को कुछ नहीं रहा। मेरा तो जन्म व्यर्थ गया। जीवन के प्रारम्भ में ही विधवा हो गई। केवल इस लड़की के पालन-पोषण और इसे सुखी बनाने में लगी थी। वह कार्य भी समाप्त हुआ। अब जीवन में करने को कुछ नहीं रहा। सब-कुछ समाप्त हो गया।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदन, जो अभी तक चुप था, धीरे से बोला, ''प्रश्न तो यह है कि अब उसके साथ मेल-मिलाप रखना चाहिए अथवा नहीं?''

''बिल्कुल नहीं।'' मदन की माँ ने कहा।

सेठ साहब ने उसके उत्तर का संशोधन करते हुए कहा, ''इस विषय पर शांतचित्त होकर विचार करेंगे।''

''मेरे लिए तो वह मर गई और उसे मुझे मरा समझ लेना चाहिए।'' मीरा की माँ ने धीरे से कहा।

''मरे हुओं का पुनर्जन्म भी तो हो सकता है, बहन!'' सेठजी ने सांत्वना देने के विचार से कहा, ''हमें भगवान की उपासना करनी चाहिए और उसी से इस अंधकार में प्रकाश देने की याचना करनी चाहिए।''

:: 5 ::

मदन का विचार था कि यदि श्रीकान्ता मीरा को समझाए तो ठीक रहेगा। वह स्वयं तो समझा कर हार चुका था। अत: वह मन में एक योजना बना प्रात:काल ही श्रीकान्ता के घर पहुँच गया। मकान के दरवाज़े पर पहुँचा तो चपरासी ने घंटी बजा दी। नौकरानी बाहर आई और मदन से उसका नाम पूछ भीतर चली गई। मदन का विचार था कि अब श्रीकान्ता आएगी, परन्तु वही नौकरानी आई और मदन को श्रीनाथ के कमरे में ले गई। वह उससे मिलने नहीं आया था और न ही उसे बताना चाहता था कि किस काम से आया है। इससे कुछ संकोच में पड़ गया। उसे आया देख श्रीनाथ उसे बैठने के कमरे में ले गया। वहाँ उसे बैठाया और पूछा, ''चाय पीजिएगा या दूध?''

''कुछ नहीं।''

''वाह, यह कैसे हो सकता है? हम लोग तो प्रात: दूध पीते हैं। यदि आपको आपत्ति न हो तो आपके लिए भी दूध मँगवा लूँ।''

''मैं दूध तो घर से पीकर आया हूँ।''

''अब तो आपको यहाँ आने से पहले यह विचार करके ही आना चाहिए कि यहाँ अवश्य कुछ खाना पड़ा करेगा।''

'अब तो' शब्द पर विशेष बल था जिससे मदन को स्मरण हो आया कि उसकी इस घर में सगाई हो चुकी है और ये लोग उसकी आवभगत करना कर्त्तव्य माना करेंगे। इससे वह हँस पड़ा और बोला, ''ओह! याद आ गया। आपकी भेजी गई मिठाई ही तो खाकर आया हूँ।''

तभी निर्मला हाथ में दूध का गिलास और मिठाई से भरी तश्तरी लिये हुए बैठक में आई। उसने मदन का कहा सुन लिया था। 'याद आ गया' सुनकर उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसी आ गई। वह बोली, ''तो क्या आप भूल गए थे कि आप यहाँ के एक पूज्य व्यक्ति बन गए हैं?''

''हाँ, भाभी! बिलकुल भूल गया था। कुछ....।'' आगे कहते-कहते रुक गया।

''कुछ क्या! लीजिए ज़रा इसे खा लीजिए, फिर आपकी स्मरण-शक्ति को तीव्र करने का कुछ उपाय करना पड़ेगा।'' निर्मला ने चुटकी ली।

'क्या उपाय करिएगा?'' मदन ने कुछ लज्जित होकर पूछा।

''पिताजी बताते थे कि विवाह के समय हमारी मौसीजी ने उनकी पीठ में इतने जोर से सुई चुभोई थी कि वे आजन्म याद रखेंगे कि उनका विवाह मौसी जी की बहन से हुआ है।''

श्रीनाथ और मदन हँसने लगे। हँसते हुए मदन ने कहा, ''मैं वचन देता हूँ कि बिना सुई चुभोये ही याद रखूँगा।''

''पर हम लोग तो केवल कहने का विश्वास नहीं कर सकते। बहनजी के जीवन-भर का प्रश्न है। छोटी-मोटी बात हो तो मान भी जाएँ।''

''नहीं भाभी! क्षमा माँगता हूँ कि फिर कभी विस्मरण नहीं करूँगा।''

मदन ने इच्छा न रखते हुए भी दूध पिया और मिठाई खाई। जब खा-पी चुका तो निर्मला ने कहा, ''माताजी पूजा कर रही हैं। अभी आएँगी।''

इस पर मदन ने कह दिया, ''पर मैं तो माताजी की सुपुत्री से मिलने आया हूँ।''

''अरे राम!'' निर्मला ने मुख लम्बा कर मुस्कराते हुए कहा, ''भला यह कोई बात है? मदन भैया! हमारे यहाँ विवाह के पूर्व भावी वर-वधू के मिलने का रिवाज नहीं है।''

''क्यों?''

''यह मैं नहीं जानती। अपने पिताजी अथवा बड़े वकील साहब से मिलकर पूछ लेना। एक धर्म-व्यवस्था बताएँगे और दूसरे कानूनी आपत्ति।''

मदन निर्मला के उत्तर से मुस्कराया तो, परन्तु मन-ही-मन क्षुब्ध भी हुआ। वह श्रीकान्ता से मिलकर मीरा के विषय में कुछ कहना चाहता था। इससे बोला, ''अच्छी बात है, तो मैं चलता हूँ। कॉलेज जाकर उससे मिल लूँगा।''

श्रीनाथ हँस पड़ा। तभी श्रीनाथ की माता वहाँ आ गई और मदन के श्रीकान्ता से मिलने की बात सुनकर भी उसे अनसुनी कर बैठ गई और पूछने लगी—''सुनाइए, माताजी प्रसन्न हैं? पिताजी नाराज़ तो नहीं?''

''नाराज़ क्यों होंगे।''

''उनसे बिना पूछे ही जो सब-कुछ हमने कर लिया है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''पर माताजी तो बिना पिताजी से राय किए कुछ नहीं करतीं।''

''तो वे उनकी अनुमति से ही आई थीं?''

''बिलकुल। पिताजी ने ही कहा था कि आप लोगों के हमारे यहाँ जाने से पूर्व ही माताजी को यहाँ आना चाहिए।''

''तो हमें उनका अत्यंत आभार मानना चाहिए?''

''यह तो मैं नहीं जानता। मुझे तो यह मालूम है कि आपकी भेजी मिठाई स्वादिष्ट थी।''

श्रीकान्ता की माँ ने मुस्कराते हुए कहा, ''अब एक-दो दिन में हम लोग आपकी माताजी से मिलने आएँगे ताकि विवाह की तिथि का निश्चय हो जाए। हमारा विचार है कि विवाह में अब अधिक देर नहीं होनी चाहिए। श्रीकान्ता ने कॉलेज जाना छोड़ दिया है और उसके पिताजी का कहना है कि शीघ्र ही उसे घर का काम-काज जानने में लग जाना चाहिए।''

''कॉलेज छोड़ दिया है? क्यों?'' मदन ने अचम्भे में पूछा।

''काफी पढ़ ली है। यदि विवाह न करना होता, तब तो उसका पढ़ना यथार्थ था। विवाह से तो जीवन का कार्यक्रम ही बदल जाता है और बी.ए. और एम.ए. की यह परीक्षा उस कार्यक्रम में क्या सहायता कर सकेगी?''

इधर मदन समझ गया कि अब श्रीकान्ता से मिल सकने की आशा नहीं। इससे वह स्वयं ही मीरा से मिलने की योजना बनाने लगा।

ज्यों-त्यों कर ससुराल से छुट्टी पा वह घर पहुँचा। माँ से कह एक टोकरी में बहुत-सी मिठाई और फल ले, अपनी गाड़ी में सवार हो वह कम्यूनिस्ट पार्टी के कार्यालय में जा पहुँचा। कार्यालय में न तो मीरा आई थी और न ही मुहम्मद असलम। यह पूछने पर कि वे कहाँ मिलेंगे, एक कर्मचारी ने बताया, ''रात तो वे फ़्लैटीज़ होटल में ठहरे थे और वहाँ ही उन्होंने मित्र-मंडली को दावत दी थी।''

अत: मदन फ़्लैटीज़ होटल में जा पहुँचा। वहाँ उसे मालूम हुआ कि मीरा और असलम रात-भर वहीं रहे थे किंतु प्रात:काल बम्बई के लिए विदा हो चुके हैं। किंतु गाड़ी छूटने का समय हो चुका था। अत: मदन निराश हो घर लौट आया। अब उसके करने को कुछ नहीं रह गया था।

कई दिन बाद पता मिला कि मीरा और असलम भारतवर्ष के दौरे पर हैं और एक मास तक लौटेंगे।

:: 6 ::

खुशीराम को पूरी आशा थी कि श्रीनाथ उसके विवाह के लिए लड़की का प्रबंध कर देगा। लड़की बेचने वाला वह सिख जिसका नाम मझेलसिंह था, कई बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीनाथ से मिलने आया। लेकिन जिस कारण बात तय नहीं होने पाती थी, वह था रुपया देने का समय और विधि। मझेलसिंह कहता था कि सब रुपया पहले दे दिया जाए और लड़की पीछे मिलेगी। श्रीनाथ कहता था कि लड़की दी जाए और रुपया लिया जाए। जब मझेलसिंह यह मान गया तो श्रीनाथ ने यह भी बता दिया कि यदि लड़की किसी प्रकार से भी अंगहीन हुई तो सौदा टूट गया समझा जाएगा। इस पर मझेलसिंह ने कहा, ''यह तो है ही। दाम एक हज़ार होगा और लड़की चांद की भाँति सुंदर होगी।''

''एक हज़ार?'' श्रीनाथ ने अचम्भा प्रकट करते हुए कहा। फिर कुछ सोचकर कहा, ''खुशीराम तो पाँच सौ कहता था।''

''यह सत्य है; परन्तु अब इतने दिन से घर जो रखा हुआ है। उस पर खर्चा हो रहा है या नहीं? जितनी देर करते जाएँगे, दाम बढ़ते जाएँगे।''

''पर देर तो आप कर रहे हैं। लेकिन चलिए, यदि आप लड़की ले आवें और वह वैसी ही सुंदर निकली, जितनी आप कहते हैं तो एक हज़ार ही दे देंगे।''

समझौता हो गया। रविवार के दिन सायंकाल सात बजे लड़की देकर रुपया प्राप्त करने का समय निश्चय हुआ। श्रीनाथ का छापाखाना उस दिन बंद रहता था। साढ़े छह बजे श्रीनाथ, खुशीराम तथा एक और आदमी जिसकी दाढ़ी-मूँछ पारसी ढंग की थीं, छापेखाने में आए और कार्यालय में चले गए। कार्यालय के पीछे एक कमरे में कुछ लोग पहले ही उपस्थित थे। वह दाढ़ी वाला आदमी कार्यालय और आस-पास के कमरों और छापेखाने में आने-जाने के सब मार्गों का निरीक्षण कर और संतोष अनुभव कर श्रीनाथ के पास आकर बैठ गया।

ठीक सात बजे मझेलसिंह अकेला आया और छापेखाने को बिलकुल खाली देख कार्यालय में चला आया। वहाँ एक नए आदमी को बैठा देख पहले तो कुछ घबराया परन्तु श्रीनाथ के परिचय कराने पर कि 'ये बम्बई के सेठ मिस्टर बाटलीवाला हैं और फिल्म कम्पनी के लिए लड़कियाँ ढूँढने निकले हैं', चुप कर गया। मझेलसिंह ने कहा कि यदि सेठ साहब उसे अपना एजेंट बना लें तो वह कश्मीर से एक-से-एक बढ़िया लड़की लाकर दे सकता है। सेठ ने कहा, ''यही देखने के लिए बाबू श्रीनाथ ने मुझे कहा है। हम कोई हौसले वाला आदमी चाहते हैं।''

इस पर श्रीनाथ ने पूछा, ''आप लड़की नहीं लाए?''

''अभी आती है। आप रुपया तो अभी देंगे न?''

''फौरन।'' श्रीनाथ का उत्तर था।

''नकद?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हाँ बिलकुल। दस-दस के नोटों में।''

इससे मझेलसिंह अति प्रसन्न हो छापेखाने के बाहर गया और तुरंत ही एक और आदमी के साथ चादर में लिपटी हुई एक औरत को साथ ले भीतर आया।

श्रीनाथ ने उठकर उन्हें सामने रखे सोफे पर बैठने को कहा और बहुत प्रसन्नता प्रकट करते हुए बोला, ''हाँ, तो दिखाइए।''

चादर में लिपटी औरत ने खुशीराम को घूँघट में से देखकर पहचान लिया। श्रीनाथ के 'दिखाइए' कहते ही उसने घूंघट उतार श्रीनाथ की ओर अपना मुख कर कातर स्वर में कहा, ''बाबू! अब मुझे छुड़ा लो। मैं बहुत दुखी हूँ।''

खुशीराम ने लड़की को पहचान लिया। सचमुच यह वही लड़की थी, जिसे भगाकर वह दिल्ली ले गया था। उसने उसे देखकर कहा, ''मुझे यही आशा थी!'' फिर वह उठकर लड़की को पकड़ने के लिए आगे बढ़ा, परन्तु मझेलसिंह ने बीच में बाँह अड़ा कर उसे आगे बढ़ने से रोक दिया और बोला, ''पहले रुपया लाओ। बहुत खर्चा और मेहनत कर इसे लाया हूँ।''

श्रीनाथ ने कहा, ''हाँ, हाँ, वास्तव में यह लड़की इतने दाम की है।'' और उसने नोटों का एक बंडल जेब से निकालकर मझेलसिंह को देते हुए कहा, ''गिन लो।''

मझेलसिंह ने नोट गिनना आरम्भ किया तो अपना बढ़ा हाथ भी एक तरफ कर लिया और इस प्रकार उसने लड़की को खुशीराम के पास चले जाने दिया। खुशीराम ने देखा कि लड़की की आँखें आँसुओं से भरी हुई हैं और वह खुशीराम के पीछे ऐसे आकर खड़ी हो गई, मानो उसे फिर पकड़कर ले जाने का डर लग रहा हो। खुशीराम ने उसे कहा, ''घबराओ नहीं। अब कोई डर नहीं है।''

मझेलसिंह ने रुपया गिना और अपने साथी को दे दिया। पश्चात् श्रीनाथ के मित्र सेठ बाटलीवाला से बोला, ''अब आप फरमाइए।''

''हमारे दफ़्तर में आओ तो हम तुम लोगों को नौकरी भी देगा और अच्छा काम करेगा तो फिर इनाम भी देगा।''

''कहाँ है आपका दफ़्तर?''

''इस वक्त हम तीस माल रोड पर ठहरा है। कल शाम को छह बजे वहाँ आओ तो हम तुम लोगों को नौकर रख लेगा।''

''अच्छी बात है।'' मझेलसिंह ने उठकर सेठ से मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया। सेठ ने भी उठकर हाथ मिलाया और हाथ मिलाए हुए दोनों कार्यालय से बाहर निकले। उनके पीछे-पीछे श्रीनाथ और वह आदमी था, जिसने रुपये लेकर कपड़े में बाँध, अपनी जेब में रख लिये थे। ये लोग अभी कार्यालय से निकलकर छापेखाने के हॉल में ही खड़े थे कि बाहर से मोटर के हॉर्न की ध्वनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई। मझेलसिंह ने सेठ से कहा, ''अब हमें जल्दी है। हम कल मिलेंगे।'' इतना कह मझेलसिंह ने जोर से हाथ मिलाया और विदा माँगी।

मझेलसिंह के साथ आए हुए आदमी के मुख पर भी बेचैनी दिखाई दी और वह मझेलसिंह के पीछे से निकल दरवाज़े की तरफ लपका। परन्तु श्रीनाथ भी सजग था। इससे पहले कि वह बच निकलता श्रीनाथ ने अपनी दोनों भुजाओं में उसको पकड़ लिया। तभी एक सब-इंस्पैक्टर पुलिस और एक दर्जन सिपाही, जो कार्यालय की कोठरी में छुपे बैठे थे, फुर्ती से बाहर निकल आए और दोनों बरदाफरोशों को घेरकर खड़े हो गए। इस समय तक सेठ ने अपना पिस्तौल निकाल मझेलसिंह की छाती की ओर तान दिया था।

वह टैक्सी, जिसमें वे दोनों लड़की को लाए थे, छापेखाने के बाहर खड़ी थी। लड़की और दोनों लड़की बेचने वालों को भीतर जाते देख दो सफेद-पोश छापेखाने के दरवाज़े पर आकर खड़े हो गए थे। सफेद-पोश ने टैक्सी का नम्बर लिख लिया था। जब भीतर गए लोग कार्यालय से उठ छापेखाने के हॉल में आए थे तो बाहर खड़े सफेद-पोशों ने छापेखाने का फाटक बंद कर दिया था, जिससे यदि कोई भीतर से भागकर आए तो बाहर न निकल सके। यह देख टैक्सी वालों ने भौंपू बजाया था, जिसे सुन मझेलसिंह और उसके साथी को संदेह हो गया था। इस पर भी वे भाग नहीं सके। टैक्सी वाले तो टैक्सी लेकर भाग गए, परन्तु मझेलसिंह और उसके साथी पकड़े गए।

सेठ बाटलीवाला वास्तव में खुफिया पुलिस का अफसर था और नकली दाढ़ी-मूँछ लगाए हुए था। कैदी पकड़कर पुनः कार्यालय में लाए गए। नगर का सिटी मैजिस्ट्रेट भी कार्यालय के पिछले कमरे में बैठा था। वह भी कार्यालय में आ गया। उसके सम्मुख मझेलसिंह के साथी की तलाशी ली गई और उसकी जेब से एक सहस्त्र रुपये के नोट निकले, जिनकी पीठ पर सिटी-मैजिस्ट्रेट के हस्ताक्षर थे।

वे नोट पुलिस ने अपने अधिकार में कर लिये। पश्चात् श्रीनाथ के और खुशीराम के बयान लिख लिये। अंत में उस लड़की के बयान हुए जिसे बेचने के लिए मझेलसिंह लाया था। उसने बताया, ''मेरा नाम रहीमन है। मेरा बाप खान साहब अब्दुल मजीद, जो पैसा अखबार बाज़ार में रहते हैं, का मोटर ड्राइवर था। कहते हैं कि मैं अभी माँ की गोद में ही थी, जब मेरी माँ मर गई और खान साहब की स्त्री ने मुझे पाला। जब मेरा बाप भी मर गया तो मैं खान साहब के घर की नौकरानी बन रहने लगी। खान साहब की लड़की खदीजा औरतों के कॉलेज में पढ़ाती है।

''अम्मीजान और खदीजा बहन दोनों मुझे बहुत पीटती थीं और मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमेशा यह सोचती रहती थी कि मेरी शादी होगी तो मैं मार से बच जाऊँगी। मेरी शादी का फैसला हुआ और मेरे लिए मामूजान का रसोइया, करीम काना खाविन्द चुना गया। उसकी एक बीवी पहले है और वह उसे खूब पीटता है। इससे मारपीट के डर के मारे मैं इनके (खुशीराम की ओर संकेत कर बोली) साथ भाग निकली। दिल्ली में मेरे साथ निकाह पढ़ाने के लिए जब ये मुल्ला ढूँढने गए हुए थे तो इनकी गैर-हाजिरी में यह लहनू, जो मझेलसिंह का साथी है, आया और मुझसे बोला कि बाबू साहब मुझे बुलाते हैं। मैं इस पर यकीन कर इसके साथ चली गई। यह मुझे मोटर गाड़ी में बैठाकर दिल्ली के किसी मुहल्ले के एक मकान में ले गया। जब ये बाबू साहब वहाँ नहीं मिले तो मैं इससे पूछने लगी। इस पर इसने मेरे मुख पर बड़े जोर का चाँटा लगाया। मैं हैरान हो इसका मुख देखती रह गई। इस पर इसने मुझे एक-दो घूँसे मारे। मैं चक्कर खाकर फर्श पर बैठ गई।

"इसके बाद इसने कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया और मेरे साथ बदफेली (व्यभिचार) की। इसके बाद मझेलसिंह आया तो उसने भी मुझसे बदफेली की।

"इस तरह दिन के बाद दिन बीतने लगे। फिर एक दिन मझेलसिंह ने कहा कि मेरा विवाह कर देगा। मैंने उसे कहा कि जिस बाबू से मुझे चुराकर लाए हो, अगर उसी से मेरी शादी कर दो तो मैं अपने साथ की गई बदसलूकी किसी से नहीं कहूँगी। नहीं तो जब भी मुझे मौका मिलेगा, मैं उसकी शिकायत करूँगी। इस पर ये दोनों मुझे लाहौर ले आए और हर रोज कहते थे कि वे इन बाबूजी की खोज कर रहे हैं। आखिर आज पाँच बजे के बाद ये दोनों आए बोले कि उन्होंने मेरे बाबू को ढूँढ निकाला है। मुझे स्नान कर कपड़े पहनने को कहा गया। जब मैं तैयार हो गई तो मुझे चादर में, सिर से पाँव तक, लपेटने के बाद मुझे मोटर में बैठा, यहाँ ले आए। मेरे सामने इन बाबूजी (श्रीनाथ की ओर संकेत कर बोली) ने नोट मझेलसिंह को दिए और मझेलसिंह ने लहनू को दिए थे। वे यही रुपये थे, जो लहनू की जेब से निकले हैं।"

:: 7 ::

श्रीनाथ के कहने पर खान साहब अब्दुल मजीद को बुलाने के लिए दो पुलिस कॉन्स्टेबल भेजे गए और रहीमन को, उसकी पूर्ण कहानी बताकर उनके हवाले कर दिया गया। खान साहब ने जब श्रीनाथ के रहीमन को छुड़ाने के प्रयत्न की कहानी सुनी तो बहुत आभार प्रकट करते हुए बोले, "यह लड़की बदकार और बेवकूफ तो थी। हम अच्छी तरह जानते थे कि ज़रूर यह अपनी मर्जी से भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई है। मगर क्या करें, इसकी रखवाली का फर्ज मुझ पर आन पड़ा है। खैर, आपका निहायत मशकूर हूँ।''

जाने से पूर्व खुशीराम ने अवसर पाकर रहीमन से पूछा, ''तो अब तुमसे मुलाकात हो सकेगी क्या?''

''क्या अब भी मुझसे शादी करोगे?''

''क्यों, क्या हुआ है तुम्हें? देखो मैं तुमसे अजहद मुहब्बत करता हूँ।''

''तो खान साहब से मिलना। मैं समझती हूँ कि मैं उन्हें राजी कर लूँगी।''

जब सब लोग चले गए तो खुशीराम ने श्रीनाथ को रहीमन की बात बताई। श्रीनाथ ने पूछा, ''तो तुम खान साहब से मिलने जाओगे?''

''विचार तो है।''

''मैं समझता हूँ कि वे तुम्हें मुसलमान हो जाने के लिए कहेंगे।''

''मैं हिन्दू-मुसलमान में कोई भेद नहीं मानता।''

''बिल्कुल ठीक है! परन्तु इस पर भी तुम मुसलमान बनोगे?''

''अगर वे लोग मूर्ख हैं तो मैं उनसे झगड़ा करना मूर्खता मानता हूँ। उनको अपनी इच्छा पूरी कर लेने देना ही बुद्धिमत्ता है। मैं इस लड़की से प्रेम करता हूँ। आपने तो देखा है कि वह कितनी सुंदर है।''

''अच्छी बात है। जैसा मन आए करो; परन्तु प्रत्येक वस्तु का अपना-अपना मूल्य होता है। मैं समझता हूँ कि हिन्दू जाति में जन्म पुण्यकर्मों से मिलता है और वह किसी भी कीमत पर बेचा नहीं जाना चाहिए।''

''मेरे मन में हिन्दूपन का कुछ भी मूल्य नहीं। क्षमा करें बाबू जी! मैं आपसे झगड़ा करना नहीं चाहता। आपने मुझ पर बहुत भारी अहसान किया है, जिससे आज पुनः मुझे इस लड़की को पा सकने की आशा बँध रही है। परन्तु जहाँ तक हिन्दूपन का सम्बन्ध है, मैं इससे घृणा करता हूँ। यह तो पूँजीपतियों, धोखेबाज ब्राह्मणों और मानव-रक्त के प्यासे बनियों का एक समूह है।''

श्रीनाथ उत्तर में अधिक कुछ बोले बिना उठ पड़ा और खुशीराम भी चलने को तैयार हो गया। श्रीनाथ ने उसके साथ चलते-चलते केवल एक बात कही, ''खुशीराम! मैंने तुम्हारे साथ कोई बुरा व्यवहार किया है कभी?''

''नहीं, बाबू जी!''

''मैं भी एक हिन्दू हूँ।''

''आपकी बात विलक्षण प्रतीत होती है।''

''भगवान करे तुम में देखने की शक्ति आए और तुम हिन्दूपन के तत्व को समझ सको।''

इस समय दोनों छापेखाने से बाहर आ चुके थे। खुशीराम यह सोचता हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि अगले दिन खान साहब से मिलकर क्या-क्या और किस प्रकार कहेगा, घर की ओर चल पड़ा और श्रीनाथ अपनी मोटर में सवार हो अपने घर जा पहुँचा।

श्रीनाथ घर पहुँचा तो बहुत दुखी प्रतीत होता था। उसके पिता ने उसकी इस दशा का कारण पूछा। श्रीनाथ ने उस दिन की घटना का पूर्ण विवरण बतलाया तो वे बोले, "खुशीराम बहुत सीमा तक ठीक ही कहता है। हिन्दू जन्म को कलंकित करने वालों की संख्या कम नहीं है, श्रीनाथ!"

"परन्तु हिन्दुत्व तो निंदनीय नहीं है, पिताजी?"

"ठीक है। किंतु अपने को हिन्दू कहने वाले तो प्राय: निंदनीय ही हैं। देखो श्रीनाथ! पेड़ फल से जाना जाता है। इस समय हिन्दू समाज-रूपी पेड़ पर जो फल लग रहे हैं, उनसे इस पेड़ को आम का पेड़ नहीं कहा जा सकता। किसी समय इस पर मीठे फल लगते रहे हैं, इससे हमें आशा है कि इसका रोग दूर होने पर इसमें फिर मीठे फल लगेंगे। देखते नहीं हो मीरा ने क्या कर लिया है। उसने तो विधिपूर्वक विवाह भी नहीं किया।"

:: 8 ::

ललिता के विवाह के पश्चात् तो आत्मादेवी पूर्ण रूप से मधुर के घर रहने लगी थी और खुशीराम अब मकान में अकेला रहता था। अतएव जब खुशीराम निकाह पढ़ाकर रहीमन को घर लाया तो उससे पूछताछ करने वाला कोई नहीं था। खान अब्दुल मजीद निकाह के पश्चात् रहीमन को खुशीराम के घर छोड़ने आया। उसे वहाँ पहुँचा कर वापस जाने से पहले उसे आखिरी मशविरा देते हुए बोला, "देखो रहीमन! तुम्हारे कहने के मुताबिक हमने तुम्हारी शादी कर दी है। अब तुम अपने ईमान की, अपने खाविंद के ईमान की और अपनी होने वाली औलाद के ईमान की खुद जिम्मेदार हो। हर इसांन को मरना है और मरने के बाद ऐमालों की परवरदिगार के सामने जवाबदेही करनी होती है। खुदा के दरबार में तुमको राहत मिले, हमारी यही आरजू है।"

इतना कह रहीमन और खुशीराम के सिर पर हाथ फेर खान नीचे उतर गया। इस शुभ कामना और आशीर्वाद को सुन रहीमन खिलखिलाकर हँस पड़ी।

खुशीराम ने अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा, "बहुत खुश हो प्रिये?"

"हाँ, लेकिन क्यों? जानते हैं आप?"

"क्यों?"

"इस फरेबी बूढ़े के धोखे और जाल से बच निकलने पर।"

"और मेरे साथ शादी की खुशी नहीं है क्या?"

रहीमन विचार में पड़ गई। उसका मुख कुछ मलिन हो गया और आँखें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुक गई। खुशीराम उसके मुख की मलिनता देख यह समझा कि रहीमन को उससे मुहब्बत नहीं है। केवल खान अब्दुल मजीद के पंजे से छूटने के लिए ही उसने उससे शादी की है। इससे उसका मन फीका हो गया और वह बोला, ''देखो रहीमन! मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ।''

''मझेलसिंह और लहनू भी ऐसा ही कहते थे।''

''पर मैं तुमसे बलात्कार नहीं कर रहा।''

''तुम पढ़े-लिखे हो और वे गँवार थे। इसी से फर्क है।''

''तो यह कम फर्क है क्या?''

''देखो बाबूजी! जब से मैंने होश सम्भाली है, मैं मार खाते-खाते पली हूँ। मुझे कोई दिन याद नहीं, जबकि मैंने अम्मी या अब्बाजान से नहीं तो खदीजा बहन से मार न खाई हो। उस दिन जब मैं मझेलसिंह के शिकंजे से छूट खान साहब के घर आई तो मालूम है क्या हुआ?''

''क्या हुआ।''

''अम्मीजान ने छड़ी लेकर मुझे खूब पीटा और कहा कि मुझ बदकार को वे मार डालेंगी। घर में किसी ने मुझे छुड़ाने का यत्न नहीं किया। खदीजा आपा खड़ी-खड़ी देखती रहीं। जब पीटते-पीटते अम्मी थक गईं तो खदीजा आपा ने कहा, 'उठो! इधर आओ।'

''मैं चुपचाप मार खा रही थी और चुपचाप ही उठकर खदीजा आपा के पीछे-पीछे उसके कमरे में जा पहुँची। उसने पूछा, 'तुम्हें मार खाते हुए दर्द नहीं होता?'

''मैं चुप थी। मुझे जवाब देने की आदत नहीं थी। इस पर उसने कहा, 'तुम तो जानवर से भी बद्तर मालूम होती हो। इस तरह पीटा जाए तो उसकी आँखों में भी आँसू भर आते हैं।'

''मैं मन में भरी बैठी थी। मैंने सिर्फ इतना कहा, 'आपा! आँखों में आँसू नहीं रहे अब।'

'देखो रहीमन! सच बताओ भाग क्यों गई थी?' मुझसे खदीजा आपा ने पूछा।

'मैं करीम काने से शादी नहीं करना चाहती।' मैंने कहा।

'तो यहाँ उमर-भर मार खाती रहोगी?'

'मैं उस बाबू से शादी करूँगी, जिसने मुझे छुड़ाया है।'

'क्या वह अब भी तुमसे शादी करेगा?'

'क्यों नहीं करेगा? वह कल अब्बाजान से मिलेगा।'

'सुना है, वह हिन्दू है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'फिर क्या हुआ?'

'वह मुसलमान हो जाएगा क्या?'

'मैं क्या जानूँ?'

'उसे मुसलमान होना पड़ेगा।'

'यह उसका काम है। मैं कुछ नहीं कहूँगी।' मैंने जवाब दिया।

''आज जब मैं उस घर की बातें याद करती हूँ तो हँसी आती है। वैसे तो मुझे बेवकूफ, उजड्ड और बदकार बदलाते थे, लेकिन जब शादी की बात हुई तो लगे इस्लाम की खूबियाँ बयान करने। मैं सोचती थी कि अगर इस्लाम का नमूना वे ही हैं तो बस खुदा हाफिज है।''

इस पर तो खुशीराम भी हँसने लगा। उसने पूछा, ''मगर रहीमन! इतनी अक्ल की बात तुम कहाँ से सीख गई हो?''

''मुसीबत बहुत-सी बातें सिखा देती है। जब मझेलसिंह वगैरा के पास थी तो वे मुझे बेचने की बहुत कोशिश करते थे। वे बहुत-से लोगों, जिनमें से कई रईस थे, को लाते रहे और मुझे दिखाते रहे। सब मुझे पसंद करते थे, मगर कीमत पर बात टूट जाती थी। एक दिन एक सिंधी सेठ आए। दाम सुनकर बोले, 'मैं इस लड़की से अलैहदा से बात करूँगा।' मझेलसिंह ने बात करने के बीस रुपये माँगे। सेठ ने दे दिए तो वह उसको मेरे पास छोड़ चला गया। सेठ ने मेरा नाम-पता पूछा और फिर बोला, 'क्या मैं उसके साथ बिना शादी के रहूँगी?' मैंने कहा, 'मैं किसी के साथ रहना नहीं चाहती।' इस पर उसने कहा, 'मगर तुम इस सिख के पास रहती तो हो?' मेरा जवाब था, 'मजबूरी से। मर्जी से नहीं।'

''इस पर सेठ हँस पड़ा और बोला, 'मैं अमीर आदमी हूँ। तुम्हें सुखी रखूँगा।'

''मैंने जवाब दिया, 'मैं बिकी हुई लौंडी बनना कभी मंजूर नहीं करूँगी। मैं अपनी मरजी से कभी आपके पास नहीं रहूँगी।'

''इस पर वह बोला, 'तुम बहुत समझदार लड़की हो और मैं समझता हूँ कि तुम अपनी अक्ल को इस्तेमाल करोगी तो ज़रूर इस मुसीबत से छूट जाओगी।'

''इतना कह वह चला गया, लेकिन मैं इसका मतलब समझने की कोशिश करने लगी। घंटों मैं अकेली कमरे में बैठी रहती थी और अपनी जिंदगी पर गौर करती रहती। आहिस्ता-आहिस्ता कई बातें मेरी समझ में आने लगीं। मैं समझी कि अगर ये लोग मुझे बुरी तरह न पीटते तो मैं इनके घर से भागती नहीं। फिर दिल्ली में अगर मैं आपको होटल में अकेला छोड़ जाने के लिए मजबूर न करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मैं मझेलसिंह के पंजे में भी न फँसती। जो बात मैं पसंद न करती थी, वह मुझसे हुई और मैं कुछ न कर सकी। अब मैं आपसे किसी भी सूरत में शादी करने को तैयार थी, मगर खदीजा, अम्मी और अब्बाजान का आपको मुसलमान होने पर मजबूर करना मुझे बेमायने मालूम हुआ है। वे हकीकत में मुसलमान हैं और खुदा उनके अखलाक को पसंद करता है, इसका मुझे यकीन नहीं रहा। कम-से-कम उनका मुझे रोज पीटना तो खुदा को कभी भी पसंद नहीं हो सकता। इस पर खान साहब का मुझे दुआ देना कि खुदा के दरबार में मुझे राहत मिले, मुझे मज़ाक मालूम हुआ। मैं तो समझती हूँ कि उन्हें, मुझसे ज्यादा अपनी राहत की फिक्र करनी चाहिए।''

खुशीराम सोचता था कि मुसीबत में यह अनपढ़ लड़की भी विचारक बन गई है। यद्यपि यह अपने मन की बातों का स्पष्ट वर्णन नहीं कर सकी थी तो भी यह महसूस तो करती है। इससे उसने पूछा, ''तो तुम मुझे मुसलमान होने पर मजबूर न करतीं?''

''नहीं, अब नहीं। पहले मैं समझी थी कि आपके मुसलमान होने से आप तरक्की कर जाएँगे।''

''और अब क्या समझती हो?''

''कुछ नहीं। जब आपने मेरे साथ मेरी मौजूदा हालत में भी शादी करनी मंजूर की है तो मैं समझती हूँ कि मुसलमान होने से आप में कुछ तरक्की नहीं हुई।''

''मगर मैं तो अपना नाम ही भूल गया हूँ। मुल्ला ने क्या नाम बताया था?''

''खालिद लतीफ।''

''इसके क्या अर्थ हैं?''

''मैं नहीं जानती।''

''बहुत खूब! मैं वह हूँ जिसका मतलब न तुम जानती हो और न मैं।''

आत्मादेवी और मधुर को जब पता मिला कि खुशीराम बहू लाया है तो दोनों उसकी बहू देखने आए। उस समय खुशीराम रहीमन से घुल-घुलकर बातें कर रहा था। मधुर और उसकी माँ अपने मकान की छत से कूदकर आए थे। उन्हें आया देख खुशीराम ने अपनी पत्नी को उनका परिचय दिया। रहीमन ने पर्दा कर लिया और उठकर सलामालैकुम की। मधुर यह सुनकर खिलखिलाकर हँस पड़ा। रहीमन ने चादर के आँचल से और अधिक मुख ढाँप लिया। आत्मादेवी ने कहा, ''तो मुसलमान से शादी कर ली है?''

''हाँ माँ!'' खुशीराम ने कहा।

''तो तुम्हारा निकाह पढ़ा गया है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हाँ।''

''तुमने मुझे बताया तक नहीं।''

''माँ को पुत्र की कभी चिंता भी तो नहीं हुई।''

मधुर ने खुशीराम की पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, ''शाबाश, तुम अब समझदार हो रहे हो। प्रकृति का यही नियम है। मनुष्य को छोड़ बाकी जीव-जंतु भी तो अपनी शादी करने से पूर्व अपने बड़ों से राय करने नहीं जाते।''

खुशीराम ने उनको बैठाया और फिर रहीमन को छोड़ने के समय खान साहब जो थोड़ी-बहुत मिठाई दे गए थे, उसे तश्तरी में लगाकर मधुर और माँ के सम्मुख रख दीं।

मधुर ने एक टुकड़ा उठाया और खा लिया। आत्मादेवी अभी भी प्रसन्न नहीं हुई थी। इससे उसने मिठाई खाने के स्थान रहीमन को समीप बैठाकर कहा, ''ज़रा मुँह तो दिखाओ।''

रहीमन ने मुख पर लपेटी चादर को और जोर से पकड़ लिया और मुख दूसरी तरफ को फेर लिया। मधुर ने कहा, ''शर्माती है।''

आत्मादेवी ने कहा, ''मगर जानवर तो शर्म नहीं करते।''

''इसी से तो कहता हूँ कि खुशीराम इससे अधिक प्रकृति के समीप है।''

आत्मादेवी ने मुख देखने के लिए एक दूसरी तरह का यत्न किया। उसने कहा, ''मुझे तो ऐसा लगता है कि मुख कुरूप है, इसलिए छुपा रखा है। भला सुंदर वस्तु को भी कोई छुपाता है?''

मधुर आत्मादेवी के भाव को समझ गया और उसकी बात की पुष्टि करने लिए बोला, ''शायद एक आँख नहीं है।''

खुशीराम हँस पड़ा और रहीमन को सम्बोधन कर बोला, ''वाह! तो क्या मैं इतना मूर्ख हूँ कि कानी बहू ले आता?''

''मूर्ख नहीं हो तो दयालु तो हो सकते हो।'' मधुर ने कहा।

''नहीं जी, दोनों बातें नहीं हैं। रहीमन! दिखा दो न मुख। ये माँ हैं और ये चाचा जी। इनके सामने मुझे मूर्ख न बनाओ।''

रहीमन ने अपना हाथ बढ़ा दिया। इसका अर्थ आत्मादेवी ने समझा। वह बोली, ''ठीक तो कहती है। मुख दिखाई कुछ दो न।''

मधुर ने पूछा, ''क्या दूँ?''

''श्वसुर लगते हो। सोने की अँगूठी से कम क्या दोगे।''

मधुर ने अपने बाएँ हाथ की उंगली से अँगूठी निकाल रहीमन की उंगली पर चढ़ा दी और कहा, ''लो बाबा! अब तो नकाब उठाओ।''

रहीमन ने अँगूठी देखी और फिर चादर के छोर को कुछ ऊँचा कर दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे दोनों आँखें और नाक ही दिखाई दी। मधुर ने कहा, ''बहू कानी तो नहीं है। दोनों आँखें खूब बड़ी-बड़ी हैं।''

आत्मादेवी ने कहा, ''नाक भी अच्छी सुंदर दिखाई देती है।'' इतना कह उसने उसकी चादर को कुछ थोड़ा और ऊँचा कर दिया।

इस पर मधुर ने कहा, ''अब तो कुछ-कुछ होंठ भी दिखाई दिए हैं।''

''तो वे सुंदर नहीं हैं क्या?'' खुशीराम ने पूछा।

मधुर अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ और आत्मादेवी को बधाई देते हुए बोला, ''बहुत सुंदर बहू मिली है खुशी की माँ! बहुत-बहुत बधाई हो।''

मधुर ने जाने से पूर्व कहा, ''मैं तो जा रहा हूँ। मुझे तो कुछ लिखने का कार्य करना है। बहू से बातें कर जब तुम्हारा मन भर जाए, तो चली आना।''

मधुर के जाने पर रहीमन ने घूँघट और ऊँचा कर दिया और अपनी सास की तरफ देखा। सास ने कहा, ''खुशी! देखने में तो सुंदर है, परन्तु विचार की कैसी है?''

''माँ! विचार तो पीछे देख लूँगा। अभी इतनी जल्दी क्या है? इतना मैं कह देना चाहता हूँ कि मैं बहुत खुश हूँ।''

''तुम मुसलमान हो गए हो?''

''एक विचार से, हाँ।''

''किस विचार से?''

''जिनके घर में यह रहती थी, उन्होंने मुसलमान बनने पर विवश किया और मैं हो गया। वास्तव में मैं जैसे पहले शून्य था, वैसा ही अब भी हूँ।''

''शून्य से तुम्हारा क्या अभिप्राय है?''

''मैं किसी मजहब में विश्वास नहीं रखता।''

''और यह?'' रहीमन की ओर देखकर उसने पूछा।

''यह इसका धर्म-ईमान जाने। मुझसे इस बात का सम्बन्ध नहीं है।''

आत्मादेवी इस समय तक मधुर के सिद्धांतों को समझने लगी थी और उसे खुशीराम के धर्म और सम्प्रदाय से सम्बन्ध न रखने से सुख हुआ।

:: 9 ::

मीरा जब देश-भर के भ्रमण से लौटकर आई तो उसे यह ज्ञात हुआ कि उसके पीछे मदन उससे मिलने आया था, इससे उसे बहुत संतोष हुआ। इस पर भी वह मदन और अपनी माँ से मिलने जाने का साहस नहीं कर सकी। एक मास के असलम के साथ सहवास से उसे अनेकों नई बातों का पता चला था। इससे उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपने किए पर पश्चात्ताप तो नहीं हो रहा था किंतु उसके ठीक होने पर उसे संदेह अवश्य होने लगा था। इसलिए वह मदन से मिलने में भी संकोच करती थी। इस पर भी उसे लगा कि मदन के पूछताछ करने के बाद उसका यह कर्त्तव्य हो जाता है कि मदन को अपने लाहौर पहुँचने की सूचना दे। अतएव उसने मदन को एक पत्र लिख दिया। उसमें उसने लिखा—

"प्रिय, भैया,

माताजी को लिखी चिट्ठी आपने पढ़ ली होगी। मुझे यह पता चला है कि मेरे विवाह के अगले दिन ही आप मुझे मिलने आए थे। बधाई देने अथवा डाँटने, कह नहीं सकती। अब मैं वापस लाहौर आ गई हूँ और आशा करती हूँ कि कभी अवकाश होने पर फ़्लैटीज़ होटल में नम्बर दस में मिलने की कृपा करेंगे। तायाजी तथा ताईजी को मेरा विनम्र नमस्कार देना। माताजी को मिलने को बहुत जी करता है, परन्तु क्या जाने मेरा उनको मिलना न मिलने से अधिक दु:खकारक न हो जाए? इसी संशय में अनिश्चित अवस्था में पड़ी रहती हूँ। मैं दिन के दस बजे से दो बजे तक पार्टी के कार्यालय में रहती हूँ।"

चिट्ठी लिख लिफाफे में बंद कर होटल के 'लैटर बॉक्स' में डाल आई।

चिट्ठी लिखते समय और उसके पश्चात् अपने बचपन और कॉलेज के दिनों की बातें याद आ गईं। इससे वह गम्भीर विचार में पड़ गई।

असलम आया तो उसे इस प्रकार सोच में पड़ा देख पूछने लगा, "क्या है, मीरा रानी? आज फिर चाँद को ग्रहण लग रहा है।"

"नहीं, कुछ विशेष बात नहीं।" मीरा ने अपने स्थान से उठते हुए कहा, "आप कहीं घूमने चलिएगा?"

"कहाँ चलना चाहती हो?"

"जहाँ मैं इतनी लीन हो जाऊँ कि अपने को भूल जाऊँ।"

"अपने को भूलने की इतनी ख्वाहिशमंद क्यों हो? क्या तुमने कोई गुनाह किया है? मीरा! इस महीने में तीसरी बार मैं तुम्हें ऐसी हालत में देख रहा हूँ। मैं तो समझता था कि तुमने अपनी शादी के मुताल्लिक बहुत सोच-विचारकर कदम उठाया है।"

मीरा ने वही कहा, जो वह ऐसे अवसरों पर पहले कह चुकी थी, "इसका विवाह से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि मेरा विवाह मेरी माँ की इच्छानुकूल भी होता तो भी मेरे मन में ऐसे विचार उठते ही। प्रत्येक मनुष्य को जब अपने बचपन की बातें याद आती हैं, तो वह उनके लिए दु:ख करता ही है।"

"किसी बात का अफसोस तभी होता है, जब उससे घटिया चीज़ हासिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो रही हो। इसका मतलब साफ है कि तुम अपनी शादी-शुदा जिंदगी को अपने बचपन से घटिया समझती हो।''

''इस बात का निर्णय कठिन है। दोनों में अच्छी बातें भी हैं और बुरी भी।''

''तुम्हारे बचपन में क्या अच्छी बात रही है? एक विधवा ब्राह्मणी की लड़की, जो दूसरों के दान-दक्षिणा पर पली है, वही तो हो न? अब तुम लाहौर के सब से बढ़िया होटल में रहती हो। खाना बनाने, कपड़े धोने, सीने-पिरोने और घर के दूसरे गंदे कामों को करने की तुम्हें ज़रूरत नहीं। खाना-पहनना और सैर करना ही तुम्हारे काम रह गए हैं। फिर भी बचपन की बातें याद कर उदास रहती हो। मेरी तो समझ में तुम्हारी बात आती नहीं।''

मीरा को बचपन और अपनी माँ के विषय में घृणा से भरे शब्द सुनकर दु:ख हुआ, परन्तु मन-ही-मन पी गई। वह मन में सोचती थी कि इस भले पुरुष को न तो अपनी माँ का प्यार मिला है और न बाप का। इससे यह क्या जाने कि माँ और अन्य सम्बन्धियों के प्रति जिन्होंने कि बचपन में स्नेह दिया हो, कितना प्यार है। इस विषय में असलम की अनभिज्ञता दयनीय थी। इससे उसके घृणामय वाक्यों को सुनकर भी वह उत्तर नहीं देती थी। इसके विपरीत मुहम्मद असलम इसका अर्थ मीरा का निरुत्तर हो जाना समझता था। वह समझता था कि वास्तव में मीरा का बचपन बहुत मुसीबतों में गुज़रा है और अब वह उसे यह सब सुख-आराम पहुँचाकर उस पर अहसान कर रहा है। इससे वह दिन-प्रतिदिन अधिक कटु वाक्य कहने लगा था।

मध्याह्न पश्चात् मीरा पार्टी के कार्यालय से लौटी तो बैरा कमरे में खाना लगा गया। असलम अभी नहीं आया था। इससे वह उसके आने की प्रतीक्षा कर रही थी कि होटल का मैनेजर कमरे के बाहर आकर बोला, ''क्या मैं भीतर आ सकता हूँ?''

''हाँ।'' मीरा ने भीतर से ही उत्तर दिया। मैनेजर ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा, ''क्षमा करें, होटल का खाने का बिल प्रति सप्ताह शनिवार को अदा हो जाना चाहिए। आज तीन दिन ऊपर हो गए हैं।''

''कितना बिल है?''

''एक सौ बीस रुपये और विशेष खाने के व्यय के तीस रुपये तथा तीन दिन देरी के तीन रुपये। कुल एक सौ तेरेपन रुपये। कमरे का किराया तो महीने के अंत में लेते हैं।'' मीरा एक सप्ताह का इतना बड़ा बिल सुन चिंता अनुभव करने लगी थी कि और अभी सोच ही रही थी कि यह सब रुपया कहाँ से आएगा कि मुहम्मद असलम आ गया। मैनेजर ने सलाम कर बिल उसको दे दिया। असलम ने उसे पढ़कर जेब में ठूँसते हुए कहा, ''अभी दफ़्तर में पहुँच जाएगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैनेजर सलाम कर चला गया। मीरा ने पूछा, ''इतना भारी बिल कैसे चुकाया जाएगा?''

''तुम छोड़ो इस बात को। इस विषय में स्त्रियों को चिंता नहीं करनी चाहिए।''

मीरा गम्भीर हो गई। असलम ने उसका ध्यान दूसरी ओर फेरने के लिए कहा, ''मीरा! तुमने पार्टी के सदस्यों को निशनाथ के विवाह की दावत में शामिल होने की मनाही क्यों कर दी है?''

''इसलिए कि ललिता और निशनाथ पार्टी के सिद्धांतों से हट गए हैं। उन्होंने हवन और वेद-मंत्रों से विवाह करवा कर अपने को विगतिशील सिद्ध किया है।''

''परन्तु अभी-अभी मॉस्को से यह आदेश आया है कि हमें मजहब वालों में घुस जाना चाहिए और उनमें भीतर से अपने उसूलों की तबलीग (प्रचार) करनी चाहिए।''

''रूस के लिए यह बात ठीक हो सकती है, परन्तु हमारे देश में तो इसका परिणाम भयानक होगा। मजहबों के दुर्गों के भीतर जाकर उन्हें तोड़ने के स्थान, हमारे अपने सिद्धांत गिर जाएँगे।''

''मगर मैं तो ऐसा नहीं समझता। इसलिए मैं कुछ मुस्लिम लीगियों से मेलजोल पैदा कर रहा हूँ।''

''मुस्लिम लीग तो मजहब नहीं। यह तो राजनीतिक संस्था है न?''

''हाँ, मगर इस्लाम में राजनीति और मजहब एक ही बात के दो पहलू हैं।''

''मैं इसे पसंद नहीं करती। फिर रूस के आदेश को मैं क्यों मानूँ? मैं अपनी बुद्धि भी तो प्रयोग में ला सकती हूँ।''

''मीरा!'' असलम ने कुछ सतर्कता से कहा, ''यह पार्टी-डिसिप्लिन (दल नियंत्रण) के खिलाफ है।''

मीरा चुप हो गई। इस पर भी वह संतुष्ट नहीं हुई। उसकी समझ में यह नहीं आया कि आखिर उसका अपना भी कुछ व्यक्तित्व है अथवा नहीं? यदि है तो उसकी सीमा कहाँ तक है? कहाँ पर पहुँचकर उसका व्यक्तित्व समाज की सीमा में पहुँच जाता है।

खाना समाप्त हो गया था। असलम कुछ सुस्ताने के लिए पलंग पर लेट गया और मीरा आराम-कुर्सी पर बैठ एक उपन्यास निकाल पढ़ने लगी। असलम की आँख लग गई। मीरा को पढ़ने में आनंद नहीं आया। वह पुस्तक बंद कर उठ खड़ी हुई और सुस्ती दूर करने के लिए होटल के कमरे में इधर-उधर टहलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लगी। वह खिड़की की ओर जा रही थी कि एक गुड़मुड़ हुआ कागज़ उसके पाँव के नीचे आया। उसने झुककर कागज़ उठाया और यह देखने के लिए कि कैसा कागज़ है, उसे खोला। यह होटल का बिल था जो असलम की जेब से फर्श पर गिर पड़ा था।

इसको देखते ही उसके मन में फिर प्रश्न उठने लगा कि यह सब रुपया कहाँ से दिया जाएगा। उसे स्वयं पार्टी का काम करने पर तीस रुपया मासिक मिलता था। लगभग इतना ही असलम को मिलता था। फिर वह सोचती थी कि यदि पिछला बिल भी दिया जाए तो भविष्य में तो वे लोग वहाँ एक क्षण भी नहीं रह सकते। होटल में उनका खर्चा एक हज़ार रुपये मासिक के लगभग हो रहा था।

तभी उसके मन में विचार आया कि देखे तो सही कि उसके पति के पास इस समय बिल अदा करने को रुपये भी हैं या नहीं। इस विचार के आते ही उसने खूँटी पर टँगे असलम के कोट की जेब देखी। उसमें उसे एक चमड़े का बटुआ मिला। उसने देखा कि उसमें सौ-सौ रुपये के पंद्रह नोट रखे हैं। और एक चैक भी था जो सरकार के विज्ञापन विभाग की ओर से लिखा गया था। मीरा ने चैक पढ़ा। मुहम्मद असलम के नाम था और दस हज़ार रुपये का था। इस सब रुपये को देख मीरा को जहाँ अचम्भा हुआ, वहाँ संतोष भी। अचम्भा इस बात का था कि उसे यह विदित नहीं था कि यह रुपया कहाँ से आया है और संतोष इस बात का कि अब होटल का बिल अदा किया जा सकता था। उसने सब रुपया बटुए में रख दिया और उसको कोट की जेब में डाल पुन: अपने स्थान पर आ विचार करने लगी कि यह सब रुपया आया कहाँ से है।

देश-भ्रमण को जाने के पूर्व भी असलम के पास दो सहस्र रुपया था। मीरा के पूछने पर उसने कहा था कि उसे पूछने की आवश्यकता नहीं है। आज भी उसने यही कहा था।

आज वह मन में सोच रही थी कि उसको यह पूछने की आवश्यकता क्यों नहीं? यदि वह उसकी पत्नी है तो उसे जानने का अधिकार क्यों नहीं है? फिर यह सोचकर कि धीरे-धीरे सब मालूम हो जाएगा, वह चुप कर रही।

असलम उठा तो दोनों जने कपड़े पहन घूमने जाने को तैयार हो गए।

"किधर चलेंगे आज?" मीरा ने पूछा।

"जिधर तुम कहो।"

"मेरा विचार है कि होटल वाले का बिल चुका दिया जाए और फिर हम कहीं दूर एकान्त में चलें, जहाँ और कोई न हो।"

असलम हँस पड़ा और बोला, "हम टैक्सी भाड़े पर कर लेते हैं और शहंशाह जहांगीर के मकबरे चलते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात तय हो गई। दोनों होटल के दफ़्तर में पहुँचे, बिल अदा किया और होटल के बाहर निकल आए। होटल के बाहर टैक्सियाँ खड़ी रहती थीं। असलम ने टैक्सी वाले से सब-कुछ तय कर लिया। लेकिन अभी दोनों टैक्सी में चढ़ने के लिए आगे बढ़े ही थे कि मदन अपनी घोड़ा-गाड़ी में वहाँ पहुँच गया। मीरा उसे इतनी जल्दी आया देख प्रसन्नता से उमड़ती हुई, असलम को वहीं खड़ा छोड़, मदन की ओर लपकी। असलम उसका मुख देखता रह गया।

:: 10 ::

मदन को चिट्ठी दो बजे की डाक से मिली थी और वह उसी समय उससे मिलने चल पड़ा था। दूकान से उठ गाड़ी जुतवाई और पार्टी के कार्यालय में पहुँच गया। वहाँ से मीरा आ चुकी थी। वह होटल को चल पड़ा। मार्ग में घोड़े की नाल उखड़ गई। उसे ठीक करवाने में आधा घंटे से ऊपर लग गया। अत: चार बजे के लगभग वह 'फ़्लैटीज़' होटल में पहुँच पाया। वहाँ उसने गाड़ी एक ओर खड़ी करवाई ही थी कि मीरा भागती हुई उसके सामने आ खड़ी हुई। "मीरा!" मदन के मुख से निकल गया और वह सिर से पाँव तक उसे देखने लगा।

मीरा में केवल एक परिवर्तन दिखाई दिया था। वह था खद्दर के कपड़ों के स्थान पर उसके रेशम के कपड़े। अन्यथा वह न कोई आभूषण पहने थी न कोई अन्य शृंगार किए थी। मीरा को जब मदन ने ध्यानपूर्वक देखा तो उसका मुख कुछ मलिन प्रतीत हुआ। इससे मदन ने कुछ चिंतित भाव से पूछा, "मीरा! प्रसन्न हो?"

मीरा की मोटी-मोटी आँखें तरल हो उठीं। मदन इससे और अधिक चिंतित हुआ और पूछने लगा, "यह क्या? रोती क्यों हो मीरा?"

मीरा ने धीरे से कहा, "आइए, भीतर चलिए?"

"परन्तु तुम तो कहीं जा रही थीं न?" मदन ने असलम की ओर, जो कुछ अंतर पर उसके पीछे-पीछे आकर खड़ा हो गया था, देखा।

मीरा ने घूमकर असलम की ओर देखा। असलम समीप आ गया। मीरा ने कहा, "मदन भैया आए हैं। अब मैं घूमने नहीं जाऊँगी। टैक्सी वाले को विदा कर दीजिए।"

"बस! उदासी मिट गई? अच्छी बात, मैं तो घूमने जा रहा हूँ। तुम मदन भैया को चाय वगैरा पिलाओ।"

इतना कह असलम उन दोनों को वहीं छोड़ टैक्सी में बैठ चला गया। मदन ने असलम के मुख की विवर्णता देखी और वह तथा मीरा असलम को क्रोध में जाते देख अवाक् खड़े रह गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब असलम की टैक्सी फर्र करती हुई निकल गई तो मदन ने कहा, ''मैं समझता हूँ यह ठीक नहीं हुआ।''

''यह पहला अवसर नहीं है, भैया! मास में यह चौथी बार हुआ है।''

''तो तुम ऐसा क्यों करती हो, मीरा बहन?''

''मैंने क्या किया है? उनके साथ केवल घूमने जा रही थी। वह भी किसी निश्चित स्थान पर नहीं। किसी निश्चित और आवश्यक कार्य के लिए एक अनिश्चित और व्यर्थ का काम यदि मैंने छोड़ भी दिया, तो क्या अनर्थ हो गया? और फिर उन्होंने कहा भी तो नहीं कि मेरा उनके साथ जाना आवश्यक था।''

मदन को यह बात जानकर बहुत दुख हुआ। वह अनिश्चित मन खड़ा रहा। मीरा ने कहा, ''आइए, कमरे में चलें।''

मदन मीरा के पीछे-पीछे होटल में चला गया। वहाँ पहुँच मीरा ने पूछा, ''कुछ चाय इत्यादि लेंगे?''

''नहीं।''

''क्यों? मैं मुसलमान हो गई हूँ इसलिए?''

''तुम मुसलमान हो गई हो, मीरा! मुझे नहीं मालूम था।''

मीरा ने मुस्कराते हुए कहा, ''मैं तो नहीं हुई, परन्तु तुम लोग तो ऐसा ही समझते होगे।''

''मैं तो नहीं समझता। तभी तो तुम्हारे आने की सूचना मिलते ही मिलने चला आया हूँ।''

''और यदि तुम समझते कि मैंने इस्लाम स्वीकार कर लिया है, तब न आते क्या?''

''उस समय की बात कह नहीं सकता। शायद न आता। हाँ, यदि आता तो भी इतने उत्साह से मिलने न आता, जैसे अब आया हूँ।''

''क्या उस समय मीरा न रह जाती?''

''नहीं, उस समय मीरा न रहतीं। शायद फातिमा, असगरी या भगवान जाने क्या, बेगम होतीं।'' मदन ने मुस्कराते हुए कहा।

मीरा को इससे संतोष नहीं हुआ। उसने उत्सुकता से पूछा, ''क्या नाम बदलने से मैं भीतर से भी बदल जाती?''

''नहीं मीरा बहन, यह नहीं। नाम बदलने से भीतर नहीं बदलता। परन्तु भीतर की आत्मा बदलने से नाम बदल जाता है। नाम तो केवल भीतर का दर्पण-मात्र है।''

मीरा गम्भीर विचार में पड़ गई। फिर कुछ सोचकर बोली, ''इस पर भी मैं कुछ तो बदली ही हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हाँ, परन्तु हम लोग उस परिवर्तन से सहमत न होते हुए भी, उसके कारण तुम्हें त्याज्य नहीं मानते।''

''सच? भैया! क्या माँ और ताई जी भी ऐसा ही समझती हैं?''

''वे अपने मन के भावों का विश्लेषण नहीं कर सकतीं। इसी कारण इस विषय पर स्पष्ट नहीं हैं। साथ ही उनको अभी यह विश्वास नहीं हुआ कि तुमने इस्लाम स्वीकार नहीं किया।''

''तो आपको कैसे विश्वास हो गया है? आपको किसने बताया है कि मैं मन से मुसलमान नहीं हो गई?''

''तुम्हारे पत्र ने, मीरा!''

''मैंने पत्र में तो कोई ऐसी बात नहीं लिखी थी।''

''लिखी तो थी। तुमने माताजी तथा पिताजी को नमस्कार लिखा था। फिर तुम्हें चाची को कम-से-कम दु:खी करने का विचार तो है।''

''देखो भैया! एक बात है कि मुझे हिन्दू धर्म पर विश्वास नहीं रहा। मैं इसे आज के उन्नतिशील काल के उपर्युक्त नहीं मानती।''

मदन हँस पड़ा और बोला, ''इसका अर्थ यह हुआ कि अभी तुम हिन्दू ही हो। तुमने धर्म को समझने का यत्न और उसके विषय में बुद्धि का प्रयोग तो किया है। यही हिन्दुत्व है। यदि आज तुम उस परिणाम पर नहीं पहुँचीं, जिस पर मैं या कुछ और लोग पहुँचे हैं, तो कम-से-कम वहाँ पहुँचने का मार्ग तो खुला है। मुसलमानों की भाँति जिसने मजहब में अकल को दखल देने से मना कर दिया है, उसने तो उन्नति का मार्ग ही रोक दिया है।''

''तो यदि तुम मुझे हिन्दू ही मानते हो तो मेरे घर में जलपान क्यों नहीं करते?''

''केवल इसलिए कि हिन्दुओं में भाई, बहन के घर का जल ग्रहण नहीं कर सकता।''

''इसमें मुझे तो कुछ तत्व प्रतीत नहीं होता।''

''तुम्हें तो, मीरा! जब पूर्ण हिन्दू-धर्म की ही उपादेयता प्रतीत नहीं होती, तो इस छोटी-सी बात में क्या लाभ प्रतीत होगा?''

मीरा ने निरुत्तर हो फिर बात बदल दी। बोली, ''हम देश-भर में भ्रमणार्थ गए हुए थे। स्थान-स्थान पर पार्टी के कार्यालय बने हुए हैं और हमें पार्टी के कार्य का निरीक्षण करते हुए एक विशेष अनुभव प्राप्त हुआ है। वह यह कि देश में साम्यवाद की तो तूती बोल रही है और संसार में इसका साम्राज्य स्थापित हुए बिना नहीं रहेगा। हमारे दल का सबसे अधिक बल बम्बई में है। वहाँ दल का सबसे बड़ा कार्यालय है। लगभग सौ स्त्री-पुरुष कार्यालय में काम करते हैं। सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ही स्थान पर रहते हैं, इकट्ठे भोजन करते हैं और एक नेता के अधीन कार्य करते हैं।''

''क्या कार्य करते हैं?''

''लोगों में यह भावना उत्पन्न की जाती है कि सब मनुष्य समान हैं। इस संसार में सबको जीना है और पूर्ण संसार की विभूति सब की सांझी सम्पत्ति है।''

मदन मुस्करा दिया। मीरा ने पूछा, ''आपको विश्वास नहीं आ रहा शायद?''

''विश्वास क्यों नहीं? जब तुम कहती हो तो झूठ थोड़े ही कहोगी।''

''तो आप मुस्कराए क्यों?''

''तुम्हारे कहने का अर्थ समझ कर?''

''किस कहने का?''

''यही कि संसार की सब विभूति सब की साँझी सम्पत्ति है। 'सब' के क्या अर्थ हैं, मीरा? शेर अथवा साँप इसमें सम्मिलित हैं या नहीं? फिर चोर-डाकू 'सब' में आते हैं या नहीं? मूर्ख और गँवार, अकर्मण्य और दुष्ट भी इसमें सम्मिलित हैं या नहीं?''

मीरा इस प्रश्न से झेंपी अवश्य, इस पर भी बोली, ''नहीं? सब के अर्थों में ये लोग नहीं आते। परन्तु एक बात है कि कौन डाकू है, कौन चोर है अथवा कौन शेर है या कौन साँप है, इसका कैसे निर्णय होगा?''

''इसका निर्णय राज्य-नियम करेगा।'' मदन ने अपना विचार रखा।

''परन्तु यदि राजा स्वयं ही चोर हो तो?''

''तो राजा को पदच्युत किया जाएगा, परन्तु तुम्हारा यह सिद्धांत तो गलत हो गया न, कि पूर्ण जगत् की विभूति सबकी साँझी सम्पत्ति है। जगत् की विभूतियाँ संसार के चरित्रवान्, कर्मनिष्ठ और योग्य लोगों के लिए हैं।''

मीरा चाहती थी कि साम्यवाद के सिद्धांत को समझावे। इससे वह बोली, ''यह तो हम लोग भी चाहते हैं। परन्तु इस समय अधिकार ठगों के हाथ में चले गए हैं और चरित्र तथा योग्यता का कुछ मूल्य नहीं रहा।''

मदन ने साधारणत: कह दिया, ''इससे यह सिद्ध कैसे हो गया कि संसार की सम्पत्ति सबकी साँझी है? यदि अयोग्य व्यक्ति किसी वस्तु पर अन्याय से अधिकार पा गए हैं तो उनसे वे अधिकार छीनने चाहिए, परन्तु तुम तो अयोग्य-योग्य, चरित्रवान्-चरित्रहीन, कर्मनिष्ठ और अकर्मण्य सबको समान अधिकारी बनाना चाहती हो न?''

''मैं अपना आशय आपको समझा नहीं सकी।''

''तो फिर समझाने का यत्न करो न।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे कहने का आशय यह है कि सबको उन्नति करने का समान अवसर प्राप्त होना चाहिए।"

"इसके लिए साम्यवाद की आवश्यकता नहीं है मीरा! इसके लिए चित्त की शुद्धता, कुशाग्रता और न्यायपरायणता का होना आवश्यक है। दूषित मानसिक प्रवृत्ति वालों को साम्यवाद सुधार नहीं सकेगा। वे तो किसी भी अवस्था में अन्याययुक्त व्यवहार बनाने में संलग्न हो जाएँगे।"

"जब अवसर नहीं रहेगा तो इच्छा होने पर भी कोई किसी प्रकार का बुरा काम नहीं कर सकेगा।"

"अच्छी बात है," मदन ने कहा, "कुछ गम्भीरता से अध्ययन करोगी तो इस विश्वास का थोथापन समझ जाओगी।"

इस कथन से मीरा यह समझी कि मदन निरुत्तर हो गया है। इससे उसने बात बदल दी और कहा, "माताजी से मिलने को बहुत चित्त करता है।"

"हूँ!"

"तो भैया! उनसे पूछकर बताओगे कि कब मिलने आऊँ?"

"हूँ!"

"यदि नहीं मानें तो माताजी को समझाना कि मैंने कुछ पाप नहीं किया।"

"हूँ।"

"विवाह एक व्यक्ति के जीवन-भर का प्रश्न होता है। इसमें किसी दूसरे को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।"

"हाँ, हाँ।"

"मैं तो समझती हूँ कि यदि बचपन में मेरा विवाह कर दिया जाता तो वर की जाँच-पड़ताल करना माता-पिता का कर्त्तव्य होता और छोटी अवस्था की होने से मैं उनकी बात मान लेती; परन्तु बड़े होकर विवाह करने का यह अर्थ होता है कि विवाह करने वालों का चुनाव ही मुख्य माना जाए।"

"हाँ, मीरा! मेरी सगाई हो गई है।"

"कहाँ?"

"तुम्हारी सहेली श्रीकान्ता से!"

"मुझे यही आशा थी। ठीक हुआ है। परन्तु ताई जी को मनाने में तो कठिनाई हुई होगी?"

"मनाने में? मैं तो समझता हूँ कि उन्हीं की प्रेरणा से सगाई हुई है।"

"परन्तु ताईजी तो श्रीकान्ता को जानती नहीं थीं?"

"हाँ। बात यह हुई कि चाची जी अर्थात् तुम्हारी माताजी ने श्रीकान्ता को उस दिन देखा था, जब वह अपने जन्म-दिन का निमंत्रण देने आई थी। तुम भी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब वहाँ थीं। अगले दिन चाची जी ने मुझ से कहा कि श्रीकान्ता मुझसे विवाह करने की इच्छुक है। मैंने पूछा कि उनको यह किसने बताया है ? इस पर उन्होंने कहा कि यह उनका अनुमान है। मैंने केवल यह कहा कि मेरे साथ उसका, इस विषय पर, कभी वार्तालाप नहीं हुआ। परन्तु श्रीकान्ता एक-दो बार फिर तुम्हें मिलने आई और तुम घर पर नहीं थीं। चाची जी से श्रीकान्ता की कुछ बातचीत हुई या चाची जी स्वयं ही कुछ अनुमान लगा बैठीं, कह नहीं सकता।

"एक दिन माताजी ने पूछा, 'मदन! श्रीकान्ता से तुम्हारा विवाह कर दें तो कैसा रहे ?' मैंने कहा, 'माँ! वे ब्राह्मण हैं।' इस पर माँ ने कहा, 'वे आर्यसमाजी हैं और तुम्हारे पिता तो उस लड़की को देख रीझ गए हैं।' मैंने पूछा, 'उन्होंने कहाँ देखा है ?' तो बोलीं, 'मीरा की माँ ने दिखाया था।'

"मैंने तो केवल यह कहा, 'माँ जो तुम चाहो करो। मैं इसमें कुछ नहीं कहूँगा।' इसके बाद क्या हुआ मैं नहीं जानता। एक दिन माँ बहुत-सी मिठाइयाँ और फल अपनी घोड़ा-गाड़ी में रखकर लाईं। फिर और मिठाइयाँ और फल बाज़ार से भी मँगवाए गए और मुहल्ले भर में बाँटे गए। इससे मुझे पता चला कि क्या हुआ है ?"

"श्रीकान्ता क्या कहती है ? उससे भी पूछा गया था या नहीं ?"

"इसके पश्चात् मैं दो-तीन बार श्रीकान्ता से मिलने तो गया था, परन्तु अब वह मुझसे नहीं मिलती। एक दिन तो निर्मला भाभी ने कह ही दिया कि अब विवाह तक हम लोगों का मिलना ठीक नहीं।"

मीरा हँस पड़ी और कहने लगी, "और आपने यह सब-कुछ सहन कर लिया है ?"

मदन ने गम्भीर हो कहा, "सहन करने की कौन बात है इसमें ? कोई अन्याय अथवा अत्याचार तो हुआ नहीं।"

"यह अत्याचार नहीं है क्या ? दो प्रेमियों को मिलने से मना नहीं कर दिया गया ?"

"कुछ प्रतिबंध अवश्य है, परन्तु इसे अत्याचार नहीं कह सकते। प्रतिबंध के उचित होने के विषय में मतभेद हो सकता है। शायद यह अच्छा ही है। कई प्रकार की बुराइयों पर रोकथाम रखने में यह प्रथा अच्छी ही है।"

"मुझे तो इसमें कोई तत्व दिखलाई नहीं पड़ता।"

"अच्छा यह बताओ, मीरा! तुम लोग तो विवाह से पूर्व परस्पर मिलते-जुलते रहे हो। क्या इससे तुम्हारा विवाहित जीवन कुछ अधिक मधुर हो गया है ?"

इस प्रश्न से मीरा का मुख लाल हो गया और उसकी आँखें नीचे को झुक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गईं। मदन ने सोचा कि यह प्रश्न ठीक नहीं रहा। इससे उसने बात स्वयं ही बदल दी, ''शायद तुम दोनों अवस्थाओं में मुकाबला नहीं कर सकतीं। इस पर भी मैं समझता हूँ कि सिद्धांत तो यही है कि होने वाले पति-पत्नी का विवाह से पूर्व खुले रूप में मिलना ठीक नहीं। इसमें अपवाद हो सकते हैं। शायद उन अपवादों में मैं और श्रीकान्ता हैं। फिर भी नियम तो सबके लिए बनाए जाते हैं। और कौन उन नियमों में अपवाद सिद्ध होगा और कौन नहीं, कहना कठिन है।''

मीरा इस कथन के आशय को समझती थी। इससे उसने इस विषय पर बात और आगे नहीं चलाई। इधर-उधर की बातें होने लगीं।

रात के साढ़े आठ बज गए थे। मुहम्मद असलम खाना खाने के समय आया और मदन को अभी तक बैठा देख आग-बबूला हो गया। उसने आते ही कहा, ''खाने का वक्त हो गया है।''

मदन उठकर विदा माँगने लगा। मीरा जानती थी कि मदन उसके घर का कुछ नहीं खाएगा, इससे उसने खाने के लिए ठहरने को नहीं कहा। असलम ने तो मदन की नमस्ते भी स्वीकार नहीं की।

:: 11 ::

असलम और मीरा दोनों होटल के डाइनिंग हॉल में चले गए। वहाँ पचास के लगभग लोग खाना खा रहे थे। इसलिए इधर-उधर की बातों के अतिरिक्त कोई विशेष बात नहीं हुई। खाना खाकर दोनों अपने कमरे में चले आए। वहाँ पहुँच असलम का क्रोध उबल पड़ा। उसने कटाक्ष किया, ''मिल लीं भैया से? क्या दे गया वह?''

''क्या देते वह! मैंने उनकी इच्छा और सम्मति को तो माना नहीं। यह भी उनकी कृपा है कि मिलने आ गए।''

''और तुम्हारी चाय इत्यादि उड़ा गए?''

''छी! छी! कैसी बातें करते हैं! हिन्दुओं में भाई बहन के घर का नहीं खाते।''

''बहुत अच्छा करते हैं। नहीं तो सब साले, बहनोइयों को 'ब्लॉटिंग पेपर' की भाँति चूस जाएँ।''

मीरा चुप रही। इसपर भी उसे यह वार्ता बहुत ही दुखदायी प्रतीत हुई। मीरा के मन में कई प्रकार के विचार उठ रहे थे। साले-बहनोइयों को चूस जाने की बात से एक विचार उसके मन में फिर उठकर ऊपर आ गया। वह था निर्वाह का। इस होटल में एक हज़ार रुपये मासिक से ऊपर का खर्चा था। यह रुपया यदि पार्टी का है तो उसे इस प्रकार व्यय करना, उसे रुपये का अप-व्यय प्रतीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होता था और यदि कहीं अन्य स्थान से आता है तो कहाँ से आता है, यह जानने की उत्सुकता उसमें उत्पन्न हुई। उसने बात टालते हुए कहा, ''भाई बहन के घर का खाए या न खाए, इस पर मतभेद हो सकता है। हिन्दुओं ने इस सिद्धांत को क्यों माना था, कह नहीं सकती। फिर भी इसका इतना तो लाभ है ही कि बहन यदि निर्धन हो और भाई उसकी सहायता न कर सके तो भी कम-से-कम वह बोझा तो नहीं बनता न। इससे बहन और बहनोई में होने वाले बहुत-से झगड़ों से बचा जा सकता है। खैर, छोड़िए इस बात को। लेकिन यह भी आपको समझ लेना चाहिए कि यदि कभी आवश्यकता पड़ी तो मदन भैया सहायता भी दे सकेंगे। परन्तु क्या यह अच्छा नहीं होगा कि हम अपना खर्चा अपनी आय के अंतर्गत ही रखें, जिससे हमें कभी भी किसी से सहायता माँगने की आवश्यकता न पड़े?''

''मैं इस बात का बहुत ध्यान रखता हूँ। अपनी आय को खर्चे से कम नहीं होने देता।''

''परन्तु वह आय है कहाँ? आज का होटल का बिल देख तो मुझे चिंता लग रही है। एक हज़ार रुपया कहाँ से आएगा?''

''मीरा रानी! मैं तुमसे प्यार करता हूँ और तुम्हें औरतों में रानी बनाने का बंदोबस्त कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम जहाँ जाओ, लोग तुमको देख तुमसे हसद (ईर्ष्या) करने लगें। ऐसा करने के लिए रुपये की ज़रूरत है और मैंने रुपये का बंदोबस्त कर लिया है।''

''कर लिया है? कहाँ से?''

''इसे जानकर क्या करोगी? तुम्हें तो उसका उपभोग करना चाहिए, न कि यह जानने की चिंता, कि धन कहाँ से आता है।''

''तो आप भी स्त्री को केवल शृंगार की वस्तु मानने लगे हैं?''

''सब औरतों को नहीं। एक मज़दूर की बीवी, जो कुरूप है, अनपढ़ और मूर्ख है, उसे अपने जीवन-साधनों के लिए स्वतंत्रता और अवसर मिलना ही चाहिए। परन्तु तुम-जैसी सुंदर, पढ़ी-लिखी, बुद्धिमान स्त्री को तो सब-कुछ बिना यत्न के ही प्राप्त हो जाना चाहिए। तुम्हारे लिए स्वतंत्रता और पुरुषों के समान अवसर के उसूल की क्या आवश्यकता है? वे सब-कुछ तो तुम्हें पहले ही प्राप्त हैं।''

''यह तो कुछ बात न हुई। मज़दूर और छोटी जात की स्त्रियाँ तो खून को पसीना कर बहाएँ ताकि उन्हें जीवन-सामग्री प्राप्त हो सके और धनी-मानी लोगों की स्त्रियाँ बिना काम-धंधा किए खा-खाकर मोटी होती जाएँ।''

असलम आराम-कुर्सी पर बैठ गया और अपने सिगार के डिब्बे में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाना सिगार निकाल सुलगाते हुए बोला, ''तुम्हारी दलील (युक्ति) में गलती (दोष) है, मीरा! अमीरी और गरीबी तो बनावटी हैं मगर खूबसूरती और बदसूरती कुदरती हैं। जो कुदरत ने पूजा और तारीफ के लायक बनाया है, उसकी पूजा होगी ही।''

मीरा इस मीमांसा को समाजवादियों की मीमांसा से भिन्न पाती थी। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि असलम के मुख से कोई कह रहा है कि कुदरत ने मनुष्य-मनुष्य में अंतर बनाया है और इस अंतर से किसी को सुख-सामग्री अनायास ही मिलनी चाहिए और किसी को खून-पसीना एक करके। उसे अपनी माँ की एक बात याद आ गई कि संसार में विभिन्नता कर्मफल के कारण है। यदि ऐसा है तो फिर यह समाजवाद का झगड़ा क्यों?

सिगार के दो-तीन कश लगाकर असलम ने मीरा को, जो अभी तक विचार-मग्न सम्मुख खड़ी थी, बाजू से पकड़कर अपनी गोद में बैठा लिया और उसका मुख चूमते हुए बोला, ''तुम्हारे जैसी खूबसूरत औरत को फिक्र और गम करने की ज़रूरत नहीं। मैं ऐसा बंदोबस्त कर रहा हूँ कि जल्दी ही हम अपना एक घर बना सकेंगे। एक बसीअ (विशाल) कोठी होगी, जिसमें फूलों की क्यारियाँ होंगी। फलों के पेड़ होंगे। क्यारियों में फव्वारे लगे होंगे। कोठी में बिजली के पंखे, रोशनी, रैफरिजरेटर, दरियाँ, कालीन, सोफा-सेट, पलंग—मतलब यह कि हर किस्म का आराम व आसायश का सामान होगा। नौकर होंगे, नौकरानियाँ होंगी और फिर दो-चार तुम जैसे खूबसूरत बच्चे होंगे। घर में चहल-पहल होगी। मैं समझूँगा कि इस दुनिया में ही बहिश्त मिल गया है।''

इतना कह उसने मीरा को अपने समीप कर उसके सिर को अपने कंधे पर रख लिया और गालों पर थपकियाँ देते हुए प्यार करने लगा।

:: 12 ::

विवाह के पश्चात् खुशीराम छापेखाने में आया तो अपने साथ मिठाई और फल लाया। श्रीनाथ और छापेखाने के अन्य कर्मचारियों को खुशीराम के विवाह के समाचार से बहुत प्रसन्नता हुई। श्रीनाथ ने खुशीराम को एकान्त में ले जाकर कहा, ''मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है कि तुम विवाह करने में सफल हुए हो। बताओ, तुम संतुष्ट तो हो?''

''जी हाँ! आपकी इस मामले में सहायता के लिए बहुत कृतज्ञ हूँ। बिना आपकी सहायता के न तो रहीमन उन दुष्टों से छूट पाती और न ही उससे विवाह कर सकता।''

''तुम्हारी पत्नी तुमसे प्रसन्न है क्या?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''प्रसन्न ही प्रतीत होती है। आज तीसरा ही दिन है और वह घर का पूर्ण भार सम्भाल बैठी है।''

''मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है। मैंने तुम्हारी कथा जब अपनी पत्नी से कही तो वे कहती थीं कि तुम्हारे विवाह के पश्चात् तुम दोनों को घर पर निमंत्रण दूँ। बताओ कब आ सकोगे?''

''आप मुझे निमंत्रण देते हैं?''

''हाँ और तुम्हारी पत्नी को मेरी पत्नी ने निमंत्रण दिया है।''

''मैं इससे अपने को सौभाग्यवान् समझता हूँ। आपकी कृपा के लिए धन्यवाद करने के मैं योग्य नहीं हूँ।''

''देखो खुशीराम! मेरे लिए तुम सब लोग, जो छापेखाने में काम करते हो, घर के-से आदमी हो। पहले भी एक कर्मचारी के विवाह के समय मैंने दावत दी थी। उस समय मेरा विवाह नहीं हुआ था, इसलिए दावत में उसकी स्त्री को नहीं बुलाया था। उसके लिए मिठाई इत्यादि भेज दी थी। अब मेरा विचार है कि तुम दोनों अगले रविवार को हमारे घर पर आ जाना। दोपहर के एक बजे हम तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे। ठीक है न?''

खुशीराम ने अपनी स्त्री से जब दावत की बात कही तो वह संकोच में सिकुड़ गई। उसने कहा, ''मुझे शरम आती है क्योंकि आपके बाबू मेरी पूरी बात जानते हैं। और फिर आपने कहा था कि वे कट्टर हिन्दू हैं। मुझ मुसलमान के साथ वे और उनकी स्त्री परहेज करेंगी।''

खुशीराम विचार में पड़ गया। उसने श्रीनाथ को नहीं बताया था कि उसका नाम खुशीराम से बदल कर खालिद लतीफ हो गया है और न ही श्रीनाथ ने उससे इस विषय में कुछ पूछा था। फिर उसने सोचा कि रहीमन के मुसलमान होने को तो वे जानते हैं। इस पर भी उन्होंने निमंत्रण दिया है। इस विचार पर उसने कहा, ''मैं समझता हूँ कि सब-कुछ जानते हुए भी उन्होंने निमंत्रण दिया है तो फिर वे हमसे घृणा नहीं करेंगे। बाबूजी ने घर पर भी सब घटना बता दी है। उनकी पत्नी भी सब-कुछ जानती हैं। इस पर भी निमंत्रण आया है।''

रहीमन ने कुछ सोचकर कहा, ''मुझे शरम तो आती है लेकिन आप कहेंगे तो चलूँगी।''

दोनों दावत पर गए और वहाँ से प्रसन्न लौटे। घर पहुँचकर रहीमन ने कहा, ''निर्मला दीदी खदीजा से बिल्कुल दूसरी तरह की हैं। वे जब भीतर ले गईं तो बाबूजी की माँ और बहन भी वहीं पर थीं। बाबूजी की बहन श्रीकान्ता आपकी बहन ललिता की सहेली हैं और उसकी कई बातें बताती थीं।''

''तुम्हारे मुसलमान होने की बात हुई क्या?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''नहीं। हम सबने एक ही मेज़ पर भोजन किया। सबके लिए चाँदी के थाल और चाँदी की कटोरियाँ, फिर चाँदी के गिलास थे। किसी भी बात में मुझ में और अपने में फरक नहीं रखा गया। मैंने उनसे खुद ही बताया था कि मैं खान साहब के घर में नौकरानी थी, तो भी किसी ने इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया। किसी ने मुझसे खान साहब के घर की कोई बात नहीं पूछी। श्रीकान्ता दीदी का विवाह होने वाला है और मुझे इस अवसर पर बुलाया है। विदा होने के समय निर्मला दीदी ने मुझे यह दिया है।'' उसने अपने बैग में से एक डिब्बी निकालकर दिखाई।

खुशीराम ने डिब्बी खोलकर देखी। सोने के कानों के बुंदे थे। उसने रहीमन से कहा, ''पहनकर दिखाओ।''

रहीमन ने कहा, ''निर्मला दीदी पहनाने लगी थीं, पर मेरे कान छिदे हुए नहीं, इससे पहना नहीं सकीं। फिर मैंने कहा कि कानों में छेद करवा लूँगी तो उन्होंने मेरे बैग में यह डिबिया रख दी।''

''तो तुम श्रीकान्ता बहन के विवाह पर जाने का वचन दे आई हो?''

''ऐसे भले लोगों के इस आदर से दिए न्यौते को न कैसे कर सकती थी?''

''बाबूजी की माँ कैसी मालूम हुई?''

''अम्मी तो उनके जूते की रीस नहीं कर सकतीं। उनके माथे पर त्योरी चढ़ी रहती है और माँजी तो मेरी बातें सुन-सुन हँसती रहीं। जब हँसती हैं तो मोतियों की तरह सफेद दाँत बहुत ही खूबसूरत दिखाई देते हैं। एक बात उन्होंने पूछी कि मैं कुछ पढ़ी भी हूँ या नहीं। मैंने बताया कि उर्दू की दूसरी किताब पढ़ी हूँ तो पूछने लगीं कि आप कितना पढ़े हैं? मैंने बताया दसवीं पास की हुई है। इस पर बोलीं कि मैं आपसे पढ़ूँ। मैंने बताया कि आपको उर्दू नहीं आती तो बोले कि हिन्दी पढ़ लूँ, उसमें भी बहुत अच्छी-अच्छी किताबें हैं। मैं चुप रही।''

खुशीराम ने कहा, ''हमारे छापेखाने में मधुर चाचा की कहानियों का संग्रह छप रहा है। बहुत मजेदार कहानियाँ हैं। तुम हिन्दी पढ़ लो तो वे कहानियाँ पढ़ सकोगी।''

''इतनी हिन्दी पढ़ने में कितनी देर लगेगी?''

''मैं समझता हूँ कि तीन-चार महीने में समझने लायक पढ़ जाओगी।''

रहीमन नें फिर कहा, ''श्रीकान्ता दीदी अपने पढ़ने के कमरे में ले गईं। वहाँ उन्होंने आपकी बहन की तस्वीर दिखाई। फिर उनकी दिखाई, जिनसे उनका अपना विवाह होने वाला है। अच्छे खूबसूरत और भले आदमी मालूम होते हैं। उनके घर में कई हज़ार किताबें हैं। मैंने हैरानी में पूछा, ''क्या आप सब किताबें पढ़ चुकी हैं? उन्होंने बताया कि वे हर रोज चार-पाँच घंटे पढ़ती हैं। मैं सोचती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ कि तभी वे इतनी अच्छी-अच्छी बातें करती हैं। कितना बड़ा दिमाग होगा उनका, जो वे सब किताबें पढ़ चुकी हैं। मुझे हैरान देख कहने लगीं कि मैं भी इतना कुछ पढ़ सकती हूँ। मुझे यकीन नहीं आया। इस पर वे बोलीं कि वे भी मेरे जैसी ही हैं। जब वे पढ़ गईं तो मैं क्यों नहीं पढ़ सकती?''

खुशीराम ने कहा, ''मैं कल तुम्हारे लिए कायदा ले आऊँगा और तुम जल्दी ही पढ़ जाओगी।''

:: 13 ::

श्रीनाथ छापेखाने के कार्यालय में बैठा हिसाब-किताब देख रहा था कि किसी ने दरवाज़े पर खड़े हो पूछा, ''बाबू साहब! मैं आ सकता हूँ?''

श्रीनाथ ने किताबों से सिर उठाकर देखा कि खान अब्दुल मजीद हाथ में छड़ी लिये खड़ा है। श्रीनाथ ने काम छोड़, उठकर खान साहब का स्वागत किया और अपने समीप कुर्सी पर बैठाकर पधारने का कारण पूछा। खान साहब ने बैठकर इतमीनान से कहा, ''आपको मालूम तो हो गया होगा कि उस लड़की की, जिसे आपने बरदाफरोशों के हाथ से छुड़ाया था, शादी हो गई है।''

''जी हाँ और मुझे इससे बहुत प्रसन्नता हुई है।''

''उसकी शादी यहाँ आपके खालिद लतीफ से हुई है और....।''

श्रीनाथ ने बातचीत में ही काटकर कहा, ''खालिद लतीफ कौन?''

''वही, जो आपके यहाँ मशीनमैनी का काम करता है। क्या नाम था उसका? मैं भूल गया हूँ। वह मुसलमान हो गया है न।''

श्रीनाथ के मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई। उसने पूछा, ''आप पहचानते हैं उसको या नहीं?''

''हाँ, हाँ। पहचानता क्यों नहीं? साहब! वही लड़का है, जो उस दिन यहाँ इस कुर्सी पर बैठा था।''

''ओह! समझा।'' श्रीनाथ ने याद आने का भाव बनाते हुए कहा, ''हाँ खुशीराम? ठीक याद आ गया है। अब आज्ञा करिए।''

''मैं यह गुजारिश करने आया हूँ कि आपने उस लड़के पर बहुत मेहरबानी की है और अब भी उस पर अपनी नज़रे-मेहर रखिएगा। खालिद को यहाँ से अस्सी रुपये माहवार तनख्वाह मिलती है। वह तनख्वाह अब शादी के बाद काफी नहीं रही। मैंने उसके लिए एक और छापेखाने में पूछताछ की है और वहाँ उसको तरक्की मिल सकती है। लेकिन जब आपने उस पर इतनी मेहरबानी की है, तो मैं समझता हूँ कि आप अगर इससे कम भी तरक्की दें, तो भी उसे आपको तरजीह देनी चाहिए। खालिद को आपसे बात करते शर्म आती है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए मैं खुद हाजिर हुआ हूँ।''

श्रीनाथ मन में खुशीराम को तरक्की देने की बात पहले ही सोच चुका था। परन्तु उसे खान साहब को इस प्रकार दूसरी जगह पर पूछताछ कर लेने की धमकी देते सुन बड़ा अचम्भा हुआ। खुशीराम का व्यवहार दिल्ली से लौटने के बाद बहुत सुधर गया था। वह अपनी प्रत्येक कठिनाई के लिए उसके पास आता रहता था। अभी-अभी एक दिन पूर्व वह उसे दिल्ली में अपने लगभग डेढ़ हज़ार रुपय के चोरी हो जाने की बात बताकर गया था। उसने कहा था कि रुपया उसकी बहन ललिता का था और वह अब उससे बोलना भी पसंद नहीं करती। एक दिन वह अपनी बीवी को लेकर ललिता से मिलने गया था, परन्तु ललिता ने बिना रुपया वापस लिये मिलने से इनकार कर दिया था। खुशीराम ने श्रीनाथ से पूछा था कि वह कैसे यह ऋण उतार सकता है। उसने बताया था कि उसकी स्त्री कहती है कि रुपया अदा करना चाहिए, नहीं तो खुदा उन्हें दोजख की आग में जलाएगा।

खान साहब ने वहीं बैठे-बैठे ही आवाज़ दे दी, ''भाई खालिद लतीफ! ज़रा इधर आना।''

श्रीनाथ की हँसी निकल गई। उसने घंटी बजाई तो चपरासी भीतर आ गया। उसने चपरासी से कहा, ''खुशीराम को बुलाओ।''

खुशीराम खान साहब को वहाँ बैठा देख चकित रह गया। बिना किसी प्रकार से उस ओर ध्यान दिए खुशीराम सामने खड़ा हो गया। श्रीनाथ ने कहा, ''खान साहब तुम्हारी सिफारिश करने आए हैं।''

''किस बात की?''

''तुम्हारी तरक्की के लिए। आप फरमाते हैं कि एक और छापेखाने से पता कर आए हैं, जहाँ तुम्हें तरक्की मिल सकती है। सो मैं समझता हूँ कि तुम खजानची से अपना हिसाब बनवा लाओ और तुम तरक्की की जगह जा सकते हो।''

खुशीराम का मुख इस बात को सुन लज्जा से लाल हो गया और वह समझ नहीं सका कि क्या कहे। श्रीनाथ हिसाब देखने के लिए पुनः रजिस्टरों को सीधा करने लगा तो खुशीराम ने यत्न कर पूछा, ''यदि मैं न जाऊँ तो आपकी क्या आज्ञा है?''

श्रीनाथ ने खुशीराम की आँखों में देखते हुए कहा, ''मैंने आज्ञा नहीं दी, स्वीकृति दी है।''

''खान साहब ने मेरी वकालत मुझसे पूछे बिना की है।''

इतना कह खुशीराम कमरे से बाहर जाने के लिए लौट पड़ा। खान साहब ने उसे जाते देख कहा, ''बेटा! सुनो तो। भई, सुनो तो।''

परन्तु खुशीराम नहीं लौटा। श्रीनाथ ने खान साहब को विदा करने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ जोड़कर कहा, ''इस समय मुझे फुरसत नहीं। आपको यहाँ आने की तकलीफ नहीं करनी चाहिए। लड़के से कहिएगा कि खुद ही मुझको कह दिया करे। आदाब अर्ज।''

रात को खुशीराम ने अपनी स्त्री से खान साहब के आने की बात बताई तो वह आग-बबूला हो गई। उसने कहा, ''मुझे उनसे मिले हुए एक महीना हो गया है। विवाह के बाद वे मुझे सिर्फ एक बार मिले थे और कहते थे कि बाज़ार में बुर्का पहनकर निकलना चाहिए। उसके बाद वे मुझे नहीं मिले। अगर आप कहें तो मैं उनके घर जाकर उनको डाँट आऊँ।''

''नहीं।'' खुशीराम ने कहा, ''मैं दिन भर सोचता रहा हूँ कि क्या करूँ। मेरा विचार है कि हमें उनकी बातों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। मैं तो आज आने से पहले ही बाबूजी को कहने जा रहा था कि खान साहब बूढ़े हो गए हैं। उनकी बात की ओर ध्यान न दें। फिर मैंने सोचा कि पहले तुमसे पूछ लूँ। कहीं तुमने ही उन्हें न भेजा हो।''

''न जाने क्या समाया था उनके मन में?'' रहीमन ने कहा।

''मेरा ख्याल है कि वे मुझे किसी दूसरे छापेखाने में ले जाना चाहते थे। शायद वहाँ पूछताछ के बाद हमारे यहाँ आए थे।''

:: 14 ::

मदन के विवाह के निमंत्रण-पत्र बाँटे जा रहे थे। मदन ने मीरा तथा असलम को बुलाने का प्रस्ताव किया तो मदन की माँ का मुख क्रोध से लाल हो गया। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। सेठ साहब ने गम्भीर हो कहा, ''मदन! विवाह पर बुलाने और साधारण मेलजोल में अंतर नहीं है क्या?''

''पिताजी! अंतर तो है। साधारण रूप में हम जिनसे बोलना नहीं चाहते, शिष्टाचार के नाते उनको विवाह का निमंत्रण दे देते हैं।''

मदन की माँ ने कहा, ''यदि यह बात है तो नगर-भर को निमंत्रण क्यों नहीं दे देते?''

''किंतु उनसे हमारा परिचय है।'' मदन का उत्तर था।

''सब परिचितों को भी तो निमंत्रण नहीं दिया जा रहा।''

''परन्तु मीरा से तो विशेष परिचय है न?'' मदन ने फिर कहा।

''वह परिचय अब कटु अनुभव में बदल गया है, मदन!'' उसकी माँ का कहना था।

''माँ! हमें अपना व्यवहार ठीक रखना है। हमें दूसरों से क्या?'' मदन की सबसे प्रबल युक्ति थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु मदन की माँ व्यवहार का सम्बन्ध केवल अपने अंतरात्मा से ही नहीं समझती थी। उसके लिए दूसरों के सुख-दुख से इसका अधिक सम्बन्ध था। अतएव उसने कहा, ''यही तो मैं कहती हूँ। हमें अपना व्यवहार देश, काल और व्यक्ति को देखकर निश्चय करना चाहिए। देश से मेरा प्रयोजन जनता से है। जो लोग हमारे निमंत्रण में आने वाले हैं उनके सुख-दुख का भी तो विचार करना है। क्या मीरा के आने से उसकी माँ को सुख मिलेगा?''

मदन अभी तक केवल मीरा के सुख-दु:ख का विचार कर रहा था, परन्तु अब उसकी माता का विचार भी उसके मन में आया और वह सोचने लगा कि किसके दु:ख का अधिक विचार करना चाहिए। इस समय सेठ साहब ने अंतिम निर्णयात्मक युक्ति दी, ''देखो मदन! हम किसी दूसरे के मनोद्‌गारों के उचित अथवा अनुचित होने का निर्णय नहीं कर रहे। किसी के कृत्यों के लिए हम उसकी निंदा नहीं कर रहे। हम तो केवल यह करना चाहते हैं कि विवाहोत्सव निर्विघ्न और आनंदपूर्वक समाप्त हो जावे। ऐसे अवसर पर हम किसी ऐसे को नहीं बुला सकते, जिसके आने से अन्य लोगों को क्षोभ और दु:ख हो। यदि केवल पण्डिताइन का ही प्रश्न होता, तो भी हम जानते हैं कि हमारे घर से उसका सम्बन्ध मीरा की अपेक्षा अधिक प्राचीन है। परन्तु यहाँ तो मुहल्ले-भर का प्रश्न है। मीरा को निमंत्रण न जाने पर दु:ख तो होगा, परन्तु उसके यहाँ आने पर उससे अधिक दु:ख लोगों को होगा।''

मदन मन में सोचता था कि मुहल्ले वालों का दु:ख अनुभव करना क्या अनुचित नहीं। उनको इससे क्या हानि हुई? मीरा ने यदि भूल की है, तो फल भी स्वयं भोगेगी। मुहल्ले वालों को इससे क्या? अत: उसने अनुचित रोक लगाने वालों के मनोभावों का विचार करना अपने साथ अन्याय मान, मीरा को निमंत्रण देने का एक और प्रयत्न किया। उसने कहा, ''पिताजी! मीरा अपने परिवार का एक अंग बन चुकी है और परिवार के अंग को परिवार से बाहर के लोगों के अयुक्ति-संगत मनोद्‌गारों के विचार से त्याज्य मान लेना अच्छी बात प्रतीत नहीं होती।''

सेठ साहब इस युक्ति से उद्विग्न हो उठे। वे बोले, ''मदन! मैं तो समझता था कि तुम अपने समाज और धर्म के विषय में समझने लगे हो। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि तुम हिन्दू समाज अथवा आर्य संस्कृति का क-ख भी नहीं समझे। भला बताओ तो कि मीरा ने कुछ अनुचित बात की है क्या?''

''हाँ की तो है।''

''क्या अनुचित किया है?''

''एक विधर्मी से विवाह किया है।''

''यही तो तुम नहीं समझे। किसी विधर्मी से विवाह करना अथवा धर्मवान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से विवाह करना, यह उसकी निज की बात है। समाज को इसमें आपत्ति नहीं करनी चाहिए। जब तक कोई विधर्मी इस देश में शांतिप्रिय बनकर रहता है, उससे विवाह करने में समाज आपत्ति नहीं कर सकता। परन्तु बिना विवाह के साथ रहना सामाजिक नियमों को भंग करना है। समाज उस आदमी को क्षमा नहीं कर सकता, जो समाज के बनाए नियम को भंग करता है। समाज इसे विवाह नहीं कहता और न ही इस प्रकार के जीवन को विवाहित जीवन मान सकता है।''

'''परन्तु मुहल्ले के लोग मुसलमान से विवाह करने के कारण उसे निन्दनीय मानते हैं। उन्हें तो यह मालूम भी नहीं कि विवाह नहीं हुआ।''

''उनका भाव यही है। साधारण लोग बात की इतनी विवेचना नहीं कर सकते। इसका कारण है उनके ज्ञान की कमी। इस पर भी उनका अंतरात्मा ठीक बात ही कहता है। मुसलमानी ढंग से विवाह को प्राय: हिन्दू लोग समाज के नियम का भंग करना मानते हैं। कारण कि वे मुस्लिम समाज को भारतीय समाज नहीं मानते। नई विचारधारा के कारण अब मुसलमानों को भारतीय समाज का अंग माना जाने लगा है। यद्यपि मुसलमान अब भी यदा-कदा अभारतीयता का प्रदर्शन करते रहते हैं। तो भी राज्य-नियम से वे भारत का अंग हैं। इससे हम पढ़े लोग मुसलमानी ढंग से विवाह को निन्दनीय नहीं मानते। परन्तु मीरा ने तो विवाह-नियम को ही तोड़ डाला है। इससे समाज का प्रत्येक विभाग इसे अपराध मानेगा।''

''परन्तु पिताजी! यदि मीरा ने समाज का नियम भंग किया है तो हमें इससे क्या? हमें तो उसके ऐसा करने से कोई हानि नहीं हुई है न?''

''यह आज कैसी अयुक्तिसंगत बातें करने लगे हो, मदन? समाज ने यदि कोई नियम बनाया है, तो उस नियम को भंग करना अपराध है। कुछ अपराध ऐसे हैं कि राज्य ने उनके लिए दंड नियम कर दिए हैं। कुछ ऐसे भी अपराध हैं, जिनके लिए राज्य-दंड नहीं है। इस पर भी अपराध तो अपराध ही है। इसके कई और भी उदाहरण हैं। कोई पुत्र अपने बूढ़े माँ अथवा बाप को निराश्रय छोड़कर जाता है। राज्य उसके लिए कुछ भी दंड नियत नहीं करता, परन्तु है तो यह अपराध ही। ऐसे अपराधों को रोकने के लिए समाज के पास बहिष्कार के अतिरिक्त और साधन ही क्या है?''

''पिताजी! जब समाज का नियम बिना किसी आवश्यकता तथा बिना किसी अधिकार के हो तो उस नियम को तोड़ा क्यों न जाए?''

इस युक्ति के देते ही मदन को स्वयं इसका थोथापन स्पष्ट हो गया। वह समझता था कि किसी एक व्यक्ति की इच्छा से समाज के नियम को बदला नहीं जा सकता। एक व्यक्ति यदि समाज से विद्रोह कर सकता है तो फिर विद्रोह के परिणाम को सहन करने को उसे तैयार भी रहना चाहिए। परन्तु एक बुद्धिमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य विद्रोह को प्रोत्साहन देना कभी भी क्षम्य नहीं मान सकता। संसार की त्रुटियों की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए विद्रोह एक अकेली विधि है, परन्तु विवाह की रस्म निभाना और लोगों में विवाह की नियमानुकूल घोषणा करना समाज की त्रुटि तो नहीं है। उसने सोचा कि जब वह स्वयं इसे त्रुटि नहीं मानता तो इसके विरुद्ध विद्रोह को कैसे ठीक कह सकता है?

बुद्धि से मदन को यद्यपि मानना पड़ा कि मीरा को निमंत्रण नहीं जाना चाहिए, परन्तु मन से अभी भी वह चाहता था कि वह आ जाए तो ठीक ही है। इस प्रकार बुद्धि और मनोद्‌गारों का संघर्ष चलता रहा और ज्यों-ज्यों विवाह समीप आता गया, यह संघर्ष और घोर होता गया। एक बार तो वह बिना पिताजी को बताए निमंत्रण देने चल ही पड़ा।

रात के आठ बजे थे। खाने का समय हो रहा था। असलम ने आज कहीं बाहर भोजन करना था। इससे मीरा कुछ उदास, अकेली डाइनिंग हॉल में जाने के लिए तैयार हो रही थी कि तभी मदन आ पहुँचा।

मीरा को इस समय उसे देख बहुत प्रसन्नता हुई। प्रसन्नता से फूले न समाते हुए उसने कहा, ''भैया! बहुत ही अच्छा हुआ जो आप आ गए।''

''क्यों? क्या तुम्हें इस समय मेरे आने की आशा थी?''

''नहीं, आशा तो नहीं थी। हाँ, आज वे बाहर गए हैं और मैं अकेली थी। आप आज यहाँ खा लीजिए।'' मदन विचार में पड़ गया। इस पर मीरा ने कहा, ''शायद आपने कभी होटल में नहीं खाया?''

''नहीं, यह बात नहीं, मीरा! कॉलेज के दिनों में मैं होटल में कई बार खा चुका हूँ। मुझे परहेज नहीं। हाँ, एक बात है। आज के खाने का दाम मैं दूँगा।''

''ओह! भूल गई थी। दे दीजिएगा। आइए।''

मदन उसके साथ डाइनिंग हॉल में चला गया। मदन मन में सोच रहा था कि विवाह की बात करे अथवा न, परन्तु उसके मन का बुद्धि से संघर्ष अभी चल रहा था। वह मन में सोचता था कि जब उसने मीरा से मेलजोल रखा हु
उसे विवाह में क्यों नहीं बुला सकता। परन्तु तुरंत ही उसके मन में विचार आता कि व्यक्तिगत मेलजोल रखना और विवाहोत्सव में बुलाना एक-जैसी बात नहीं है। विवाहोत्सव एक सामाजिक काम है। विवाह का और फिर विवाहोत्सव का अपने अतिरिक्त अन्य लोगों के साथ भी सम्बन्ध है। इससे वह चुप रह गया।

मीरा ने पूछा, ''कुछ चिंता में प्रतीत होते हैं आप?''

मदन ने अपने को प्रसन्न प्रकट करते हुए कहा, ''नहीं तो। तुमसे मिले कई दिन हो गए थे। इससे विचार आया कि मिल आऊँ। तुम अपनी बताओ। ठीक हो न?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीरा ने कहा, ''हाँ, ठीक हूँ।'' मीरा की आँखें झुक गईं। परन्तु मदन उसे नहीं देख रहा था और उसकी आवाज़ की विशेषता को वह नहीं समझ सका। कारण यह था कि इसी समय डाइनिंग हॉल का बैंड बजने लगा था। इस बैंड की ध्वनि से एक अच्छी बात यह हुई कि लोगों की आपसी बातचीत अब दूसरे नहीं सुन सकते थे। इस पर भी मदन को यह शोर भला प्रतीत नहीं हुआ। इसी समय बैरा खाना परोसने लगा। वह एक-एक वस्तु लाता था और उसमें से जिसको जितनी आवश्यकता होती थी, ले लेता था। किंतु, खाना मदन के मन-पसंद का नहीं था। अंग्रेजी ढंग का होने के कारण मदन को नहीं भाया।

मीरा ने पूछा, ''ताईजी ठीक हैं?''

''हाँ, सब ठीक हैं। चाची जी मकान छोड़ अब आश्रम में जाकर रहने लगी हैं। मकान को ताला लगाकर चाबी पिताजी को दे गई हैं।''

''क्यों?''

''भाड़े पर देने के लिए।''

इससे मीरा को कुछ क्षोभ हुआ, परन्तु वह खाती रही। मदन भी बीच-बीच में कुछ खाता जाता था। मदन के मुख पर कई बार विवाह की बात आई, परन्तु मुख से बाहर नहीं निकल सकी। बैंड बाजे के कोलाहल में वह अधिक कुछ नहीं कह सका।

खाना समाप्त हुआ। दोनों उठकर कमरे में वापस चले गए। मदन ने पूछा, ''दिन-भर क्या करती रहती हो?''

''हम रेल के कारखाने में काम करने वाले मज़दूरों में काम कर रहे हैं। फिर हम एक साप्ताहिक पत्र निकालने लगे हैं। उसका नाम 'लोक सेवा' रखा है। प्रातः मज़दूरों के क्वार्टरों में जाती हूँ। पश्चात् नाश्ता करने यहाँ आती हूँ। 'ब्रेक फास्ट' के बाद पार्टी के दफ़्तर में जाती हूँ। वहाँ 'लोक सेवा' के लिए कुछ लिखना-पढ़ना होता है। दोपहर का खाना वहीं खाती हूँ। चार बजे से पूर्व यहाँ पहुँच जाती हूँ। चाय पीकर कभी सैर करने, कभी सिनेमा देखने और कभी उनके मित्रों से मिलने जाना होता है। रात का खाना खाया तो स्वाध्याय होता है। पश्चात् सो जाना। इस प्रकार दिन समाप्त हो जाता है।''

''स्वाध्याय क्या होता है।''

''आजकल 'लैनिन' का जीवन-चरित्र पढ़ रही हूँ।''

''अब रामायण पढ़नी बंद कर दी है क्या?''

''कई बार तो पढ़ चुकी हूँ। अब उसमें रस प्रतीत नहीं होता। वह आज की समस्याओं का सुझाव नहीं बताती।''

''अच्छा? क्या समस्याएँ हैं आज की?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''धन का एक स्थान पर एकत्रित हो जाना, आज संसार में सबसे बड़ी समस्या है।''

''झूठ, स्वार्थ, अन्याय और वासना से भी अधिक 'आवश्यकता' और बड़ी है?''

''ये तो हैं ही। पर नवीन समस्या जो उत्पन्न हुई है, वह है धन का कुछ एक स्थानों पर एकत्रित हो जाना।''

''क्या यह उक्त दुर्गुणों का परिणाम नहीं?''

यह सुन मीरा सोचने लगी। वह कुछ बोली नहीं। इस पर मदन ने अपनी बात जारी रखी और कहा, ''मीरा! भूल को ठीक करना उचित है अथवा परिणाम पर मस्तिष्क खराब करना? मैं तो एक बात जानता हूँ कि राजनीतिक तथा आर्थिक पद्धति कुछ भी हो, जब तक मनुष्यों के मन पवित्र, नि:स्वार्थ-मय और न्यायपरायण नहीं हो जाते और जब तक मनुष्य वासनाओं से ऊपर नहीं उठ जाते, तब तक कोई भी योजना सफल नहीं हो सकती। फिर ये भौतिक प्रबंध किसी भी ढंग से किए जाएँ, यदि इनको चलाने वाले पवित्रात्मा और न्याय-बुद्धि हैं तो इनसे मनुष्य को लाभ ही लाभ होगा।''

मीरा इस युक्ति का उत्तर नहीं दे सकी। हाँ, एक बात वह जानती थी कि कम्यूनिस्ट पार्टी मन को प्रेरणा देकर काम करने के स्थान पर बलपूर्वक काम कराने में विश्वास रखती है। इससे उसने कहा, ''भैया! वास्तविक बात तो यह है कि रामायण तथा धर्म-ग्रंथ मन को प्रेरणा देते हैं। ऐसी प्रेरणा देते-देते तो सहस्रों वर्ष बीत गए हैं परन्तु फल कुछ नहीं निकलता। अब जो शोषित जनता है, वह शोषण करने वालों का संसार में अंत ही कर देना चाहती है। यह बात रामायण में नहीं लिखी।''

''लिखी तो है। तुम शायद भूल गई हो। वास्तव में रामायण तो है ही अन्यायी, अत्याचारी और दुराचारी को दंड देने की कहानी।''

इस प्रकार बातें चल रही थीं। बीच-बीच में मदन के मन में विवाह का संदेश देने का विचार उठता था, परन्तु निर्णय न कर सकने से वह चुप रह जाता था। अभी बातचीत समाप्त नहीं हुई थी कि असलम वहाँ आ पहुँचा और मदन को देख आग-बबूला हो गया। माथे पर त्योरी चढ़ाकर घूर-घूर कर मदन की ओर देखने लगा, मीरा ने मदन को कहा, ''भैया! अब तुम जा सकते हो।''

असलम को देख मदन समझ गया कि उसका वहाँ होना उसे रुचिकर नहीं रहा। इससे वह अपने स्थान से उठा, मीरा को हाथ जोड़ नमस्ते कही और कमरे के बाहर जाने के लिए असलम के समीप से गुज़रा। असलम अभी दरवाज़े में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ा था। मदन को उसके समीप से गुज़रते समय ऐसा अनुभव हुआ कि वह शराब पिये हुए है।

मदन कमरे के बाहर पहुँचा तो उसे विचार आया कि शायद अब मीरा से झगड़ा होगा। पति-पत्नी में क्या और कैसे झगड़ा होगा, यह जानने की इच्छा हो गई। उसने निश्चय किया कि दरवाज़े के बाहर खड़ा होकर सुने। इस निश्चय पर पहुँचते-पहुँचते वह कुछ दूर तक चला गया था। वहाँ से वह लौट पड़ा और जब कमरे के बाहर पहुँचा तो कमरे का दरवाज़ा बंद था। वह दरवाज़े के साथ कान लगाकर खड़ा हो गया। दरवाज़े के अंदर पर्दे लगे थे, इस कारण बाहर खड़ा आदमी दिखाई नहीं देता था।

असलम जोर-जोर से कह रहा था, "तुम अपनी पुरानी दोस्ती नहीं छोड़ना चाहतीं, न सही। मुझे इससे क्या? आजादी के यही तो मायने हैं कि तुम जिससे चाहो दोस्ती रखो। मैं जिससे चाहूँ रखूँ। मैं तुमको मना नहीं करता। मौज करो, गुलछर्रे उड़ाओ। एक खूबसूरत औरत का हक़ है कि वह जितने लोगों से चाहे दोस्ती रखे। और....और....।"

इस समय मीरा की आवाज़ सुनाई दी, "अब बस करो। सो जाओ। इस वक्त आप होश में नहीं हैं। सुबह नशा उतर....।"

"मैं नशे में हूँ....?" असलम जोर से हँस पड़ा। "हा....हा....हा नहीं, मेरी रानी मीरा!.... मैं नशे में नहीं हूँ। इस वक्त मेरा दिमाग बिलकुल सही हालत में है। मैं समझता.....अच्छी तरह समझता हूँ और एक अकलमंद खाविंद की तरह अपनी खूबसूरत बीवी की बातों को देख आँख मूँदकर रहना चाहता हूँ। क्या इस पर भी तुमको एतराज (आपत्ति) है।"

"अच्छा....अच्छा....अब सो जाओ।" मीरा का आग्रह था।

मदन इसके पश्चात् और अधिक देर तक वहाँ नहीं ठहर सका। उसके मन में ग्लानि भर गई थी।

:: 15 ::

बहुत आग्रह करने पर कहीं असलम सो सका। मीरा कई दिन से यह अनुभव कर रही थी कि असलम उससे विरक्त होता जा रहा है। शराब पीकर तो वह एक-दो बार पहले भी आया था। परन्तु इस रात तो वह अधिक ही पी गया था और अपने मन में छिपी कुछ बातें जो उसने इस रात कहीं, पहले कभी नहीं कही थीं।

इन बातों को सुन मीरा को असलम के मन में छिपे संदेह का भास होने लगा। इससे उसे उसके कलुषित अंतरात्मा का ज्ञान हो उठा। फिर शराब पीने से उसे उसने कई बार मना किया था और प्रत्येक बार उसने न पीने का वचन दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था। इस रात तो वह खूब पीकर आया था। वह बेहोश नहीं था। इस पर भी वह देख रही थी कि उसका अपने मन और विचारों पर काबू नहीं रहा था।

अपने विषय में वह सोचती थी कि कहीं उसने इस आदमी से विवाह कर भूल तो नहीं की? क्या बात थी कि जिससे उसने उसे पसंद किया था? आज वह अपने मनोभावों का विश्लेषण करने बैठ गई। वह सोच रही थी। असलम एक सुंदर, गौरवर्ण युवक है। साधारण ऊँचाई है, परन्तु शरीर गठा हुआ है। विशाल मस्तक, घनी भौंहें, पतलें होंठ, लम्बी नाक, चौड़ी छाती, लम्बी भुजाएँ और लम्बी-लम्बी उंगलियाँ। अभिप्राय यह कि शरीर की बनावट अत्यंत लुभायमान थी और वह मन में सोचती थी कि असलम को देख कोई भी लड़की उससे प्रेम किए बिना नहीं रह सकती थी। मीरा सोच रही थी कि क्या यह शारीरिक आकर्षण ही था, जिसके अधीन वह उससे विवाह कर बैठी। फिर सोचती थी कि यह असलम संसार में एक नई जीवन-मीमांसा को मानने वाला है। वह मानता है कि शरीर का पालन मनुष्य का परम धर्म है। शेष तो केवल मात्र विचार ही विचार है। दया, धर्म, परमात्मा, जन्म-मरण, कर्मफल सब ढकोसला है। वह स्वयं भी ऐसा ही मानती है। तो क्या विचारों की इस समानता ने ही उसे उससे विवाह करने के लिए प्रेरित किया था? असलम को वह मेहनती, निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाला, मनुष्य-समाज को उन्नति की ओर ले जाने के लिए निरंतर प्रयत्न करने वाला और मनुष्य को निर्भय करने में संलग्न देखती थी। उसे वह एक महान् कार्यकर्ता दिखाई देता था और वह उसकी अनन्य भक्तिनी थी। क्या इस कारण वह उससे विवाह करने के लिए उद्यत हुई थी?

इस प्रकार वह शराब से अर्ध-मूर्च्छित हो अपने सम्मुख लेटे इस आदमी को देखकर उससे अपने सम्बन्ध होने का कारण ढूँढ रही थी। पृथक्-पृथक् कारणों की परीक्षा करने पर उसे एक भी कारण ऐसा प्रतीत नहीं हुआ जिससे वह निश्चयपूर्वक कह सकती कि यही कारण है जिससे वह असलम को अपना पति स्वीकार कर सकती है। जब वह इनमें से किसी एक को भी इसमें कारण नहीं मान सकी तो सोचने लगी कि शायद ये सब बातें मिलकर इतनी महान् हो जाती हैं कि उसने असलम को पसंद कर लिया।

इन्हीं विचारों में डूबी हुई वह आराम-कुर्सी पर बैठी-बैठी सो गई। रात के दो बजे के लगभग कुर्सी पर सोते-सोते उसकी कमर दर्द करने लगी। वह उठी और जाकर पलंग पर सो गई। प्रातःकाल नींद खुली तो उसने देखा कि असलम उठकर स्नानागार में गया हुआ है। वह पलंग से उठ खिड़की में जा खड़ी हुई और रात की घटना पर विचार करने लगी। इस पर फिर उसके मन में वही विचार आने लगे, जो रात-भर उसके मस्तिष्क में चक्कर काटते रहे थे। इन विचारों के स्रोत की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका ध्यान गया तो वह स्तब्ध रह गई। उसकी समझ में आ गया कि अंतरात्मा से वह इस विवाह पर पश्चात्ताप करने लगी है। इस बात का विचार आते ही वह काँप उठी और जोर से सिर हिलाकर कहने लगी, "नहीं! नहीं!! यह नहीं।"

असलम जो अनदेखे उसके पीछे आ खड़ा हुआ था, उसकी 'नहीं-नहीं' को सुन पूछने लगा, "क्या नहीं, मीरा!"

मीरा ने घूमकर देखा। असलम स्नान कर बाहर आया था। श्वेत तहमद-कुर्ता, सिर नंगा, पाँव में स्लीपर—इस रूप में वह बहुत ही आकर्षक प्रतीत हुआ। इससे उसने कहा, "रात आप कितने बदसूरत बन रहे थे।"

"मैं तो समझता हूँ कि इस समय मेरा मुख रक्त-विहीन हो रहा है। रात शराब के प्रभाव से लाल और स्वस्थ प्रतीत हो रहा था।"

"कुछ भी हो।" मीरा ने कहा, "मैंने तो इसी को पसंद किया था। उस शराब से लाल हुए मुख को मैंने पसंद नहीं किया था।"

"परन्तु मेरी भी तो कुछ रुचि है। क्या मैं अपनी रुचि के अनुसार अपने रूप को भी पसंद नहीं कर सकता?"

"परन्तु इसके साथ बुद्धि जो भ्रष्ट हो जाती है।"

"इसका मुझे स्मरण नहीं। क्या कहा था मैंने?"

"आपका रूप देख मन में यह विश्वास ही नहीं होता कि आप रात की-सी बातें भी सोच सकते हैं। वे तो एक विकृत मस्तिष्क की ही उपज हो सकती हैं।"

"फिर भी क्या कहा था मैंने?"

"आपने मदन भैया को बैठे देखा था।"

"हाँ, कुछ-कुछ याद आ रहा है। वह मुझे देखते ही उठ भागा था।"

"आपको शराब में बदमस्त देख कौन भला आदमी आपसे बात करेगा?"

"मगर सब भले लोग तो खुद शराब पीते हैं।"

"कौन पीते हैं?" मीरा ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर पूछा।

"देखो मीरा! रात मैं डिप्टी-कमिश्नर के साथ दावत खा रहा था। वहाँ दो घूँट अधिक पी गया। इससे सिर में चक्कर आने लगा था।"

"डिप्टी-कमिश्नर? भला क्या काम था आपका उससे?"

"यह तुम्हें बताऊँगा, परन्तु अभी नहीं। बात किसी निर्णय तक पहुँच सके तो।"

"क्या बात है ऐसी, जो आप मुझे बताना नहीं चाहते?"

"आज रात हमारे यहाँ डिप्टी-कमिश्नर खाने पर आएँगे। खाना यहाँ कमरे में होगा।"

"वे अकेले होंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''नहीं उनके साथ उनकी बीवी और लड़की भी होगी।''

इन सब बातों से मीरा के मन में विचार उठने बंद नहीं हुए। वह दिन-भर और उसके बाद भी कई दिन तक गम्भीरतापूर्वक सोचती रही।

:: 16 ::

सेठ घनश्यामदास के मकान में धूम मची थी। आज मदन की बरात का दिन था। प्रात: काल से ही मेहमानों का आना-जाना लगा हुआ था। एक कमरे में तीन दिन से यज्ञ हो रहा था। वहाँ इक्कीस ब्राह्मण विद्वान् बैठे यजुर्वेद का पाठ और हवन कर रहे थे। उन ब्राह्मणों के लिए तथा यज्ञ के लिए आवश्यक सामान लाने के लिए एक कर्मचारी नियत था। इक्कीस ब्राह्मण का मंडल छह घंटे पाठ तथा हवन करता था। पश्चात् वे उठ जाते थे और अगले छह घंटे के लिए उतने ही ब्राह्मणों का दूसरा मंडल आ बैठता था। इस प्रकार चौबीस घंटों के लिए पाठ करने वालों की चौथी बार बदली हुई थी। आज दोपहर के ग्यारह बजे पूर्णाहुति पड़नी थी।

एक और कमरे में मदन की माँ बैठी थी और सम्बन्धी, मुहल्ले तथा मित्रों के घर से स्त्रियाँ और बच्चे बधाई देने के लिए आ रहे थे। मदन की माँ बधाई लेती थी और सबको वहाँ ठहरने, भोजन करने और आराम में सम्मिलित होने का निमंत्रण देती जाती थी। मदन की माँ के समीप उसकी जेठानी और मीरा की माँ बैठी थी। बधाई देने आई सब स्त्रियाँ कनखियों से मीरा की माँ को आदरणीय स्थान पर बैठी देख विस्मय करती थीं। कोई-कोई मन के कुटिल भाव को छिपाने में असमर्थ हो पूछ ही बैठती, ''मीरा की माँ! मीरा नहीं दिखाई देती?''

गम्भीर हुई बैठी मीरा की माँ का उत्तर होता था, ''वह नहीं आ रही।''

''क्यों? उसे निमंत्रण नहीं भेजा क्या?''

''नहीं।''

''क्यों?''

''उचित नहीं समझा।''

मीरा की माँ को इतना-भर कहने में भी अत्यंत कठिनाई प्रतीत होती थी। परन्तु वह धैर्य से बैठी मेहमानों के साथ आने वाले बच्चों को मिठाई तथा फल-फूल देती जाती थी।

एक और कमरे में सेठ साहब बैठे थे। वे सब प्रबंध देख रहे थे। जितने भी काम थे, सब लिख लिये गए थे और प्रत्येक काम के लिए एक-एक आदमी नियुक्त था। नियुक्त व्यक्ति को बुलाकर पूछ रहे थे कि उसका काम ठीक समय पर समाप्त हो जाएगा या नहीं। जहाँ भी उनको काम के ठीक समय पर होने में संदेह होता तो नियुक्त व्यक्ति को सहायता देने के लिए एक और व्यक्ति को लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते थे। यज्ञ का प्रबंध था। ब्राह्मणों के निवास और भोजन का प्रबंध था। यज्ञ की समाप्ति पर उनकी दान-दक्षिणा का प्रबंध था। मेहमानों की आव-भगत करने का प्रबंध था। उनके भोजन की व्यवस्था थी। उनके बड़े भाई की बहू के हाथ में वस्त्र-आभूषण इत्यादि का प्रबंध था। बाजे, घोड़ी, गैस के हंडे इत्यादि सब प्रकार के काम सोच-विचार कर लिख लिये गए थे और उन पर उचित व्यक्ति नियुक्त कर दिए गए थे।

मेहमानों के बैठने के लिए हवेली के आँगन में शामियाना और कनातें लगी थीं। फर्श पर दरी बिछी थी। दरी पर सफेद चादरें और उन पर कालीन थे। वहाँ लाउड-स्पीकर यंत्र लगा था, जिसमें ग्रामो-फोन रेकार्ड बज रहे थे। पुष्प-मालाएँ और इतर की सुगंध की भरमार थी। सेठ साहब का सब लोगों से इतना मेल-मिलाप और सद्व्यवहार था कि लोग संकेत मात्र से ही आते थे, मानो वे अपने घर में ही आ रहे हैं।

मदन अपने मुहल्ले के दो-चार घनिष्ठ मित्रों के साथ कमरे में बैठा हुआ इधर-उधर की गप्पें हाँक रहा था। वे उसके बचपन के साथी थे। मदन यद्यपि उनसे बातें कर रहा था, परन्तु उसके मन में मीरा के वहाँ न आने की बात खटक रही थी। उसके मित्र जानते थे कि मीरा उनके घर आती-जाती थी और अब वह एक मुसलमान के साथ भाग गई है। वे यह भी जानते थे कि मीरा मदन के विवाह में नहीं आ रही। इससे शिष्टाचार के नाते वे मीरा की बात नहीं उठा रहे थे। उन मित्रों में एक प्रमोदकुमार भी था। वह उसी मुहल्ले का रहने वाला था और मदन के साथ स्कूल में पढ़ता था। उसे मदन और मीरा का मेल-जोल भली-भाँति विदित था। जब उसे गप्पों में रस नहीं आया तो अपने मन की बात कहे बिना रह नहीं सका। "भाई मदन! यदि मीरा वाली घटना न हुई होती तो क्या तुम उससे विवाह कर लेते?"

प्रमोद के समीप बैठे मंगतराम ने कहा, "छोड़ो जी, क्या बे-अवसर की बात करते हो भला? आज जैसे उत्सव में ऐसी औरतों की बात नहीं करते।"

"क्यों मैंने उसको क्या कहा है?" प्रमोद ने बिना सोचे-विचारे फिर बात कर दी।

"उसकी बात करने से अशिष्ट तथा अश्लील बातें चल पड़ेंगी। बाज़ार में ऐसी रंडियाँ बहुत घूमती हैं। क्या उनकी बातें करने को और अवसर नहीं है?"

अब मदन से नहीं रहा गया। उसने कहा, "देखो भाई मंगत, वह रंडी नहीं है। रंडी के अर्थ जानते हो न? वह जने-जने की बीवी नहीं है। एक आदमी की बीवी बन कर रह रही है। इस पर वह मेरी बहन है। यदि वह अच्छी है तब भी और बुरी है तब भी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर प्रमोद ने ताना देकर पूछा, ''तो उसे निमंत्रण क्यों नहीं भेजा?''

''इसलिए कि मुहल्ले के लोग बात तो जानते नहीं, समझते नहीं और इस पर भी टीका-टिप्पणी करने लगते हैं। उनकी टीका-टिप्पणी से मीरा के अपमान होने की सम्भावना मिटाने के लिए उसे बुलाया ही नहीं।''

मदन के मित्रों को इस उत्तर से संतोष हुआ या नहीं, कहना कठिन है। एक बात अवश्य हुई। वे समझ गए कि मदन मीरा का अपमान सहन नहीं करेगा। इससे बातों की दिशा बदल गई।

बरात छह बजे चलनी थी। पाँच बजे ही मदन को पुरोहितों तथा अन्य सम्बन्धियों की स्त्रियों ने दूल्हा की भाँति सजाना आरम्भ कर दिया। स्नान करा, तेल-इतर लगा, कपड़े पहना दिए गए। पगड़ी, जामा, चुस्त पायजामा, दुपट्टा और कमरबंद बाँध, वेदी पर, जहाँ कि वेद-पाठ हो रहा था, मदन को बैठा दिया और मंत्र-पाठ के पश्चात् स्त्रियों ने मंगल-गान किया। इस समय कुल-पुरोहित ने केसर से मदन का तिलक किया। सम्बन्धियों में से एक स्त्री ने आँखों में काजल लगाया। पश्चात् पुरोहित ने सिर पर सोने-चांदी का मुकुट बाँध, हाथ में तलवार दे दी।

स्त्रियों के गाने की ध्वनि के बीच मदन को बाहर लाकर सुनहरी जीन तथा भूषणों से सुसज्जित श्वेत घोड़ी पर बैठा दिया गया। इस समय बरात ढंग से खड़ी हो गई थी। सबसे आगे शहनाई वाले थे। उनके पीछे आतिशबाजी छोड़ने वाले, फिर बाजा बजाने वालों की मंडली थी। इसके पीछे कई लोग झाड़-फानूस और भाँति-भाँति की ध्वजाएँ लिये खड़े थे। फिर बैंड बाजा था।

बैंड बाजे के बाद पचास मोटर-गाड़ियाँ थीं। जिनमें स्त्रियाँ और बच्चे बैठाए गए थे। इसके पश्चात् नगर का सर्वश्रेष्ठ बैंड था। अब नगर के गण्य-मान्य लोग नए रंग-बिरंगे रेशमी, सूती कपड़े पहने खड़े थे। बरात के अंत में घोड़ी पर सवार दूल्हा था। उसका मुख पुष्प-मालाओं में ढका हुआ था। उसके आस-पास उसके मित्रों का घेरा था।

बाजे बजने लगे। बरात में लगभग दो सहस्र आदमी थे। सब-के-सब प्रसन्न-वदन थे और इतने बड़े सेठ के पुत्र की बरात में सम्मिलित हो गौरव अनुभव कर रहे थे। स्त्रियाँ, सम्बन्धी और मित्र, दूल्हा के ऊपर रुपये-पैसे न्यौछावर करने के लिए भीड़ में आगे बढ़ दूल्हा के सिर को छूकर रुपया नाई, डोम अथवा किसी अन्य भिक्षुक को देते थे। कोई पुष्पमाला, कोई किनारी की माला लिये दूल्हा को पहनाने के लिए आगे बढ़ रहा था। इस समय मीरा भीड़ को इधर-उधर धकेलती हुई आगे आ गई। उसके हाथ में किनारी का सेहरा था। उस समय मदन दूसरी ओर को मुँह किए एक मित्र से कुछ कह रहा था। इससे मीरा का सेहरे वाला हाथ उठा रह गया। स्त्रियों में से कुछ, जिन्होंने उसे पहचान लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, खिलखिलाकर हँस पड़ीं। इस हँसी ने मदन का ध्यान आकर्षित किया और वह हँसने वालियों को देखने के लिए घूमा कि उसे किनारी के चेहरे को ऊँचे किए हुए एक स्त्री दिखी। वह तुरंत उसे पहचान गया और उसके मुख से निकल गया, ''मीरा! तुम?''

मीरा ने मदन के मुख की ओर देखा और मुस्कराई, परन्तु उसकी आँखों से अविरल आँसू बह रहे थे। मदन ने सिर नीचा कर दिया। इससे वह मीरा के समीप हो गया। मीरा ने सेहरा मदन के सिर पर चढ़ा दिया। मदन ने बहुत मंद स्वर से, जिससे केवल वही सुन सके, कहा, ''बहन! धन्यवाद।''

मीरा ने मौली का अट्टा घोड़ी के सिर पर डाल दिया और वापस लौट पड़ी। उसे बाहर निकलते देख सबने मार्ग छोड़ दिया, मानो वह किसी संक्रामक रोग से पीड़ित हो। जब वह उनमें से होकर गुजर रही थी, स्त्रियों ने नाक-भौं चढ़ाई और पुरुषों ने आँखें फाड़-फाड़कर उसके मुख को देखा। किसी ने आवाज़ कसी, ''रांड कहीं की।''

मीरा अपने पाँव की ओर देख रही थी और आँसू उसकी आँखों से टपककर उसके गालों को भिगो रहे थे। आँसुओं के कारण उसे मार्ग दिखाई नहीं दे रहा था, न ही उसे लोगों के मुखों पर घृणा तथा विस्मय की रेखाएँ दिखाई दे रही थीं। मार्ग तो उसका भली-भाँति जाना-बूझा था, इससे वह बिना देखे भी चली जा रही थी। गली से बाहर निकल, बाज़ार में खड़ी बरात और बारातियों में से गुजरती हुई वह वहाँ आ गई, जहाँ उसकी टैक्सी खड़ी थी। चुपचाप टैक्सी में बैठ वह होटल वापस आ गई।

:: 17 ::

मीरा को श्रीकान्ता के हाथ का लिखा पत्र मिला था। उसमें लिखा था, ''बहन मीरा! तुमने समाचार-पत्रों में मेरे तथा अपने भैया के विषय में पढ़ा होगा। इस कारण मैं यह पत्र लिख तुम्हें सानुरोध निमंत्रण दे रही हूँ। चैत्र सुदी सप्तमी मंगलवार पिताजी के गृह पर आना चाहिए। तुम्हारे भैया तो सोमवार सायंकाल पधारेंगे और मंगल मध्याह्न यहाँ से विदा होंगे। यों तो पिताजी ने बहुत से निमंत्रण-पत्र छपवाए हैं, परन्तु मैं तो लिखकर ही अपनी सहेलियों को आमंत्रित कर रही हूँ।''

मीरा असलम के अव्यवस्थित आचार-व्यवहार के कारण उद्विग्न-मन रहती थी, इस कारण समाचार-पत्र पढ़ने को उसकी रुचि नहीं होती थी। आज श्रीकान्ता का पत्र पाने पर उसने पिछले तीन-चार दिन के समाचार-पत्र पढ़े तो एक में यह समाचार लिखा मिला—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''श्री अम्बिकाप्रसाद, ऐडवाकेट हाईकोर्ट पंजाब, की कन्या श्रीकान्ता का विवाह सेठ घनश्यामदास, रेशम की कोठी वाले के पुत्र मदनमोहन से चैत्र सुदी सप्तमी, मंगलवार को होगा।''

इस समाचार के पढ़ने से उसके मन में विचार आया कि शायद मदन की ओर से भी निमंत्रण आएगा। यह शनिवार का दिन था और विवाह में अभी दो दिन बाकी थे। वह बड़ी उत्सुकता से मदन के या फिर उसके निमंत्रण आने की प्रतीक्षा करती रही। परन्तु निमंत्रण नहीं आया।

मंगल प्रातः काल उसके हृदय में द्वंद्व चलने लगा था। अनामंत्रित वह विवाह पर जाए अथवा न जाए। उसका मन जाने को करता था, परन्तु बुद्धि कहती थी कि बिना बुलाए नहीं जाना चाहिए। कभी मन की भावुकता प्रबल हो जाती थी और कभी बुद्धि की प्रेरणा।

असलम नियमानुसार प्रातः उठ स्नानादि से निपट, मज़दूरों की बस्तियों के दौरे पर चला गया था। मीरा दस बजे तक बैठी सोचती रही। जब कुछ निर्णय नहीं कर सकी तो स्नान करने स्नानागार में चली गई। जब वहाँ से निपट कर आई तो असलम नाश्ते के लिए तैयार बैठा था और नाश्ता भी कमरे में परसा हुआ रखा था।

मीरा जब खाने की मेज़ पर आई तो असलम ने अंग्रेज़ी में पूछा, ''आज क्या हो गया तुम्हें ?''

''मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं।''

''क्या हुआ है ?''

''आप नहीं जानते क्या ?''

''ओ! भूल गया था। हाँ, तो अब क्या कोई विशेष सकल्पि है ?''

''रात-भर नींद नहीं आई।''

''तो किसी डॉक्टर को दिखा लो।''

मीरा चुप रही। खाना आरम्भ हो गया। असलम ने कहा, ''रात का खाना मैं बाहर ले रहा हूँ।''

''और फिर शराब पी जाएगी।'' मीरा ने कुछ सतर्क हो पूछा।

''यदि तुम नहीं पीतीं तो दूसरों को कैसे मना कर सकती हो ?''

''मैं तो आपका मना करती हूँ। मुझे दूसरों से क्या मतलब ?''

''मैं दूसरों से मेल-जोल बंद नहीं कर सकता और जब उनके साथ खाना खाता हूँ, परहेज़ नहीं कर सकता।''

''अजीब लोग हैं आपके मित्र, जो आपके शराब न पीने पर आप से नाराज़ होते हैं ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हाँ, ऐसा ही है। तुम इन बातों को नहीं समझ सकतीं।''

''पर वे कौन लोग हैं ? क्या मैं उनसे नहीं मिल सकती ?''

''वे तो तुम्हें वहाँ ले चलने के लिए कई बार कह चुके हैं, मगर मैं ही ठीक नहीं समझता।''

''क्यों ठीक नहीं समझते ?''

''मैं बता नहीं सकता।''

ज्यों-ज्यों वार्तालाप आगे चल रहा था, मीरा का क्षोभ बढ़ता जाता था। इस 'मैं नहीं बता सकता' ने तो उसके धैर्य को नि:शेष कर दिया। उसने खाना छोड़ दिया और माथे पर त्योरी चढ़ाकर आवेश में बोली, ''अजीब प्रकार के पति-पत्नी हैं हम! जब भी कोई बात पूछो, उत्तर मिल जाता है 'मैं नहीं बता सकता।' आखिर मुझे आपने क्या समझ रखा है। मैं आपकी लौंडी हूँ, गुलाम हूँ, क्या हूँ ? मुझे आप अपना साथी क्यों नहीं समझ सकते ?''

इतना कहते-कहते मीरा की मोटी-मोटी आँखें आँसुओं से भर गईं। उसे देख असलम ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, ''और कब कहा है मैंने कि 'मैं नहीं बता सकता।' मैं क्लब में तुम्हें नहीं ले जाना चाहता।''

मीरा अपनी कुर्सी से उठते हुए कहने लगी, ''जब मैंने पूछा था कि इस नवाबी ठाठ के लिए धन कहाँ से आता है तो भी आपने कहा था कि आप बता नहीं सकते।''

''ओह! यह बात है। मगर मैं पूछता हूँ कि तुम्हें आम खाने हैं या पेड़ गिनने हैं।''

''तो वही बात हुई। मैं आपकी ज़र-खरीद लौंडी ही हुई न ? यदि आपको मुझ पर विश्वास नहीं था, तो मुझसे विवाह ही क्यों किया था ?''

इतना कहते हुए मीरा को चक्कर आने लगा और वह सोने के कमरे में चली गई और पलंग पर जाकर लेट गई। असलम ने खाना खाया और बाहर से ही कम्यूनिस्ट पार्टी के कार्यालय में चला गया।

मीरा असलम के ऐसे व्यवहार से अत्यंत दु:खी थी। उसको मदन के पिता और माता का परस्पर व्यवहार स्मरण हो आया। दोनों घर और बाहर की बातें सदैव करते, उन पर वाद-विवाद भी कर लेते थे। कभी-कभी व्यापार की बातें भी होती थीं, जो मदन की माता नहीं समझ पाती थीं परन्तु जब भी वह सेठ साहब से पूछती थी तो वे बताने में संकोच नहीं करते थे। एक बार सेठ साहब पर एक पड़ोसी ने झूठा मुकदमा कर दिया था। मदन की माता ने पूछा कि कैसा मुकदमा है। सेठ साहब ने समझाया लेकिन उसकी समझ में नहीं आया। इस पर सेठ साहब ने पुन: समझाया। फिर भी उसकी समझ में नहीं आया तो वह बोली,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैं पढ़ी-लिखी नहीं, इस कारण मैं बात समझ नहीं पाती। मैं चाहती तो हूँ कि समझूँ। खैर छोड़िए।''

सेठ साहब हँस पड़े। वे कहने लगे, ''इसमें पढ़ने-लिखने की बात नहीं। कानूनी पेच हैं। बड़े-बड़े पढ़े-लिखे भी समझ नहीं सकते। अच्छा सुनो, समझाता हूँ।''

''छोड़ो। क्या होगा इससे? मैंने तो मुकदमा लड़ना नहीं।''

''नहीं जी, देखो। यदि कोई बात समझ में आ जाए तो हानि तो होती नहीं। कभी लाभ ही हो सकता है।'' सेठजी ने तीसरी बार फिर समझाने का यत्न किया।

यहाँ वह समझती थी कि वह पढ़ी-लिखी है। शायद असलम से अधिक शिक्षा और योग्यता रखती है। उसने अपने जीवन को उसके जीवन से जोड़ लिया है। इस पर भी वह नहीं जानती कि रुपया कहाँ से आता है, कहाँ जाता है और फिर कौन लोग हैं, जो उसे शराब पिलाकर सुखी होते हैं।

इन बातों को सोचते-सोचते उसका मन उचाट हो गया। वह बार-बार सोचती थी कि असलम से विवाह कर उससे भारी भूल हो गई है और अब किसी भी समय वह ऐसी परिस्थिति में हो सकती है जबकि जीवन भी दूभर हो उठे।

दोपहर का एक बज गया। लंच का समय हो गया। असलम कार्यालय से लौट आया। दोनों लंच खाने के लिए होटल के खाने के कमरे को चल पड़े। असलम ने पूछा, ''तबियत कैसी है?''

''बहुत कमजोर अनुभव कर रही हूँ। आज तो कुछ मितली भी हो रही है।''

''तुम्हें कुछ दवाई लेनी चाहिए। यदि उल्टी आनी शुरू हुई तो फिर बहुत परेशानी होगी और शायद अस्पताल जाना पड़े।''

''मैं बहुत यत्न कर रही हूँ कि स्वस्थ रहूँ, परन्तु....।''

परन्तु का अर्थ असलम समझता था। इससे उसने इसे अनसुना कर कहा, ''आज पिक्चर देखने चलोगी? दिल बहल जाएगा।''

''पर आप तो क्लब में जा रहे हैं न?''

''मैं वहाँ रात के खाने के समय जाऊँगा। पिक्चर देख मैं उधर चला जाऊँगा। तुम होटल आ जाना।''

''मैं नहीं जा सकती।''

''क्यों?''

''मुझे आज मदन भैया के विवाह में जाना है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''निमंत्रण आया है ?''

''समाचार-पत्र में पढ़ा है।''

''तुम भी अजीब औरत हो, बिना बुलाए मेहमान बन रही हो।''

''जी हाँ! मैं जा रही हूँ। इसलिए नहीं कि मुझे वहाँ कुछ लेना-देना है।''

''तो किसलिए ?''

''जब भैया की बरात चलती है, तो बहनें शुभ आशीष देती हैं, मंगल-गान करती हैं।''

''जैसे तुम्हारी आशीष के बिना शादी ही रुक जाएगी ?''

''मन की भावना है।''

''बेवकूफी से पुर है।''

इस समय दोनों खाना खाने लगे थे। मीरा मन में सोचती थी कि इस प्रकार अनामंत्रित जाना मूर्खता तो है, पर मन नहीं मानता था। वह कभी-कभी सोचती थी कि उसने असलम से विवाह क्यों किया! इसके पीछे उसे कोई युक्ति प्रतीत नहीं हुई अपितु उसे ऐसा लगा कि मन की भावना के वशीभूत होकर ही वह असलम से विवाह के लिए उद्यत हुई थी। अत: यदि अब अनामंत्रित मदन को आशीर्वाद देने जाना मूर्खता है, तो विवाह भी तो मूर्खता ही थी। इस पर उसके मन ने निश्चय-सा कर लिया है कि यदि एक मूर्खता की जा सकती है तो दूसरी भी की जा सकती है। यदि बुद्धि की प्रेरणा के विरुद्ध विवाह किया जा सकता है तो मदन को सेहरा पहनाने के लिए जाने में हानि नहीं।

उसकी तबीयत खराब हो रही थी, इससे उसने दो-चार ग्रास खाकर बंद कर दिया। समीप रखी चटनी ही चाटती रही। जब असलम खा चुका तो वह अपने कमरे में गए बिना ही कहीं काम पर चला गया और मीरा कमरे में पहुँच पलंग पर लेट सोचने लगी कि कैसे और कब वह मदन से मिलने जाए। उसने निश्चय कर लिया कि जब बरात घर से चलने लगेगी, मदन घोड़ी पर सवार हो जाएगा तो वह वहाँ पहुँचेगी और उसे सेहरा पहना मन से आशीर्वाद दे, वापस चली आएगी। उसने इस प्रकार मन की भावना और तर्कपूर्ण बुद्धि का समन्वय किया। घर के भीतर अनामंत्रित जाना उचित नहीं था, बाज़ार में कौन मना कर सकता था ? इस प्रकार मन में निश्चय कर, सायं पाँच बजे टैक्सी कर, बाज़ार से किनारी का सेहरा खरीद और फिर घोड़ी के लिए फूलों की माला ले ठीक छह बजे गली के बाहर बाज़ार में जा पहुँची।

वहाँ से लौटते हुए जब टैक्सी में आकर बैठी तो उसका चित्त बहुत हल्का हो चुका था। तीन दिन से मन में चल रहे संघर्ष में वह विजयी हुई थी। यह ठीक था कि उसने वहाँ एकत्रित स्त्रियों के चेहरों पर घृणा देखी थी और मुख से कटु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वचन सुने थे, परन्तु इससे क्या होता है ? उसने एक कर्त्तव्य का पालन किया था। कम-से-कम वह इसे ऐसा ही समझती थी। उसे अनुभव हुआ कि अब उसके मस्तिष्क पर से एक बोझा उतर गया है। होटल में आई तो उसे इस हल्केपन के कारण भूख लग उठी थी। खाने का समय हुआ तो अकेली डाईनिंग हॉल में जा बैठी। पेट-भर खाया और अपने कमरे में आ सो गई।

कई दिन से वह भली-भाँति खा नहीं सकी थी। आज पेट-भर खाया तो खूब सोई। प्रातःकाल उठी तो उसे मालूम हुआ कि रात असलम नहीं आया। विवाह के पश्चात् यह पहली रात थी, जब वह होटल में नहीं आया था। इससे उसे कुछ चिंता अवश्य हुई, परन्तु भली-भाँति नींद लेने के पश्चात् जो स्फूर्ति तथा आनंद प्राप्त हुआ था, उसमें चिंता छिप गई। उसे याद था कि उसे श्रीकान्ता के घर जाना है। वहाँ से उसका हस्तलिखित निमंत्रण आया हुआ है। इससे वह जल्दी-जल्दी स्नानादि से निपट कपड़े पहन, प्रातःकाल का नाश्ता ले, टैक्सी कर, उसके घर जा पहुँची।

:: 18 ::

घर के बाहर और भीतर भारी समारोह था। भीतर आने-जाने वालों का तांता लगा हुआ था। मकान बाहर से आम और जामुन के पत्तों तथा पुष्पों के बंदनवारों और झण्डियों से पूर्ण रूप से सजा हुआ था। मकान के बाहर एक बहुत बड़ा शामियाना लगा था, जिसमें रात की भव्य दावत के चिह्न अब भी दिखाई दे रहे थे।

वह ड्योढ़ी में पहुँची तो देखा दरबान नई वर्दी पहने डटकर कुर्सी पर बैठा था। पहले वह प्रत्येक आने-जाने वाले से पूछा करता था, 'क्या काम है।' यदि कोई वकील साहब से मिलने आया तो उसे मकान के दूसरी ओर मुंशियों के पास भेज दिया करता था और यदि कोई घर आता तो यह पूछकर कि किनसे मिलना है, घंटी बजा देता। वहाँ तीन प्रकार की घंटियाँ लगी थीं। एक स्त्रियों के लिए, एक घर के पुरुषों के लिए और एक, जब वकील साहब के मुवक्किल आवें, उनके लिए।

परन्तु आज तो सब आने वालों को खुली छुट्टी थी। सब लोग बिना रोक-टोक आ रहे थे। मीरा सोचती थी कि उसे वहाँ पहुँचने पर कहलवाकर भेजना पड़ेगा कि कौन आया है। परन्तु चौकीदार तो आज किसी को रोक नहीं रहा था। मीरा भीतर चली गई। प्रत्येक कमरे में स्त्रियों की भरमार थी। इससे वह सोचने लगी कि कहाँ जाए। उसने सीधा श्रीकान्ता के निजी कमरे में जाना ही उचित समझा। मार्ग में श्रीकान्ता की माँ मिल गई उसे देख वह प्रसन्न-वदन बोली, "ओ मीरा! आओ बेटी! आओ चलो इधर। वह देखो, निर्मला सब को जल-पान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करवा रही है। पहले जल-पान कर लो....!''

मीरा ने बात बीच में ही काटकर कहा, ''माँ जी! सो तो कर आई हूँ। श्रीकान्ता....।''

''कर आई हो तो क्या हुआ? विवाह वाले घर में तो खाया ही जाता है। एक दिन अधिक खाने से अजीर्ण तो हो नहीं जाता। चलो....ओ निर्मला....लो मीरा आई है।''

जब निर्मला ने मीरा को देख लिया तो श्रीकान्ता की माँ उस तरफ चली, जिधर पुरुष बैठे थे। निर्मला बड़े कमरे में श्रीकान्ता की ससुराल की ओर से आई स्त्रियों को जल-पान करवा रही थी। घरात की कुछ और स्त्रियाँ भोजन परोस रही थीं। उनमें श्रीकान्ता की कॉलेज की एक-दो सहेलियाँ भी थीं। ललिता भी परोसने में संलग्न थी।

निर्मला कमरे के बाहर आ गई और मीरा से भीतर चलने का आग्रह करने लगी। मीरा ने उन स्त्रियों को भी देखा था, जो जल-पान कर रही थीं। उनमें वे सब थीं जो पिछली शाम उसे मदन को सेहरा पहनाते समय गाली देती थीं। उसने निर्मला से स्पष्ट कह दिया कि वह तो केवल श्रीकान्ता से मिलने आई है। उन स्त्रियों में उसके जाने से सब बात बिगड़ जाएगी।

निर्मला मीरा के इस युक्ति के तत्त्व को समझती थी। अतः बोली, ''तो अच्छी बात। आप बहन जी के कमरे में चलें। आपके लिए नाश्ता वहीं भिजवा रही हूँ।''

मीरा वहाँ से खिसक गई। इस पर भी ललिता की दृष्टि उस पर पड़ गई और उसने आवाज़ दे दी—''मीरा! मीरा!!''

मीरा नहीं लौटी और ऊपर की छत पर श्रीकान्ता के कमरे में पहुँच गई। वहाँ उसे दूसरा दृश्य मिला। कमरा मोतिये के फूलों की मालाओं से सजा हुआ था। फर्नीचर पर हाल ही में पॉलिश करवाया गया था। पूरे फर्श पर मोटी दरी बिछी थी। उस पर एक सफेद चादर थी। और चादर पर बहुत बढ़िया कालीन था। कालीन पर मखमली चादर थी। कमरे में एक ओर मखमली चादर पर रखी एक गद्दी पर श्रीकान्ता बैठी थी। वह छपी हुई लाल सुनहरी ओढ़नी ओढ़े बैठी थी और पाँवों से चोटी तक आभूषणों से लदी थी। रेशमी रंगीन सलवार और सिलमे-गोटे से कढ़ा हुआ कुर्ता पहने हुए थी। माँग में सिंदूर, आँखों में काजल, हाथ-पाँव मेहँदी से रँगे थे।

श्रीकान्ता के पास तीन और लड़कियाँ बैठी थीं। मीरा उन्हें देख दरवाज़े पर खड़ी हो गई। क्षण-भर तो वह श्रीकान्ता की सजावट और सजधज देखती रही और इससे उसके मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई। तभी श्रीकान्ता का ध्यान वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ी मीरा की ओर गया। वह उठी और दरवाज़े की ओर लपकी, ''ओह मीरा! आओ। बहुत देर कर दी तुमने। आओ बैठो।''

फिर उसे दोनों हाथों से पकड़ कर, अपने साथ ले जाकर अपने समीप बैठा लिया। बोली, ''प्रात: ही क्यों नहीं आ गईं?''

''मैं तो समझी कि रानी अभी राजा की शय्या पर अंगड़ाइयाँ लेती होंगी।''

''पर तुम्हारे भैया तो रात-भर आए ही नहीं। बस खाना खाकर अपने मित्रों में चले गए और रात वहीं गुजार दी।''

''बहुत बुद्धू हैं तब तो।''

''अच्छा बताओ, मीरा! नीचे कुछ खाकर आई हो या नहीं?''

''निर्मला भाभी ने कहा तो था, मगर मैं घर से खाकर आई हूँ।''

''छी:! भला यह भी कोई बात है।''

श्रीकान्ता ने पास बैठी खुशीराम की बहू से कहा, ''रहीमन! ज़रा नीचे चली जाओ तो और निर्मला भाभी से मीरा के लिए....।''

तभी ललिता एक थाली में मिठाई-पूरी और दूध का गिलास लिये हुए आ पहुँची। ''लो मीरा साथिन! मैं ऊपर ही ले आई हूँ।''

''ओ, लाओ ललिता, इधर लाओ।''

थाल मीरा के सम्मुख रख दिया गया। ललिता समीप ही बैठ गई। मीरा रहीमन को देख रही थी। नाम मुसलमानों का-सा था। पोशाक हिन्दुओं की-सी। माथे पर सिंदूर की बिंदी, माँग में सिंदूर, हाथों में सोने की चूड़ियाँ थीं।

ललिता ने कहा, ''मीरा दीदी! प्रसन्न तो हो? कुछ उदास प्रतीत होती हो।''

''कुछ तबीयत खराब है।''

''ओह! हाथ इधर करो तो। नब्ज़ देखूँ कि क्या खराबी है तबीयत में?''

रहीमन की हँसी निकल गई। श्रीकान्ता ने रहीमन का परिचय करा देना ठीक समझा। उसने कहा, ''मीरा! ललिता को तो तुम जानती ही हो।''

''हाँ 'चपला' चित्र में इनको नाचते देखा है।''

''मैं यह चित्र देखने नहीं जा सकी। अब फिर कभी नगर में आएगा तो जाऊँगी। भैया कहते थे, बहुत सुंदर चित्र है।'' श्रीकान्ता बोली।

ललिता कटाक्ष को समझती थी, परन्तु वह ढीठ हो चुकी थी और उसे इस बात की चिंता नहीं रही थी कि कोई उसके विषय में क्या समझता है। इस पर भी वह मीरा को नीचा दिखाने की सोच रही थी। रहीमन ने कहा, ''खाइए न, बहन जी!''

मीरा ने कहा, ''मैं घर से खाकर चली थी। इस पर भी खा लेती यदि स्वस्थ होती तो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो क्या मचली होती है ?'' ललिता ने मुख लम्बा कर पूछा, ''और हाँ, भूख कम लगती है ? उल्टी करने को जी करता है ? ओह, तब तो तुम्हें घर पर ही बैठना चाहिए था। असलम साहब नाराज़ नहीं होते क्या ? बेचारे के जिगर के टुकड़े की जिंदगी खतरे में डाल रही हो।''

श्रीकान्ता व्यंग समझ गई और मीरा का कहीं अपमान न हो जाए, इससे ललिता से बोली, ''ललिता बहन! निर्मला भाभी को बुला लाओ, बहुत ज़रूरी काम याद आया है।''

ललिता जाना नहीं चाहती थी। इससे समीप बैठी एक लड़की से बोली, ''शांति बीबी! ज़रा जाना, बुला लाना।''

''नहीं, शांति बीबी को मैं बाज़ार भेज रही हूँ। देखो ललिता! बाहर बैंड बाजे की ध्वनि सुनाई दे रही है। ये लोग विदा कराने के लिए आए हैं।''

ललिता ने कहा, ''कान्ता बहन! बहुत दिन पीछे मीरा बहन से बातचीत करने का अवसर मिला है। समय कम है, ज़रा इनसे दो-चार मीठी-मीठी बातें कर लेने दो न।''

श्रीकान्ता हँस पड़ी। रहीमन ने कहा, ''परन्तु आज तो कान्ता बहन का विवाह है न। बातें तो उनकी ही होनी चाहिएँ। जिनके विवाह पुराने हो गए, उनकी कौन बात है ?''

मीरा समझ गई कि ललिता उसकी खिल्ली उड़ाना चाहती है, तो भी उसे इससे क्रोध नहीं आया। एक समय था, जब उसने हिन्दू रीति-रिवाज के अनुसार व्यवहार रखने पर ललिता की हँसी की थी। आज वह सोच रही थी कि शायद वह स्वयं भूल कर रही थी। इससे उसने श्रीकान्ता से कहा, ''कान्ता बहन! ललिता बीबी को बाहर भेजने की क्या आवश्यकता है ? इनको मुझसे कुछ गिला है। इसलिए कह लेने दो न, जो कुछ यह कहना चाहती हैं।''

''तो दोनों बाहर जाकर लड़ लो न।'' श्रीकान्ता ने हँसते हुए कहा।

ललिता ने कहा, ''लड़ने की बात कहाँ से आ गई है ? मैंने तो मीठी-मीठी बातें करने को कहा था। अच्छा छोड़ो इस बात को। मैं मीरा बहन से कुछ नहीं कहूँगी। पर इतना तो तुमको ही पूछना चाहिए कि ये कल क्यों नहीं आईं ?''

''हाँ, मीरा! कल बरात के साथ तुम्हारे आने की आशा थी।''

मीरा ने एक क्षण भी सोचे बिना कह दिया, ''मुझे मदन भैया की ओर से निमंत्रण नहीं मिला था।''

''सच!'' श्रीकान्ता ने अचम्भे में पूछा।

''इस पर भी बरात चढ़ने के समय वहाँ गई थी और भैया को घोड़ी चढ़ा देख आई थी तथा आशीर्वाद दे आई थी बाज़ार में ही। घर पर नहीं गई।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो तुम्हें किसी ने आने को नहीं कहा? शायद देखा नहीं।''

''देखने की बात नहीं, बहन! देखा भी और देखने के साथ गाली भी दी थी। परन्तु मुझे वहाँ जाने का दुख नहीं है।'' यह कहते-कहते मीरा की आँखें तरल हो उठीं।

श्रीकान्ता उसकी तरल आँखें देख चकित रह गई। ललिता के मन पर भी इसका प्रभाव हुआ। तभी नीचे से निर्मला आई और श्रीकान्ता से बोली, ''बहन चलो! सब चलने को तैयार हो गए हैं।''

सब उठ पड़ीं। श्रीकान्ता के एक ओर निर्मला, दूसरी ओर रहीमन थी। ये कमरे से निकल नीचे को चल पड़ीं। मीरा और ललिता उनके पीछे-पीछे थीं। मीरा ने रहीमन को पहले कभी नहीं देखा था। इससे ललिता से पूछने लगी, ''यह कौन लड़की है?''

''मेरे भाई खुशीराम को तो जानती हो न? उसकी औरत है।''

''बहुत सुंदर है। बिना शृंगार और आभूषणों के भी कैसी अच्छी मालूम होती है। इसका नाम बहुत विचित्र है।''

''यह मुसलमान है। नाम है रहीमन। मुसलमानी तरीके से विवाह हुआ है। खुशी का नाम खालिद लतीफ रखा गया है; परन्तु वह अपने को खुशीराम ही कहता है और यह लड़की अपने को राधा कहाना चाहती है।''

''क्यों?''

''इसको मुसलमानों से कुछ चिढ़ हो गई है। यह नहीं मालूम कि क्यों?''

मीरा सोचती थी कि खुशीराम ने इससे विवाह करने के लिए झूठे ही इस्लाम स्वीकार किया है। यह ठीक नहीं किया और शायद अब इस लड़की पर दबाव डाल रहा है कि वह हिन्दू हो जाए। इससे उसके मन में इस लड़की के विषय में कुछ अधिक जानने की इच्छा हो गई।

ये सब नीचे उतर आईं और आँगन में उस स्थान पर पहुँच गईं जहाँ बरात और घरात की स्त्रियाँ खड़ी थीं। मदन को भी बुलाया गया और श्रीकान्ता के समीप खड़ा कर दिया गया। पंडित वेद-मंत्र पढ़ने लगा। मंत्र पढ़ने के पश्चात् भगवान का धन्यवाद करते हुए पंडित ने 'अस्मिन् गृहे धनं धान्यं समाचरेत्' कहा। इस पर श्रीकान्ता और मदन से कहा गया कि वे धान की खीलें इस गृह में छिड़कते हुए विदा हों।

फिर श्रीकान्ता तथा मदन को फूलों से सजाई गई मोटर-कार में बिठा दिया गया। श्रीकान्ता के पास मदन की माँ बैठ गई। इस प्रकार मोटर को बाजों के पीछे खड़ा कर दिया गया। इसके पश्चात् बरात के स्त्री और पुरुष अन्य मोटर-गाड़ियों में बैठ गए। जब सब तैयार हो गए तो श्रीकान्ता के पिता आए। उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोटर में बैठे मदन तथा श्रीकान्ता को आशीर्वाद दिया और साथ ही दस हज़ार रुपये का एक चैक भी दिया। पश्चात् श्रीकान्ता की माँ आई और उसने दोनों को प्यार तथा आशीर्वाद देने के साथ एक अँगूठी श्रीकान्ता को दी। इसी प्रकार श्रीनाथ और निर्मला भी आशीर्वाद तथा भेंट देने आए। रहीमन, ललिता और मीरा तथा श्रीकान्ता की अन्य सहेलियाँ भी नमस्ते कहने आईं। जब यह हो चुका तो बरात को विदा कर दिया गया।

जब श्रीकान्त की डोली दूर निकल गई और आँखों से ओझल हो गई तो लोग घर वापस लौट आए। मीरा द्वार से लौट जाना चाहती थी। इसी प्रकार खुशीराम, जो कि पुरुषों के स्वागत और उनके खिलाने-पिलाने में लगा हुआ था, रहीमन को साथ ले वहीं से लौट जाना चाहता था। परन्तु निर्मला ने मीरा और खुशीराम दोनों को पकड़ लिया और बोली, "तुम दोनों ने कुछ नहीं खाया। चलो भीतर।" उसने ललिता को भी कहा, "ललिता! अभी एकदम भीतर आओ।"

निर्मला श्रीकान्ता की सब सहेलियों को लेकर भीतर चली गई। खुशीराम को श्रीनाथ के हवाले कर दिया गया और वह श्रीनाथ तथा अन्य पुरुषों के साथ बाहर की बैठक में चला गया।

:: 19 ::

श्रीकान्ता के कमरे को ताला लगा दिया गया था। अत: उसके बगल के कमरे में निर्मला सबको लेकर जा बैठी। नौकरानी सबके लिए दूध और मिठाई लाई। मीरा और रहीमन पास-पास बैठी थीं। मीरा को अपनी जिज्ञासा शांत करने का अवसर मिल गया। उसने रहीमन से पूछा, "आप ललिता की भाभी हैं?"

"जी।"

"आपका मायका कहाँ है?"

"कहीं नहीं है। माँ-बाप दोनों बचपन में ही मर गए हैं। एक नाम के नवाब थे, उन्होंने पाला-पोसा और नौकरानी बनाकर रखा हुआ था।"

"यह ललिता के भाई से कैसे विवाह हो गया आपका?"

"कहानी लम्बी है। उन्होंने मुझे खां साहब के अत्याचार से बचाया है और मैं उनकी बहुत अहसानमंद हूँ।"

"ओह! आपका नाम क्या है बहन?"

"राधा।"

"मगर ललिता को कहती थी, रहीमन है।"

"रहीमन था। मगर मुझे यह नाम पसंद नहीं है। एक दिन 'अनुराधा' पिक्चर देखने गई थी और फिर घर में उन्होंने राधा और कृष्ण की कहानी सुनाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे बहुत पसंद आई। तब से ही मैंने कहा कि मैं अपना नाम राधा रखूँगी। वे तो मुझे राधा कहकर ही पुकारते हैं परन्तु बाहर के लोग अभी पुराना नाम लेते हैं।''

''पर आपने नाम क्यों बदल लिया है? यह तो हिन्दुओं का नाम है और आप मुसलमानिन हैं।''

''मैं नहीं जानती। मुझे यह मालूम है कि जब मुसलमानों के घर में रहती थी, तो रोज पीटी जाती थी और अब एक हिन्दू के घर में मेरी इज्जत होती है।''

''श्रीकान्ता से कैसे परिचय हुआ है आपका? क्या ललिता ने कराया है?''

''ललिता तो हमसे बोलती भी नहीं। विवाह के बाद सब लोगों ने हमें दावतें दी थीं, परन्तु ललिता ने नहीं दी। ललिता के भाई साहब निर्मला बहन के बाबू साहब के छापेखाने में काम करते हैं और उन्होंने मुझे एक मुसीबत से बचाया भी था।''

''तो श्रीनाथ बाबू आपकी सहायता करते हैं?''

''जी।''

''रहीमन बीबी! आप बहुत अच्छी प्रतीत होती हैं। कभी मेरे घर आइए। बताओ, आओगी?''

''हाँ, आप बुलाएँगी तो ज़रूर आऊँगी। आपके विषय में मैं कुछ-कुछ जानती हूँ। वे बताते रहे हैं। आप कम्यूनिस्ट पार्टी के एक लीडर की बीवी हैं न?''

''तो मेरी बातें खुशीराम करते रहे हैं? भला क्या जानती हैं आप मेरी बाबत?''

रहीमन झेंप गई और अपनी मिठाई की तश्तरी की ओर देखते हुए, बिना कुछ कहे खाती गई। मीरा ने देखा कि वह उत्तर देना नहीं चाहती। इससे उसने यह अनुमान लगाया कि अवश्य उसकी निंदा होती रही होगी। इसलिए उसने बात को आगे चलाने का यत्न नहीं किया। कुछ देर बाद रहीमन ने स्वयं ही कहा, ''मीरा दीदी! आप मुआफ कर दें। हकीकत में जो कुछ मैं आपकी बाबत सुन चुकी हूँ, आप वैसी दिखाई नहीं देतीं।''

''कैसी दिखाई नहीं देती?'' मीरा ने फिर उत्साहित हो पूछा।

''छोड़िए। अब तो आप इंसानियत से पुर (मनुष्यता से पूर्ण) मालूम होती हैं। साथ ही आपकी आँखों में ईमानदारी की चमक दिखाई देती है।''

''और बेईमानी की चमक कैसी होती है?''

''जैसी ललिता दीदी की आँखों में है। वह दिलेरी से किसी की आँखों में देख नहीं सकती।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मैंने तो नहीं देखा ऐसा।''

''आप अभी देख लीजिए। आपकी आँखें उनकी आँखों से मिलीं कि वे घबराकर इधर-उधर देखने लगती हैं।''

''सच?''

''देखिए वे सामने बैठी हैं। उनके अपनी ओर देखने की प्रतीक्षा करिए। जब देखें तो आँखें मिलने दीजिए, फिर देखिए उनमें घबराहट दिखाई देगी।''

मीरा ने ललिता की ओर देखा। वह अपने समीप बैठी एक औरत से बातें कर रही थी। मीरा मन में सोचती थी कि इस बालिका को बुरे लोगों को पहचानने का बहुत अभ्यास है। मीरा का विचार था कि ललिता में कुटिलता, वैर-भाव, ईर्ष्या इत्यादि दुर्गुण तो हैं ही। इस लड़की ने भी उसकी आँखों में यही देखे हैं। फिर मीरा के मन में विचार आया कि घर-घर में लोग उसकी निंदा करते हैं। परन्तु वह तो अपने में कोई निन्दनीय बात नहीं पाती थी। शायद उसका एक मुसलमान से विवाह कर लेना ही निन्दनीय माना जाता है। परन्तु खुशीराम ने तो स्वयं एक मुसलमान लड़की से विवाह किया है। भला वह क्या निंदा करता होगा। इससे उसने रहीमन से मन की बात कहलाने के लिए कह दिया, ''मेरा एक मुसलमान से विवाह कर लेना ही मेरी निंदा का कारण माना जाता है न?''

रहीमन गम्भीर हो सोचने लगी। फिर अपने हाथ की उंगलियों को मरोड़ते हुए बोली, ''हमारे घर में आपके इस काम की निंदा कभी नहीं हुई। मैं भी तो मुसलमान रही हूँ।''

''तो क्या अब तुम मुसलमान नहीं हो?''

''देखिए बहन जी! विवाह से पहले मैं समझती थी कि इस्लाम पर ईमान रखने से नज़ात मिलती है और मैं समझती थी कि मैं मुसलमान हूँ। एक बार बाबूजी ने मुझे कहा कि विवाह की रस्म की क्या ज़रूरत है। मैंने उनकी बात नहीं मानी। विवाह के पूर्व उन्हें अपना जिस्म छूने तक नहीं दिया। फिर विवाह भी मैं मुसलमान तरीके से चाहती थी। वैसा ही हुआ। बाबूजी को इसके लिए मुसलमान होना पड़ा। विवाह के बाद मैंने उनसे कहा कि अब वे मुसलमान हैं, नमाज़ पढ़ना सीख लें। वे बोले कि मेरी खातिर वे सब-कुछ करने को तैयार हैं, मगर हकीकत में वे दिल से मुसलमान नहीं हुए। इससे मुझे पता चला कि दिल से मुसलमान बनाने के लिए कभी उनको किसी ने कुछ समझाया ही नहीं। मैंने सोचा कि मैं स्वयं हर रोज नमाज़ पढ़ूँगी। तो उनके दिल पर भी असर हो जाएगा। लेकिन हुआ इससे उलटा। फिर वे मधुर चाचा की पुस्तकें पढ़-पढ़कर सुनाते थे। वे कहानियाँ लिखते हैं। उन्होंने इन रस्मों की और मज़हबों की भारी नुक्ताचीनी (आलोचना) की है। मुझे सुनकर बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मज़ा आता है। धीरे-धीरे मेरे ख्यालात (विचार) बदलते जाते हैं। मुझे ऐसा मालूम होने लगा है कि दुनिया में दो बातें हैं, नेकी और बदी। सब जगहों पर और सब धर्मों में नेक और बद, दो तरह के लोग मौजूद हैं। मुसलमानों में भी हैं और हिन्दुओं में भी। मुझे कुछ ऐसा मालूम हुआ कि जिनके घर में मैं पली थी, वे नेक आदमियों में नहीं थे। नहीं तो मुझे छोटी-छोटी बातों पर पीटते ही क्यों। फिर वहाँ खदीजा बहन कुछ अच्छी थीं। वह मुझे पीटती थीं तो प्यार भी करती थीं। सुना है हिन्दुओं में भी कई बद लोग हैं। पर श्रीनाथ भैया और निर्मला बहन उनमें नहीं हैं। फिर ललिता बहुत बुरी है।

"मधुर चाचा का एक उसूल (सिद्धांत) है, जो उन्होंने अपनी पुस्तकों में लिखा है। वह यह कि नेकी और बदी को जानने के लिए हमें दूसरों से पूछने की ज़रूरत नहीं। हमें अपने दिल में ही इसका फैसला करना चाहिए। फैसले का तरीका उन्होंने यह बताया कि जब तुम किसी के साथ कोई सुलूक करने लगो तो देखो कि अगर दूसरा तुम्हारे साथ वैसा ही सुलूक करे तो तुमको कैसा मालूम होगा? या अगर तुम्हारे साथ कोई किसी किस्म का बर्ताव करने लगे, तो सोचो कि तुम वही बर्ताव उसके साथ करो तो वह क्या कहेगा। इसी से नेकी और बदी का इम्तिहान (परीक्षा) लिया जा सकता है।

"एक बात उन किताबों में और लिखी है। वे कहते हैं कि इंसान हैवान की औलाद है। इससे उसमें रह-रहकर हैवानियत आ जाती है और हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि हम हैवानियत को दबाकर रखें और इंसान बनने की कोशिश करते रहें। फिर उन्होंने यह भी लिखा है कि जिस्मानी ख्वाहिशात हैवानियत की निशानी है और इनको काबू में कर रखना इंसानियत है।

"अब मैं समझती हूँ कि इन बातों में इस्लाम और हिन्दूपन का सवाल तो है नहीं। जब ऐसा है तो मैं अब अपने को मुसलमान नहीं कहती। अब मैं अपने को राधा कहती हूँ कि और मैं तो अपने बाबूजी को भी नाम बदल लेने को कहती हूँ।"

"कौन-सा नाम बदल लें?"

"खुशीराम नाम बदल लें। मधुर चाचा ने कहा था कि हमें ऐसा नाम रखना चाहिए, जिससे इंसानी गुण जाहिर हों। खुशी अथवा क्रोध भी भला कोई नाम है।"

एक अनपढ़-सी लड़की को इस प्रकार की बातें करते देख मीरा चकित रह गई। उसने पूछा, "तो तुम अपने बाबूजी का क्या नाम रखना चाहती हो?"

"कई नाम हैं, जो मधुर चाचा ने और मैंने तजबीज़ किए हैं। एक नाम है 'सत्यभानु'। फिर एक है 'आनंद स्वरूप'। एक और है 'निर्मल चंद्र'। ये नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुर चाचा के बताए हैं। मैंने भी कुछ नाम बताए हैं 'मेहरचंद, सोहनलाल, गुलशन'।''

रहीमन द्वारा सुझाए गए नामों से मीरा समझ गई कि रहीमन में अभी परिपक्वता नहीं आई।

इस पर भी उनके मन में मधुर की पुस्तकें पढ़ने का विचार उत्पन्न हो गया।

तभी ललिता उठकर इनके पास आ बैठी। आते ही उसने कहा, ''रहीमन मेरी निंदा करती थी न?''

रहीमन मुस्कराई। मीरा की हँसी निकल गई। ललिता ने कहा, ''मैं पहले ही समझ गई हूँ। यह छोकरी जहाँ बैठती है, मेरी निंदा करती है। लेकिन इसकी ही बात क्या कहूँ? सभीं मुझे बुरा मानते हैं। मैं एक्ट्रेस जो ठहरी। केवल श्रीकान्ता बहन सभ्यता का व्यवहार करती हैं।''

मीरा ने बात बदलकर पूछा, ''अब कौन-सी फिल्म बन रही है?''

''आजकल 'असलियत' नाम की फिल्म बन रही है।''

''कहानी-लेखक कौन है?''

''मुंशी ताजदीन हैं।''

''कहानी क्या है?''

''एक निर्धन परिवार दिखाया गया है। परिवार के सब आदमी दिन भर मेहनत करते हैं। इस पर भी उनका निर्वाह नहीं हो पाता। परिवार में एक लड़का है, जो एक धनी के घर बर्तन माँजता है। वे लोग भूख से इतने व्याकुल रहते हैं कि वह लड़का जूठन में से रोटी के टुकड़े उठा-उठाकर घर वालों के लिए ले जाता है। धनी की एक लड़की है, जो उस लड़के को इस प्रकार निर्वाह करते देख मन में सोचती है और इसका कारण जानने के लिए अपनी माँ से प्रश्न करती है। माँ कहती है भगवान की जैसी इच्छा। इस उत्तर से संतुष्ट न हो वह अपने पिता से पूंछती है। वह उसे कर्मों का फल बतलाकर टाल देता है। तब वह अपनी अध्यापिका से पूछती है। अध्यापिका उनकी इस निर्धनता का कारण बतलाती है परिवार की मूर्खता को। इससे भी संतोष न पा वह स्वयं लड़के से पूछती है। लेकिन वह भी इस कष्ट का कारण नहीं बता पाता। वह स्वयं विचार करती है। उस लड़के के घर जाती है और वहाँ से उसके पड़ोसियों, अन्य निर्धनों से मिलती है। धीरे-धीरे उसके मन में समाज में फैली दुर्व्यवस्था का प्रकाश होता है। वह इसका उपाय सोचती है। लड़का इसमें उसकी सहायता करता है। कई प्रकार के परीक्षण किए जाते हैं। अंत में वे दोनों इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि संसार निर्धनों को ठग रहा है। धनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों ने ऐसे कानून बना रखे हैं जिनसे सदा धनियों को ही लाभ पहुँचता है। अंत में वे दोनों षड्यंत्र कर धनी पिता के घर में चोरी करते हैं। इस प्रकार हथियाए धन से वह लड़का अपना कारोबार चलाता है।

''लड़के-लड़की में प्रेम हो जाता है। धनी को इसका पता चल जाता है। वह लड़की को डाँटता है। लड़की विद्रोह करती है। बाप लड़की को घर से निकाल देता है। इस समय धनी को चोरी का ज्ञान हो जाता है और वह लड़के को फँसाने का यत्न करता है। लड़की अदालत में उपस्थित हो स्वयं चोरी करना स्वीकार कर लेती है और लड़का छूट जाता है। लड़की को जब दंड होने लगता है, तो बाप का प्रेम उमड़ आता है। वह उसे बचाने का यत्न करता है। परन्तु लड़की अदालत को न्याय करने पर ललकारती है और चाहती है कि उसे इस कारण न छोड़ा जाए कि वह एक धनी की लड़की है।

''इससे पिता के मन में वैराग्य उत्पन्न हो जाता है। वह अपनी पूर्ण सम्पत्ति अपनी लड़की को दे संन्यास ले चला जाता है। परन्तु लड़की, जो इस बीच लड़के से विवाह कर लेती है, उस धन को स्वीकार नहीं करती। अत: उस धन से एक बैंक खोल दिया जाता है जिससे गरीबों को अपना काम-धंधा शुरू करने के लिए पूँजी मिल सके।''

मीरा को यह कहानी बहुत अच्छी लगी। उसने कहा, ''बहुत सुंदर है। पिक्चर कब तक तैयार हो जाएगी?''

''अभी तीन-चार महीने लग जाएँगे।''

:: 20 ::

मीरा श्रीकान्ता के विवाह पर गई तो अपनी चिंताओं को भूल गई थी, परन्तु जब लौटकर होटल में पहुँची तो पुन: वहाँ के झमेले से परेशानी अनुभव करने लगी। असलम अभी तक नहीं लौटा था। सायं की चाय पीकर उसने उसका पता करने की ठानी। उसने क्लब में टेलीफोन किया। वहाँ के हैड बटलर ने बताया कि रात असलम, सेठ मगनलाल, मिस ऐलिस, बाबू निशनाथ, ललिता देवी और उनके एक मेहमान कासिम खां खाना खाने आए थे। खाना खाने के पश्चात् ललिता देवी, सेठ मगनलाल और बाबू निशनाथ एक मोटर गाड़ी में बैठे चले गए थे और मिस ऐलिस, असलम साहब तथा कासिम खाँ दूसरी मोटर में।''

''आप ठीक कहते हैं न? आप भूल तो नहीं कर रहे?'' मीरा ने पूछा।

''नहीं साहब! भूल नहीं कर रहा। ये सब लोग यहाँ अक्सर आते रहते हैं और मैं सबको जानता हूँ।''

''मिस ऐलिस के विषय में आप कुछ बता सकते हैं कि कौन है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं जी, मैं कुछ नहीं जानता। वह अक्सर असलम साहब के साथ घूमती हुई देखी जाती है।"

"और यह कासिम खां?"

"कश्मीरी हैं। बस इतना ही जानता हूँ।"

मीरा ने टेलीफोन बंद कर दिया। वह गम्भीरतापूर्वक सोचने लगी कि आखिर बात क्या है, जो असलम बिना बताए चला गया और अब तक लौटा नहीं।

उसी सायंकाल वह टैक्सी में सवार हो क्लब जा पहुँची। वह सीधे सैक्रेटरी के कमरे में चली गई। सैक्रेटरी का नाम टॉमसन था। वह एक ऐंग्लो-इण्डियन था और क्लब का मुलाजिम था। मीरा ने वहाँ पहुँच पूछा, "मैं आपसे कुछ जानना चाहती हूँ।"

"हम क्लब के मैम्बरों की बातें उनकी बीवियों को नहीं बताते।"

"आप सुनिए तो कि मैं क्या पूछती हूँ। जो बात बताना उचित समझिएगा, बताइएगा। मैं यह जानना चाहती हूँ कि मिस ऐलिस, जो मिस्टर असलम के साथ यहाँ आती हैं, कहाँ रहती हैं?"

"यह ठीक है। इसका जवाब दे सकता हूँ। मिस ऐलिस, मिस्टर हैनरी स्मिथ, मिशिगन रेडियो कार्पोरेशन के जनरल मैनेजर की मेहमान हैं। वे लॉरेंस रोड नम्बर तीस में रहते हैं।"

मीरा ने धन्यवाद किया और बाहर निकल आई। क्लब से वह लॉरेंस रोड पर जा पहुँची और हैनरी स्मिथ की कोठी में पहुँच चपरासी को पूछने लगी, "मिस ऐलिस घर पर हैं?"

"नहीं, मेमसाहब!"

"कहाँ गई हैं?"

"नहीं जानता।"

"साहब हैं?"

"हाँ।"

"उनसे कहो एक औरत मिलने आई है।" इतना कह मीरा ने एक कागज़ पर अंग्रेजी में अपना नाम लिखकर दे दिया।

चपरासी भीतर गया और फिर बाहर आ मीरा से बोला, "आइए, बैठिए। साहब अभी आते हैं।"

मीरा को वह कोठी के ड्राइंगरूम में ले गया और वहाँ बैठा बाहर चला गया। इसके दो-तीन मिनट पीछे, एक अधेड़ आयु का हृष्ट-पुष्ट अमेरिकन आया और आते ही बोला, "क्षमा करें, आपको प्रतीक्षा करनी पड़ी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''नहीं, कुछ हानि नहीं हुई है। मैं मिस ऐलिस से मिलने आई थी। मैंने समझा कि शायद आपसे कुछ मालूम हो जाएगा कि वे कहाँ गई हैं?''

''आज प्रातः वे श्रीनगर चली गई हैं।''

''अकेला गई हैं या उनके साथ कुछ लोग और भी गए हैं?''

''वे हैं और उनके 'फाइन्सें' (होने वाले पति) मिस्टर एम.ए. हमीद भी साथ हैं।''

''मिस्टर हमीद? आपका मतलब मिस्टर कासिम से है न?''

''मिस्टर कासिम तो रात की गाड़ी से ही चले गए थे।''

''ओह! ठीक। क्षमा करें, आपको कष्ट दिया है।''

''आपकी लिखी चिट्ठी से मालूम होता है कि आप कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थानीय नेत्री हैं। मैं आपसे मिलकर अत्यंत प्रसन्न हुआ हूँ। बताइए, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?''

''धन्यवाद! कुछ नहीं।'' इतना कह मीरा उठ खड़ी हुई और बाहर चली आई। मिस्टर स्मिथ उसे छोड़ने बाहर आए। दोनों कोठी की लॉन में चले आए थे। मिस्टर स्मिथ ने पूछा, ''यह मिस्टर हमीद, सुना है, रूस में शिक्षा प्राप्त कर आए हैं?''

''मुझे मालूम नहीं। मैं उन्हें नहीं जानती।'' मीरा ने उत्तर दिया।

''वे बहुत दिन से लाहौर में हैं, फिर भी आप नहीं जानतीं।''

''मिस्टर हमीद?'' मीरा ने अचम्भा प्रकट करते हुए पूछा।

''हाँ! मिस्टर एम.ए. हमीद।''

मीरा को अब कुछ-कुछ संदेह होने लगा। वह वहीं लॉन में खड़ी हो गई और मिस्टर स्मिथ के मुख की ओर देखकर बोली, ''एम.ए. हमीद! पूरा नाम क्या है?''

''पूरा नाम? भूल गया हूँ। प्रायः इसकी ज़रूरत नहीं रहती। यह मिस ऐलिस मेरी सिस्टर-इन-लॉ (साली) है। उसे यहाँ आए एक महीना हो गया है और यहाँ मिस्टर हमीद से 'रोमांस' हो गया है। कुछ दिन हुए मिस ऐलिस ने मिसेज स्मिथ से कहा था कि वह इनसे विवाह कर रही है।''

मीरा का मस्तिष्क चक्कर खाने लगा था। वह अधिक काल तक खड़ी नहीं रह सकी और बोली, ''अच्छा क्षमा करें, मुझे काम है। मैं आपसे फिर मिलने की आशा करती हूँ। मैं तो मिस ऐलिस से पार्टी के कार्य से मिलने आई थी।''

मीरा लपककर टैक्सी में सवार हो गई और मिस्टर स्मिथ सिर हिला, असंतोष प्रकट करता रह गया। उसके मुख से निकल गया, 'डिसएपोइन्टिड लव।'

मीरा होटल में पहुँच स्थिति पर विचार करने लगी। उसके सम्मुख घटना--

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्र पूर्ण रूप से उपस्थित था। असलम की ओर उसका आकर्षण। कम्यूनिस्ट पार्टी के सिद्धांतों का उसके मस्तिष्क पर प्रभाव। निर्धनों की दुर्दशा का दृष्टिगोचर होना। उससे दु:खी हो उसका पार्टी-कार्य में सहयोग। असलम की सहायता से उसे नगर की पार्टी का नेता-पद मिलना। फिर सभाओं, पार्टियों में जाना और भिन्न-भिन्न नेता लोगों से मेल-मिलाप और उससे उसके मस्तिष्क में एक नशा उत्पन्न हो जाना। असलम से घनिष्ठता का बढ़ना। नगर की कम्यूनिस्ट पार्टी का 'लोक सेवा' पत्र निकालने का परामर्श। उसका सम्पादिका बनना। उससे उसमें उन्माद का बढ़ना। ये सब बातें क्रमश: उसके मस्तिष्क में चक्कर काटने लगीं। इसके पश्चात् असलम ने होटल में रहना आरम्भ कर दिया था। मीरा बिना विवाह किए अथवा दम्पती बनने के विचार की पूर्व घोषणा किए ही उसकी पत्नी बन गई। मीरा के आग्रह पर असलम ने होटल में पार्टी देकर सबके सम्मुख घोषणा की कि उनका विवाह हो गया है। फिर 'हनीमून' के लिए भ्रमणार्थ कई स्थानों पर जाना। सबसे पहले मद्रास में असलम की पर-स्त्रियों के पीछे-पीछे भागने की प्रवृत्ति प्रकट हुई। फिर लाहौर में आने के पश्चात् वह क्लब का मैम्बर बन गया और उसने शराब पीना आरम्भ किया। शराब के नशे में कभी-कभी उसका बकना कि वह स्त्रियों से सम्बन्ध रखने में स्वतंत्र है। फिर धीरे-धीरे उसकी ओर से प्रेम में शिथिलता और अब बिना सूचना दिए लाहौर से बाहर चला जाना। ये सब घटनाएँ मिस्टर स्मिथ के कथन की पुष्टि करती थीं। इस पर भी उसके मन में आशा विद्यमान थी और वह सोचती थी कि हो-न-हो असलम किसी आकस्मिक कार्य से कश्मीर चला गया है और ऐलिस के साथ उसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। यदि वह प्रकट में अपने को ऐलिस का भावी पति प्रसिद्ध कर रहा है, तो हो सकता है इसमें कोई नीति हो। अथाह सागर में आशा के इस तिनके-मात्र का सहारा पाकर वह उसे पार करने का स्वप्न देखने लगी थी।

वह मन में सोच रही थी कि भविष्य में वह उससे बहुत ही प्रेममय व्यवहार करेगी और उसे यह भी आशा थी कि इससे वह उसे इधर-उधर भटकने से बचा सकेगी। एक बार पुन: अपने मन में अपने व्यवहार को सुधारने का निर्णय कर वह अवसर की प्रतीक्षा करने लगी।

इस पर भी उसका मन भीतर-ही-भीतर बैठा जाता था।

:: 21 ::

विवाह के दूसरे ही दिन श्रीकान्ता और मदन में मीरा के विषय में बातचीत हो गई। श्रीकान्ता का कहना था कि मीरा से मेल-मिलाप रखना चाहिए। मदन का मन भी यही कहता था, परन्तु युक्ति में उसके पिता का सिद्धांत ठीक प्रतीत होता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकान्ता ने मदन को यह भी बताया कि मीरा गर्भवती हो गई है और वह बहुत दुखी प्रतीत होती है। इस पर मदन ने उस रात की घटना सुनाई, जब असलम शराब पीकर आया था। श्रीकान्ता इस समाचार से अचम्भे में पड़ गई क्योंकि वह कहने लगी, ''उसके पास इतना धन कहाँ से आ गया है ? पहले तो उसके पास खाने को भी काफी नहीं होता था। पार्टी तो एक-एक पैसे का हिसाब लेती है।''

अत: उन दोनों ने यह निश्चय किया कि शीघ्रातिशीघ्र मीरा से मिला जाए। विवाह के सम्बन्ध में मित्रों-परिचितों तथा सम्बन्धियों का आना--जाना तीन-चार दिन तक रहा। पश्चात् एक दिन श्रीकान्ता और मदन अपनी घोड़ा-गाड़ी में बैठ होटल जा पहुँचे। मीरा अपने कमरे में ही थी। भाई-भावज दोनों को आए देख प्रसन्नता प्रकट करती हुई, उनका स्वागत करने लगी। बोली, ''मैं आशा करती थी और आपने आशा पूर्ण की।''

''मैं तो मिलने के लिए पहले भी आता मीरा! परन्तु असलम साहब मेरा तुमसे मिलना पसंद नहीं करते, इससे आने में संकोच करता था। परन्तु अब कान्ता को जब अन्य सम्बन्धियों के घर जाना पड़ रहा है, तो हमारा विचार हुआ कि यहाँ भी आना चाहिए।''

''तो आप मुझे अपना सम्बन्धी समझते हैं क्या ?''

''हाँ, मैं तो समझता ही हूँ, परन्तु कुछ और लोग हैं, जो समझते हैं कि तुमसे सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है।''

मीरा की आँखें डबडबा आईं। श्रीकान्ता ने तुरंत बात बदल दी और पूछा, ''कैसी तबियत है आज ?''

मीरा ने लम्बी साँस लेकर कहा, ''कुछ ठीक ही प्रतीत होती है।''

''परन्तु मुख तो बहुत उतर गया है। असलम साहब कहाँ गए हैं ? क्लब में ?''

''आप जानती हैं कि वे क्लब में जाते हैं ?''

''हाँ, ललिता ने बताया था।''

''ओह!'' उसे याद आ गया कि क्लब के 'बटलर' ने बताया था कि सेठ मगनलाल और निशनाथ भी क्लब में जाते हैं। इससे उत्साहित हो मीरा ने पूछा, ''ललिता मिलती रहती है आपको ?''

''कल मिलने आई थी।''

''मैं उससे मिलना चाहती हूँ।''

''क्यों ?''

''वे पाँच दिन से नहीं आए। बिना बताए, सुना है, काश्मीर चले गए हैं।''

''वहाँ क्या है ?'' मदन ने सतर्क हो पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''आपने समाचार-पत्रों में पढ़ा होगा कि काश्मीर के मुसलमानों ने काश्मीर के राजा के विरुद्ध बगावत कर दी है।''

''तो फिर?''

''मिस्टर कासिम उन मुसलमानों के नेता बन रहे हैं।''

''मगर....।''

''छह दिन हुए मिस्टर कासिम यहाँ आए थे और वे उनके साथ ही काश्मीर गए हैं।''

मदन यह समाचार सुन स्ताब्ध रह गया। काश्मीर के महाराजा ने इंग्लैंड में हो रही 'राउण्डटेबल कान्फ्रेंस' में कहा था कि वह स्वतंत्र भारत के अधीन होकर रहेगा। इससे इंग्लैंड के 'टोरी' सटपटा उठे थे। वे राजा-महाराजाओं को भारत की स्वतंत्रता के विरुद्ध खड़ा करना चाहते थे। उन राजा-महाराजाओं के प्रतिनिधियों में महाराजा काश्मीर भी थे और उन्होंने अंग्रेज टोरियों की इच्छाओं और अभिलाषाओं के विपरीत उक्त घोषणा की थी। महाराजा काश्मीर के भारत में आते ही उसके राज्य में विप्लव खड़ा हो गया। साथ ही अंग्रेजी समाचार-पत्र इन विप्लव करने वालों को प्रोत्साहन देने लगे।

''तो इसके यह अर्थ निकले कि असलम साहब एक देश-भक्त को देश-भक्ति के अपराध का दंड देने काश्मीर गए हैं।''

मीरा का मुख विवर्ण हो रहा था। वह रोने लगी थी और लज्जा से उसने आँखें नीची कर ली थीं। श्रीकान्ता ने यह देख कहा, ''अरी! तुम रोती क्यों हो? तुमने क्या किया है?''

मीरा ने उत्तर नहीं दिया। वह मन में सोच रही थी कि विचार-समानता से प्रेरित होकर ही उसने असलम से विवाह किया था। अब वह विचार-समानता कहाँ गई? वह स्वयं तो देश के लिए आत्म-बलिदान करने के लिए तैयार थी। कम्यूनिस्ट पार्टी में भी वह इसी कारण सम्मिलित हुई थी कि वह इस पार्टी को देश और जाति की हितचिंतक समझती थी और असलम उस पार्टी का नेता था। परन्तु असलम के इस व्यवहार से उसकी धारणा को ठेस पहुँची थी। एक बात और थी। वह समझती थी कि असलम काश्मीर का यह आंदोलन अपने निजी उत्तरदायित्व पर चला रहा है और इसका पार्टी से कुछ सम्बन्ध नहीं। इस युक्ति के मन में उठते ही उसे असलम से सम्बन्ध फीका प्रतीत होने लगा। वह सोचती थी कि यदि उनके विवाह होने में प्रधान कारण विचारों की समानता थी तो अब यह विवाह व्यर्थ हो गया है और यदि विवाह का कारण विचार-ऐक्य न होकर केवल प्रेम अथवा शारीरिक आकर्षण है, तो वह बहुत क्षुद्र विचार वाली स्त्री सिद्ध हुई है। इस प्रकार के विचारों के बवंडर में फँसी हुई उसे कोई रास्ता नहीं सूझता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदन ने जब मीरा का उदास मुख देखा तो उसे इस विषय की बात चलाने का भारी दु:ख हुआ। श्रीकान्ता ने कहा, ''मैं कल ललिता को साथ लेकर यहाँ आऊँगी।''

उसी समय मदन ने अपने चमड़े के थैले में से एक डिब्बा निकाला और उसे खोलकर मीरा से कहा, ''मीरा बहन! यह देखो।''

मीरा ने रूमाल से आँसू पोंछते हुए डिब्बे को देखा। उसमें सोने का एक गले का हार रखा था। मदन ने पूछा, ''कैसा है?''

''बहुत सुंदर है।''

मदन ने श्रीकान्ता की ओर देखा तो उसने हार उठाकर मीरा के गले में डालते हुए कहा, ''यह हमारे विवाह के उपलक्ष में बहन को उपहार है।''

मीरा का मुख खिल उठा। पश्चात् त्योरी चढ़ाकर और व्यंग भाव से वह बोली, ''विवाह का निमंत्रण तो भेजा नहीं।''

मदन ने आँखें नीचे झुकाकर कहा, ''हिन्दू परिवार में विवाह के पूर्व किसी का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता। निमंत्रण भेजना अथवा न भेजना माता-पिता का कार्य था।''

''तो श्रीकान्ता भाभी ने निमंत्रण कैसे दिया था?'' मीरा ने मदन को युक्ति में परास्त कर लिया समझ कहा।

उत्तर श्रीकान्ता ने दिया, ''मुझे तो माताजी ने आदेश दिया था कि मैं अपनी सब सहेलियों को लिखूँ।''

''ठीक है। भैया की सहायता भाभी नहीं करेगी तो और कौन करेगा?''

मदन और श्रीकान्ता हँस पड़े। मीरा ने कहा, ''भाभी! चाय मँगवाऊँ?''

''यहाँ नहीं। आज तुम हमारे साथ चलो। हम तुम्हें घर ले चलेंगे।''

''चार दिन में ऐसा क्या अंतर पड़ गया है?''

''तो क्या तुम नहीं जानतीं?'' मदन ने मुस्कराते हुए पूछा।

''मेरा मतलब तायाजी तथा ताईजी से है और माताजी भी तो वहाँ हो सकती हैं?''

मदन ने बात समझाते हुए कहा, ''मीरा! पिताजी, माताजी तथा चाचीजी के विषय में हम कुछ नहीं कहते। हम तो अपने विषय में ही बताते हैं। मैंने कहा है न कि परिवार में विवाहित लोगों का अपना अस्तित्व होता है। वह अब हमें प्राप्त है।''

मीरा समझ गई कि मदन और श्रीकान्ता दोनों उसे पुन: घर में ले जाने का षड्यंत्र कर रहे हैं। इस पर वह भारी सोच में पड़ गई। अपनी माँ तथा मदन के माता-पिता की संगत में होने का अवसर पुन: प्राप्त करना यद्यपि उसके लिए एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारी प्रलोभन था, परन्तु वह समझती थी कि जब उन्होंने उसे त्याज्य मान लिया है तो अब अपने को उन पर थोपना उचित नहीं। मदन तथा नव-वधू की प्रसन्नता के लिए वे उसे स्वीकार कर भी लें तो भी मन से तो वह घृणा की पात्र ही रहेगी। और अब असलम के व्यवहार से उसके मन में आत्म-ग्लानि भी हो रही थी और वह वास्तव में अपने को मदन जी के परिवार के योग्य नहीं समझती थी। इस प्रकार लोभ और ग्लानि के भावों के संघर्ष में वह निश्चय नहीं कर सकी कि उनके साथ चले अथवा नहीं। मदन उसकी अनिश्चितता को देख यह अनुमान लगा रहा था कि उसे लज्जा अनुभव हो रही है, इससे वह अपनी माता तथा सेठजी के सामने नहीं आना चाहती और वह उसकी लज्जा तोड़ना चाहता था। बहुत सी अच्छी तथा बुरी बातें केवल-मात्र लज्जा के कारण नहीं की जातीं। वह समझता था कि यदि मीरा पुनः परिवार में आने-जाने लगे तो उसका कल्याण ही होगा।

श्रीकान्ता ने भी यही समझा। उससे उसने आग्रह कर कहा, "मीरा बहन! जब हम तुम्हें साथ ले जाएँगे तो तुम्हारी ओर कोई उंगली नहीं उठा सकता।"

मीरा के मुख पर पुनः दुःख की छाया व्याप्त हो गई। उसने आँखें नीची कर कहा, "मैं अपनी निंदा से नहीं डरती। डरना होता तो उस दिन बरात के चढ़ने के समय वहाँ न पहुँचती। लोगों ने जो गालियाँ दी थीं, उनसे मुझे अपने किए पर पश्चात्ताप नहीं हुआ। मुझे तो इस बात की चिंता हो रही है कि मेरे वहाँ जाने से तायाजी तथा ताईजी को दुःख न हो। निश्चय ही वे मुझे अच्छा नहीं समझते। समझते होते तो निमंत्रण निश्चय ही भेजते। आपके कारण अवश्य चाहे वे कुछ न कहें, परन्तु वे मेरे वहाँ जाने से प्रसन्न न होंगे।"

इसका उत्तर मदन तथा श्रीकान्ता के पास नहीं था। मदन ने केवल यह कहा, "हमारा विचार है कि यदि एक बार तुम वहाँ चली चलो तो पिताजी तथा माताजी व चाचीजी मान जाएँगी। यदि उनको कुछ दुःख हुआ भी तो तुम्हारी नम्रता और शील स्वभाव उन्हें जीत लेगा।"

इस कथन ने मीरा को जीत लिया। युक्ति से जो परास्त नहीं हो सकी थी वह भावुकता की बात से निरुत्तर हो गई। पर श्रीकान्ता ने कहा, "हम युवाओं को बड़ी आयु वालों से अधिक लचकदार होना चाहिए, अन्यथा युवावस्था के अर्थ ही क्या हैं?"

उसकी इस बात ने मीरा को परास्त कर दिया। वह सोचने लगी कि स्वयं उसने ही तो विलक्षणता का व्यवहार किया है। इसलिए अब उसे ही झुकना चाहिए। इससे बिना कुछ और कहे वह उठी और भीतर के कमरे में कपड़े बदलने चली गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार

प्रायश्चित्त तथा तपस्या

ललिता में जो उच्छृंखलता तथा उद्दंडता थी, वह एक ओर तो निशनाथ की नीति से और दूसरी ओर निशनाथ की माता की सहिष्णुता से ढलती जाती थी। विवाह के पूर्व तो वह यह समझती थी कि लक्ष्य-सिद्धि के लिए जो भी उपाय प्रयोग में लाया जाए, उचित ही है। इस कारण जब उसे पता चला कि सेठ मगनलाल सोने की खान है तो उसने अपने को धनी बनाने के लिए सेठ साहब को प्रसन्न करने का भरसक यत्न किया। घर पर कोई पूछने वाला नहीं था। माँ समझती थी कि लड़की सज्ञान हो गई है, इससे पति ढूँढने में स्वतंत्र है। पहले पार्टी में काम करती थी तो अनेक युवकों से अपनी आवश्यकताएँ पूर्ण कराने में युक्तियाँ लड़ाती रहती थी। अब सेठ साहब मिल गए तो लड़कों से आँख-मिचौनी का खेल उसे रुचिकर नहीं लगता था।

एक बात वह विवाह से पहले ही अनुभव कर चुकी थी। वह थी गर्भ-स्थित हो जाने का भय। इसलिए इस मुसीबत में पड़ने से बचती रहती थी। उसने ट्रेनिंग कॉलेज में पढ़ाई के दिनों में इस विषय पर बहुत-कुछ अध्ययन कर लिया था। यही कारण था कि वह अपने सामाजिक सम्बन्धों के गड्ढों वाले तथा टेढ़े-मेढ़े मार्गों से सफलतापूर्वक बचती चली जाती थी।

निशनाथ को वह एक निर्धन प्रेमी मानती थी। अत: उसके प्रति घृणा का भाव रखना उसके लिए स्वाभाविक ही था। परन्तु जब उसे विश्वास हो गया कि वह खाने-कमाने लगा है तो उसके प्रति उसके भाव भी बदले। निशनाथ से विवाह करने से पूर्व उसने यह समझ लिया था कि सेठ मगनलाल को ठगने में निशनाथ उसके सहकारी बनेगा।

परन्तु एक निर्धन माँ का पुत्र होने के कारण और अपनी शिक्षा-काल के खर्चे का स्वयं प्रबंध करते-करते निशनाथ कार्य-सिद्धि की योजना बनाने में सिद्धहस्त हो चुका था। यदि ललिता पहले ही समागम में उसकी वासना-तृप्ति कर देती और उसे घृणा का भाव न दिखाती तो उसके मन में ललिता को नीचा दिखाने का भाव उत्पन्न ही न होता और शायद बदला लेने की भावना न होने से वह फिल्म कम्पनी में नौकरी करने जाता ही नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु पहले वह स्वयं अच्छे वेतन पर नौकर हुआ और फिर ललिता को फाँसकर वहाँ ले गया। उस समय उसके मन में प्रतिकार की ज्वाला धधक रही थी और वह ऐसी स्थिति उत्पन्न करना चाहता था कि ललिता पतित हो जाए और फिर वह उसका मज़ाक उड़ाए।

परन्तु हुआ इसके विपरीत। जब ललिता ने उसके लिए सेठ से लड़ना स्वीकार किया तो उसे विश्वास हो गया कि ललिता में भी बीज रूप में अच्छाई विद्यमान है। फिर उससे अगले दिन जब ललिता ने बताया कि वास्तव में वह उसे पार्टी के अन्य युवकों से श्रेष्ठ मानती है तो उसने इसका कारण पूछा। ललिता ने बताया कि पहले दिन की भेंट में ही उसने उसके अन्य चाहने वालों से भिन्नता और उच्चता प्रकट की थी। उस दिन के अच्छे प्रभाव के कारण ही वह पुन: उसके साथ चलने को तैयार हो गई थी।

जब ललिता से उसने अपनी कामेच्छा-तृप्ति की माँग की तो वह मलिन मुख हो बोली कि उसने तो उससे विवाह करने के लिए सोचा था। इससे निशनाथ चकित रह गया। बोला, "सेठ मगनलाल की रखैल बनकर भी अब उसे विवाह की आवश्यकता कैसे हो गई?"

"तुम तो कहते थे कि तुममें हृदय है और तुम्हारी आत्मा की-सी माँग मैंने औरों से नहीं सुनी होगी। शरीर तो न जाने कहाँ-कहाँ ठोकरें खाता आ रहा है यह मैं मानती हूँ। परन्तु यदि वास्तव में कोई आत्मा है तो वह तो मगनलाल की रखैल नहीं है।" ललिता ने उत्तर दिया।

"तो तुम शरीर के अतिरिक्त किसी ऐसी वस्तु का अस्तित्व अपने में पाती हो, जो तुम्हें तुम्हारे शरीर से भिन्न मार्ग की ओर चलने की प्रेरणा करता है?"

"मैं नहीं जानती। पर मैं ऐसा अनुभव करती हूँ कि तुम अच्छे आदमी हो, दूसरों से भिन्न हो और तुम्हारे साथ दूसरों जैसा व्यवहार करना ठीक नहीं।"

"दूसरों से कैसा व्यवहार है तुम्हारा, जो मेरे साथ नहीं?"

"दूसरों से मैं 'ब्लॉटिंग पेपर' का-सा व्यवहार रखती हूँ। जानते हो पिछले तीन मास में मैंने सेठ से कितना रुपया लिया है?"

"कितना?"

"पचास हज़ार।"

"ओह!"

"परन्तु तुमसे तो रुपया माँगते मुझे हिचकिचाहट होती है।"

यह सुन निशनाथ गम्भीर विचार में पड़ गया। वह सोच रहा था कि क्या वास्तव में ललिता की आत्मा बोल रही है अथवा वह उसे किसी भाँति ठगने का यत्न कर रही है। वह सोचती थी कि इस प्रकार शायद वह उसे, सेठ मगनलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ अपने अनुचित सम्बन्ध को ढाँपने के लिए पर्दा बनाना चाहती है। वह ललिता के पलंग से उठ, उसके कमरे में लगे आईने के सामने खड़ा हो जोर-जोर से सिर पर कंघा फेरने लगा। ऐसा करने से उसे उग्रता से सोचने में सहायता मिला करती थी। जब दो मिनट तक बालों को सँवारने पर भी वह कुछ समझ नहीं पाया तो कंघे को मेज़ पर पटक खुशीराम के कमरे में चला गया। वह रात को वहीं सोया था। खुशीराम इस समय स्नान कर प्रातः का नाश्ता ले छापेखाने को चला गया था। अभी निशनाथ को वहाँ आए अधिक देर नहीं हुई थी कि ललिता उसके पीछे-पीछे वहाँ पहुँच गई। निशनाथ प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा। ललिता ने पूछा, "आप एक स्त्री के लिए कुछ उपहार ले, थोड़े समय के लिए शरीर बेच देना सुगम समझते हैं या बिना उपहार प्राप्त किए जीवन-भर के विवाह-बंधन में बँध जाना?"

निशनाथ ने उसके कथन का आशय समझ कहा, "मैं क्या जानूँ? भगवान् ने मुझे न तो स्त्री बनाया है और न ही धन का लोभी।"

"यदि आप यह छोटी-सी बात नहीं समझते तो मैं समझाती हूँ। यदि मैं सेठ मगनलाल से एक-आध वर्ष और सम्बन्ध रख सकी तो मैं इतना पैदा कर लूँगी कि फिर जीवन-भर मेरे स्वतंत्रता से निर्वाह कर सकने में संदेह नहीं रहेगा। परन्तु नहीं जानती कि आपसे विवाह कर लेने पर क्या कुछ हो जाएगा। तब आप मुझे इस प्रकार दूसरों के लिए 'ब्लॉटिंग पेपर' बनने की स्वीकृति देंगे अथवा नहीं, मुझे विदित नहीं। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि आप मेरे पूर्ण चरित्र को जानकर मेरे साथ कैसा व्यवहार करेंगे, इसका भी निश्चय नहीं। अब बताइए दोनों मार्गों में कौन सुगम तथा सुलभ है?"

"यही तो मैं सोचता हूँ, ललिता! तुम इस दुस्तर मार्ग का अवलम्बन क्यों करने जा रही हो? कहीं मेरी हँसी तो नहीं करना चाहतीं?"

"यदि मैं कहूँ नहीं, तो तुम विश्वास नहीं करोगे। इससे मेरे कहने का कुछ अर्थ ही नहीं। इतना कह सकती हूँ कि यदि तुम्हें संदेह है तो परीक्षा कर देखो।"

"अच्छा, यह बताओ कि मैं वैदिक विधि से विवाह करना चाहूँ तो?"

"मुझे आपत्ति नहीं होगी।"

"मेरी माता के पास चलकर रहना होगा और उसकी आज्ञानुसार चलना होगा।"

"यत्न करूँगी।"

"और यदि मैं कहूँ कि सेठ साहब से सम्बन्ध छोड़ना होगा तो?"

"छोड़ दूँगी।"

"निर्धनता का जीवन व्यतीत करना होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यह तो कठिन नहीं है।''

इस प्रकार सब बातों में ललिता को झुकते देख निशनाथ को बहुत विस्मय हुआ। वह ललिता के मुख को ध्यान से देखने लगा। वह जानना चाहता था कि ललिता उसे धोखा तो नहीं दे रही। ललिता अपने पाँवों की ओर देख रही थी और पाँव के अँगूठे से भूमि कुरेद रही थी। निशनाथ को ऐसा अनुभव हुआ कि कोई बात अवश्य हुई है, जिसने ललिता के मन को झकझोर दिया है। इस पर उसने कहा, ''ललिता! विवाहित जीवन बहुत ही दुस्तर मार्ग है, यह सोच लो।''

ललिता ने कहा, ''रात जब मोटर ड्राइवर रहीम ने आपको मोटर में बैठाने से इंकार कर दिया था, मैंने तो तभी निश्चय कर लिया था। अब तो आपके सोचने की बात रह गई है।''

''अच्छी बात है। लेकिन एक बात मैं कह देना चाहता हूँ कि बंगाली अपने साथ किए गए बर्ताव को कभी भूलता नहीं है, फिर चाहे भला अथवा बुरा, जो कुछ उससे करो, वह हर बुरे बर्ताव का पूरा-पूरा बदला लेता है।''

''तो निश्चय हुआ कि विवाह सेठ के आने से पहले हो जाएगा।'' ललिता ने कहा।

''बहुत अच्छा।''

''परसों।''

''स्वीकार है।''

इस प्रकार विवाह का निश्चय भी हुआ और वह भी हो गया। विवाह के पूर्व सेठ मगनलाल लाहौर आ गया और ऐलफिन्स्टन में दावत से पूर्व ललिता उससे मिलने गई थी। वह जब मालरोड के मकान पर पहुँचा तो ललिता उसके प्राईवेट कमरे में मौजूद थी। ''ओह! तुम यहाँ हो?'' सेठ ने उसकी ठुड्डी को हाथ से उठाते हुए कहा।

''तीन दिन से आपकी प्रतीक्षा हो रही है।''

''क्यों? क्या हुआ?''

''मेरी सगाई बाबू निशनाथ से हो गई है और विवाह के लिए कल का दिन नियत हुआ है।''

सेठ मगनलाल स्तब्ध खड़ा रह गया। कितनी ही देर तक वह उसकी ओर ताकता रहा। ललिता भूमि की ओर देखती रही। ललिता सोचती थी कि उसको कमरे से निकल जाने की आज्ञा हो जाएगी। कम्पनी से छुट्टी हो जाएगी और बदकार, बदमाश और इसी प्रकार की गालियाँ दी जाएँगी। शायद उससे वह सब धन वापस करने को कहा जाएगा जो उसे उपहार में दिया गया था, इत्यादि।

सेठ मगनलाल सोच रहा था कि इसके लिए दोषी कौन है? निशनाथ या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललिता? कम्पनी से निकालने का तो प्रश्न ही नहीं रहा था। 'चपला' चित्र पर दो लाख से ऊपर व्यय हो चुका था। ललिता का कार्य बहुत अच्छा चल रहा था और फिर अभिनेता और अभिनेत्री दोनों के चले जाने से सब रुपया मिट्टी में मिल जाएगा। मुन्नी के जाने से भी उसकी कुछ हानि नहीं हुई थी। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि आखिर ये लोग क्यों विवाह करने पर राजी हो गए हैं। इसलिए इस सम्बन्ध में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के विचार से वह स्वयं कुर्सी पर बैठ गया और ललिता को भी बैठने के लिए कहा।

वह एक सोफा पर बैठ गई। मगनलाल ने पूछा, ''ऐसी क्या बात हुई है ललिता! जो विवाह की नौबत आ गई है?''

''मन की बातों में दलील नहीं चलती।''

''पर मैं पूछता हूँ, मेरा क्या होगा? तुम्हारे लिए मैंने क्या कुछ नहीं किया?''

''ठीक है, मानती हूँ। मैं आपकी कृतज्ञ हूँ और इसको भूलूँगी नहीं।''

''क्या मतलब? मैं समझा नहीं।

''बात स्पष्ट है। मैं अब जीवन में स्थिर होना चाहती हूँ।''

''तो क्या तुम अभी तक अस्थिर थीं?''

''अभी तक मैं जो कुछ थी, वह व्याख्या से परे है। हमारे यहाँ पंजाबी में इसे 'कटी पतंग' कहते हैं।''

सेठ मुस्कराकर पूछने लगा, ''तो तुम पतंग की डोर किसी के हाथ में पकड़ाना चाहती हो?''

''जी।''

''वह पतंग उड़ाने वाले की भाँति तुम्हें नचाएगा, कभी ऊपर चढ़ाएगा, कभी नीचे उतार लेगा और अगर उसकी इच्छा हुई तो उतारकर खूँटी से टाँग देगा या शायद फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर देगा।''

''मैं समझती हूँ।''

मगनलाल उसके पास सोफा पर बैठ गया और उसे अपने समीप खींच बोला, ''देखो ललिता! मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ?''

''देखती हूँ।''

''पर तुम मुझे छोड़ रही हो न?''

''मैं तो नहीं छोड़ रही।''

''तो इसके क्या अर्थ हैं?''

''आप बुद्धिमान हैं। समझ लीजिएगा।''

''मेरी समझ में तो यही आता है कि तुमने अपनी स्वतंत्रता को अंतिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नमस्कार कर दिया है और अब किसी दूसरे को अपना अधिपति मान लिया है।''

''मुझे इसमें आनंद अनुभव हो रहा है।''

''ठीक है। मैं बूढ़ा हूँ और तुम जैसी युवती के योग्य नहीं हूँ। इसलिए जो स्वतंत्रता मैं तुम्हें देता हूँ, उसमें तुम्हें आनंद नहीं मिलता।''

''स्वतंत्रता तो बाबू निशनाथ ने आपसे अधिक दे रखी है। देखिए, आप धनी हैं, वह निर्धन हैं। आप मेरे प्रेमी हैं, वे होने वाले पति। इस पर भी उन्होंने मुझे आपसे मिलने के लिए अकेले भेज दिया है। इसके विपरीत आप बम्बई गए तो पीछे ड्राइवर को आदेश दे गए कि निशनाथ मेरे साथ आपकी गाड़ी में सवार न हो सके। आप स्वतंत्रता-स्वतंत्रता कई बार कह चुके हैं, परन्तु बाबू निशनाथ ने तो एक बार भी नहीं कहा कि आपसे मिलने न जाऊँ।''

''तो मालूम होता है कि उसने तुम्हारे द्वारा मुझे लूटने का षड्यंत्र रचा हुआ है।''

''तो मैं आपसे मेल-मिलाप बंद कर देती हूँ ताकि आपके लुटने की सम्भावना न रहे।''

''परन्तु चित्र में से तो नहीं निकाला जा सकता।''

''आपकी इच्छा है। वहाँ से भी निकाल दें।''

''मालूम होता है बहुत मुटिया गई हो। अब तुम्हें न मेरी परवाह है न नौकरी की।''

''परन्तु मैं स्वयं न तो आपको छोड़ रही हूँ, न नौकरी को।''

''पर मैं तुम्हें ऐसी अवस्था में नहीं रहने दे सकता।''

''तो मुझे कैद कर लीजिए, ताकि कहीं भाग न जाऊँ।''

मगनलाल इन सतर्क उत्तरों से हँस पड़ा। इस पर ललिता ने कहा, ''देखिए, विवाह तो कल होगा। आज उस विवाह के उपलक्ष्य में 'ऐलफिन्स्टन' में दावत होगी। अब यह आपकी इच्छा पर है कि आपको जो कुछ प्राप्त है, उस पर संतोष करते हैं या व्यर्थ का झगड़ा करते हैं। यदि मेरा होने वाला पति कोई गैर होता, जो आपके साथ मेरे मेल-मिलाप को न जानता होता, तो आपके झगड़ा करने से वह मुझसे विवाह करने से इंकार कर देता। परन्तु यहाँ तो सब-कुछ जाना-बूझा है। इससे बदनामी का भय नहीं। बताइए, आप क्या करना चाहते हैं?''

मगनलाल समझ गया कि ललिता अपनी बात पर तुली हुई है और जैसी परिस्थिति हो, वैसा बने रहना ही अक्लमंदी है। इस कारण वह हँस पड़ा और बोला, ''मैं तुम्हारे लिए बम्बई से बहुत बढ़िया साड़ी और शृंगार का सामान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लाया हूँ। मेरी इच्छा है कि उन्हें पहनकर दावत में जाओ।''

''आपकी कृपा है।'' कहकर ललिता ने उठकर उन वस्तुओं को निकालने के लिए सेठ साहब के सूटकेस को खोलना आरम्भ कर दिया।

इस प्रबंध से ललिता का अभिप्राय यह था कि सेठ को ठगने का मार्ग खुला रहे। परन्तु विवाह के पश्चात् उसकी जीवन-रेखा पर निशनाथ की माँ की परछाईं पड़ गई।

विवाह के पश्चात् पहले कई दिन तक तो ललिता प्रातः दस बजे से मध्याह्न तीन बजे तक नित्य सेठ साहब से मिलने जाती रही थी। पश्चात् निशनाथ के साथ; घर आती, अपनी सास के साथ चाय पीती और फिर स्वयं स्टूडियो में पिक्चर की शूटिंग में चली जाती थी। रात को निशनाथ के साथ घर आती और रात को घर पर रहती थी। कभी स्टूडियो से बाहर खुले में 'शूटिंग' होनी होती तो प्रोग्राम बदल जाता था। तब सायंकाल का शूटिंग का समय सेठ साहब की संगत में गुजरता था।

परन्तु दिन शीघ्रता से बदल रहे थे। कम्पनी में एक और लड़की थी, जिस पर सेठ साहब का मन रीझ रहा था। इधर ललिता पर उसकी सास का रंग चढ़ रहा था।

कमलिनी बैनर्जी को निशनाथ के ललिता के साथ विवाह से निराशा हुई थी। इससे वह अपने आचार-विचार में शिथिल होती जाती थी। सेठ साहब उसके चुलबुलेपन से आकर्षित हो रहे थे।

:: 2 ::

विवाह के पश्चात् निशनाथ ने अपने पड़ोस में ही एक नया और बड़ा मकान किराये पर ले लिया था। दोनों पूर्ववत् जीवन व्यतीत करने लगे थे। निशनाथ की माँ ने घर का काम छोड़, अब अपना पूर्ण समय भगवत्-भजन में लगाना आरम्भ कर दिया।

ललिता देख रही थी कि निशनाथ की माँ बहुत संतुष्ट और प्रसन्न है। उसका मुकाबला वह अपनी माँ से करती थी, जो दिन-प्रतिदिन बूढ़ी होती जाती थी और जो यह अनुभव कर रही थी कि अब मधुर पर उसका प्रभाव दिनों-दिन कम होता जा रहा है। यह नहीं कि मधुर ने उससे ठीक प्रकार से बर्ताव न करके उसे कुछ रुष्ट किया हो या वह अब किसी अन्य स्त्री की खोज में हो। यह तो केवल आत्मादेवी के अपने अनुभव करने की बात थी। अपने बनाव-शृंगार से वह मधुर पर अपना आधिपत्य रखना चाहती थी, परन्तु बुढ़ापे में बनाव-शृंगार भी फीका प्रतीत होने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन आत्मादेवी ललिता के घर आई और कहा कि वह उससे अकेले में बात करना चाहती है। ललिता उसे अपने कमरे में ले गई। वहाँ जा आत्मादेवी ने कहा, ''ललिता! तुम मेरी लड़की हो न?''

''हाँ।'' ललिता ने रूखे भाव से कहा।

''यदि बुढ़ापे में मैं निराश्रय हो गई तो तुम्हें ही मेरी देख-भाल करनी होगी।''

''खुशीराम से लड़ पड़ी हो, माँ?''

''उसकी बहू मुझे पसंद नहीं करती और फिर जो बात मैं तुमसे कहने आई हूँ, वह मैं रहीमन से नहीं कह सकती।''

'क्या बात है?''

''यदि मेरी वृद्धावस्था में मधुर ने मुझे घर न रखा तो मैं तुम्हारे पास आकर रहूँगी और तुमको मेरा खर्चा उठाना पड़ेगा। शायद तुमको यह अखरे। इससे मैं अभी से तुम्हारे पास कुछ रुपया जमा करना चाहती हूँ। थोड़ा-थोड़ा कर मैं तुम्हें देती जाऊँगी। तुम अपने पास जमा करती जाना। यदि मुझे आवश्यकता न पड़ी, तब भी रुपया तुम्हारे पास रहेगा। तुम मेरी लड़की ही हो, इससे मुझे दुख नहीं होगा।''

''यह धन तुम्हारा है, माँ?''

इस प्रश्न पर आत्मादेवी झेंपी। फिर कुछ सोचकर बोली, ''मुझे नौकरी छोड़े छह वर्ष हो रहे हैं। मेरा जो कुछ रुपया था, सब खत्म हो चुका है। अब तो जो कुछ है मधुर की कमाई का है और मैं समझती हूँ मेरा उस पर अधिकार है।''

''पर माँ! मैं तो यह पूछ रही हूँ कि यह रुपया तुम मधुर चाचा की इच्छा से यहाँ रखने आई हो या बिना उनसे पूछे?''

आत्मादेवी मुस्कराने लगी। पश्चात् कुछ सोचकर बोली, ''उससे पूछकर आती तो तुम्हारे पास क्यों आती?''

''तो इसका अर्थ यह हुआ कि उससे चोरी-छिपे रखने आई हो?''

''हाँ, और उसे यह भी मालूम नहीं कि यह रुपया मेरे पास है।''

''अभिप्राय यह है कि यह धन चोरी का है और फिर चोरी-चोरी मेरे पास रखने आई हो?''

''हाँ।''

''परन्तु मैं तो तुम्हारे दामाद से पूछे बिना नहीं रखूँगी।''

''क्यों?''

''इसलिए कि बूढ़ी हो जाने पर जब तुम हमारे घर में रहने आओगी, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुम्हारे दामाद को अभी से विदित हो जाना चाहिए कि तुम्हारा रुपया यहाँ जमा है, नहीं तो वे तुम्हें घर में रखकर शायद खुश न हों।''

आत्मादेवी की तो इच्छा थी कि निशनाथ को इस सम्बन्ध में कुछ भी न बताया जाए, परन्तु ललिता की युक्ति ठीक थी। इससे उसने कह दिया, ''अच्छा बता देना।''

इतना कहकर उसने दस-दस तथा पाँच-पाँच के नोटों में से पाँच सौ रुपये निकाल ललिता को गिना दिए।

रात को जब ललिता ने निशनाथ से बात की तो वह गम्भीर विचार में पड़ गया। ललिता उसे गम्भीर हुआ देख समझ गई कि इस बात में कुछ दोष है। निशनाथ ने कहा, ''ललिता! यह तो तुमने ठीक नहीं किया।''

''क्यों?''

''यह चोरी का माल है। इसको रखने वाला भी चोर कहाता है।''

''कौन जान पाएगा इसको?''

''पहले तो मैं ही जान गया हूँ। मेरी आत्मा इसे पसंद नहीं करती। मैं घर की बातें माँ से छिपाकर नहीं रखता। उसे बताना पड़ेगा। फिर यदि मैं बैंक में रखूँगा तो अपने हिसाब में लिखना पड़ेगा कि कहाँ से आया है, नहीं तो इन्कम-टैक्स वाले तंग करेंगे। केवल यही नहीं। कभी मधुर चाचा को पता चल गया तो मैं झूठा, चोर, दगाबाज सिद्ध हो जाऊँगा। मैंने आज तक चोरी नहीं की। इससे चोर कहाने में मुझे लज्जा आती है। फिर ललिता, मैं तुम्हें इस प्रकार के कार्य में दूसरों की सहायता करने से मना करूँगा।''

''क्यों?''

''यह चोरी है, जो धर्म के दस नियमों के विपरीत है।''

''यह धर्म-कर्म कब से मानने लगे हैं?''

''जब से ज्ञानवान् हुआ हूँ। माँ ने बताए थे। फिर ईसाइयों की धर्म-पुस्तक बाईबल में पढ़े थे और अब तो मैंने इन्हें मनुष्य-समाज की सबसे महान् कानून की पुस्तक मनुस्मृति में पढ़ा है।''

''मनुस्मृति एक महान् पुस्तक है क्या?''

''हाँ, यह भारतवर्ष में हज़ारों वर्ष पहले लिखी गई थी। इस पर भी इसकी मुख्य-मुख्य बातें आज भी सत्य प्रतीत होती हैं।''

''सुना है इसमें स्त्रियों की घोर निंदा लिखी है?''

''जो कुछ लिखा है, उसे निंदा नहीं कह सकते, अपितु वस्तु-स्थिति का निर्भीक वर्णन कह सकते हैं। शरीर से दुर्बल होने के कारण स्त्री स्वयं स्वतंत्रता का भोग नहीं कर सकती। उसे स्वतंत्रता का भोग कराने के लिए अर्थात् उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए उसके पिता, पति तथा पुत्र के संरक्षण की आवश्यकता है। इन तीनों के अभाव में यह राजा का कर्त्तव्य हो जाता है कि स्त्रियों की स्वतंत्रता की रक्षा करे।''

ललिता ने निराश हो पूछा, ''तो इस रुपये का क्या किया जाए?''

''मधुरजी को वापस कर देने चाहिए।''

''तब तो गजब हो जाएगा। वे जब जानेंगे कि माँ ने चोरी की है तो उसे घर से निकाल देंगे।''

''ललिता!'' निशनाथ ने कुछ दृढ़ता से कहा, ''यह तुम्हारी माँ अथवा मेरी माँ का प्रश्न नहीं है। यह संसार में मानवता अथवा प्रभुता का प्रश्न है।''

''परन्तु मैं कहती हूँ कि यदि मधुरजी ने माँ को निकाल दिया तो फिर वह कहाँ जाएगी?''

''यह बात पीछे विचार करने की है। प्रथम बात तो इस रुपये को वापस करना है। तुम्हारी माँ को भी वापस हो सकता है। इस पर भी मधुरजी को मैं सूचित किए बिना नहीं रह सकता।''

''हमें इससे क्या मतलब है? मधुरजी जानें और माँ जानें।''

''हमें इतना ही मतलब है कि समाज में यह व्यवहार प्रचलित न हो सके। यदि प्रचलित है तो रुक जाए। हमारे प्रयत्न से बुराई जितनी भी कम हो, उतना ही अच्छा है। सबके प्रयत्न से ही समाज में व्यवस्था स्थापित हो सकती है।''

''यदि मैं रुपया न दूँ तो आप क्या करेंगे?''

''इस पर भी मैं मधुर चाचा को बता दूँगा।''

''अभिप्राय यह कि मेरी माँ के साथ मेरी भी शिकायत करेंगे?''

''इसमें शिकायत करने की बात कहाँ से आ गई? इसमें समाज की एक अनुचित प्रवृत्ति को रोकने का आशय ही है।''

''पर मान लीजिए, इससे मेरी बदनामी हो जाती है, तब क्या आपकी बदनामी और अपमान न होगा?''

निशनाथ हँस पड़ा। इससे ललिता ने समझा कि वह मधुर से शिकायत नहीं करेगा। इससे उसका मुख खिल उठा। परन्तु निशनाथ ने शीघ्र ही उसका भ्रम दूर कर दिया। उसने कहा, ''मैंने जब तुमसे विवाह करना स्वीकार किया था तो अपनी नेकनामी और बदनामी को नमस्कार कर ही किया था। लोग जानते हैं कि सेठ मगनलाल से तुम्हारा सम्बन्ध है। इससे लोग जो कुछ मेरे विषय में कहते हैं, वह भी मैं जानता हूँ। परन्तु मैं इससे डरता अथवा घबराता नहीं हूँ। मेरा तो सिद्धांत है कि मैंने एक सुंदर लड़की से विवाह किया है। वह इतनी सुंदर है कि उसका पूर्ण भोग मेरे जैसे निर्धन के बस की बात नहीं है। सो उसका जितना कुछ अंश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मेरे भाग्य में है, मैं उसका भोग करूँ। इस पर भी मैंने विवाह किया है, तुममें जितना कुछ सुंदर है, उससे। जो कुछ तुममें कुरूप हैं, मैंने उससे विवाह नहीं किया।''

''आपकी फ़िलॉसफी भी विचित्र है। आपने मेरे पूर्ण से विवाह नहीं किया क्या?''

''देखो, जब बाज़ार से मूली भी खरीदकर लाते हैं तो उसमें पत्ते होते हैं और कभी-कभी तो उस पर मिट्टी भी लगी रहती है। परन्तु प्रयोग तो केवल मूलीकंद का और वह भी नरम हो तो करते हैं। पत्ते इत्यादि फेंक दिए जाते हैं।''

''तो तुम मेरा कौन-सा भाग फेंक रहे हो?''

''जो-जो भाग तुम्हारे जीवन का सुंदर, उपयोगी और ग्राह्य होता जाता है, अपनाता जाता हूँ। मैंने उस ललिता से विवाह नहीं किया, जो चोर अथवा अपनी चोर माँ की सहायक है।''

यह सुनकर तो ललिता का मुख लाल हो उठा। वह क्रोध से उफनती हुई बोली, ''तो आप चोर ललिता से सम्बन्ध-विच्छेद ही क्यों नहीं कर लेते?''

''तुम्हारे चोर अंश से तो सम्बन्ध-विच्छेद है ही। जो तुम्हारा श्रेष्ठ अंश है, मैं तो केवल उसी से अपना सम्बन्ध मानता हूँ।''

''परन्तु मैं जहाँ रहूँगी, पूर्ण ही रहूँगी। मैं काटी और टुकड़े-टुकड़े नहीं की जा सकती। छोड़िए मुझे। मैं इस कमरे में नहीं सो सकती।'' इतना कह वह उठ खड़ी हुई और वहाँ से तभी जाने को तैयार होने लगी।

निशनाथ मुस्कराता रहा। साथ के कमरे से निशनाथ की माँ आ गई। वह दरवाज़े के बाहर से बोली, ''बेटा नाथ! क्या है? बहू को तंग क्यों कर रहे हो?''

ललिता इस प्रकार अपनी सास को बीच में आ कूदते देख प्रसन्न नहीं थी। उसका विचार था कि रुपयों की बात उसे भी बताई जाएगी। वैसे भी माँ ने वह प्रश्न उससे नहीं पूछा था, इससे वह अपना बिस्तरा समेट कमरे से बाहर जाने लगी। माँ ने पूछा, ''क्यों बहू! कहाँ जा रही हो?''

''मैं यहाँ नहीं सोऊँगी।''

''तो कहाँ सोओगी?''

''बाहर बरामदे में।''

''वहाँ तो बहुत सर्दी है और ठंडा हवा चल रही है।''

''परन्तु यहाँ तो ये मुझे काट, टुकड़े कर खा जाना चाहते हैं।''

निशनाथ हँस पड़ा। माँ ने पूछा, ''क्यों बेटा! इसे तुमने कोई गाजर-मूली समझा है? इतनी सुशीला बहू को काटकर खाना चाहते हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''माँ! यह मेरा भुर्ता बना डालना चाहती है।''

''हरे राम! यह क्या हो गया है तुम दोनों को? देखो, रात के दो बज रहे हैं, नहीं तो तुम दोनों को मिठाई मँगवा खिला देती। अब सो जाओ दोनों। सब्जी, भुर्ता सब सोच-विचारकर सुबह करना। देखो ललिता! तुम्हें कुछ तो समझना चाहिए कि घाटे का सौदा पुरुष करते हैं, स्त्रियाँ नहीं। यदि किसी एक को बाहर बरामदे में ही सोना है तो निशनाथ को सोना चाहिए, तुम्हें नहीं। तुम कैसी औरत हो कि लड़कर उसे बाहर नहीं कर सकतीं? और निशनाथ बेटा! यह कहाँ का न्याय है, भुर्ता तो बने तुम्हारा और चूल्हे से बाहर भागे यह।''

इस पर दोनों हँस पड़े। माँ ने कमरे के बाहर जाते हुए कहा, ''निशनाथ! बाहर आज ठंडी हवा चल रही है। यदि भीतर भुर्ता न भी बना तो बाहर अवश्य बन जाएगा। इससे न तुम बाहर आओ न बहू आए। दोनों भीतर रहो।''

इतना कह माँ बाहर निकल, उनके कमरे का दरवाज़ा बाहर से बंद कर अपने कमरे में चली गई। उसके चले जाने के पश्चात् निशनाथ ने कहा, ''देखो ललिता! झगड़ा करना व्यर्थ है। तुम्हारी चाहे कितनी ही निंदा हो, मैं तुम्हें छोड़ूँगा नहीं। परन्तु मैं तुम्हें अपनी आँखों में निन्दनीय बनने में सहायता नहीं दे सकता। जो कुछ अवांछनीय है, उसे निकालने के स्थान पर वैसा और अधिक तत्व मैं आने नहीं देना चाहता।''

ललिता को इससे संतोष नहीं हुआ, परन्तु क्या करती? बाहर से निशनाथ की माँ दरवाज़ा बंद कर गई थी। इससे अपना पलंग निशनाथ के पलंग से दूर हटा वह उस पर बिस्तर बिछाकर लेट गई। निशनाथ भी लेट गया।

:: 3 ::

थोड़ी ही देर में निशनाथ तो गहरी नींद सो गया, परन्तु ललिता को नींद नहीं आई। पहले क्रोध में करवटें बदलती रही, फिर शांत हो विचार करने लगी। विचार करते-करते निशनाथ का दृष्टिकोण उसे ठीक प्रतीत होने लगा। अपनी माँ और निशनाथ की माँ के व्यवहार में जब अंतर देखती थी तो उसे ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी माँ का व्यवहार अशुद्ध और अपमानजनक है। निशनाथ की माँ ने अपने सम्बन्धियों और पड़ोसियों में आदर और मान का स्थान प्राप्त किया हुआ था, जबकि उसकी माँ से तो कोई बोलता तक नहीं था। वह सोचने लगी कि क्या वह स्वयं भी अपना ऐसा ही भविष्य बनाना चाहती है? इस समय भी क्या वह काफी बदनाम नहीं हो रही थी?

प्रातः होते-होते उसे लगा कि माँ को रुपया वापस कर देना ही ठीक होगा। रही मधुर चाचा को बताने की बात। वह स्वयं नहीं बताएगी। निशनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जैसी इच्छा हो, करे। जब यह निश्चय कर चुकी तो उसे नींद आ गई, परन्तु उसे दिन के समय सोना पसंद नहीं था। इस कारण उठ बैठी। दिमाग को ताजा करने के लिए वह खुली हवा में बाहर जाना चाहती थी, परन्तु कमरे का दरवाज़ा बाहर से बंद था। इससे उसे रात सास की कही बातें याद आ गईं। वह खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई ताकि प्रातः की ठंडी हवा में अपने मस्तिष्क को ठंडा कर सके। तभी निशनाथ की नींद खुल गई। उसने खाँसकर उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। ललिता ने घूमकर पूछा, ''रात लड़ने के बाद खूब मजे में सोए हैं न? मानो भारी विजय प्राप्त की हो।''

''हाँ, जब कभी मैं कोई अच्छा काम करता हूँ, मेरी आत्मा तृप्त हो जाती है और मैं इतना संतोष और शांति अनुभव करता हूँ कि बहुत आनंद की नींद सोता हूँ।'

ललिता खिड़की से हटकर निशनाथ के पलंग पर बैठ गई और पूछने लगी, ''क्या पहले भी कभी आपने ऐसा शुभ कार्य किया है?''

''हाँ, जब तुमने विवाह की स्वीकृति दी थी।''

''बड़े खुशामदी हैं आप।''

''ललिता! तुम्हारी आँखें लाल हो रही हैं। क्या नींद नहीं आई रात भर?''

''नींद कैसे आ सकती थी? ऐसी दुविधा में डाल दिया था आपने कि कुछ सूझता ही नहीं था।''

''तो ऐसा करो। गरम पानी करवा लो और स्नान कर लो। दिमाग ठंडा हो जाएगा और दुविधा मिट जाएगी।''

''दिमाग तो ठंडा हो गया है और समस्या भी सुलझ गई प्रतीत होती है। मैं अभी नहा-धोकर जाती हूँ और रुपया माँ को वापस कर आती हूँ। आप जब चाहें, जाइए और मधुरजी को जो चाहें बता आइए। मेरा इसमें क्या है? अगर चाचाजी और माँ में झगड़ा हो गया तो फिर मैं उसके रहने का प्रबंध अपने पास से कर दूँगी।''

निशनाथ इस सुझाव को सुन बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा, ''यही तो मैं कह रहा था। तुम अब समझदार होती जाती हो, ललिता! मैं इससे बहुत प्रसन्न हूँ। तुम्हारा सौंदर्य बढ़ता जाता है।'' इतना कह उसने ललिता की बाँहें पकड़ अपनी ओर घसीटने का यत्न किया, परन्तु ललिता ने झटका दे, अपने को छुड़ा लिया और पलंग से उठते हुए बोली, ''छोड़ो जी, इन बातों के लिए समय कहाँ है? सेठजी ने खाने पर बुलाया हुआ है।''

निशनाथ मुस्कराकर चुप कर रहा। इतने में माँ ने कमरे का दरवाज़ा खोल दिया। दोनों को प्रसन्नतापूर्वक एक-दूसरे से बातें करते देख दरवाज़े में खड़े-खड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही बोली, ''क्या जानवर हो तुम लोग? जब एक ही पिंजरे में बंद कर दिए गए तो सुलह भी हो गई।''

दोनों हँस पड़े। ललिता दरवाज़ा खुला देख, शौचादि के लिए कमरे से बाहर निकल गई। निशनाथ अंगड़ाइयाँ लेता हुआ पलंग से उठ पड़ा। माँ उसे इस प्रकार आलस्यमय देखकर बोली, ''झगड़ने से कोई नहीं समझता। उदाहरण बनकर दिखाओ तो लोग अनुकरण करते हैं।''

''सो ही किया है माँ! मज़े में गहरी नींद सो गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसका अच्छा ही प्रभाव हुआ है।''

माँ मुस्कराकर बाहर अपने कमरे में चली गई। मकान की निचली मंजिल पर इनका नौकर रहता था। वह चाय के लिए पानी गरम कर रहा था। निशनाथ सुस्ती उतारने के लिए इधर-उधर घूमने लगा।

जब निशनाथ स्नान इत्यादि से निवृत्त हुआ तो ललिता चाय पर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। दलिया था, मलाई थी, अंडे थे और चाय थी। निशनाथ, ललिता और उसकी सास, तीनों इकट्ठे खाने पर बैठ गए और नौकर परसने लगा। माँ केवल दलिया और मलाई ले रही थी। निशनाथ ने कहा, ''माँ! ललिता आज अधिक सुंदर मालूम होती है न?''

''मेरी आँखें....।''

बात बीच में ही काटकर ललिता ने कहा, ''मुझे तो माँजी मोटी हो रही मालूम होती हैं।''

''बेटी! तुम दोनों कमाते हो और मैं बैठी-बैठी खाती हूँ। मोटी नहीं होऊँगी तो और क्या होगा?''

निशनाथ ने कहा, ''माँ! चलो, आज तुम्हें चश्मा लगवा दूँ। दृष्टि दुर्बल पड़ जाने से तुम ललिता के मुख पर दैवी आभा को देख नहीं सकतीं। देखोगी तो गद्‌गद हो जाओगी!''

माँ ने ध्यान से ललिता के मुख पर देखा तो बोली, ''तुम सत्य कहते हो, बेटा! यह आज कोई बहुत शुभ कार्य करने जा रही है। यह ओज तो भगवान् के प्रिय भक्तों के मुख पर ही दीखता है।''

ललिता हँस पड़ी। कहने लगी, ''माँजी! भगवान् को देखा है आपने?''

''हाँ बेटी! सुनो, मैं सुनाती हूँ। नाथ स्कूल गया हुआ था। नगर के फाटक के अंदर एक दर्जी की दूकान थी। वह सीने के लिए कपड़े देने आया करता था। प्रायः मज़दूरी पेशगी दे जाया करता था। जब मैं धन्यवाद करती थी तो मुस्करा दिया करता था। कभी काम ठीक नहीं बनता था तो समीप बैठ बहुत मेहनत से समझाया करता था कि कैसे ठीक किया जा सकता है। मैं उसके अहसान में दब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रही थी। उस दिन जब वह आया तो काम समेटकर बहुत ध्यान से मेरी आँखों में देखने लगा। लज्जा से मेरी आँखें झुक गईं। उसने कहा कि वह अभी कुंआरा है। मुझसे प्रेम करता है। मुझे बहुत भली-भाँति रखेगा, इत्यादि कितनी ही देर तक मुझे विवाह के लिए राजी हो जाने को कहता रहा। मैं चुपचाप बैठी थी। मेरे मन में वासना और प्रलोभन उमड़ने लगे थे। मैं अपने को 'हाँ' कहने के लिए तैयार कर रही थी। एकाएक मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि कोई मेरे भीतर से मेरे मुख को बंद किए हुए है। मैं बोलने का यत्न करती थी, परन्तु बोल नहीं पाती थी। इस समय उस दर्जी ने मेरे हाथ पर अपना हाथ रख दिया। मेरे सारे शरीर में रोमांच हो उठा। मेरी आँखें मिच गईं और मेरी आँखों के सम्मुख तपस्या करती हुई पार्वती का चित्र आ गया। उसके मुख पर सतीत्व का ओज था। मेरा निश्चय हो गया। मैंने अपना हाथ हटा लिया और उठ खड़ी हुई। मैंने उस भले पुरुष से कहा, 'मैं एक हिन्दू विधवा हूँ। जब एक बार विवाह हो गया तो बस इस जन्म के लिए हो गया। अब आप चले जाएँ और फिर नहीं आएँ।'

''उनके मुख पर कामुकता और निराशा से उत्पन्न क्रोध के लक्षण देख रही थी; परन्तु मैंने कुछ आवेश में कहा, 'चले जाओ' और यह भगवान् की महिमा है कि वह मुझ पर बलात्कार नहीं कर सका। मैं अकेली थी और यदि वह कुछ अनुचित बात करता तो मैं कुछ भी न कर सकती थी। जहाँ भगवान् ने मेरे मन को प्रेरणा दी, वहाँ उस पर ऐसा प्रभाव डाला कि वह भीगी बिल्ली की भाँति चला गया और फिर कभी इधर नहीं आया।

''उसके चले जाने पर मुझे समझ आई कि मैं कितनी दुर्बल थी और वह कितना सबल। परन्तु मेरी विजयी हुई। मेरे मन में किंचित्-मात्र भी संदेह नहीं था कि भगवान् ने ही मेरी रक्षा की है। मैं अपने कमरे में गई और हाथ जोड़, मस्तक नवा, भगवान् की मूर्ति के सम्मुख खड़ी हो गई और विचित्र बात यह हुई कि मुझे यह मूर्ति अगाध ओज-पूर्ण और अतुल प्रकाश-युक्त, सुदर्शन-चक्र सहित सजीव प्रतीत हुई और मैं आँखें खोल उसकी ओर देखती रह गई। मेरा पूर्ण शरीर अकथनीय आनंद से पुलकित हो उठा था। कितने काल तक ऐसा रहा, मैं नहीं कह सकती। मुझे समय का ज्ञान नहीं रहा था। धीरे-धीरे वह प्रकाश, जो सुदर्शन-चक्र से निकल रहा था और जो दिन के प्रकाश से भी अधिक द्युतिमान प्रतीत होता था, विलीन हो गया और वह मूर्ति पुनः पत्थर की बनकर रह गई।

''मुझे भगवान् के दर्शन हुए, इससे मैं पागल हो उठी। परन्तु इसके पश्चात् तुरंत ही मुझे नींद आ गई और मैं सो गई। जब उठी तो मेरा चित्त शांत, दृढ़ और सन्मार्ग पर आरूढ़ था। जो उस दिन मैंने भगवान् के मुख पर देखा था, उसका एक उसका एक अंश मुझे आज तुम्हारे मुख पर दिखाई दे रहा है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तो मैं भी भगवान् की मूर्ति हो गई?'' यह कहते-कहते ललिता हँस पड़ी। निशनाथ भी हँसने लगा, परन्तु निशनाथ की माँ गम्भीर रही। उनकी हँसी शांत होने पर उसने कहा, ''बेटी! भगवान् सब में विद्यमान रहते हैं। जब कोई भला काम करने लगता है तो वे उस प्राणी में प्रकट होने लगते हैं और प्रत्यक्ष उनकी आभा मुख पर दिखाई देने लगती है।''

ललिता गम्भीर हो गई। जब प्रातः का कलेवा समाप्त हुआ तो निशनाथ श्रीनाथ से मिलने के लिए चला गया। उसे उसका पत्र मिला था। ललिता ने उसे बताया था कि वे श्रीकान्ता के भाई हैं और भले आदमी हैं। ललिता स्वयं माँ का रुपया ले, माँ से मिलने चली गई।

:: 4 ::

निशनाथ का श्रीनाथ से परिचय नहीं था, इससे वह इस निमंत्रण से चकित था। फिर सोचता था कि शायद उन्हें ललिता के विषय में कुछ बातें करनी होंगी। शायद कहेंगे कि उसका जीवन मेरे जैसे आदमी को शोभा नहीं देता। यह सोच वह उनके द्वारा पूछे गए कल्पित प्रश्नों का उत्तर अपने मन में बनाता जाता था।

भेंट छापेखाने के कार्यालय में हुई। मदन भी वहाँ उपस्थित था। निशनाथ दोनों को पहचानता था। परन्तु श्रीनाथ और मदन ने इसे पहली बार देखा था। उनका विचार था कि वह एक 'ऐक्टर' है। बहुत आवारा आदमी होगा, मन का बहुत कुटिल और बातें करने में चतुर होगा। फिर जो कुछ वह कहेगा, उसकी वह कीमत नहीं होगी, जो सुनने पर प्रकट होगी। उसके वाक्यों की कीमत पीछे निश्चय की जाएगी।

परन्तु एक सुगठित शरीर के व्यक्ति को धोती, कुर्ता और चप्पल पहने कमरे में दाखिल होते देख, दोनों को बहुत विस्मय हुआ। निशनाथ ने वहाँ पहुँच, हाथ मिलाने को बढ़ाते हुए कहा, ''मेरा नाम निशनाथ है।''

श्रीनाथ ने हाथ मिलाकर कहा, ''अच्छा, तो आप हैं। आइए, पधारिए। ये हैं मेरे परम मित्र और मेरे जीजा श्री मदनमोहन।''

निशनाथ ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा, ''मैं आप दोनों को पहचानता हूँ। आज्ञा कीजिए, किसलिए याद किया है?''

बात श्रीनाथ ने की—''आपसे एक आवश्यक बात पूछनी थी। आप बताइए या न बताइए, परन्तु हमें धोखे में न रखिए। यदि न बताना हो तो कह दीजिए कि आप नहीं बताएँगे। हम आपके कृतज्ञ होंगे।''

''हाँ! हाँ! पूछिए। मैं समझता हूँ कि मुझे कोई ऐसी बात मालूम नहीं जिसे मैं प्रकट न कर सकूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''आप कम्यूनिस्ट पार्टी में रहे हैं ?''

''जी।''

''अब भी उस पार्टी में हैं ?''

''वास्तव में मेरा पहले भी पार्टी के सिद्धांतों पर विश्वास नहीं था और अब भी नहीं है। पहले जब बेकार था, वहाँ प्राय: जाया करता था परन्तु अब वहाँ जाने का अवसर नहीं मिलता।''

''आप मिस्टर असलम को जानते हैं ?''

''जानता हूँ।''

''मिस ऐलिस से भी परिचित हैं आप ?''

''जी हाँ। अब वह मिसेज़ असलम है।''

''कब से ?''

''उसका विवाह सिविल मैरेज ऐक्ट के अनुकूल श्रीनगर में चार-पाँच दिन हुए हो गया है।''

''आपको यह कैसे मालूम है ?''

''हमारे सेठ साहब से उसका पत्र-व्यवहार चल रहा है। हमारी नई तस्वीर 'असलियत' के कुछ दृश्य कश्मीर में लिये जाने हैं। जब असलम यहाँ से गया था, तो हमने उसे कश्मीर के रैज़िडैंट से मिलने और रियासत से उन दृश्यों के चित्र लेने की स्वीकृति दिलवाने के लिए प्रयत्न करने के लिए कहा था। विधिवत् प्रार्थना-पत्र तो पहले भेजा जा चुका है, परन्तु उसका उत्तर नहीं आ रहा था। इसलिए असलम को इस सिलसिले में यत्न करने के लिए कहा गया था।''

''परन्तु असलम को इस कार्य के लिए आपके सेठ ने क्यों चुना ? उसमें ऐसा क्या गुण देखा था आपने ? किसी अन्य को भी तो भेज सकते थे ?''

''आजकल असलम ब्रिटेन तथा अमेरिका की कम्यूनिस्ट पार्टी की डिप्लोमैटिक सर्विस में, भड़काने वाले एजेंट (Agent Provocateaur) के तौर पर नियुक्त है। उसे लाखों रुपया व्यय करने का अधिकार है और कश्मीर के रैज़िडैंट से उसका सीधा सम्बन्ध रहता है।''

श्रीनाथ भेद की यह बात सुन क्रोध से लाल हो गया। उसने आवेश में पूछा, ''यदि कभी अवसर पड़े तो आप इसका प्रमाण दे सकते हैं ?''

''प्रमाण नहीं दे सकता, परन्तु मैं जानता हूँ कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ, सत्य कह रहा हूँ।''

श्रीनाथ इस भयानक रहस्योद्घटन को सुन आश्चर्यविमूढ़ हो गया था। अत: वह निशनाथ से इस सिलसिले में और कुछ नहीं पूछ पाया। इस पर मदन ने बातों को जारी रखा और पूछा, ''छोड़िए इस बात को। क्या आप यह भी जानते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हैं कि असलम इस समय वहां कश्मीर में क्या कर रहा है ?

''यह तो असलम ने नहीं बताया, परन्तु जो लोग राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन कर रहे हैं, जानते हैं कि राउंड टेबल काफ्रेंस के समय महाराजा कश्मीर के कथन से इंग्लैंड की टोरी पार्टी को भारी निराशा हुई थी। वास्तव में उस समय इंग्लैंड में मज़दूर पार्टी का राज्य था और महाराजा कश्मीर ने इसी भरोसे पर अपने विचार प्रकट किए थे कि वहाँ मज़दूर दल का ही राज्य बना रहेगा। परन्तु मज़दूर दल तो टुकड़े-टुकड़े हो गया है और टोरी पार्टी की सरकार बन गई है। वह महाराजा की धृष्टता के लिए उसे दंड देना चाहती है। दुर्भाग्य से कश्मीर की बहुसंख्यक जनता मुसलमान है और गरीब है। इससे मुसलमान और गरीबों को भड़काने के लिए कम्यूनिस्ट पार्टी का एक मुसलमान सदस्य ढूँढा गया है।

''परन्तु यह ऐलिस कैसे यहाँ बीच में आ टपकी है ?''

''यह लड़की....वास्तव में इसे औरत कहना चाहिए, अमेरिका की रहने वाली है। यह अमेरिका की कम्यूनिस्ट पार्टी से परिचय की चिट्ठी लाई है और मिशिगन रेडियो कार्पोरेशन के मैनेजर मिस्टर स्मिथ की सम्बन्धी है। इस प्रकार असलम का ऐलिस से परिचय हो गया और वह भी कश्मीर के विद्रोह में भारी दिलचस्पी ले रही है। एक समय असलम ने कहा था कि मुसलमान होने से तो वह चाहता था कि कश्मीर में डोगरों का राज्य न रहे, परन्तु कम्यूनिस्ट के नाते उसका इस विद्रोह में कोई हाथ नहीं होना चाहिए। इस पर मिस ऐलिस ने समझाया था कि 'कम्यूनिज्म का स्रोत रूस है और जब भी कभी कम्यूनिस्टों ने भारत में विद्रोह किया तो कश्मीर, उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत और पंजाब का इस विद्रोह में एक भारी भाग होगा, क्योंकि रूस से जो भी सहायता यहाँ आएगी, वह इन्हीं मार्गों से आ सकती है। इस कारण कश्मीर कम्यूनिस्टों के हाथ में आना चाहिए।' असलम उसके इस तर्क से प्रभावित हुआ और अब दोनों इकट्ठे कश्मीर गए हैं।''

''तो सेठ साहब को उनका विवाह हो जाने की सूचना मिली है क्या ?''

''हाँ! विवाह की रस्म अदा होने के पश्चात् असलम ने चिट्ठी लिखी है कि उसके कश्मीर जाने के दो उद्देश्यों में से एक अर्थात् ऐलिस से विवाह, पूरा हो गया है और दूसरे अर्थात् विद्रोह फैलाने के कार्य का आरम्भ भी हो गया है। मिस्टर कासिम ने कुछ जल्दबाजी से काम लिया है और क्योंकि रियासत में अभी कार्यकर्त्ता काफी नहीं हैं इसलिए विप्लव में बाधा पड़ रही है। असलम ने एक बात और लिखी है। उसने वहाँ के लिए पंजाब से स्वयंसेवकों की माँग की है।

''असलम के यह सब लिखने का आशय यह जतलाना है कि इस समय वह स्वयं और कश्मीर के रैज़िडैंट इसी काम में लगे हुए हैं, इसलिए फिल्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कम्पनी के प्रार्थना-पत्र पर अभी कुछ काल तक विचार नहीं हो सकेगा। हाँ, विप्लव के समाप्त होने पर सब प्रकार की स्वीकृति और सुविधाएँ मिल जाएँगी।''

श्रीनाथ तथा मदन पर निशनाथ की बातों का प्रभाव आशा के विपरीत हुआ। वे समझ रहे थे कि उसके साथ बातों में बड़ी पैंतरेबाजी होगी परन्तु हुआ इससे उलटा। निशनाथ ने सब बातें बड़ी स्पष्टता और विस्तार से उनके सामने रखीं। इससे जहाँ उन्हें असलम के नए विवाह से दुःख हुआ, वहाँ निशनाथ की स्पष्टवादिता पर प्रसन्नता भी हुई।

श्रीनाथ ने कहा, ''आप मीरा को तो जानते होंगे। उसने असलम पर विश्वास कर उससे विवाह कर लिया था, परन्तु उसने विश्वासघात किया है। हमारी दिलचस्पी मीरा में है और हम वस्तुस्थिति जानना चाहते थे। हम पहले आपकी पत्नी ललिता से यह सब पूछना चाहते थे, परन्तु कई कारणों से उनके स्थान पर आपको कष्ट देना पड़ा है। हम आपके कृतज्ञ हैं।''

निशनाथ ने मुस्कराते हुए कहा, ''इसमें एहसान की कोई बात नहीं है। कठिनाई तो यह है कि आजकल विवाह के निश्चय करने का तरीका ही बड़ा बेतुका है क्योंकि इसमें घोड़े के आगे गाड़ी लगाई जाती है। पहले लड़के-लड़की में प्रेम उत्पन्न हो जाता है और पीछे दोनों के विचारों और व्यवहार में समानता देखी जाती है। प्रेम तो होता है शारीरिक आकर्षण से। और यह जब होता है तो मस्तिष्क में उन्माद उत्पन्न कर देता है। उस उन्माद में विचार और व्यवहार-भेद, समान प्रतीत होने लगते हैं, जैसे पागल सब संसार को पागल और अपने को बुद्धिमान समझने लगता है।''

निशनाथ की यह बात सुन मदन को हँसी आ गई। श्रीनाथ भी मुस्कराने लगा। निशनाथ कुछ झेंप गया और अचम्भे में पूछने लगा, ''क्या यह बात गलत है?''

मदन ने गम्भीर हो कहा, ''आप से अब तक जो बातें हुई हैं, उन सबमें केवल इसी अंतिम 'लव मैरिज' की व्याख्या में आपने अपने कवित्व का प्रदर्शन किया है, इससे मुझे हँसी आ गई और फिर एक बात और भी है। आशा है आप इसका बुरा नहीं मानेंगे। वह बात यह है कि आपको शायद यह सब ज्ञान स्वयं अपने पर परीक्षण करने पर हुआ है।''

''हाँ,'' निशनाथ ने कहा, ''परन्तु एक बात में मेरे और मीरा में अंतर रहा है। मीरा को आत्म-समर्पण के पश्चात् ज्ञात हुआ होगा कि असलम का व्यवहार ईमानदारी का नहीं है और मुझे विवाह से पहले ही पता लग गया था कि ललिता ईमानदार स्त्री नहीं है। मैंने तो उसे कीचड़ में पड़ा देख उठाया है, परन्तु मीरा ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसे दूध का धुला मान ग्रहण किया था। इससे मीरा को निराशा होगी और मैं पुरुष होने से शायद ललिता को गंगाजल में धोकर शुद्ध पवित्र कर सकूँगा।''

''तो क्या,'' मदन का पूछना था, ''स्त्री ऐसा नहीं कर सकती?''

''युक्ति से तो सम्भव है, परन्तु वस्तुस्थिति को देखते हुए प्राय: असम्भव ही है। इसी कारण तो हमारे पूर्वजों ने यह विधान किया है कि ऊँचे वर्ण के पुरुष से किसी भी छोटे वर्ण की स्त्री का विवाह हो सकता है, परन्तु एक छोटे वर्ण के पुरुष का ऊँचे वर्ण की स्त्री से विवाह नहीं होना चाहिए।''

''निशनाथ जी! ऐसा प्रतीत होता है कि स्त्रियों के विषय में आपकी धारणा कोई बहुत ऊँची नहीं है।''

''मेरी सम्मति तो वही है, जो प्रकृति ने बनाई है। यदि इसमें किसी का दोष है तो स्त्री-जाति के बनाने वाले का है।'' निशनाथ ने हँसते हुए कहा।

इसके पश्चात् इधर-उधर की बातें होने लगीं और थोड़े समय के उपरांत निशनाथ ने यह कहकर कि उसे कुछ काम है, उनसे विदा माँगी। श्रीनाथ तथा मदन ने उठकर पुन: निशनाथ का धन्यवाद किया और हाथ मिलाते हुए कहा, ''अब हमारा परिचय हो गया है। हमें आशा है कि अब आपसे मिलने के और अधिक अवसर प्राप्त होते रहेंगे।''

''हाँ-हाँ! क्यों नहीं? हमारा काम ज़रा ऐसा है कि हम बेवक्त मिल सकते हैं। मेरा तो नाम ही निशनाथ है।''

इस पर तीनों हँसने लगे और फिर निशनाथ हाथ मिला, विदा हो गया।

मीरा और श्रीकान्ता कार्यालय के पीछे के कमरे में बैठी निशनाथ से हो रही बातचीत सुन रही थीं। उसकी बातें सुन-सुनकर मीरा उदास होती जाती थी और जब उसने कश्मीर में विद्रोह खड़ा करने में असलम के भाग की बात सुनी तो अचेत-सी हो गई। उसके सभी सुख-स्वप्न चकनाचूर हो गए और वह पागल के समान अपने भविष्य के सम्बन्ध में सोचती हुई जड़वत् बैठी रही। उसके हृदय पर अंतिम आघात निशनाथ के इस कथन से हुआ था कि शारीरिक आकर्षण के उन्माद में विचार और व्यवहार-भेद में अंतर प्रतीत नहीं होता बल्कि वे ऐसे ही समान प्रतीत होने लगते हैं, जैसे पागल सब संसार को पागल और अपने को बुद्धिमान समझने लगता है। इस कथन ने उसके मन के चक्षु खोल दिए और वह समझने लगी कि कामुकता के आवेश में ही उसने यह पागलपन किया था। वह भले को बुरा और बुरे को भला समझने लगी थी।

जब निशनाथ चला गया तो वे दोनों पिछले कमरे में से निकल आईं। मदन ने मीरा का रक्तविहीन मुख देख, समझ लिया कि उसने सब बात सुन और समझ ली है। मदन ने उसे धीरज बँधाने के लिए कहा, ''मीरा बहन! अब तो सिवाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इसके और कोई उपाय ही नहीं रह गया कि असलम साहब के आने की प्रतीक्षा की जाए। मैं समझता हूँ कि तब तक तुम्हें वहीं होटल में ही रहना चाहिए। और जो कुछ खर्चा वहाँ होगा, देखा जाएगा।''

मीरा ने केवल यह कहा, ''अच्छा भैया! मैं अब चलती हूँ।''

श्रीकान्ता ने कहा, ''नहीं, अभी नहीं। मैं माताजी के यहाँ जा रही हूँ। चलो, वहाँ चलें। वहाँ खाना खाकर मैं तुम्हें होटल छोड़ आऊँगी।''

''क्या करूँगी वहाँ?''

''पिताजी से राय करेंगे। वे आज 'कोर्ट' नहीं गए होंगे।''

''भाभी! सब व्यर्थ है। मैं इस समय कुछ सोचने-समझने के लिए एकान्त चाहती हूँ।''

''हमारे घर में होटल से अधिक एकान्त मिलेगा। कहोगी तो मेरा कमरा तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा। मीरा बहन! अब खाना खाकर ही होटल चलेंगे।''

श्रीकान्ता समझती थी कि इस समय उसे अकेले होटल में भेजना ठीक नहीं। इस कारण आग्रह कर वह उसे घर ले गई।

:: 5 ::

ललिता मधुर के घर गई तो उसकी माँ मधुर के साथ कहीं घूमने गई हुई थी। इससे निराश हो नीचे उतर आई। तभी उसने देखा कि खुशीराम की स्त्री अपने मकान के नीचे खड़ी है। खुशीराम ऊपर से उतर रहा था और अभी सीढ़ियों में था। वह किसी कार्यवश पीछे रह गया था। ललिता ने बुलाया, ''रहीमन!''

उसने घूमकर ललिता को देखा और अचम्भा प्रकट कर पूछा, ''ललिता बहन! आज किधर से आ रही हैं?''

''और तुम किधर जा रही हो?''

''हम तो बाज़ार से कुछ कपड़ा खरीदने जा रहे हैं। मैं कपड़ा लेकर घर आ जाऊँगी और वे काम पर चले जाएँगे।''

ललिता ने देखा कि रहीमन खद्दर पहने हुए है, इससे पूछने लगी, ''गांधीजी की भक्तिन कब से बन गई हो?''

''कान्ता बहन के विवाह पर ये कपड़े उनकी माँ ने भेजे थे।''

''बहुत मेल-जोल है तुम्हारा उनसे?''

''हाँ!'' यह खुशीराम ने कहा, जो मकान से नीचे उतर आया था और जिसने ललिता का अंतिम प्रश्न सुन लिया था। परन्तु ललिता ने व्यंग से कहा, ''मैं तो रहीमन की बात पूछ रही हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुशीराम ने उसके कहने में सुधार करते हुए कहा, ''रहीमन नहीं, ललिता! यह राधा है। इसने नाम बदल लिया है।''

ललिता ने बात आगे नहीं चलाई और पूछा, ''माँ किस समय पर मिलती हैं?''

''हमें पता नहीं। मुझे उनके दर्शन किए पाँच मास से अधिक हो गए हैं।''

''क्यों? साथ-साथ रहते हुए भी ऐसा करते हो?''

खुशीराम ने बात बदलने के लिए कहा, ''छोड़ो इस बात को ललिता! बताओ, किधर चल रही हो? हम शाह आलमी दरवाज़े को जा रहे हैं।''

''उधर क्यों?'' उसने उनके साथ गली से बाहर आते हुए पूछा।

खुशीराम ने कहा, ''वहाँ 'परीमहल' में खद्दर-भंडार है। इसके कपड़ों को लिए कुछ खद्दर खरीदना है।''

''आजकल खद्दर बहुत भाने लगा है?''

''श्रीकान्ता बहन के विवाह पर उसकी माता ने इसे खद्दर का 'सूट' दिया था। वह इसे बहुत पसंद आया है। सबसे अच्छी बात इसे यह लगी कि खद्दर सुगमता से धुल जाता है और बिना कलफ लगाए और लोहा किए पहना जा सकता है।''

तब तक वे बाहर बाज़ार में आ गए थे। वहाँ सात सीट की एक बिलकुल नई मोटर खड़ी थी। ललिता ने कहा, ''आओ, छोड़ आऊँ।''

खुशीराम ने कहा, ''ललिता! नहीं। यह सेठजी की है।''

''नहीं, यह मेरी अपनी है। नौ हज़ार की ली है।''

''तुम्हें मुबारक हो।''

इतना कह वे ललिता को बिना नमस्ते इत्यादि किए चल दिए और ललिता उनका मुख देखती रह गई। वह अपने विचार से आज खुशीराम और रहीमन से बहुत शिष्टता से पेश आई थी, परन्तु उनका ठंडा व्यवहार इस बात का द्योतक था कि वे उसे एक दुश्चरित्र स्त्री मानते हैं। इनके व्यवहार से तुलना करने पर अब उसे ज्ञात हुआ कि निशनाथ ने उसके प्रति कितनी भलमनसाहत दिखलाई है। वह समझने लगी कि वह कितना अच्छा आदमी है, जो उससे विवाह कर बैठा है और फिर उसकी सब बेहूदगियों को सहन करता रहता है। साथ ही कहता है कि 'मैंने तुम्हारे में जो कुछ सुंदर है, उससे विवाह किया है। जो कुछ कुरूप है, उससे विवाह नहीं किया।' यह उसे उसकी बहुत ही कृपा अनुभव हुई। उसके मुख पर अपने व्यवहार की बुराई के विचार से लज्जा की लाली दौड़ गई। वह चुपचाप मोटर में बैठ गई और उसे स्वयं चलाकर सेठ मगनलाल की कोठी पर जा पहुँची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ कमलिनी पहले से ही विराजमान थी। आज वह पूर्ण शृंगार किए हुए थी। ललिता को संदेह था कि सेठजी से उसकी घनिष्ठता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। आज से पूर्व यदि ललिता उसे इस प्रकार सेठ साहब के साथ खाने पर आया देखती तो क्रोध से बावली हो जाती, परन्तु इस समय उसे इससे क्रोध नहीं आया। वह स्वयं हैरान थी कि कमलिनी को वहाँ देख उसे क्यों हर्ष और मन का हलकापन अनुभव हो रहा है। इसका कारण वह समझ नहीं पा रही थी।

कमलिनी से उसने मुस्कराते हुए सिर हिलाकर अभिवादन किया, परन्तु उसने मुख फेर लिया, मानो उसने इधर देखा ही नहीं। इस पर भी ललिता को क्रोध नहीं आया। उसने समझा के कमलिनी अभी उसे सौतन समझकर डाह कर रही है। वह इस बात का अपनी सास के घर से मुकाबला करती थी तो इन दोनों में उसे आकाश-पाताल का अंतर मालूम पड़ता था। सास ने पिछली रात उसे लड़ते देख, अपने बेटे को डाँटकर कहा था, 'इतनी सुंदर, सुशील बहू को क्यों तंग करते हो?'

इतने में सेठजी आ गए। आते ही उन्होंने कहा, "तो तुम आ गईं! बहुत अच्छा किया। अभी खाने के लिए संदेश नहीं आया। आओ बैठो, एक बात बताता हूँ।"

इतना कह सेठ मगनलाल बैठ गया। ललिता भी उसके समीप सोफा पर बैठ गई। सेठ मगनलाल ने ललिता से सम्बोधन कर कहा, "कमलिनी को तो तुम जानती ही हो?"

"जी, बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ। हमारी कम्पनी में काम करने वाली सब लड़कियों से अधिक सुंदर है और चरित्रवान् मानी जाती है।"

"अब इसने मेरे यहाँ ही रहना स्वीकार कर लिया है।"

"ओह! बहुत अच्छा हुआ। मुझे यह सुन बहुत प्रसन्नता हुई है।"

सेठ ने अचम्भे में ललिता के मुख की ओर देखकर कहा, "सच कहती हो, ललिता?"

"तो मैंने कभी आपसे झूठ बात की है?"

"पर यह तो दूसरी बात है। खैर, मैं चाहता यही हूँ कि तुम्हें नाराज़ नहीं होना चाहिए।"

ललिता ने कमलिनी को, जो अभी तक सामने कुर्सी पर बैठी थी, बाँह से पकड़, घसीटकर अपने समीप बैठा लिया और उसके गले में बाँह डाल उसे अपने समीप खींच, उसके कान में बोली, "मेरे विवाह पर तुम्हें निराशा हुई थी, परन्तु अब तो तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए।"

कमलिनी ने माथे पर त्योरी चढ़ा कहा, "छोड़ो, मुझसे हँसी न करो।"

"कमलिनी! तुम इससे प्रसन्न नहीं हो क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हूँ, और बहुत प्रसन्न हूँ।"

"तो बहन! मैं भी प्रसन्न हूँ। इसमें हँसी की बात कहाँ से आ गई? लो खाना आ गया है।"

बैरे ने उसके सामने मेज़ लगा दी और वे खाने लगे। खाना खाते हुए ललिता ने कहा, "मुझे यह देख चित्त में बहुत ही शांति हुई है कि एक फिलॉसफर की भाँति आपने विदा करने से पहले यह दावत दे दी है।"

"परन्तु तुम भी तो विवाह को फिलॉसफरों की भाँति ही ले रही हो। मैं समझता हूँ कि फाँसी पर चढ़ने से पूर्व केवल एक ज्ञानी ही दावत पर इतनी शांति से बैठ सकता है और बातचीत कर सकता है।"

"परन्तु मैं तो इसे फाँसी चढ़ने के समान नहीं मानती। मुझे तो अपना पुनर्जन्म हो रहा प्रतीत होता है।"

"ओह! समझा। कोई और सेठ महाजन मिल गया है?"

ललिता हँस पड़ी। उसने केवल इतना कहा, "मैं यह नहीं बताऊँगी। कारण यह कि वह कितना धनी है इसकी अभी थाह नहीं पा सकी हूँ।"

"हुर्रे!" सेठ ने ताली बजाते हुए कहा, "कभी उनसे मिलाओगी, ललिता?"

"यत्न करूँगी।"

"क्या अपनी प्रेमिका के पहले प्रेमी से मिलने को वे राजी होंगे?"

"यह बात नहीं। वे तो मेरे पूर्ण इतिहास को जानते हैं। आपसे भी भली-भाँति परिचित हैं। मुझे तो इस बात में संदेह है कि आप उनसे मिलना स्वीकार भी करेंगे और फिर आपको उनका परिचय प्राप्त कर आनंद भी होगा क्या?"

"तो क्या वे इतने बड़े हैं कि उनकी होकर तुम्हारे इतना उन्नति करने पर मुझे ईर्ष्या होने लगेगी?"

"यह मैं नहीं जानती।"

"तो बता दो कौन भाग्यवान् है वह?"

"भाग्यवान् तो मैं हूँ। परन्तु उनका नाम नहीं बताऊँगी।"

सेठ ने ललिता को गुदगुदी कर कहा, "बता दो न।"

इस पर कमलिनी ने नाक चढ़ाकर कहा, "जाने दीजिए। किसी के भेद की बात जानकर आप क्या करेंगे? भेद रखना ही चाहिए, वरना कहीं वहाँ पर भी मेरी जैसी कोई पहुँच गई तो?"

ललिता हँस पड़ी। सेठ ने कमलिनी की बात सुन, शांत हो, खाना आरम्भ कर दिया।

खाने के पीछे कुछ समय तक तीनों ब्रिज खेलते रहे। ललिता ने पचास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रुपये जीते। मध्याह्न दो बजे के लगभग वह विदा हुई। सेठ उसे नीचे सड़क तक छोड़ने आया। कमलिनी ऊपर ही रही। मार्ग में सेठ ने पूछा, ''यह चालू चित्र कब तक समाप्त हो जाएगा?''

''मैं समझती हूँ पंद्रह-बीस दिन में शूटिंग समाप्त हो जाएगी।''

''अगले चित्र में, मैं मुख्य पार्ट कमलिनी को देना चाहता हूँ।''

''बहुत अच्छा प्रस्ताव है।''

''दो चित्र तुम्हारे निकल गए हैं। अब आकृतियाँ बदलनी चाहिए। और फिर नए सेठ साहब शायद तुम्हें किसी नए चित्र में ले जाएँ।''

''वे चित्र नहीं बनाते।''

''तो क्या काम करे हैं?''

''बहुत-कुछ करते प्रतीत होते हैं।''

इस समय दोनों मोटर के समीप पहुँच गए। सेठ ने कहा, ''ललिता यदि कुछ अधिक हानि न हो तो अपने नए संरक्षक का नाम बता दो न। जब तक मुझे पता न चलेगा, मेरे पेट में खलबली मची रहेगी।''

ललिता ने कुछ सोचकर कहा, ''एक शर्त पर बता सकी हूँ।''

''किस पर?''

''मैं कागज़ पर लिखकर आपको दे जाऊँगी। आप उसे तब तक नहीं पढ़ेंगे जब तक कि मैं चली न जाऊँ। और फिर किसी से भी मेरे प्रेमी का नाम नहीं कहेंगे।''

''वचन देता हूँ।'' सेठ ने कहा।

''तो ज़रा दो कदम पीछे हट जाइए।''

सेठ पीछे हट गया। ललिता मोटर में बैठ गई। उसने अपने बैग में से एक बहुत सुंदर डीलक्स पार्कर पैन और एक कागज़ का टुकड़ा निकाला, फिर उस पर कुछ लिखकर दुहरा-तिहरा लपेट दिया। उसने बैग बंद कर मोटर स्टार्ट कर दी और कागज़ सेठ साहब के हाथ में दे, फर्र से मोटर भगाकर ले गई।

सेठ खड़ा-खड़ा उसे जाता देखता रहा। जब वह दृष्टि से ओझल हो गई तो उसने कागज़ का टुकड़ा खोल उत्सुकता से पढ़ा। उस पर लिखा था—

''परिपूर्ण परम ब्रह्म सर्वान्तर्यामी परमेश्वर।''

यह पढ़ सेठ ज़ोर से खिलखिलाकर हँस पड़ा।

:: 6 ::

13 जुलाई 1931 की घटनाओं की सूचनाएँ भारतवर्ष के समाचार-पत्रों में दो दिन पीछे छपीं। श्रीनगर में उपद्रव हो गया। मुसलमानों ने जेल पर धावा बोल दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराजगंज आदि व्यापारिक मुहल्लों में मुसलमानों ने लूट मचा दी। फिर अनन्तनाग, पहलगाम और बारामूला में भी उपद्रव हुए। इन उपद्रवों की गूँज जम्मू में भी पहुँची।

परन्तु रियासत की फौजों ने चार-पाँच दिनों में शांति स्थापित कर दी। उपद्रव दब गया, कुछ मुसलमान नेता पकड़ लिये गए। इनमें मिस्टर कासिम भी थे। विप्लव इस प्रकार दबता देख, असलम और ऐलिस को बहुत निराशा हुई। उन्होंने इस विप्लव को जीवित रखने के लिए भारत के ब्रिटिश-अधीन प्रांतों से सहायता भेजने का यत्न करने का विचार किया और इस प्रकार दोनों ने सोनमर्ग में 'हनीमून' मनाने का आनंद छोड़, लाहौर आना ठीक समझा।

'कश्मीर में इस्लाम खतरे में' बताकर पंजाब की एहरार पार्टी को भड़काया गया। साथ ही, कश्मीर जाने के लिए स्वयंसेवकों के लिए अपील की गई। एहरार पार्टी ने पंजाब के बड़े-बड़े नगरों में जलसे करने और जलूस निकालने आरम्भ कर दिए। स्यालकोट में वालंटियरों का कैम्प खोल दिया गया।

जहाँ-जहाँ जलूस निकाले जाते थे, महाराजा कश्मीर को साधारण रूप में और हिन्दुओं को विशेषतया गालियाँ दी जाती थीं। इस आंदोलन को रोकने के लिए पंजाब सरकार ने कुछ भी यत्न नहीं किया।

असलम जब लाहौर आया तो 'फ्लैटीज़' होटल में मीरा के पास नहीं गया बल्कि उसने 'नीडोज़' होटल में ठहरने का प्रबंध कर लिया। ऐलिस, जो अब मिसेज़ असलम के नाम से जानी जाती थी, उसके साथ थी।

मुहम्मद असलम ने कश्मीर से एक पत्र कम्यूनिस्ट पार्टी, पंजाब को भी लिखा। इसमें कश्मीर में मज़दूरों के आंदोलन में सहायता भेजने की माँग की गई थी। पंजाब के कम्यूनिस्ट 'सैल्ज' (सभाओं) के अधिकारियों की सभा बुलाई गई तो उसमें मीरा को भी निमंत्रित किया गया था। मीरा कम्यूनिस्ट पार्टी का इस रियासत के झगड़े से कोई सम्बन्ध नहीं समझती थी। इससे वह इस आयोजन का विरोध करने के लिए वहाँ पहुँच गई। वहाँ पहुँच उसने असलम को सभा में उपस्थित देखा तो चकित रह गई।

लगभग दो सौ कार्यकर्त्ता वहाँ उपस्थित थे। मीरा उन सबके बीच में से गुजरती हुई असलम के समीप जा बैठी। असलम ने सिर हिलाकर मीरा का स्वागत किया। मीरा मन में सोच रही थी कि यह कब आया है। परन्तु सबके बीच में कुछ भी पूछना उचित न समझ, वह चुपचाप बैठी रही। असलम के समीप एक यूरोपियन महिला बैठी थी। मीरा ने समझ लिया कि वह ऐलिस ही होगी। जब प्रायः सब लोग आ गए तो बातचीत आरम्भ की गई। कॉमरेड मुलखराज पार्टी के एक विख्यात नेता थे। वे उठकर बोले, "साथियो, आज पंजाब एक विचित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिस्थिति में से गुजर रहा है। कश्मीर के मज़दूरों ने एक 'फ़्यूडल चीफ़' के विरुद्ध विप्लव खड़ा कर दिया है और उनका उद्देश्य यह है कि कश्मीर में 'प्रोलिटेरिएट' राज्य स्थापित कर दिया जाए। ऐसी अवस्था में यह हमारा कर्त्तव्य हो जाता है कि हम कश्मीर के इस आंदोलन का समर्थन करें और सहायता करें। आपको विदित है कि मुट्ठी-भर डोगरों ने कश्मीर की पूर्ण जनता को गुलाम बना रखा है। मैं चाहता हूँ कि हम कम्यूनिस्ट पार्टी की ओर से यह निश्चय करें कि इस आंदोलन की सहायता करें और फिर जितनी मज़दूर यूनियनें हमारे से सम्बन्ध रखती हैं, उनसे स्वयंसेवक और रुपया एकत्रित कर कश्मीर में भेजें।

"इतना मैं और कह देना चाहता हूँ कि पूरे हिन्दुस्तान के नेता साथी असलम साहब इस सभा में उपस्थित हैं और वे हमारी इस चाल को पसंद करते हैं, यहाँ तक कि अमेरिका और कैनेडा की पार्टियों की राय भी यही है। वहाँ की प्रतिनिधि साथिन ऐलिस हमारे बीच में विद्यमान हैं और आज की कार्यवाही उनकी सलाह और अनुमति से हो रही है।"

इसके पश्चात् असलम उठकर कहने लगा, "हमारा काम संसार में गरीब 'प्रोलिटेरिएट' की मदद करना है। इस नाते जहाँ भी इनकी 'मूवमेंट' हो, वहाँ इनकी मदद करनी चाहिए। इसके अलावा कश्मीर एक मार्के की जगह है। कश्मीर मज़दूरों के हाथों में हो जाने से हमारा हिन्दुस्तान पर जबरदस्त असर हो जाएगा और हमें हिन्दुस्तान में बगावत खड़ी करने में आसानी होगी। मैं चाहता हूँ कि आप इस काम में कश्मीर की मदद करें।"

ऐलिस ने तो केवल-मात्र यह कहा, "आपके इस काम को संसार-भर के कम्यूनिस्ट देख रहे हैं और इसमें सफलता प्राप्त करने पर आप की बहुत नेकनामी होगी।"

इतना कुछ कहे जाने पर नेताओं का यह विचार था कि सब लोग इस आंदोलन का समर्थन करेंगे। परन्तु जब मीरा उठकर बोलने लगी और इस प्रस्ताव का विरोध करने लगी तो सबको बहुत आश्चर्य हुआ। मीरा ने कहा, "यह ठीक है कि कश्मीर में मज़दूर प्राय: मुसलमान हैं, परन्तु यह नहीं कि हिन्दू हैं ही नहीं। इस पर भी यह आंदोलन हिन्दू-मुसलमानों के झगड़े में बदल गया है। हम लोगों को, जो हिन्दू-मुसलमानों के झगड़े में बदनाम होना नहीं चाहते, इससे पृथक् रहना चाहिए। अमेरिका अथवा कैनेडा की पार्टियों ने यदि इस सम्बन्ध में कोई आदेश भेजा हो तो यह उनकी अनधिकार चेष्टा है। वे लोग हिन्दुस्तान की परिस्थिति से अनभिज्ञ हैं। यहाँ हमें बहुत सावधानी से काम करना है। यदि यह बात फैल गई कि हम आर्थिक प्रश्न के बहाने मुसलमानों अथवा हिन्दुओं का पक्षपात करते हैं तो हमारे मुख्य कार्य में बाधा खड़ी हो जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर एक बात और है। यह सर्वविदित है कि ब्रिटिश सरकार के प्रोत्साहन पर यह आंदोलन खड़ा किया गया है। 'राउंड टेबल काफ्रेंस' के अवसर पर महाराजा द्वारा दिए गए वक्तव्य ब्रिटिश सरकार को पसंद नहीं आए और महाराजा के देशभक्ति-पूर्ण कथनों के लिए उसे दंड देने के प्रयोजन से अब वह इस आंदोलन को सहायता दे रही है। भारत-वर्ष को दासता की शृंखलाओं में बाँधे रहने के ब्रिटिश सरकार के इस षड्यंत्र में हमें कदापि सहायता नहीं करनी चाहिए। मैं इस प्रस्ताव को विरोध करती हूँ।''

इस पर ऐलिस उठकर कहने लगी, ''मिस मीरा का यह सब कथन गलत है। हमें नीति से काम लेना चाहिए और कोई भी ऐसा अवसर, जिसमें शोषकों को हानि हो, हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। मीरा ने कहा है कि यह प्रश्न हिन्दू-मुसलमानों का हो गया है।'' ऐलिस ने पुनः विरोध करते हुए कहा, ''इसमें हमारा क्या दोष है? यदि हिन्दू पूँजीपति हैं, तो यह उनका दोष है। और यदि मुसलमान मज़दूर हैं तो हिन्दू पूँजीपति उनको लूटेंगे ही। इन कारण मैं इस प्रस्ताव को स्वीकार करने का आपसे अनुरोध करती हूँ।''

प्रस्ताव पास हो गया। मीरा को ऐलिस का उसे 'मिस' कहकर पुकारना बहुत अखरा। परन्तु इस समय उसके मस्तिष्क में कई उलझनें उत्पन्न हो चुकी थीं जिनका उसे समाधान नहीं मिल रहा था। असलम बिना बताए चला गया था और अब बिना बताए आया है। फिर वह कहाँ ठहरा है? इससे परेशान हो वह पार्टी की मीटिंग समाप्त होने से पहले ही उठकर बाहर चली आई। वह अपने विचारों को संगठित कर असलम से इस विषय में पूछना चाहती थी। इसलिए कमरे से बाहर आ खुली हवा में खड़ी हो, अपने मस्तिष्क को ठंडा करने लगी थी।

बाहर बहुत से मुल्ला-मौलाना दिखाई दे रहे थे। मीरा ने कार्यालय के चपरासी से पूछा कि ये लोग किस कारण से आए हैं। चपरासी ने बताया कि नगर में तीन दिन से मुसलमान कश्मीर में गोली चलने के विरुद्ध आंदोलन कर रहे थे। आज महाराजा के पिट्ठू हिन्दू, महाराजा के पक्ष में जुलूस निकाल रहे हैं। ये लोग कहते हैं कि मुकाबले में ये प्रदर्शन करेंगे। इसके लिए असलम साहब को साथ ले जाना चाहते हैं।''

इतने में एक मौलाना मीरा के पास आ पूछने लगा, ''बीबी! पार्टी ने क्या फैसला किया है?''

''यही कि महाराज को गद्दी से उतार दिया जाए और कश्मीर में प्रजा का राज्य कायम हो जाए।''

''ठीक, बिल्कुल ठीक। यही होना चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मीरा ने पूछा, ''आप कहाँ के रहने वाले हैं?''

''मैं लाहौर में ही रहता हूँ।''

''आप कभी कश्मीर गए हैं?''

''नहीं।''

''तो फिर वहाँ प्रजा का राज्य होने से आपको क्या प्राप्त होगा? आपके नगर में तो अंग्रेजी राज्य और सुदृढ़ हो जाएगा।''

''हम ऐसा नहीं समझते। हमें यकीन है कि मुल्क के एक हिस्से में रिआया की हकूमत होने से दूसरे हिस्से में भी ऐसा हो सकेगा।''

''हैदराबाद में भी?'' मीरा ने मुस्कराते हुए पूछा।

वह मौलाना बिना उत्तर दिए कुछ समय तक मीरा का मुख देखता रहा। पश्चात् उसे वहीं छोड़ अपने साथियों की मंडली में जा खड़ा हुआ। उसके चले जाने पर मीरा पुनः उत्सुकता से असलम के बाहर आने की प्रतीक्षा करने लगी। वह मन में बहुत ही उदास थी और अपना मार्ग नहीं पाती थी।

ऐलिस कोई सुंदर स्त्री नहीं थी। यूरोपियन होने से गौरवर्णीय थी। अमेरिकन होने से उनके गाल लाल थे। बाल भूरे और कटे होने से लंबे नहीं थे, इस पर भी छोटे नहीं कहे जा सकते थे। नाक गोल, अधर मोटे, छाती भरी हुई और चौड़ी, प्रकृति चुलबुली थी। एक क्षण भी निश्चल नहीं बैठ सकती थी। स्वभाव अग्रसर, प्रत्येक से बात करने में स्वयं पहल करने वाली और सब पर अपना प्रभाव स्थापित करना चाहती थी। मीरा की समझ में नहीं आता था कि ऐलिस से आखिर कौन सी बात में वह कम है। जो कुछ अंतर था, वह देश और जाति की विशेषताओं के कारण था। जहाँ तक रूपरेखा का सम्बन्ध था, वह अपने को ऐलिस से कहीं अधिक सुंदर पाती थी।

जब सभा विसर्जित हुई और असलम तथा ऐलिस साथ-साथ बाहर आए, तो आते हुए मुसलमानों ने उनको घेर लिया। असलम ने उनकी बात सुनी तो उनके साथ जाने को तैयार हो गया। तभी मीरा ने आगे बढ़कर कहा, ''मुझे आपसे कुछ आवश्यक काम है।''

''शाम के वक्त मिलूँगा।''

''मैं अभी पूछना चाहती हूँ।''

''अच्छी बात है। आओ।'' दोनों पुनः कार्यालय में चले गए। ऐलिस भी उनके साथ जाना चाहती थी, परन्तु असलम ने उसे यह कहकर रोक दिया, ''तुम यहीं इंतज़ार करो। मैं अभी आ रहा हूँ।''

कार्यालय के एक कमरे में पहुँच, एक कोने में खड़े हो असलम ने पूछा, ''हाँ, क्या बात है मीरा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''आपने यह दूसरा विवाह कर लिया है ?''

''कौन कहता है ?''

''सेठ मगनलाल।''

''तो तुम भी उससे मेल-मुलाकात रखती हो ?''

''मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिए।''

''अभी विवाह नहीं किया। क्या करूँगा कह नहीं सकता।''

''तो आपने मगनलाल को झूठ लिखा था ?''

''किसी सेठ-साहूकार के धन ऐंठने के कई तरीके हैं। देखो मीरा! अब मैं जल्दी में हूँ। शाम को मिलूँगा। तुम्हारे चेहरे की रौनक कम हो रही है। ज़रा 'पाउडर' और 'लिपिस्टिक' का इस्तेमाल कर लेने में कुछ हर्ज नहीं है। मैं शाम को आऊँगा।''

''क्या ज़रूरत है आने की ? यदि ज़रूरत होती तो आने-जाने की सूचना तो देते।''

''मैं सब आकर बताऊँगा।''

इतना कह असलम मीरा को वहीं छोड़, कमरे के बाहर निकल गया। मीरा को असलम की बातों से न तो संतोष हुआ, न ही उसके कहने पर विश्वास। वह यह सोचती थी कि कितना अंतर आ गया है उसमें। उसे विवाह से पूर्व का असलम और अब का असलम सर्वथा भिन्न-भिन्न व्यक्ति प्रतीत होते थे।

वह बाहर आई तो असलम उन मुसलमानों के साथ जा चुका था। ऐलिस एक सर्वथा नवीन मोटरगाड़ी में बैठी हुई थी और उसे 'स्टार्ट' करने लगी थी। मीरा को ऐलिस ने देखा तो संकेत से अपने समीप बुला पूछा, ''आप कहाँ रहती हैं ?''

'' 'फ़्लैटीज़' होटल में।''

''मैं 'नीडोज़' में जा रही हूँ। चलिए, आपको छोड़ती जाऊँगी।''

मीरा को अपने मन के संशय निवारण करने का अवसर मिल गया। वह धन्यवाद कह उसके समीप आगे की सीट पर बैठ गई। जब गाड़ी चल पड़ी तो मीरा ने पूछा, ''सुना है आपका विवाह होने वाला है ?''

ऐलिस ने हँसकर पूछा, ''किससे सुना है ?''

''सेठ मगनलाल से।''

''तो आप उनको जानती हैं ?''

''ललिता मेरी सखी है और उसका मगनलाल से मेल-जोल है।''

''हाँ, मैं उसे जानती हूँ। उसने और उसके पति निशनाथ ने सेठ को ख़ूब उल्लू बना रखा है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
''तो आपका विवाह कब होगा?''

''क्या ललिता ने यह नहीं बताया कि हमारा विवाह हो चुका है? परसों हम सेठ साहब से मिलने गए थे तो ललिता भी वहीं थी और उसने हमें विवाह की बधाई भी दी थी।''

''उसके बाद मैं ललिता से नहीं मिली। आप यहाँ कब के आए हुए हैं?''

''आज चौथा दिन है। हमारा विवाह, एक मास पहले कश्मीर रियासत की 'ब्रिटिश रैज़िडैंसी' में हुआ था। वहाँ से हम 'हनीमून' के लिए सोनमर्ग चले गए थे। जब श्रीनगर में उपद्रव हुआ तो हमें लौट आना पड़ा। परन्तु हमारे पहुँचने से पूर्व श्रीनगर में गोली चल चुकी थी; महाराजगंज, पहलगाम, बारामूला और इस्लामाबाद इत्यादि स्थानों में उपद्रव हो चुके थे और लोगों का फेन जैसा उबाल फौज की गोली चल जाने से शांत हो चुका था। वास्तव में कासिम साहब ने कुछ जल्दी कर दी। हम जम्मू चले आए। वहाँ भी हमने लोगों को उपद्रव करने पर तैयार करना चाहा, परन्तु डोगरों ने मुसलमानों को ऐसा हराया कि हमें सफलता नहीं मिली। हमारे कुछ कार्यकर्त्ता, जो हमारी पार्टी से सम्बन्ध रखते हैं और जो आंदोलन को चला रहे थे, रूपोश हो गए हैं और कभी-कभार कोई इक्का-दुक्का घटना कर देते हैं। हम उनकी सहायता के लिए यहाँ से वालंटियर भेजना चाहते हैं। अगर हिन्दुस्तान से दस हज़ार वालंटियर मिल जाएँ तो हम कश्मीर के महाराजा का राज्य पलट देंगे।''

मीरा को इन बातों में कोई रुचि नहीं रही थी। वह अपने भविष्य के व्यवहार में विचार कर रही थी। वह सोच रही थी असलम सत्य कहता है कि विवाह नहीं हुआ अथवा ऐलिस ठीक कहती है कि विवाह हो गया है? यह बात तो असलम ने भी मानी थी कि विवाह का विचार तो उसके मन में भी है। ऐसी अवस्था में वह क्या करे? वह अनुभव कर रही थी कि या तो उनका विवाह होने वाला है अथवा हो गया है। दोनों अवस्था में अब वह असलम के प्रेम का भाजन नहीं रही। यदि समाज के नियमानुकूल ऐलिस का विवाह असलम से हुआ है तब तो अब सारा जहान उसे असलम की रखैल ही समझेगा। ऐसे तिरस्कार की अवस्था से तो वह मर जाना अच्छा समझती थी।

साथ ही महत्वपूर्ण बातों में वह कम्यूनिस्ट पार्टी से सहमत नहीं रही थी। उसमें पड़े रहना उसे असह्य हो उठा। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उसने एक बार मदन से कहा था कि उसमें और असलम में विचार-समानता है। फिर उसने अपनी माता को अंतिम पत्र में लिखा था, ''मेरे विचार उनसे (असलम से) मिलते हैं। मेरे मनोद्‌गार उनके मनोद्‌गार हैं। एक ही मार्ग के राही होने से हम दोनों विवाह-बंधन में बँध जाने पर परस्पर जीवन-निर्वाह भली-भाँति कर सकेंगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब उसका यह सब कथन असत्य और भ्रम-मूलक सिद्ध हुआ है। वह अब अपना मुख अपनी माँ तथा मदन को दिखाने योग्य नहीं रही। इससे आत्म-हत्या के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं रहा। साथ ही उसके पेट में असलम की संतान थी। विष-वृक्ष के इस बीज को सींचने के लिए उसे अब एक क्षण-भर रक्त देना भी असह्य हो उठा था।

ऐलिस ने मीरा को चुप देखा तो समझी कि वह उसके विषय में और अधिक जानने के लिए उत्सुक है। इससे असलम से अपने सम्बन्ध के विषय में वह कहने लगी, ''मैं अंतर्राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट पार्टी की ओर से भारतवर्ष में कश्मीर के विषय में जाँच करने आई थी। यहाँ आने पर मुझे विश्वास दिलाया गया था कि कश्मीर की प्रजा विप्लव करने के लिए तैयार है। मिस्टर कासिम ने बताया कि महाराजा 'ब्रिटिश रैज़िडैंट' की सम्मति से विलायत चला गया है और अब वह रैज़िडैंट हमको प्रत्येक प्रकार की सहायता देने को उद्यत है। परन्तु मुझे अब ज्ञात हुआ है कि 'ब्रिटिश रैज़िडैंट' ने लोगों को धोखा दिया है। उसने किसी प्रकार की सहायता नहीं की। वह कहता है कि रियासत के साथ हुए ब्रिटिश सरकार के एक समझौते के अनुसार अब वह एक सीमा से अधिक हस्तक्षेप नहीं कर सकता।

''इस प्रयत्न में मैं मिस्टर असलम से मिली और मैंने अनुभव किया कि वह बहुत अच्छा पति सिद्ध होगा। उसका मेरे से प्रेम प्रकट करने के अतिरिक्त उसका बात करने का ढंग, कार्य करने में चातुर्य और फिर शारीरिक सौंदर्य मुझे आकर्षित किए बिना नहीं रह सका। कुछ ही दिनों में हम एक-दूसरे के बहुत ही समीप हो गए। अब हम पति-पत्नी हैं। हम बहुत आनंद में हैं।''

ऐलिस बातें कर रही थी, परन्तु मीरा उनको सुन नहीं रही थी। वह मन में सोच रही थी कि आत्म-हत्या तो भारी पाप होगा। देश के कानून के विरुद्ध होने की तो उसे कोई चिंता नहीं थी। वह समझती थी कि एक बार आत्म-हत्या में सफल हुई तो फिर देश के कानून की पहुँच से दूर हो जाएगी। परन्तु हिन्दू विचार-धारा, जो अभी तक उसके मस्तिष्क में कहीं छिपी पड़ी थी, अब प्रकट हो गई थी। उसे अनुभव हुआ कि आत्म-हत्या उसे अपने किए पापों से छुटकारा नहीं दिलवाएगी, प्रत्युत् इससे तो एक छोटे पाप को मिटाने के असफल यत्न में वह एक अधिक भारी पाप कर बैठेगी, जो उसे अगले जन्म में भोगना पड़ेगा। इस जन्म के किए दुष्कर्म उसे भावी जन्म में भी घाटे की परिस्थिति में रखेंगे, जिससे वह अन्य बुरे काम करने में प्रवृत्त हो सकती है और इस प्रकार न टूटने वाली पापमयी योनियों की शृंखला में बद्ध वह घोर यंत्रणा सहती रहेगी।

ऐलिस अपनी बात कर रही थी, ''यह कश्मीर का झगड़ा समाप्त हो जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर हम दोनों वापस अमेरिका जा रहे हैं। मिस्टर असलम ने पासपोर्ट के लिए आवेदन दे दिया है। मैं फिलाडैल्फिया की रहने वाली हूँ। मिशिगन रेडियो कार्पोरेशन वाले मिस्टर स्मिथ मेरे जीजा हैं। मेरी नानी मेरे लिए दस मिलियन डालर छोड़ गई है और वह मैंने कारखानों के हिस्सों में लगाया हुआ है।''

मीरा सोच रही थी कि हिन्दू स्त्री की सबसे अनमोल वस्तु सतीत्व, तो वह खो चुकी है। बिना विवाह किए असलम की पत्नी बन वह समाज की व्यवस्था तोड़ने का अपराध कर चुकी है। इस व्यवस्था को तोड़ने के समय तो वह समझती थी कि असलम का उससे प्रेम इतना दृढ़ है कि उसे समाज की सहायता नहीं चाहिए। परन्तु समाज की व्यवस्था की अवहेलना करने से वह महसूस कर रही थी कि वह मिट्टी में मिल गई है। यह तो 'न घर की न घाट की' वाली बात हो गई है। यदि उस समय वह नियम से विवाह कर लेती तो अब असलम ऐलिस से विवाह न कर सकता।

इस समय उसे रामायण की वह चौपाई याद आ गई, जो उसकी माता प्राय: गाया करती थी। चौपाई इस प्रकार थी—

तपु सुखप्रद दु:ख दोष नसावा
तपबल रचइ प्रपंचु विधाता॥
तपबल विष्णु सकल जग त्राता
तपबल सम्भु करहिं संहारा॥
तपबल सेष धरइ महिभारा
तप अधार सब सृष्टि भवानी॥
करहु जाइ तपु अस जिय जानी

वह सोचने लगी कि क्या तपस्या उसके दोष भी निवारण कर सकेगी? यदि कर सकती हो तब अपने दोष वह इस जन्म में ही समाप्त कर सकेगी और अगले जन्म में लिखने को सर्वथा साफ पाटी पा सकेगी।

इस समय मोटर फ़्लैटीज़ होटल में पहुँच गई। मोटर खड़ी हुई तो उसे ज्ञात हुआ कि उसे उतरना चाहिए। वह उतरी तो ऐलिस ने 'गुड आफ्टरनून' कहा, परन्तु मीरा अभी भी अपने विचारों में खोई हुई थी। उसने ऐलिस का अभिवादन नहीं सुना।

:: 7 ::

बहुत काल पश्चात् उसे ज्ञान हुआ कि वह सड़क के किनारे खड़ी है। इस बात का ज्ञान होते ही वह अपने कमरे में चली गई।

उसे याद आ गया कि असलम उससे मिलने सायंकाल आ रहा है। इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके शरीर में कम्पकपी हो उठी। उसे ऐसा भय प्रतीत हुआ कि मानो कोई साँप डसने आ रहा है। उसके मुख से चीख निकल गई। उसने कमरे का दरवाज़ा बंद कर चिटकनी चढ़ा दी, जैसे कोई बलात्कार करने भीतर घुस आता हो। उसके मन में ग्लानि व्याप्त हो गई। वह कमरे में जल्दी-जल्दी चक्कर काटने लगी। मन में सोचती थी, 'भारी धोखा हुआ है।'

इस समय उसे निशनाथ की बात याद हो आई। उसने श्रीनाथ से कहा था कि ललिता को उसने कीचड़ में से उठाया है और पुरुष होने से उसे गंगाजल में धो, शुद्ध-पवित्र कर सकेगा। क्या उसे भी कोई शुद्ध पवित्र कर सकेगा?

इस समय उसे फिर याद आ गया :

तपु सुखप्रद दुःख दोष नसावा।

तो वह तपस्या करे कहाँ? ये प्रश्न उसके सम्मुख आ उपस्थित हुए। एक बात स्पष्ट थी कि होटल में रहकर तथा असलम से सम्पर्क रख अथवा असलम के सामान का उपभोग करते हुए तपस्या तथा प्रायश्चित्त असम्भव था। तो वह होटल को छोड़ने के निर्णय पर पहुँच गई।

परन्तु कहाँ जाए? इस विषय में उसे मदन काले बादलों में सुनहरी लकीर की भाँति प्रतीत हुआ। आशा की इस झलक से प्रोत्साहित हो वह चलते-चलते रुक गई और अपने आस-पास दृष्टि दौड़ाने लगी। जिधर देखती थी, उसे असलम द्वारा खरीदकर लाई गई वस्तुएँ ही दिखाई देती थीं। माँ के घर से तो वह केवल सूती खद्दर के कपड़े पहनकर ही आई थी। वे कपड़े उसने अभी रखे हुए थे। उसने उनको निकाला और पहन लिया। जम्पर कुछ तंग हो गया था, परन्तु उसने इसकी चिंता नहीं की। उसके पास मदन की दी हुई एक कंठी भी थी, जो मदन ने अपने विवाह के समय उसे उपहार रूप में दी थी। मीरा ने वह निकाली और जेब में रख ली। पश्चात् कमरे से बाहर निकल, ताला लगा, होटल के कार्यालय में ऐलिस को टेलीफोन से सूचना देने चल पड़ी।

वह मन में सोचती थी कि पार्वती और गंगा तो परम पवित्र थीं और उनको केवल शिव की प्राप्ति के लिए युग-पर्यन्त तपस्या करनी पड़ी थी। परन्तु वह तो पतित हो चुकी है। उसे तो इससे भी अधिक तपस्या करनी होगी। वह अपने जीवन को अंगुल-अंगुल कर गला देने की धारणा बनी रही थी।

होटल के कार्यालय में पहुँच उसने 'नीडोज़' होटल के मैनेजर को टेलीफोन कर मिसेज़ असलम को बुलाने को कहा। जब वह आ गई तो उसने कहा, "मैं मीरा बोल रही हूँ। बात यह है कि मैं मिस्टर असलम के लिए एक संदेशा देना चाहती हूँ।

"आप उनसे कह दें कि फ़्लैटीज़ होटल के कमरा नम्बर दस की चाबी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ होटल के कार्यालय में पड़ी है। उसी कमरे में उनका सामान रखा है। वे सामान उठाकर ले जावें। मैं बाहर जा रही हूँ और अब उनसे नहीं मिलूँगी। मैं चाहती हूँ कि वे मुझसे मिलने का यत्न न करें।....

''बात कुछ है, मगर मैं आपको बताना नहीं चाहती। उनसे ही पूछ लीजिएगा। उन्हें मेरी 'गुड बाई' कह दीजिएगा।''

इतना कह मीरा ने टेलीफोन बन्द कर दिया और अब सोचने लगी कि क्या करे। उसे स्मरण हो आया कि श्रीनाथ के छापेखाने में भी टेलीफोन लगा है। उसने मदन को बुलाने के लिए यह ढंग ठीक समझा। उसने श्रीनाथ के छापेखाने से टेलीफोन मिलाया और पूछा, ''कौन बोल रहा है?''

घबराई हुई आवाज़ आई, ''श्रीनाथ बोल रहा हूँ।''

''मैं मीरा बोल रही हूँ।''

''हाँ, क्या बात है?''

''मिस्टर असलम कश्मीर से लौट आए हैं।''

''वह देख रहा हूँ मीरा! यहाँ बाज़ार में उपद्रव मच रहा है। असलम मुसलमानों की एक भारी भीड़ लेकर एक ओर खड़ा है और कुछ हिन्दू दूसरी ओर खड़े नारे लगा रहे हैं। कभी-कभी ईंटें भी चल जाती हैं। मदनजी यहाँ दूकान में खड़े थे कि एक ईंट उनको आकर लगी है और उनकी मरहम-पट्टी हो रही है। दरवाज़ों के शीशे टूट चुके हैं। मालूम नहीं एक-दो मिनट में क्या हो जाए। अगर पुलिस आ गई तो शायद शांति हो जाय....।''

इस समय टेलीफोन में गरड़-गरड़ की आवाज़ आई और वह बंद हो गया। मीरा को ऐसा अनुभव हुआ कि किसी ने तार काट दिया है। इससे उसका हृदय बैठने लगा। वह सोच रही थी, 'मदन को चोट लगी है और मरहम-पट्टी हो रही है। दुकान के दरवाज़े टूट चुके हैं और नहीं मालूम एक-दो....' इत्यादि। ये सब बातें उसे बेचैन कर रही थीं। 'असलम मुसलमानों की एक भारी भीड़ लिये एक ओर खड़ा है।' इससे वह उतावली हो उठी। उसके मन में आया कि जाकर दोनों पक्षों के बीच में खड़ी हो जाए और या तो उनको लड़ने से रोक दे अन्यथा कानपुर के श्री गणेशशंकर विद्यार्थी की भाँति बीच-बचाव करती हुई मारी जाए। यही तो वह चाहती थी कि आत्म-हत्या का पाप सिर पर लिये बिना एक अच्छे काम के लिए जीवन त्याग कर दे। शायद इससे मदन और अन्य लोगों की जान बच जाए। इस विचार के आते ही वह भागकर होटल के बाहर निकल आई और सामने टैक्सी में सवार हो, ड्राइवर से बोली, ''अस्पताल रोड ले चलो।''

टैक्सी वाले ने फर्र से मोटर भगा दी। माल पर से गुजरते हुए, हॉल रोड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर और वहाँ से अस्पताल के सामने से निकल अस्पताल रोड पर पहुँच गई। वहाँ लोगों की भारी भीड़ एकत्रित हो रही थी। इससे टैक्सी की रफ़्तार धीमी पड़ गई। टैक्सी वाला हार्न बजाता हुआ भीड़ में से गुजर रहा था कि एकाएक अनारकली बाज़ार की ओर से भारी संख्या में लोग भागते हुए आए। टैक्सी रुक गई। भागते हुए आने वाले मुसलमान थे। 'मारे गए, मारे गए, हिन्दुओं ने मार डाला' की आवाज़ें उनके मुख से निकल रही थीं। बीसीयों भयभीत लोग टैक्सी के इधर-उधर से भागते हुए निकल गए। कुछ काल के पश्चात् भागने वालों की भीड़ कम होने लगी। तभी ललिता का भाई खुशीराम पेट पर हाथ रखे हुए भीड़ में से निकलकर मोटर टैक्सी का आश्रय ले खड़ा हो गया। उसके पेट में से खून बह रहा था। मीरा ने उसे पहचान लिया। वह समझ गई कि छापेखाने में खून-खराबा हो गया है, और यह वहीं से भागा हुआ आ रहा है। इसलिए मीरा ने उससे पूरा वृत्तांत जानने के लिए मोटर का दरवाज़ा खोल खुशीराम की बाँह पकड़ उसे भीतर खींच लिया। खुशीराम ने मीरा की ओर देखा और लपककर मोटर में चला आया और बोला, "मीरा बहन! ले चलो। जल्दी करो, जल्दी करो, खून बह रहा है।"

"क्या हुआ है वहाँ?"

"सब बच गया है। मीरा! ले चलो, पट्टी करनी चाहिए।"

मीरा ने टैक्सी वाले को कहा, 'मोहनलाल रोड पर।' वहाँ श्रीनाथ का घर था। टैक्सी वाले ने देखा कि आगे जाने का मार्ग नहीं, इससे गाड़ी को पीछे लौटाकर शाह आलमी दरवाज़े की ओर घुमा लिया। वहाँ से सर्क्युलर रोड पर लाहौरी और मोरी दरवाज़े पार कर मोहनलाल रोड पर जा पहुँचा।

मार्ग में मीरा ने मदन और श्रीनाथ के विषय में पूछा। खुशीराम ने जो वृत्तांत बताया वह इस प्रकार था "जब मदन भैया घायल हो गए तो हम उन्हें भीतर दफ़्तर में ले गए और मरहमपट्टी करने लगे। उस समय बाबूजी टेलीफोन कर रहे थे। तभी किसी ने बाहर से तार काट दिया। इस पर मैंने सोचा कि चूहेदानी में कैद हो मरने से बाहर मैदान में लड़कर मरना अच्छा है। मुसलमान टेलीफोन की तार काट छापेखाने पर आक्रमण करने ही वाले थे कि मैं वहाँ से बाहर निकल हिन्दुओं में शामिल हो गया। मैंने उनसे कहा, 'यहाँ खड़े-खड़े नारे लगाने से क्या लाभ? साहस कर आक्रमण कर दो। यदि उन्होंने पहले आक्रमण कर दिया तो हम पिट जाएँगे।' एक लम्बे-चौड़े-से सज्जन को मेरी बात बहुत पसंद आई और उसने नारा लगा दिया 'पकड़ लो', और हम मुसलमानों पर टूट पड़े।

"वह लम्बे-चौड़े मोटे सज्जन, जिन्हें लोग डाक्टर कहकर पुकारते थे, हम सबसे आगे थे। असलम साहब को, जो कि मुसलमानों का नेतृत्व कर रहे थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हमारी ओर से आक्रमण की आशा नहीं थी। वह हमारे इस हमले से घबरा उठे। उनकी बगल में खड़े एक दाढ़ी वाले मियाँ ने जेब से एक फुट लम्बा छुरा निकाला और डाक्टर साहब पर झपटा। मैंने समय रहते देख लिया और उसका छुरे वाला हाथ पकड़ लिया। इस पर वह और मैं एक-दूसरे से गुत्थमगुत्था हो गए। मैं उसके हाथ से छुरा छीन रहा था। तभी असलम साहब ने मुझे पहचान लिया और अपने साथियों से बोले, 'इसे पकड़ो....इसे पकड़ो'।

''परन्तु पूर्व इसके कि दूसरे लोग मेरी ओर आते, हिन्दू उन पर पिल पड़े थे। मैंने उस आदमी से छुरा छीन लिया। इस पर असलम साहब स्वयं मुझसे छुरा छीनने लपके। मैं पीछे हटना चहाता था कि मेरे पीछे कुछ और लोग लड़ते-लड़ते मुझ पर आ गिरे और मैं आगे को गिरा। गिरते-गिरते मेरा छुरा वाला हाथ ज़ोर से....।''

खुशीराम चुप कर गया। मीरा ने उत्सुकता से पूछा, ''फिर क्या हुआ?''

खुशीराम को याद आ गया था कि मीरा असलम की स्त्री है। इससे बात बदल गया, ''मेरे घाव में दर्द होने लगा है मीरा और कमजोरी बढ़ रही है।''

मीरा ने देखा कि घाव में से बहता हुआ रक्त पायदान को लाल कर रहा है। उसने कहा, ''हाथ उठाकर दिखाओ तो?''

खुशीराम ने हाथ उठाकर दिखाया। कमीज किसी तेज औजार से कट गई थी और उसके नीचे से रक्त निकल रहा था। मानव-रक्त बहता हुआ उसने पहली बार देखा था, इससे उसके मुख का रंग उड़ गया और उसने अपना रूमाल दे खुशीराम को कहा, ''ज़रा दबाए रखो, अभी डाक्टर को दिखाते हैं।''

मीरा तो खुशीराम के छुरे वाले हाथ से क्या हुआ यह जानना चाहती थी। इससे उसने अपने चित्त को स्थिर कर पूछा, ''तो तुम्हारे छुरे वाले हाथ का क्या हुआ?''

खुशीराम ने आँखें नीचे झुकाकर कह दिया, ''मेरे अपने पेट पर लग गया और मैं घायल हो गया। इतने में मुसलमान भाग खड़े हुए। इससे कुछ दूर तक तो मैं अकेला चला आया। फिर आपको मोटर में बैठे देखो तो आपकी ओर आ गया।''

मीरा को संदेह हो गया था कि हो न हो खुशीराम ने असलम पर प्रहार किया है, परन्तु खुशीराम की अंतिम बात भी युक्तिसंगत प्रतीत होती थी। इस समय तक मोटर श्रीनाथ की कोठी में पहुँच गई थी। मीरा ने नौकर को बुला, खुशीराम को उठवा, भीतर भेज दिया और निर्मला को बुलवा उससे डाक्टर का प्रबंध करने को कह, स्वयं टैक्सी में सवार हो पुनः अनारकली बाज़ार की ओर चल पड़ी। वह मदन के विषय में जानना चाहती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीरा के जाने के कुछ ही पीछे मदन और श्रीनाथ मोटर में सवार हो घर आ पहुँचे। तब खुशीराम की पट्टी हो रही थी। पड़ोस के एक डाक्टर बुलवा लिये गए थे।

मदन को जब खुशीराम के घायल होने का पता मिला तो वह वहाँ जा पहुँचा। डाक्टर ने बताया कि घाव बहुत गहरा नहीं है, फिर भी ठीक होने में एक सप्ताह लग जाएगा। मदन को मीरा के पुनः अनारकली बाज़ार में जाने की बात पता लगी तो उसने श्रीनाथ से अनुरोध किया कि वह जाकर मीरा को वहीं ले आए। इससे श्रीनाथ मदन को वहीं छोड़ मीरा को ढूँढने चल पड़ा।

मीरा नीला गुम्बद से होती हुई अनारकली बाज़ार में पहुँच गई। अस्पताल रोड और गणपतराय रोड के अनारकली बाज़ार के संगम पर भारी भीड़ थी। दो सौ के लगभग पुलिस के सिपाही वहाँ खड़े थे और सैकड़ों तमाशा देखने वाले वहाँ एकत्रित हो रहे थे। मीरा ने टैक्सी से नीचे उतर एक कान्स्टेबल से पूछा, ''क्या हुआ है यहाँ?'' उसने बताया, ''बलवा हुआ था। एक आदमी की लाश पड़ी मिली है।'' मीरा भीड़ को चीरती हुई आगे बढ़, यह देखने के लिए यत्न कर रही थी कि कौन मर गया है। उसके मन में बार-बार आता था कि खुशीराम के हाथों असलम मारा गया है।

जब तक वह आगे पहुँची पुलिस शव को उठाकर अस्पताल ले जा चुकी थी। पुलिस के प्रायः सब बड़े अफसर वहाँ एकत्रित थे। उसने पुनः एक आदमी से पूछकर निश्चय करना चाहा कि कौन मारा गया है परन्तु परिणाम कुछ नहीं निकला। कोई यह भी नहीं जानता था कि मरने वाला मुसलमान है अथवा हिन्दू?

मीरा यह जानने के लिए कि असलम होटल में पहुँच गया है या नहीं, एक दूकान में जा टेलीफोन करने लगी। होटल से पता मिला कि अभी कुछ देर पहले अस्पताल से टेलीफोन आया था और मिसेज़ असलम घबराई हुई टैक्सी कर अस्पताल चली गई हैं।

इस समाचार से उसके मन में उठ रही शंकाओं की सत्यता सिद्ध हो गई। उसके मन की विचित्र अवस्था थी, जिसे वह समझ नहीं सकी। अन्यमनस्क-सी दूकान से निकल, खड़ी टैक्सी में आकर बैठ गई। ड्राइवर ने पूछा, ''अब किधर?''

''अस्पताल!'' अपने-आप उसके मुख से निकल गया। मोटर से वह दो मिनट में अस्पताल पहुँच गई। लेकिन इतने समय में तो उसकी समझ में आया नहीं कि उसने कहाँ चलने को ड्राइवर को कहा है और फिर क्यों कहा है। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गाड़ी वहाँ जाकर खड़ी हो गई तो उसे ध्यान आया कि वह अस्पताल आ पहुँची है। वह मन में सोचती थी कि यहाँ क्यों आई है। इस पर भी उसके पग अस्पताल के हॉल की ओर जा रहे थे। चपरासी से उसने पूछा, ''अभी जो लाश आई है, किधर रखी है?''

''बगल के कमरे में सिविल सर्जन उसे देख रहे हैं।''

मीरा उस कमरे की ओर घूमी तो ऐलिस रूमाल से आँखें पोंछती हुई कमरे से निकली। उसने मीरा को देखा तो वहीं ठहर गई। मीरा उसकी ओर घूम गई। ''मि....मि....मिसेज़ असलम, क्या है?''

मिसेज़ असलम ने नाक साफ कर और लाल हुई आँखों को पोंछकर कहा, ''मेरे सब स्वप्न समाप्त हो गए।'

उसे शोकाकुल अवस्था में देख मीरा को बहुत दुःख हुआ। परन्तु उसकी अपनी आँखों में आँसू नहीं थे। ऐलिस कुछ अपने विषय में और कुछ असलम के साथ व्यतीत किए गए आनन्दमय दिनों के विषय में कह रही थी, परन्तु मीरा अपनी ही समस्याओं में उलझी हुई थी। वह उसकी बातों को सुन नहीं रही थी।

एकाएक उसके मन में कुछ ग्लानि उत्पन्न हुई और वह ऐलिस को वहीं छोड़ वापस घूम पड़ी। तभी कमरे में से सिविल सर्जन और पुलिस के दो अफसर निकले। सिविल सर्जन ने पुलिस अफसरों को 'गुड नाइट' कहा और एक ओर को चला गया।

पुलिस अफसरों ने ऐलिस के पास आकर शोक प्रकट करते हुए कहा, ''मिसेज़ असलम! हम आपका बयान लेना चाहते हैं। आप हमारे साथ थाने में चलेंगी?''

ऐलिस तैयार हो गई। मीरा बिना किसी को कुछ कहे लौट आई। टैक्सी में बैठ वह पुनः अनारकली बाज़ार में जा पहुँची। वहाँ श्रीनाथ के छापेखाने को बंद देख, वापस लौटने वाली थी कि श्रीनाथ अपनी मोटर में आ पहुँचा।

श्रीनाथ ने मीरा को वहाँ देख, संतोष अनुभव किया। उसका अनुमान था कि अभी मीरा को असलम की मृत्यु का ज्ञान नहीं है। इससे उसने मीरा से कहा, ''कहाँ घूम रही हो, मीरा! चलो, मदन मोहनलाल रोड पर है।''

मीरा ने चुपचाप टैक्सी को भाड़ा दे विदा कर दिया और श्रीनाथ की मोटर में बैठ गई। वहाँ से श्रीनाथ मदन के घर गया और श्रीकान्ता तथा मदन के माता-पिता को ले अपने घर लौट आया।

मार्ग में कुछ बातचीत नहीं हुई। उसने केवल इतना बताया कि मदन को चोट आई है, परन्तु घाव साधारण है और चिंता की कोई बात नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीरा से जिसने भी सहानुभूति प्रकट करने अथवा उसके भविष्य के विषय में उससे चर्चा करने का यत्न किया, उसने तुरंत कह दिया कि ''ये सब बातें व्यर्थ हैं। मुझे इनसे कुछ भी सहायता नहीं मिलती।''

इस प्रकार तीन दिन बीत गए। मदन का घाव ठीक हो गया था। मदन की माँ और मीरा की माँ मदन की खबर लेने नित्य आती थीं। मीरा श्रीकान्ता के कमरे में रहती थी और उसे वहाँ देखने कोई नहीं जाता था। वह भी सिवाय शौचादि के कमरे से बाहर नहीं निकलती थी।

खुशीराम का घाव कुछ गहरा था और उसे खाट से उठने की अनुमति नहीं थी। उसकी पत्नी राधा उसकी सेवा-सुश्रूषा के लिए श्रीनाथ के घर आ गई थी। खुशीराम को देखने के लिए अब ललिता और श्रीनाथ नित्य ही आते थे।

आज मीरा की माँ और सेठानी जी मदन को देखने आई हुई थीं। ललिता और निशनाथ खुशीराम को देखने आए तो मदन को देखने भी आ गए। श्रीनाथ और निर्मला वहाँ पहले ही उपस्थित थे। मदन ने आज पट्टी खोल दी थी और स्नान किया था। माथे पर घाव के चिह्न के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहा था।

मदन की माँ कह रही थी, ''बेटा मदन! अब घर चलना चाहिए न?''

''हाँ माँ! ज़रा अपनी बहू से कहो न कि तैयार हो जाए।''

''वह तो बेटा! तैयार बैठी है। तुम्हारे कहने की प्रतीक्षा कर रही है।''

ललिता ने कहा, ''कहाँ है श्रीकान्ता बहन?''

''ऊपर अपने कमरे में।'' मदन ने उत्तर दिया।

''क्या हम वहाँ जा सकते हैं?''

''उसे ही बुलवाए देते हैं। आप कष्ट क्यों करेंगी? फिर वहाँ मीरा है और वह किसी से मिलना नहीं चाहती।''

निशनाथ ने कहा, ''मैं समझता हूँ हमें उससे अवश्य मिलना चाहिए। शोक-ग्रस्त और निराश आदमी के लिए एकान्त अत्यंत हानिकर है। अकेला बैठा आदमी प्रायः उल्टे मार्ग पर ही चलने लगता है।''

''परन्तु वह स्वयं एकान्त में रहना चाहती है।'' मदन ने कहा।

निशनाथ का कहना था, ''हमें उससे इस ढंग से मिलना चाहिए जिससे वह यह अनुभव करे कि यह मेल-मिलाप किसी प्रयोजन-विशेष से नहीं हो रहा। उदाहरण के लिए आप आज इस घर से जा रहे हैं, तो आप उससे मिलने का अवसर ढूँढें और उसके विचारों पर प्रभाव डालने का यत्न करें।''

''हाँ बेटा!'' मदन की माँ ने कहा, ''चलो, ऊपर चलें। ऐसे अवसर को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हाथ से नहीं जाने देना चाहिए।''

मदन जब ऊपर जाने के लिए उठा तो निशनाथ और ललिता भी साथ जाने को तैयार हो गए। मीरा की माँ ने ऊपर जाना उचित नहीं समझा। वह बैठी रही। मदन की माँ ने कहा, ''तुम लोग ऊपर चलो, मैं कुछ बाद में आऊँगी।''

श्रीकान्ता ससुराल जाने के लिए तैयार बैठी थी। मीरा उसी कमरे के एक कोने में फर्श पर बैठी श्रीकान्ता को देख, मन-ही-मन सफल और आनन्दमय जीवन की उस प्रतिमूर्ति पर विचार कर रही थी। एक समय था जबकि वह जीवन की आनन्दमय अवस्था का सम्बन्ध धन-सम्पदा के साथ जोड़ देती थी और ऐसी अवस्था के अभाव के लिए, किसी के सुख को लूट लेने के लिए धनी-मानी लोगों को उत्तरदायी मानती थी। परन्तु आज उसका मन इस बहाने को स्वीकार करने के लिए उद्यत नहीं था। आज वह समझती थी कि उसके और श्रीकान्ता के आचरण में आकाश-पाताल का अंतर रहा है। जहाँ वह स्वयं भूल करने से बच नहीं सकी, वहाँ श्रीकान्ता बच गई थी। श्रीकान्ता को तो कोई समझाने वाला भी नहीं था, जबकि उसे मदन ने सचेत भी कर दिया था। उससे उसके आचरण में त्रुटि थी और उसका फल वह भोग रही है।

पिछले तीन दिन में उसने अपनी भूलों को भली-भाँति समझ लिया था और वह अपना जीवन-पथ निश्चित कर चुकी थी। इससे वह संतोष और धैर्य से अपने भविष्य को देखती थी।

श्रीकान्ता ने आईने में अपने को देखा और अपनी तैयारी से संतोष अनुभव किया। फिर उसने घूमकर मीरा से कहा, ''लो मीरा! मैं चली। अब तुम यहाँ रहना। माताजी तथा पिताजी ने कहा ही है कि उनके लिए तुम मेरे ही समान स्नेह की भाजन होगी। इसी कारण यह कमरा तुम्हें दिए जा रही हूँ।''

मीरा अहसान में इतनी दबी हुई अनुभव करती थी कि अपने मन के इस भाव को प्रकट करने को शब्द नहीं पा रही थी। इससे उसका मुख यद्यपि बंद था, परन्तु आँखें उसके मन की अवस्था का प्रदर्शन कर रही थीं। उनमें आँसू छलक रहे थे, असलम के उसे त्यागने पर अथवा उसकी आकस्मिक मृत्यु पर जो आँसू नहीं निकले थे, वे इस सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से उमड़ पड़े थे।

श्रीकान्ता की इच्छा थी कि स्वयं ही नीचे चली जाए परन्तु तभी मदन, ललिता और श्रीनाथ वहाँ आ पहुँचे। ''ओह ललिता!'' श्रीकान्ता ने उत्सुकता से कहा। फिर निशनाथ को भी पीछे खड़ा देख बोली, ''और आप भी? आइए कैसे आप लोगों ने हमें याद किया है?'' फिर मदन की ओर देखकर बोली, ''मैं तो स्वयं ही नीचे आने वाली थी।''

मदन ने मानो सबकी ओर से स्वयं बोलते हुए कहा, ''जाने से पूर्व मीरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को मिले बिना चला जाता, भला यह भूल कैसे हो सकती थी ? जब माताजी ने कहा कि तुम आ रही हो तो मैंने कहा कि मीरा से भी तो मिलना है। मेरे इस कहने पर ललिता भी इससे मिलने आ गई है।''

अब बात निशनाथ ने आगे चलाई, ''हम खुशीराम को देखने आए थे। प्रतिदिन यहाँ आने पर मीरा बहन से मिलने का विचार होता था, परन्तु ये तो नीचे उतरती ही नहीं थी। आज जब मदनजी ऊपर इनसे मिलने आने लगे तो हमने सोचा हम भी मिल लें। सो साथ चले आए हैं।''

मीरा, जो इन सबके आने पर उठकर खड़ी हो गई थी, बोली, ''आइए बैठिए।''

सब दरी पर ही बैठ गए। श्रीकान्ता, जो मीरा के पास आ बैठी थी, कहने लगी, ''मैंने यह कमरा मीरा को रहने के लिए दे दिया है। इससे माताजी भी बहुत खुश हैं। मेरा विचार सुन वह बोलीं, कि इससे मेरे चले जाने से जो घर में अभाव हो गया था, पूरा हो जाएगा। पिताजी ने भी इस प्रस्ताव पर बहुत हर्ष प्रकट किया है।''

''यह तो बहुत अच्छी बात की है, कान्ता बहन! एक बेटी गई तो दूसरी पली-पलाई बेटी माँ-बाप को दे चली हो।''

ललिता ने अब मीरा से कहा, ''क्या हम कभी-कभी मिलने आ सकते हैं ? श्रीकान्ता से तो मिलने आते थे।''

मीरा मुस्करा दी। श्रीकान्ता ने कहा, ''मीरा समझती है कि उसे एकान्त में बैठ तपस्या करनी चाहिए। इससे तीन दिन से यह, सिवाय शौचादि के समय के, कमरे से बाहर नहीं निकली।''

''तो इसे तपस्या समझती हैं ये।'' निशनाथ ने हँसते हुए कहा, ''मीरा बहन! यह तो तपस्या नहीं है। तपस्या कहते हैं किसी कार्य की सिद्धि के लिए निरंतर कठोर यत्न करने को। जब कार्य ही नहीं तो तपस्या क्या होगी ?''

''हाँ ठीक है।'' श्रीकान्ता ने हँसते हुए कहा, ''ललिता बहन ने कठोर तपस्या की है न, जिससे नौ निधि, सौ सिद्धि प्राप्त कर बैठी है।''

ललिता का मुख लज्जा से लाल हो गया। मदन के सम्मुख वह अपनी आलोचना पसंद नहीं कर सकी। परन्तु बात निशनाथ ने बचा ली। उसने कहा, ''इसकी क्या पूछते हैं आप! इसके लिए तो मैं तपस्या करता हूँ। यदि तपस्या का अर्थ समझना है तो किसी दिन मेरी माँ से आकर पूछो। वह बताएगी कि तपस्या क्या होती है। मुझे योग्य बनाने के लिए सत्रह वर्ष तक निरंतर दस घंटे रोज काम करती रही थी। अब जब मैं रुपया कमाकर ले आता हूँ और उसके चरणों में रखता हूँ तो कहती है, 'यदि लोग जानें कि तपस्या का फल इतना मीठा होता है, तो सब कोई इसे करने लगें'।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इससे सब गम्भीर हो गए। मीरा ने कहा, "मैं तो प्रायश्चित्त की आवश्यकता समझती हूँ। जैसे चिकित्सा से पूर्व विवेचन आवश्यक होता है, वैसे ही तपस्या से पूर्व प्रायश्चित्त होना चाहिए।"

"प्रायश्चित्त? वह कैसा और किसलिए? क्या किया है तुमने?" ललिता ने पूछा।

मीरा ने आँखें नीचे किए हुए कहा, "मैंने कुछ ऐसा किया है, जो मेरी आत्मा में ग्लानि उत्पन्न कर रहा है। मैं उसका वर्णन नहीं कर सकती। केवल अनुभव करती हूँ।"

"यह तो इस प्रकार है," निशनाथ ने कहा, "जैसे किसी निरामिष भोजी का हाथ मांस को लग जाए। परन्तु बंगाली लोग नित्य मछली खाते हुए भी ग्लानि अनुभव नहीं करते। अभ्यास से ग्लानि मिट जाती है।"

"बचपन से, यदि किसी बात का अभ्यास हो जाए, तो वह मन को बुरी प्रतीत नहीं होती। परन्तु अच्छी और बुरी बात का परीक्षक केवल मन ही तो नहीं है। मन के अनुभव के अतिरिक्त भी तो सिद्धांतात्मक रूप में बुराई-अच्छाई होती है।" मीरा ने उत्तर दिया।

"पर तुम तो जानती ही नहीं कि तुमने क्या बुरा किया है। भूल का ज्ञान हो जाने पर, भूल से किए काम का प्रायश्चित्त हो गया समझना चाहिए। परन्तु जब ज्ञान ही न हो तो प्रायश्चित्त क्या होगा?" निशनाथ बोला।

"इस ज्ञान-प्राप्ति के लिए ही तो प्रायश्चित्त अर्थात् मन की शुद्धि की आवश्यकता है। जब प्रायश्चित्त से मन निर्मल हो जाएगा तो जीवन की समस्याएँ सुलझ जाएँगी और आगे का मार्ग स्पष्ट दिखाई देने लगेगा। तब उस मार्ग पर चलने के लिए तपस्या की आवश्यकता होगी।" मीरा का कहना था।

मीरा के कहने में गम्भीरता थी। सब जने चुप थे और अनुभव कर रहे थे कि मीरा ने दृढ़ निश्चय कर लिया है। मदन समझता था कि मीरा का व्यवहार ठीक ही है और वह अवश्य कृतकार्य होगी।

मीरा ने कम खाना, कम पहनना, कम बोलना आरम्भ कर दिया। लोगों से भी अब वह कम ही मिलती थी। अपना अधिकांश समय प्राय: स्वाध्याय और पं. अम्बिकाप्रसाद जी के घर में सेवा-सुश्रूषा में व्यय करने लगी थी। जिन लोगों को वह घृणा अथवा तिरस्कार से देखती थी, उनको अब विनय भाव से देखने का यत्न करने लगी थी।

इस प्रायश्चित्त से वह इस परिणाम पर पहुँची थी कि मनोद्‌गार सदैव ही शिव और सुंदर नहीं होते। युक्ति की कसौटी पर भी वे सत्य सिद्ध होने चाहिएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:: 10 ::

समय बीत गया। मीरा के घर लड़का हुआ। मीरा उसके पालन-पोषण में ऐसे लगी, जैसे भाग्य से नियत किसी अरुचिकर कार्य को कोई करता है।

एक बात वह समझ रही थी कि उस लड़के को अपनी लज्जा की बात बताए बिना उससे रहा नहीं जाएगा। वह बड़ा होगा और पिता का नाम पूछेगा तब वह उससे झूठ नहीं बोल सकेगी और सत्य बताने पर पूर्ण वृत्तांत बताना ही पड़ेगा। इससे लड़के को अपने पिता के आचरण पर क्रोध आएगा अथवा अपनी माँ की दुर्बलता पर लज्जा, वह कह नहीं सकती थी।

इस पर भी जब उसे पूछा जाता कि लड़के को पालने के लिए किसी को दे दिया जाए अथवा उसे किसी आदमी को गोद दिलवा दिया जाए तो वह अपने मन को इसके लिए तैयार नहीं कर पाती थी। तब वह कह देती थी कि उसकी तपस्या का उसे अवश्य फल मिलेगा। जितनी कठोर तपस्या वह करेगी, उतनी ही सुगमता से परीक्षा में वह उत्तीर्ण हो जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपसंहार

भावुकता मन का गुण है। जब मन संस्कारों अथवा परम्पराओं से प्रेरित होकर कार्य करता है और ऐसा करने में बुद्धि अर्थात् युक्ति से काम नहीं लेता, तो वह कार्य भावुकतापूर्ण कहाता है।

मन और बुद्धि का संघर्ष प्राणी मात्र में चलता है। मनुष्य से इतर जीव-जंतु अपने सभी कार्य स्वभाववश करते हैं। उनका स्वभाव पैतृक होता है तथा वातावरण के प्रभाव से भी बनता है। जीव जितना उच्च-कोटि का होता है, उसका स्वभाव उतना ही पैतृक प्रभाव तथा वातावरण के प्रभाव, दोनों से बाहर होता जाता है। प्राणी जितना निम्न-कोटि का होता है, उतना ही वह अपना कार्य स्वभाव के अधीन करता है।

मनुष्य एक उच्च-कोटि का प्राणी माना जाता है। अतः इसके कार्य पैतृक प्रभाव तथा वातावरण के प्रभाव से निकल बुद्धि के अधीन होते हैं। इस पर भी मनुष्य में न्यूनाधिक मात्रा में पशुपन रहता है। जितना-जितना पशुपन मनुष्य में अधिक होता है, उतना ही वह बुद्धिशील न होकर भावुक होता है।

मनुष्य में पशु का अंश क्यों है और कितने अंश में है, ये अति जटिल प्रश्न हैं। एक उपन्यास इन प्रश्नों का उत्तर किस सीमा तक दे सकता है, कहना कठिन है। इस पर भी इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढने का यत्न किया गया है। इस यत्न में प्रथम विचारणीय बात है, मनुष्य और पशु में भिन्नता तथा समानता। मीमांसक इसका उत्तर देते हैं, परन्तु जब कोई उनके उत्तरों से संतुष्ट नहीं होता तो वे हतोत्साह हो वाक्-पटुता से इसकी व्याख्या करने लगते हैं। वे कह देते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक जीव है; मनुष्य एक ज्ञानवान प्राणी है; मनुष्य बुद्धिशील प्राणी है। इस प्रकार के कथन, जो स्वयं उलझे हुए हैं, मूल समस्या को सुलझाने के लिए कह दिए जाते हैं।

इन उत्तरों से असंतुष्ट होकर कुछ लोग यह भी कह देते हैं कि मनुष्य का इतिहास पेट की भूख में छिपा हुआ है। संसार की निष्प्रयोजन वस्तुओं में मनुष्य भी एक है। वह प्रकृति में अकारण घटी हुई किसी घटना का परिणाम-मात्र है। जन्म से पूर्व वह कुछ नहीं था और मरणोपरान्त कुछ नहीं रह जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक भी इस खोज में पीछे नहीं रहे। उन्होंने भी, जहां तक उनका बस चला है, मनुष्य की वास्तविकता को जानने में दार्शनिकों से कम घोड़े नहीं दौड़ाए। दार्शनिकों ने तो एक ओर इसे बहते पानी पर एक बुदबुदा बतलाया है और दूसरी ओर परमात्मा का प्रतिरूप। वैज्ञानिक बेचारे इतनी दूर तक न जाकर भी एक चमत्कारी सिद्धांत उपस्थित करते हैं। उनका मत है कि पशु से ही विकास पाकर मनुष्य बना है। वर्तमान मनुष्य के पूर्वज बन-मानुस जैसे प्राणी रहे हैं। आजकल बंदर उसके चचेरे भाई कहे जा सकते हैं। इस कथन की सच्चाई पर संदेह करना अवैज्ञानिक माना जाता है जिसे आज का संसार सहन नहीं कर सकता। अतएव दार्शनिकों के झमेले में न पड़कर हमारे लिए अवैज्ञानिक न बनना ही ठीक रहेगा।

वैज्ञानिक के कथन पर कुछ लोगों को एक समय रोष आ गया था। वे अपने को बन-मानुस के भाई की संतान कहे जाने पर अपमानित हुआ अनुभव करने लगे थे। वास्तव में यह बात तो मनुष्य को सम्मानित करने वाली है। यह उसके उस कठोर संघर्ष की ओर संकेत करती है, जो उसको, अपनी वर्तमान अवस्था तक पहुँचने के लिए करना पड़ा होगा।

मनुष्य के चचेरे भाई तो अभी भी पेड़ों की डालियों पर झूलते दिखाई देते हैं, परन्तु मनुष्य यान पर सवार हो चन्द्रलोक पहुँच गया है और अन्य तारागणों पर जाने की योजनाएँ बनाने लगा है। अपनी वर्तमान अवस्था तक पहुँचने में मनुष्य ने कितना घोर संघर्ष अपने में पशुपन के विरुद्ध किया होगा, यह अवर्णनीय है। हाथ-पाँव के बल चलने के स्थान पर सीधे होकर केवल पाँव के बल चलने के लिए मनुष्य को कितनी तपस्या करनी पड़ी होगी, कहना कठिन है। इससे जो लोग यह कहते और मानते हैं कि मनुष्य ने पशु की अवस्था से विकास पाकर वर्तमान उन्नत स्थान प्राप्त किया है, वास्तव में मनुष्य जाति की भारी प्रशंसा करते हैं। मनुष्य किस सीमा तक इस प्रशंसा का पात्र है यह हमारे विषय के बाहर की बात है।

दसवीं श्रेणी के किसी विद्यार्थी से यह कहना कि एक समय वह अ-आ, इ-ई पढ़ता था, उसका अपमान करना नहीं कहा जा सकता। हाँ, एक ऐसे विद्यार्थी को यह कहना तो निश्चय ही अपमानजनक है कि वह दसवीं श्रेणी में होता हुआ अ-आ, इ-ई भी नहीं जानता।

मनुष्य और पशु में शारीरिक समानता तो वैज्ञानिक बताते ही हैं। इसके साथ-साथ वे उस पूर्ण मार्ग को भी बताने का यत्न करते हैं, जिस पर होता हुआ एक पशु मनुष्य-पद पर पहुँचा है। फिर मानसिक विकास भी वैज्ञानिक की बात का समर्थन करता है। मनुष्य और पशु में कुछ गुण साँझे अर्थात् एक-जैसे हैं। इन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्राणी के अर्थात् जीवन के, या यूँ कहा कि जीवात्मा के गुण कहा जाता है। सुख-दुःख, इच्छा-द्वेष, प्रयत्न जीवात्मा के लक्षण माने गए हैं। क्योंकि मनुष्य और पशु दोनों में ही जीवात्मा होता है, इसलिए सुख-दुःख आदि लक्षण दोनों में पाए जाने स्वाभाविक ही हैं।

इस पर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि मनुष्य पशु नहीं है। जैसे दसवीं श्रेणी का विद्यार्थी प्रथम श्रेणी का नहीं माना जाता और न ही वह पहली श्रेणी में जाकर बैठना पसंद करेगा, वैसे ही वैज्ञानिक मतानुसार मनुष्य पशु की संतान होते हुए भी, पशु बनकर रहना स्वीकार नहीं कर सकता। दसवीं श्रेणी के विद्यार्थी के लिए पहली श्रेणी में काम करना सुगम होने पर भी रुचिकर और हितकर नहीं हो सकता।

कुछ भी हो, यह देखा जाता है कि मनुष्य भी कभी-कभी इतर जीव-जंतुओं का-सा व्यवहार स्वीकार कर लेता है। वह भी अपनी बुद्धि का प्रयोग छोड़कर मन की भावना के अधीन कार्य करने लग जाता है। ऐसे व्यवहार को भावुकता कहते हैं।

भावुकता सदा बुरी बात ही हो, ऐसी बात नहीं। भावुकता पैतृक प्रभाव से तथा परम्पराओं व संस्कारों के प्रभाव से बनती है। यही कारण है कि मनुष्य के लिए जहाँ यह आवश्यक माना गया है कि वह भलीभाँति शिक्षित हो, जिससे उसकी बुद्धि विकसित हो और वह अपने व्यवहार को युक्तियुक्त रख सके, वहाँ यह भी आवश्यक समझा जाता है कि वह भले संस्कारों में पले, जिससे उसके वे कार्य भी जो स्वभाववश अथवा भावुकतापूर्ण हों, संयत और श्रेष्ठ हों। इसी कारण मनुष्य के लिए संस्कारों की भारी महिमा है। माता-पिता को अपने आचरण को संयत, श्रेष्ठ और युक्तियुक्त रखने की आवश्यकता इसीलिए है, ताकि उनकी संतान अपने माता-पिता से अशुद्ध भावुकता ग्रहण न कर ले।

इतर जीव-जंतुओं से मनुष्य इसी बात में श्रेष्ठ है कि उसमें बुद्धि है, जो इतर जीव-जंतुओं के पास नहीं है और है भी तो बहुत ही निम्न कोटि की। इंद्रियों के विषय प्राणी-मात्र में एक-समान रहते हैं। मनुष्य और पशु दोनों इन विषयों के अधीन कार्य करते हैं। मनुष्य में कभी-कभी भावुकता भी इंद्रियों के विषयों के अधीन हो जाती है। वास्तव में यह विषय-वासना के अधीन, बुद्धि का प्रयोग न कर सकने से ही होता है।

अतएव मनुष्य के कार्य बुद्धि का विषय हों तभी ठीक रहता है। भावुकता, जो संस्कारों से बनती है, भी बुद्धि के अधीन की जा सकती है। ऐसा करने के लिए संस्कार और वातावरण का निर्माण बुद्धियुक्त होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण संस्कार और संस्कृति, मनुष्य-जीवन के महान् अंग बन जाते हैं।

मनुष्य में एक अन्य गुण है। वह ऊपर उठने का यत्न करता रहता है। स्वभाव से वह पशुओं के-से व्यवहार को छोड़ना चाहता है। वह अपने व्यवहार को युक्तियुक्त बनाने का यत्न करता रहता है। मनुष्य की यह भावना ही उसके पुनः पशुपन की ओर जाने में बाधक बनती रहती है, यद्यपि कई सम्प्रदाय मनुष्य को सरलता, स्वाभाविकता तथा प्राकृत स्वभाव रखने के बहाने इंद्रियों के विषय में बह जाने की प्रेरणा देते रहते हैं। इंद्रियों के विषयों पर नियंत्रण रखने की भर्त्सना करने वाले लोग प्रत्येक काल में हुए हैं। इस पर भी, मनुष्य इन विचारों की तुच्छता को अनुभव कर इंद्रियों को नियंत्रण में रखने में यत्नशील रहता है।

अतः भावुकता, जो निम्न कोटि के जीवों का अनुकरण करने की प्रेरणा देती है, शीघ्र ही अरुचिकर हो जाती है।

यही विचार हैं इस पुस्तक की कथा-वस्तु। इस विचार-प्रवाह को साकार रूप देने के लिए पात्रों और घटना-स्थलों को जन्म देकर उपन्यास निर्माण किया गया है। अतः सब पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं। इससे किसी के मान-अपमान का प्रयोजन नहीं है।

Central Library
167955
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167955

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 084.9143 आगत संख्या 167955
GUR-B
पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की कुछ चुनी हुई रचनाएँ

राजनीति पर आधारित

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक, स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दो लहरों की टक्कर, दासता के नये रूप।

पौराणिक कथाओं के आधार पर

कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं, (राम कथा पर आधारित) अमृत-मंथन, परम्परा, अग्नि परीक्षा, (महाभारत पर) परित्राणाय साधूनाम्।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

कुमकुम, विक्रमादित्य, पुष्यमित्र, लुढ़कते पत्थर (अशोक-कालीन), पत्रलता (हर्षवर्धन पर), गंगा की धारा (अकबर कालीन), खण्डहर बोल रहे हैं (औरंगजेब के काल पर)

सामाजिक उपन्यास

अनदेखे बन्धन, एक और अनेक, मानव, गुण्ठन, आवरण, यह संसार, धरती और धन, भगवान भरोसे, घर की बात।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा: एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

लेखक की कुछ अन्य रचनाएँ

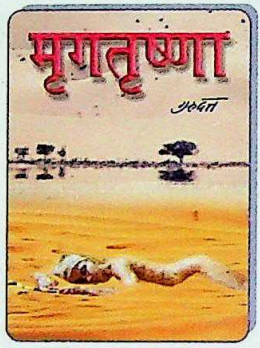

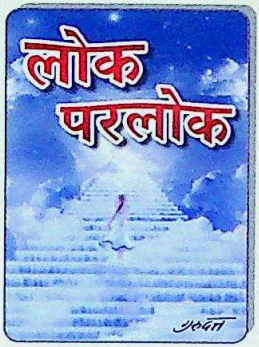

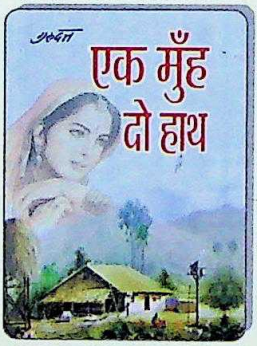

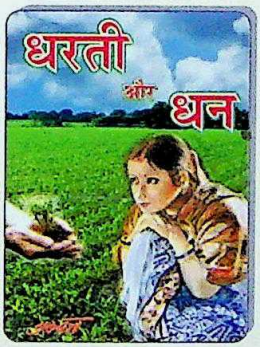

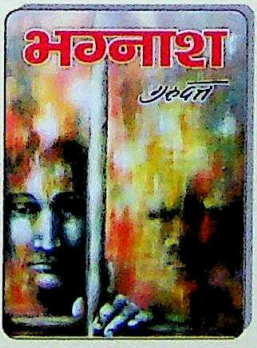

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005, फोन : 23553624, 23551344
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com
www.hindisahityasadan.com

ISBN 818838898-X

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar